# हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक विघटन

[ १९५० ई०-१९७५ ई० ]

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय की पी एच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

**संशोधित शोध प्रबन्ध**


शोध निर्देशक

डा० विश्वम्भर सिंह भदौरिया

भूतपूर्व प्राचार्य अतर्रा स्नातकोत्तर महाविद्यालय अतर्रा बांदा

शोधकर्ता

धर्मेन्द्र नाथ श्रीवास्तव

एम० ए०


सितम्बर १९८५ ई०

प्रमाणित किया जाता है कि श्री धर्मेन्द्रनाथ श्रीवास्तव ने हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक चिन्तन [1950-75 ई0] शीर्षक पर मेरे शोध निर्देशन में अपना मौलिक शोध प्रबन्ध पी0एच0 डी0 उपाधि हेतु जून 1982 ई0 में प्रस्तुत किया था। परीक्षक महोदयों द्वारा शोध प्रबन्ध में संशोधन चाहा गया था । शोध प्रबन्ध का संशोधित रूप प्रस्तुत किया जा रहा है । विषय से सम्बन्धित मौलिक तथ्यों को प्रकाश में लाकर यथासम्भव विषय को सम्पूर्णत: उद्घाटित किया है । अपने विषय पर यह मौलिक तथा नवीन शोध प्रबन्ध है ।

वि. सिंह

डा0 विश्वम्भर सिंह भदौरिया
भूतपूर्व प्राचार्य,
अतर्रा स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
अंतर्रा- बांदा ।

## प्राक्कथन

वर्तमान शती विज्ञान और तकनीकी उपलब्धियों का युग है ।
कार्बनिक यौगिकों का संयुग्म अदनामानव विज्ञान के माध्यम से रचनाकार ब्रह्मा का
सहोदर बन गया है। भौतिक स्तर पर मनुष्य ने आवागमन के वायुयान, राकेट,
जलयान आदि द्रुतगामी वाहनों का निर्माण करके, मनोरंजन के क्षेत्र मे चलचित्र,
रेडियो टी0वी0 टेपरिकार्डर आदि का उत्पादन करके, शरीर के विभिन्न अंगों
के प्रत्यारोपण में अभूतपर्व सफलता प्राप्त करके अनुदैनिक उपयोग की वस्तुएं
बना दिया है। दूसरी ओर अणु शक्ति के विध्वंसक स्वरूप ने समसामयीक सभ्यता
एवं संस्कृति के अस्तित्व पर प्रश्न-चिन्ह लगा दिया है। विश्व के विभिन्न देशों
की शीतयुद्ध की व्यापक तैयारियो ने जनसाधारण को जीवन के प्रति चिंतित कर
दिया है। आज का मानव अपने आपके लिए अबूझ पहेली होता जा रहा है ।
मानव निर्मित प्राचीन सामाजिक संगठन, उनके मूल्य और मान्यतायें समसामयिक
जीवन के लिए अपूर्ण लग रही हैं । अत: मनुष्य प्रतिक्षण मृत्यु के भय से संत्रस्त
है, वह वैयक्तिक स्वार्थो के प्रति आवश्यकता से अधिक जागरूक हो उठा है ।
जिसके कारण वैयक्तिक, पारिवारिक ,सामुदायिक सभी स्तर पर उसके व्यवहार
मे कृत्रिमता एवं रिक्तता का समावेश हो रहा है।

यह कहना अत्युक्ति न होगा कि स्वतंत्र भारत का साहित्यिक परिवेश
भी उपर्युक्त परिस्थितियों से अछूत न रह सका है। अत: उपन्यास साहित्य
में पात्रों कें बाह्य एवं आन्तरिक व्यवहारों एवं सम्बन्धों के चित्रण के माध्यम
से समसामयीक भारतीय परिवेश के सामाजिक, आर्थिक ,राजनीतिक एवं सांस्कृतिक
सम्बन्धों को एक नये फलक पर उभारनें का सद्प्रयास है।

उपन्यास मानव जीवन के विभिन्न आन्तरिक एवं बाह्य पक्षों की व्याख्या
है। अत: उपन्यास के अन्तर्गत पात्रों के वैयक्तिक एवं सामाजिक सम्बन्धों का

लेखा-जोखा अवश्य रहता है क्योंकि व्यक्ति समाज के अभाव में सुसंस्कृत जीवन व्यतीत करने में सफल न होगा। यही कारण है कि वैयक्तिक मूल्यों का आकलन भी प्राय: समाज सापेक्ष किया जाता है। अर्थात व्यक्ति के वैयक्तिक मूल्यों का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में समाजके समूहों, संस्थाओं से टकराहट तो नही है। जब व्यक्ति के मूल्यों की प्रत्यक्षा अथवा परोक्ष किसी भी रूप में सामाजिक सम्बन्धों, समूहों, संस्थाओं से टकराहट होती है मतैक्य का अभाव होता है। समाज के सदस्यों में पारस्परिक अविश्वास, ईर्ष्या घृणा आदि भाव जागृत होने लगते हैं, तब समाज की इस दशा को सामाजिक विघटन कहा जाता है।

वस्तुत: इस विषय पर स्वतंत्र रूप से शोधकार्य नहीं के बराबर हुआहै हाँ यह अवश्य है कि डा0 स्वर्णलता ने स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य कीसमाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि शोध प्रबन्धके सातवें अध्याय में सामाजिक विघटन के कारणके रूप मे अपराध का विवेचन कियाहै। डा0 हेमेन्द्रपानेरी ने हिन्दी उपन्यास मूल्य संक्रमण शोध प्रबन्ध के चौथे अध्याय में परिवार परम्परागत मूल्यविघटन की प्रक्रिया, शीर्षक के अन्तर्गत उपन्यासों में चित्रित परम्परित पारिवारिक व्यवस्था के विघटन पर प्रकाश डाला है। डा0 विवेकी राय ने स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य और ग्राम जीवन शोध प्रबन्ध के तृतीय अध्याय विघटन का आर्थिक कोण शीर्षक के अन्तर्गत कहानियों एवं कुछ उपन्यासों का जिक्र किया है तथा अध्याय पाँच में कुछ कहानियों एवं उपन्यासों में चित्रित पारिवारिक विघटन को प्रस्तुत किया है। उपर्युक्त शोध ,प्रबन्धो ने मुझे शोध कार्य की एक दिशा प्रदान की।

सामाजिक विघटन के सन्दर्भ में 1950 ई0 से 1975 ई0 के उपन्यासों का अध्ययन एवं अनुशीलन प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का अभीष्ट है। अलोच्यकाल की

इसलिए अवधि में उपन्यासों की रचना द्रुतगति से हुई है। प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में उपन्यास प्रकाशित हुए हैं। उपन्यासों का यह विपुल प्रकाशन उसकी लोकप्रियता की ओर संकेत करता है। सन् 1950 ई० से 1975 ई० के प्राय: सभी उपन्यासों में सामाजिक विघटन के किसी न किसी रूप अथवा सामाजिक विघटन के किसी न किसी कारण का चित्रण हुआ है। अत: उपन्यासों की इस अपार भीड़ में मेरे लिए उपन्यासों के चयन की प्रक्रिया और भी जटिल हो गई। उपन्यासों के चयन की जटिलता से मुक्त होने के लिए मैंने श्रेष्ठ उपन्यासकारों के बहुचर्चित उपन्यासों को चुनने का प्रयास किया है। परन्तु आज जो विशाल उपन्यास साहित्य है उसमें किसी श्रेष्ठ रचना का छूट जाना असम्भव नहीं है।

संशोधन से पूर्व प्रस्तुत शोध प्रबन्ध छ: अध्यायों में विभक्त था जिसमें परीक्षक महोदयों के निर्देशों एवं सुझावों के अनुसार प्रथम अध्याय स्वतंत्र भारत का ऐतिहासिक विवरण को अध्याय दो में परिवर्तित कर दिया गया है। तथा अध्यायहीन सामाजिक विघटन की अवधारणा को प्रथम अध्याय के अन्तर्गत कर दिया गया है। संशोधन के पूर्व के शोध प्रबन्ध के अध्याय दो स्वतंत्र भारत की सामाजिक संरचना एवं अध्याय चार कथावस्तु एवं कथा की दृष्टि से कुछ उपन्यासों का विशेष विवेचन को परीक्षक महोदयों के निर्देशानुसार संशोधित शोध प्रबन्ध से निकाल दिया गया है।

इस प्रकार संशोधित शोधन प्रबन्ध चार अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय में सामाजिक विघटन की परिभाषा, सामाजिक विघटन के विविध रूप, सामाजिक विघटन के विभिन्न कारणों का समाजशास्त्रीय विवेचन किया गया है।

अध्याय दो में स्वतंत्र भारत की प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं का सामाजिक विघटन के परिप्रेक्ष्य में किया गया है क्योंकि सामाजिक समूहों, संस्थाओं एवं समितियों का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष सम्बन्ध ऐतिहासिक घटनाओं से होता है। अकाल, युद्ध या

अशान्तिपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ सामाजिक विघटन की गति को तीव्रता प्रदान करती हैं । क्योंकि युद्धकाल में मार-काट ,अकाल, महामारी, सैनिकों के परिवार से सम्बन्धित विभिन्न समस्याएँ उत्पन्न होतीहै ।

अध्यायतीन में उपन्यासों में चित्रित सामाजिक विघटन के कारणों का अन्वेषण ,विश्लेषण एवं व्याख्या किया गया है, साथ ही साथ सामाजिक विघटन के विविध रूपों का भी विवेचन किया गया है । चतुर्थ अध्याय उपसंहार का है ।इस अध्याय के अन्तर्गत उपन्यासों में चित्रित सामाजिकविघटनके विविध रूपों एवं सामाजिक विघटनके विभिन्न कारणों की निर्णयात्मक समीक्षा की गई है। तथा शोध प्रबन्ध की उपलब्धियों की ओर भी संकेत है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्धक के विषय चयन सेलेकर शोध प्रबन्ध लेखन की असीम प्रेरणा का सम्पूर्ण श्रेय श्रद्धेय डा० विश्वम्भर सिंह भदौरिया भूतपूर्व प्राचार्य अतर्रा स्नातकोत्तर महाविद्यालय अतर्रा बाँदा को है। उनके प्रतिकृतज्ञता ज्ञापित करके मैं उनके बहुमूल्य सुझावों एवं मधुर सम्बन्धों से उन्नत नहींहोसकता हूँ । परीक्षक महोदयों के बहुमूल्य सुझावों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना सहज धर्म बन जाता है क्योंकि उनके शोध सम्बन्धी दीर्घकालीन अनुभवों पर आधारित सुझाओं से शोध प्रबन्ध की सार्थकता में अभिवृद्धि ही हुई है ।

शोध प्रबन्ध की रूप रेखा में अनेकानेक रचनाकारों कीकृतियों का उपयोग किया गया है। इसके लिए मैं उन सभी का ऋणी हूँ । मैं उनके प्रति भीआभार प्रकट करता हूँ ।

## विषय- सूची

# अध्याय - 1

## सा मा जिक विघ ट न की अ व धा र णा

### सामाजिक विघटन की परिभाषा :-

समाज में मनुष्य की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एवं कार्यों को पूरा करने के लिए हजारों छोटे-बड़े संगठनों का जन्म हुआ है। इन संगठनों के संचालन के लिए उनके उद्देश्यों मूल्यों एवं नैतिक आदेशों की एक सामाजिक स्वीकृति होती है। इन संगठनों के सामाजिक सम्बन्धों में होने वाले तीव्र परिवर्तन जब परम्परागत मूल्यों और सामाजिक नियन्त्रण को कम कर देते हैं तब समाज में पारस्परिक टकराव,अपराध, अविश्वास की भावना एवं अनेक आर्थिक व सामाजिक समस्यायें उत्पन्न हो जाती है तब समाज की ऐसी दशा को संक्षेप में सामाजिक विघटन कहा जाता है। सामाजिक विघटन,सामाजिक संगठन की विपरीत दशा की एक सापेक्षिक धारणा है,अतः हम तब तक किसी समाज को विघटित नहीं कह सकते हैं,जब तक कि उस समाज के समसामयिक मूल्यों, आदर्शों,नैतिक मान्यताओं का परम्परित मूल्यों,आदर्शों एवं नैतिक भावनाओं से मतवैभिन्य न हो ।ऐसी स्थिति में समाज के व्यक्ति सामाजिक नियन्त्रण से परे हटकर मनमाने ढंग से सम्बन्ध जोड़ते हैं। इस प्रकार समाज में एक असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इस असंतुलन की दशा को सामाजिक विघटन कहा जाता है तथा असंतुलन की परिमाण अथवा मात्रा के आधार पर यह निर्धारित किया जाता है कि कोई समाज किस सीमा तक विघटित हो चुका है ।

प्रत्येक समाज की संरचना बहुत से छोटे-बड़े समूहों के पारस्परिक सम्बन्धों पर आधारित होती है । जब इन सम्बन्धों के रूप बदल जाने के कारण व्यक्ति अपनी परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाई महसूस करता है या विभिन्न समूह अपने मान्यता प्राप्त उद्देश्यों की प्राप्ति में असफल हो जाते हैं तब समाज का संगठन समाप्त हो जाता है। ऐसी दशा में सामाजिक विघटन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इस तथ्य को और अधिक स्पष्ट करने के लिए उदाहरण स्वरूप मनुष्य के शरीर की जैवकीय व्यवस्था को प्रस्तुत किया जा सकता है। इस व्यवस्था में शरीर के सभी अंग संगठित रूप से अपना-अपना कार्य करते हैं ।शरीर के किसी भी अंग में अव्यवस्था उत्पन्न हो जाने से सम्पूर्ण शरीर अस्वस्थ्य हो जाता है । ठीक इसी तरह विभिन्न संस्थाएं ,समूह, आदर्श, नियम और व्यक्ति समाज की विभिन्न इकाइयाँ हैं इन इकाइयों में से किसी एक भी इकाई में असंतुलन एवं अव्यवस्था उत्पन्न होने से समाज विघटित हो जाता है ।

सामाजिक विघटन को विभिन्न समाज शास्त्रियों एवं विद्वानों ने उसकी प्रकृति के आधार पर अधोलिखित ढंग से परिभाषित किया है ।

जानक्यूबर के अनुसार " समय-समय पर सामाजिक संगठन टूटा हुआ परिलक्षित होता है, संगठन का संयत्र विखंडित दिखाई पड़ता है,जिसकी सम्भावना नहीं होती है या अस्वाभाविक, असंतुलित व्यवहार उत्पन्न हो जाता है। इस प्रकार की संगठन के विपरीत दिखलाई पड़ने वाली दशाएं जो उत्पन्न होती है,इन्हें सामाजिक विघटन कहना तर्क संगत है । ... ।

---

1. ( It has been observed by many studants of sociaty that from time to time this organization of acciety seems to broak - down the machaniam of organization seems to go pieeds and unspacted. uaual or abonormal behaviour then cilurs since such condition as these seemed to be the opposite of organization,it appeared logical to call them disorganization.)
John F. Gubert- Socialogy A Synopsis of Principles Appleton Cantury crofts copy right 1947

उपर्युक्त परिभाषा के अन्तर्गत जान० एफ० क्यूबर ने सामाजिक संगठन के अन्तर्गत उत्पन्न व्यवधान को सामाजिक विघटन माना है । यह व्यवधान सामाजिक संगठन के टुकड़े-टुकड़े में विखंडित होने में दिखाई पड़ता है । कहने का तात्पर्य यह है कि विघटित समाज के संगठनों का असमय में ही टुकड़े-टुकड़ो में विघटन हो जाता है, उनके व्यवहारों में असमय, असंगत ढंग से असंतुलन उत्पन्न हो जाता है ।

फैरिस ने सामाजिक विघटन की परिभाषा इस प्रकार दी है। " सामाजिक विघटन लोगो के मध्य इस प्रकार्यात्मक सम्बन्धों के उस सीमा तक टूट जाने को कहते है जिसके कारण समूह के स्वीकृत कार्यों को पूर्ण करने में बाधा उत्पन्न होती है।"" । प्रत्येक समाज का निर्माण अनेक समूहों से होता है। समाज में प्रत्येक समूह के कुछ निश्चित उद्देश्य एवं कार्यक्र होते हैं जिन्हें उस समूह के सदस्य या सदस्यों को पूरा करना पड़ता है। इन कार्यों के आधार पर उन लोगो के बीच एक प्रकार्यात्मक सम्बन्ध होता है। जब ये प्रकार्यात्मक सम्बन्ध इस प्रकार टूट जाते है कि समूह के स्वीकृत कार्यों को पूरा करना भी कठिन हो जाता है तो यह स्थिति सामाजिक विघटन की स्थिति होती है। प्रकार्यात्मक सम्बन्धों के विखंडन का अर्थ यह है कि समूह के सदस्यों में रहने वाला आंतरिक एकता ,पारस्परिक सहयोग एवं सम्बन्ध अवशेष नहीं रहा जिससे समाज समुचित ढंग से क्रियाशील नहीं हो पा रहा है ।

---

11- ( Social disorganization is the disruption of the functional relations anong peraone to a degree that interferes with the performance of the accepted tasks of the group.)

E.L. Faris:- Social Diagrganization, page 19

Ronald prpross Co. Neuyork. 1948

निडमेयर के अनुसार " जब किसी समूह का एकमत्य ,उद्देश्यों की एकता भंग हो जाती है, संरचना का संतुलन बिगड़ जाता है और समाज का क्रियाशील सम्बन्ध व्यवस्थित व्यवस्था से परे चला जाता है तो इन स्थितियों को विघटन के क्षण मान लेना ही उपयुक्त होगा "[1] । इस परिभाषा में आए हुए एकमत्य भंग होना,उद्देश्यों की एकता का भंग हो जाना,सामाजिक संरचना का संतुलन बिगड़ जाना एवं सामाजिक सम्बन्धों का अव्यवस्थित हो जाना,ये सभी लक्षण एकक्रम में सम्बन्धित हैं जिसे क्रमानुसार इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है। समाज एक उद्देश्यपूर्ण व्यवस्था है,उद्देश्यों की पूर्ति समाज स्वीकृत साधन होते हैं तथा इन साधनों के प्रतिमानों के प्रति अधिकांश सदस्यों का एकमत्य रहता है,इसी एकमत्य के आधार पर समाज में एकता आती है और यह एकता सामाजिक संरचना को संतुलन एवं स्थाइत्व प्रदान करती है। इस संतुलनपूर्ण स्थिति में समाज के विभिन्न समूह और विभिन्न व्यक्त अपने-अपने पद पर रहते हुए समाज स्वीकृत उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कार्य करते रहते हैं । इसकी वजह से उनमें क्रियाशील सम्बन्ध की एक व्यवस्था बन जाती है । यह व्यवस्था सामाजिक संगठन कहलाती है और इसके विपरीत स्थिति सामाजिक विघटन कहलाती है ।

इलियट और मेरिल के अनुसार " सामाजिक विघटन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा समूह में सदस्यों के सम्बन्ध टूट जाते हैं अथवा समाप्त हो जाते हैं । "2

---

Martin Newmayer:- Social Problems and changing sociaty,page 16
D. Van Nostrand Company Newyork 1953

( Social Disorganization is the process by which the relation ships between members of a group are broken or disalved.)

Elliot and Merrill:- Social Diaorganization, page - 30
Happer and Bros , Newyork. 1950

इस परिभाषा में" प्रक्रिया·" शब्द पर विशेष बल दिया गया है। जो कार्य निरन्तर होता रहता है और जिसका अन्त नहीं होता, उसे प्रक्रिया कहते हैं। " सामाजिक विघटन भी एक प्रक्रिया है, कोई पूर्ण अवस्था नहीं । "" । कोई भी समाज न तो कभी भी पूर्ण रूप संगठित रहता है और न तो कभी पूर्णरूप से विघटित ही रहता है। समाज में संगठन और विघटन दोनों तत्व हर समय मौजूद रहते हैं लेकिन उनकी मात्रा में अन्तर होता है। अर्थात जब समाज में नियंत्रण की स्थिति की प्रधानता होगी तो समाज संगठित कहलाएगा और जब समाज में अनियंत्रण की प्रधानता होगी तो विघटन की स्थिति कहलाएगी।

फेयर चाइल्ड ने " समाजशास्त्र के शब्द कोष में सामाजिक विघटन का वैज्ञानिक अर्थ इस प्रकार दिया है । " सामाजिक विघटन का अर्थ समूह के सुव्यवस्थित व्यवहारों, प्रतिमानों, संस्थाओं तथा नियंत्रण की क्रियाशीलता में असंतुलन तथा अव्यवस्था उत्पन्न हो जाना है । " 2

भारतीय विद्वानों द्वारा सामाजिक विघटन की दी गई परिभाषाएं भी पाश्चात्य विद्वानों द्वारा की गई सामाजिक विघटन की परिभाषाओं से मिलती जुलती है। भारतीय विद्वानों की कुछ प्रमुख परिभाषाएं संक्षेप में निम्नलिखित है ।

---

1:- विश्वमित्र:- सामाजिक विघटन ,पृष्ठ 32, केदारनाथ रामनाथ मेरठ

2. ( Social disorganization is the derangement and malfunction of established group behaviours, patterens , inatutions or coutrols.)

Farchild:- Distonary of sociaclogy . page 280

शम्भुरत्न त्रिपाठी के अनुसार " सुसंगठित समाज के विभिन्न अंगो में परस्पर सामंजस्यपूर्ण अनुकूलन होता है । जब यह अनुकूलन परिवर्तित हो जाता है तो विभिन्न अंगों का संतुलन भंग हो जाता है । यह असंतुलन समुचित एकीकरण के अभाव को व्यक्त करता है और जब यह असंतुलन अधिक और तीव्र हो जाता है तो इसका परिणाम सामाजिक विघटन होता है । "[1] ।

डी० एस० बघेल के अनुसार :- " सामाजिक संगठन के आवश्यक तत्वों में किसी प्रकार का विचलन सामाजिक -विघटन कहलाएगा । "[2]
डा० गोपाल कृष्ण अग्रवाल के अनुसार :- " यदि एक समाज के व्यक्ति अपने समाज के नियमों से नियंत्रित नहीं होते और मनमाने रूप से सम्बन्धों की स्थापना करते है तब समान्यतया ऐसे समाज को एक विघटित ~~अर्थ~~ समाज कहा जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि सामाजिक विघटन का अर्थ समाज में असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो जाना है । यह असंतुलन जितनी अधिक मात्रा में होगा, सामाजिक विघटन की मात्रा भी उतनी ही अधिक होगी । "[3]

---

1:- शम्भुरत्न त्रिपाठी :- समाजशास्त्रीय विश्वकोश पृ० सं० -350
किताब घर परेड कानपुर, 1980 ई० ।
2:- डी० एस० बघेल - अपराधशास्त्र , पृ० सं० 338
सरस्वती सदन दिल्ली, संस्करण 1970 ई० ।
3- डा० गोपाल कृष्ण अग्रवाल :- समाजशास्त्र, पृ० सं० -240
आगरा बुक स्टोर , 1/ 125 पंचकुईयां आगरा संस्करण 1980 ई०

## सामाजिक विघटन के लक्षण :-

सामाजिक अवस्थाओं के कुछ विशेष लक्षण होते हैं जो यह प्रकट करते हैं कि समाज में विघटन की प्रकृति किस गति से घटित हो रही है। संक्षेप में सामाजिक विघटन के लक्षण निम्नलिखित है ।

## रूढ़ियों और संस्थाओं का संघर्ष :-

सामाजिक संरचना में रूढ़ियों और संस्थाओं का महत्वपूर्ण स्थान है । सामाजिक संगठन के लिए आवश्यक है कि रूढ़ियां और संस्थाएं सहयोग पूर्ण ढंग से कार्य करें । रूढ़ियों एवं संस्थाओं में असहयोग की स्थिति सामाजिक विघटन की स्थिति होती है। उदाहरण स्वरूप भारतीय वैवाहिक व्यवस्था को प्रस्तुत किया जा सकता है । एक और विवाह के लिए परम्परित रूढ़ियां हैं जिसके अन्तर्गत वर-वधू का सजातीय होना, वर की ओर से बारात लाना, पाणिग्रहण संस्कार आदि का सम्पन्न किया जाना अनिवार्य है, दूसरी ओर न्यायालय को विवाह सम्पन्न कराने की वैधता प्राप्त है। न्यायालय में होने वाले विवाह के लिए सजातीय होना, बारात लाना, पाणिग्रहण संस्कार करवाना आदि आवश्यक नहीं है। ऐसी स्थिति में लोग यह निर्णय करने में कठिनाई महसूस करते है कि वे दोनों में से किस व्यवस्था को अपनाएं । ऐसी दशा में दोनों का नियंत्रण शिथिल हो जाता है और मार्ग-दर्शन का अभाव हो जाता है। इस प्रकार रूढ़ियों और संस्थाओं का संघर्ष सामाजिक -विघटन का एक महत्वपूर्ण लक्षण है ।

## एक समिति के कार्यों का दूसरी को हस्तान्तरित किया जाना :-

प्रत्येक समाज में अनेक समितियां होती हैं। इन समितियों के एक निश्चित उद्देश्य एवं कार्य होते हैं । जब एक समिति के कार्यों में दूसरी समिति हस्तक्षेप

करने लगती है तो उसकी व्यवस्था में असंतुलन उत्पन्न हो जाता है,जो सामाजिक विघटन का पर्याय है । उदाहरण स्वरूप आज परिवार के अनेक कार्य राज्य, विद्यालय आदि अनेक समितियों ने ले लिया है जिसके फलस्वरूप भारतीय पारिवारिक जीवन असंतुलन की स्थिति में है। इस प्रकार एक समिति द्वारा दूसरी समिति के अधिकारों का हड़प लेना सामाजिक विघटन का एक प्रमुख लक्षण है ।

## व्यक्तिवाद की बाहुल्यता :-

जब व्यक्ति सम्माज के हितो की अपेक्षा वैयक्तिक हितो को विशेष महत्व देने लगता है तब सामाजिक विघटन की स्थिति उत्पन्न होना अवश्यम्भावी हो जाताहै क्योंकि "" यह व्यक्तिवाद अनेक प्रकार की समस्याओं को जन्म देकर अपराध की भी वृद्धि करता है जो सामाजिक विघटन का प्रत्यक्ष रूप है । "" ।

## एकमत्य का हास :-

जब समाज के अधिकांश सदस्यों का सामाजिक उद्देश्यों एवं समस्यों के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन हो जाता है तो वे अपने-अपने दृष्टिकोण से सोचने एवं विचारने लगते हैं । ऐसी स्थिति में सामाजिक समस्याएं सुलझने के बजाय उलझती चली जाती है। इस प्रकार लोगो द्वारा अलग-अलग मत प्रतिपादित करने के कारण समाज में तनाव एवं संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होने में देर नहीं लगती ।

## सामाजिक नियंत्रण के प्रभावों में कमी :-

सामाजिक नियंत्रण ही वह साधन है जिसके द्वारा समाज विभिन्न समितियों एवं समूहों के सदस्यों को इस प्रकार नियंत्रित रखते हैं कि वे दूसरों के कार्यों में बाधक न बने । जब सामाजिक नियंत्रण में कमी आ जाती है तो लोगें एक दूसरे के अधिकारों को हड़पने की कोशिश करते हैं और अपने स्वार्थों की पूर्ति में

---

** - [illegible] :- [illegible] शास्त्र पृ० सं० 344

मनमाने ढंग से लग जाते हैं । उदाहरणार्थ आधुनिक गतिशील समाज में बड़े-बड़े और शक्तिशाली स्वार्थ समूह इस प्रकार पनप गए हैं कि उन्हें प्रथा, परम्परागत धर्म या रूढ़ियों द्वारा नियंत्रित करना असम्भव हो गया है ।

## सामाजिक परिवर्तन की गति में तीव्रता :-

जब सामाजिक परिवर्तन की गति में बहुत तेजी आ जाती है तब भी समाज विघटित होने लगता है । इसका कारण यह है कि इन तीव्र परिवर्तनों के साथ व्यक्तियों एवं संस्थाओं के कार्यों एवं उद्देश्यों में उतनी शीघ्रता से परिवर्तन नहीं हो पाता है। इस प्रकार परिवर्तन के कारण उत्पन्न नवीन परिस्थितियों के अनुकूल व्यक्ति एवं संस्थाओं में परिवर्तन न होने के कारण सामाजिक विघटन प्रारम्भ हो जाता है ।

प्रसिद्ध समाजशास्त्री फेरिस ने औपचारिकता, पवित्र तत्वों का ह्रास, स्वार्थ और रुचियों में व्यक्तिभेद, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और अधिकारों पर बल देना, सुखवादी व्यवहार, जनसंख्या में विभिन्नता, पारस्परिक अविश्वास और अशान्तिपूर्ण घटनाओं को सामाजिक विघटन के लक्षण के रूप में स्वीकार किया है। ध्यान देने की बात है कि फेरिस के सामाजिक विघटन के सभी लक्षण उपर्युक्त शीर्षकों में समाहित है ।

---

1:- श्रीमती सरला दूबे :- सामाजिक विघटन पृष्ठ सं0 12
सरस्वती सदन 7 यू0 ए0 जवाहर नगर दिल्ली एवं मंसूरी, पृ0सं0 1971 ई0

सामाजिक विघटन के भेद :-

सामाजिक विघटन के अनेक रूप होते हैं , उन सबका कोई प्रमाणित वर्गीकरण नहीं प्रस्तुत किया जा सकता है । अध्ययन की सुविधा के लिए सामाजिक विघटन को वैयक्तिक विघटन, पारिवारिक विघटन, सामुदायिक विघट ,राष्ट्रीय विघटन ,अन्तर्राष्ट्रीय विघटन के रूप में विभक्त किया जा सकता है ।

वैयक्तिक -विघटन :-

व्यक्ति के जीवन संगठन के असंतुलन को वैयक्तिक -विघटन कहा जाता है। जीवन के संगठन के असंतुलन का तात्पर्य ऐसे व्यक्ति से है जो सामाजिक मान्यताओं, आदर्शों एवं मूल्यों के नियंत्रण में रहकर व्यक्तित्व में विकास करने के बजाय कुछ ऐसी आदतें और प्रवृत्तियां अपना लेता है जो समाज विरोधी होती है। इन विरोधी आदतों और मूल्यों की असंतुलनपूर्ण स्थिति का सामाजिक मूल्यों ,आदर्शों एवं मनोवृत्तियों से टक्कर होती है तो उसे वैयक्तिक-विघटन कहा जाता है ।

वास्तव में वैयक्तिक -विघटन को सामाजिक परिस्थितियों ,सामाजिक दृष्टिकोण और मान्यताओं के आधार पर ही समझा जाता है क्योंकि समाज अपने प्रत्येक सदस्य से यह अपेक्षा करता है कि वह उसके द्वारा निर्धारित मूल्यों ,आदर्शों एवं मान्यताओं के अनुसार चले । जब व्यक्ति अपने व्यक्तित्व एवं सामाजिक प्रतिमान में सामंजस्य नहीं स्थापित कर पाता तो व्यक्तित्व का संतुलित विकास नहीं हो पाता और वह स्थिति वैयक्तिक विघटन की होती है । श्री माउररने वैयक्तिक विघटन के विषय में कहा है । "" वैयक्तिक -विघटन व्यक्ति के उन आचरणों

का प्रतिनिधित्व करता है जो संस्कृति द्वारा स्वीकृत आदर्शों, नियमों से इतना अधिक भ्रष्ट हो जाता है कि इन्हें सामाजिक स्वीकृति नहीं मिलती है।"" । श्रीमती सरला दुबे के अनुसार " वैयक्तिक विघटन एक व्यक्तित्व की वह असंतुलित स्थिति है जिसमें कि व्यक्ति समाज द्वारा मान्यता प्राप्त व्यवहार प्रतिमान के प्रतिकूल कार्य करता है और सामाजिक दृष्टिकोण से अपने जीवन संगठन को भंग करता है। "" 2 शम्भूरत्न त्रिपाठी ने " समाजशास्त्रीयविश्वकोश में वैयक्ति विघटन की व्याख्या इस प्रकार किया है । " वैयक्ति विघटन में सामाजिक विघटन की तरह व्यक्ति समाज की परम्पराओं और रूढ़ियों को नहीं मानता है तथा समाज के अन्य व्यक्तियों केनियंत्रण को स्वीकार नहीं करता है। वह अस्थाई या स्थाई रूप से मानसिक पतन की उस अवस्था को व्यक्त करने लगता है जब उससे दूसरे व्यक्तियों की सम्पत्ति,जीवनहितों की रक्षा को खतरा पहुंचने लगता है। वह उस समय विघटित हो जाता है, जब वह गरीबी का शिकार उस सीमा तक हो जाता है, जहां वह सम्मानपूर्वक जीवन नहीं व्यतीत कर पाता है और दूसरों की दया-दान पर निर्भर रहना पड़ता है । वह उस समय भी विघटित हो जाता है,जब वह शरीर से हीन हो जाता है। जैसे :- आँख का न होना,पैर का न होना आदि । "" 3

---

1. ( All peraonal disorganization repressnts behavious which daviate from the culturally approved from to such an extant as to arouss aocial disapproval.)
E.R. Mowver:- Disorganization personal and social,page-72
C.J.B. Lippincett Co. Newyourk. Ed. 1942

2:- श्रीमती सरला दुबे:- सामाजिक विघटन, पृ0 सं0 39
सरस्वती सदन 7 यू॰ए॰ जवाहर नगर दिल्ली ,प्रथम संस्करण 1971 ई0

3:- शम्भूरत्न त्रिपाठी :- समाज शास्त्रीय विश्वकोश ,पृ0सं0 364
किताबघर परेड कानपुर संस्करण 1960 ई0 ।

प्रस्तुत परिभाषा वैयक्तिक विघटन के अर्थ को स्पष्ट करने में पूर्णत: सक्षम है ।

समाज में वैयक्तिक विघटन मुख्यत: अपराध, बालापराध, वेश्यावृत्ति, लैंगिक विकृति, मदिरापान, मानसिक निर्बलता, पागलपन, एवं आत्महत्या के रूप में प्रकट होता है ।

## वैयक्तिक विघटन के कारण :-

किसी समाज में वैयक्तिक विघटन के कारण निम्नलिखित हैं ।

### युद्ध :-

युद्ध वैयक्तिक विघटन के प्रमुख कारणों में से एक है। युद्ध की दशा में न जाने कितने लोगों की असामयिक मृत्यु हो जाती है, न जाने कितने लोग युद्ध स्थल में घायल होकर नाक ,कान,हाथ-पैर खो देते हैं, न जाने कितने मनुष्य युद्ध की भीषण विभीषिका के संत्रास से मानसिक संतुलन खो देते हैं । युद्ध काल में स्त्रियों के कार्यों में गुरुता आ जाती है, उन्हें परिवार से बाहर रहकर काम करना पड़ता है जिसके फलस्वरूप बच्चों पर से नियंत्रण समाप्त हो जाता है। समुचित देख-रेख के अभाव में बालापराध की संख्या में अतिवृद्धि हो जाती है। युद्ध- काल में मिलावट ,चोरबाजारी को भी बढ़ावा मिलता है। इस प्रकार युद्ध-काल में वैयक्तिक विघटन होने में देर नहीं लगता ।

### निर्धनता :-

निर्धनता वैयक्तिक विघटन का एक महत्वपूर्ण आर्थिक कारण है। निर्धन

के सदस्यों को आर्थिक कठिनाई के कारण रोता कलपता नहीं देखना चाहता, इससे बचने के लिए चोरी, डाकाजनी, जालसाजी आदिअपराध अपना लेता है। इसके अलावा कुछ निर्धन लड़कियां व स्त्रियां आर्थिक कठिनाई से मुक्ति के लिए चोरी छिपे वेश्यावृत्ति करती है। समाज के कुछ गरीब लोग आर्थिक कठिनाई से संत्रस्त परिवार को देखने से अच्छा आत्महत्या करना समझते हैं। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि निर्धनता के कारण समाज में वैक्तिक -विघटन को प्रश्रय मिलता है।

औद्योगिक अशान्ति :-

मिलों एवं कारखानों में होने वाली पड़ताल एवं तालाबन्दी के कारण औद्योगिक अशान्ति उत्पन्न हो जाती है। ऐसी स्थिति में श्रमिकों की आय का स्त्रोत बन्द हो जाता है, " इसीलए बहुत से श्रमिक बेकारी, गरीबी, ऋण ग्रस्ता आदि परिस्थितयों के बीच अपने को पाते हैं जिसके कारण वैयक्तिक-विघटन उत्पन्न हो सकता है।"" ।

बेरोजगारी :-

बेरोजगारी भी वैयक्तिक विघटन का एक आर्थिक कारण है। बेगारी की दशा में व्यक्ति के अन्दर असुरक्षा की भावना घर कर जाती है उसे अपना भविष्य अंधकारमय दिखलाई पड़ने लगता है तथा उसके सामने परिवार के भरण-पोषण की विकट समस्या आ जाती है। ऐसी निराशापूर्ण स्थिति में अर्थाभाव के कारण

---

1:- श्रीमती सरला दुबे :- सामाजिक विघटन, पृ0 सं0 47
सरस्वती सदन, 7 यू0 ए0 जवाहरनगर, दिल्ली 7 एवं मंसूरी, प्रथम संस्करण 1971।

परिवार के सदस्यों को तड़पते हुए देखने के बजाय चोरी ,डाका,जालसाजी करना अधिक श्रेयस्कर समझता है ।

## दोषपूर्ण शिक्षा व्यवस्था :-

दोषपूर्ण शिक्षा व्यवस्था भी वैयक्तिक विघटन का एक कारण है। दोषपूर्ण शिक्षानीति के कारण बच्चों में शिक्षा के प्रति अरुचि हो जाती है जिससे बच्चे कक्षाओं का बहिष्कार करने लगते हैं । कक्षा से भागने के बाद उनमें आवारागर्दी एवं अपराधी प्रवृत्ति जन्म लेती है। शिक्षकों में व्याप्त बेकारी का मुख्य कारण शिक्षा का जीविकार्जन से न जुड़ा होना एवं दोषपूर्ण होना है। जब शिक्षित व्यक्ति को रोजी-रोटी नहीं मिलती तब वह गैरकानूनी ढंग से पैसा पैदा करना प्रारम्भ कर देता है। शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त प्रान्तीयता,जातिवाद,पक्षपात,राजनीतिक संकीर्णता आदि ऐसे तत्व हैं जो बालक के व्यक्तित्व को गलत दिशा में मोड़ देते हैं ।

## परिवार :-

परिवार के सदस्यों के द्वारा बच्चों के प्रति आवश्यकता से अधिक लाड़-प्यार करने एवं उसके आने जाने पर कोई नियंत्रण न होने से वह गलत लोगों के चक्कर में पड़कर अपराध करना ,जुआ खेलना,वेश्यागमन आदि सीख लेता है " इसके अतिरिक्त परिवार अपने सदस्यों में धार्मिक अंधविश्वास ,प्रान्तीयता, जातीय घृणा ,वर्ग पक्षपात, व्यापार में बेइमानी ,राजनीति में भ्रष्टाचार आदि

से सम्बन्धित व्यवहार प्रतिमानों,मूल्यों और मनोवृत्तियों को विकसित कर सकता है जिससे वैयक्तिक विघटन हो सकता है । पारिवारिक कलह,अयोग्यताएं, नशा माता-पिता के बीच तनाव व संघर्ष आदि भी व्यक्ति के जीवन को विघटित कर देते हैं । "" ।

धर्म :-

प्राय: धर्म रूढ़िवादी होता है तथा लोगों में रूढ़िवादी भावनाओं ,विचारों मूल्यों और आदर्शों को भर सकता है जिससे व्यक्ति का अनुकूलन परिवर्तित परिस्थितियों से या प्रगतिवादी विचारों को रखने वाले अन्य लोगों से बिल्कुल ही न हो पाए । जब व्यक्ति रूढ़िवादिता के कारण बाहरी दुनिया से अनुकूलन करने में सफल नहीं होता तब उसका वैयक्तिक विघटन हो जाता है। "धर्म पाप की भावना नरक का भय,हीनता की भावना, अनुताप आदि को भी व्यक्तित्व में भर देता है जिससे मानसिक रोक उत्पन्न हो सकता है। धार्मिक भावनाओं के कारण कभी-कभी एक काम कर लेने के बाद व्यक्ति को इतना पश्चाताप होता है कि वह आत्महत्या कर लेता है । "" 2

आर्थिक संकट :-

लोगों के समक्ष आर्थिक संकट की स्थिति व्यवसाय में हानि, नौकरी छूट जाने, बेकारी,दीवाला निकल जाने के कारण उत्पन्न होता है। इस प्रकार बड़ी मात्रा में आर्थिक हानि के कारण नुकसान उठाने वाले व्यक्ति का मानसिक

---

1:- श्रीमती सरलादुबे : सामाजिक विघटन पृ0 सं0 44-45

सरस्वती सदन 7 यू0 ए0 जवाहर नगर दिल्ली एवं मंसूरी प्रथम संस्करण 1971ई0।

2:- वही :- पृ0 सं0 , 45

संतुलन नष्ट हो जाता है और वह व्यक्ति आत्महत्या तक कर सकता है आर्थिक संकट से ग्रस्त उद्योगपति के यहां कार्यरत अनेक श्रमिकों को जीविका से हांथ धोना पड़ता है । " आर्थिक संकट नाना-प्रकार के भय, चिंताएं,कष्ट आदि को उत्पन्न करता है जिसके कारण भी वैयक्तिक विघटन हो सकता है । " ।

समाचार पत्र :-

समाचार पत्रों में चोरी,जालसाजी, डकैती आदि विभिन्न अपराध प्रकाशित होते रहते हैं। समाज के कुछ लोग समाचार पत्रों में प्रकाशित अपराधों के सूक्ष्म विश्लेषण के आधार पर अपराध करने की नई-नई प्रविधियां ईजाद कर लेते हैं । इस प्रकार हम देखते हैं कि वैयक्तिक -विघटन उत्पन्न करने में कभी-कभी समाचार पत्र भी सहायक होता है ।

गन्दी बस्तियां :-

वैयक्तिक विघटन उत्पन्न करने में गंदी का महत्वपूर्ण हांथ होता है । इन बस्तियों में रहने वाले लोग नाना प्रकार के रोगों से ग्रसित होते हैं जिसके कारण उनके व्यक्तित्व का संतुलित विकास असम्भव सा होता है । बीमारी के कारण उसकी कार्यकुशलता घट जाती है जिसके कारण उसे कभी भी नौकरी से निकाला जा सकता है। नौकरी से निकाल दिए जाने पर उनके आय का स्त्रोत बन्द हो जाता है जिसकी वजह से वे अपराध की ओर अग्रसर होते हैं यही कारण है कि गंदी बस्तियों में चोरी, मद्यपान ,वेश्यावृत्ति आदि सामाजिक अपराधों का बोलबाला होता है ।

---

1:- श्रीमती सरला दुबे :- सामाजिक विघटन, पृ0 सं0 46
सरस्वती सदन 7 ए0 ए0 जवाहरनगर दिल्ली एवं मंसूरी ,प्र0 संस्करण 1971ई0।

सिनेमा :-

सिनेमा में प्रदर्शित नाना प्रकार के अपराध आसानी से पैसा पैदा करने के नाजायज तरीके एवं विलासितापूर्ण जीवन ,समाज के कुछ लोगों को अपराधोन्मुख बनाता है । सिनेमा में प्रदर्शित रोमांसपूर्ण काल्पनिक जीवन को व्यवहारिक जीवन में न पाकर ऐसा व्यक्ति कल्पनालोक में विचरण करता है तथा निराश कुंठा,समाज से पलायन की ओर अग्रसर होता है। किसी व्यक्ति की उपर्युक्त दशा उसके वैयक्तिक विघटन की सूचक है ।

जनसंख्या की आधिक्यता :-

किसी देश की जनसंख्या की अतिवृद्धि भी वहां के समाज में होने वाले वैयक्तिक विघटन को प्रोत्साहित करती है क्योंकि जनसंख्या के बढ़ जाने से प्रति व्यक्ति आय घट जाती है ,नौकरी एवं व्यवसाय में लोगों की अधिकता के कारण बेकारी एवं निर्धनता की मात्रा बढ़ जाती है जिसकी वजह से भी वैयक्तिक विघटन को प्रोत्साहन मिलता है ।

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर हम कह सकते हैं कि वे वैयक्तिक विघटन के अनेक कारण हो सकते हैं । " परन्तु इस सम्बन्ध में यह स्मरणीय है कि किसी भी एक कारण से वैयक्तिक विघटन घटित नहीं होता है और न ही प्रत्येक कारण व्यक्ति को यदि एक कारण अधिक प्रभावित करता है तो दूसरे व्यक्ति पर हो सकता है कि अन्य किसी कारण का प्रभाव अधिक हो । " ।

---

1:- श्रीमती सरला दुबे :- सामाजिक विघटन पृ0 सं0 48
सरस्वती सदन,जवाहर नगर दिल्ली एवं मंसूरी ,प्रथम संस्करण 1977 ई0 ।

## पारिवारिक -विघटन :-

परिवार में हर सदस्य का एक विशेष पद होता है और उससे उसके पद के अनुरुप कुछ विशेष दायित्व निबाहने की अपेक्षा की जाती है । इस प्रकार परिवार के सभी सदस्यों में उनके पदों औरकार्यों का एक संतुलित ढंग से विभाजन रहता है। इसके अलावा परिवार के लिए त्याग की भावना, विचार-विनिमय, आय का आवश्यकतानुसार वितरण, नैतिक मान्यताओं में विश्वास, गृहपति के आदेशों का पालन अन्य विशेष महत्वपूर्ण तत्व हैं जो एक परिवार के संगठन में सहायक होते हैं । जब उपर्युक्त व्यवस्था में व्यवधान उत्पन्न हो जाता है और परिवार में अव्यवस्था, अशांति एवं पारस्परिक नियन्त्रण में कमी आ जाती है तब उस परिवार को विघटित परिवार कहा जाता है। इलियट और मैरिल के अनुसार व्यापक अर्थ में पारिवारिक विघटन को विभिन्न तरह के परिवार के किसी न किसी प्रकार के प्रकार्यात्मक असंतुलन के रुप में सोचा जा सकता है । इस तरह पारिवारिक विघटन के अन्तर्गत मात्र पति-पत्नी के बीच पाये जाने वाले तनावों का ही नहीं, बल्कि माता-पित व बच्चों की बीच पाये जाने वाले तनावों को भी सम्मिलित किया जा सकता है । " ।

---

( In the broad senese family disorganization may be thought to include any ahort of nonhormonious function with in any of the several types of family. Family disorganizaion might thous be prosumed to comprise not only the tanaions between husband and wife but those arising batween childeen and parents as well.)

M.A. Ellfott and F.E. Marrill:- Social Disorganizatéon ,page-332 Happer and Sros , Newyork 1950

मार्टिन न्यूमेयर के अनुसार " परिवारिक विघटन का अर्थ परिवार के सदस्यों में मतैक्य एवं निष्ठा का टूट जाना, अथवा बहुधा पूर्व के सम्बन्धों का टूट जाना, पारिवारिक चेतना का समापन अथवा पृथकता में विश्वास हो जाना है । " ।

शम्भूरत्न त्रिपाठी के अनुसार " पारिवारिक विघटन उस समय होता है जब परिवार में पति -पत्नी अपने पारस्परिक उत्तरदायित्वों को सम्पन्न नहीं करते हैं तथा बच्चों के पालन-पोषण का कार्य नहीं किया जाता है । ...2

पारिवारिक विघटन की उपर्युक्त परिभाषाओं से ज्ञात होता है कि पारिवारिक विघटन का अर्थ परिवार में किसी भी सदस्य के आपसी सम्बन्धों का टूट जाना है । यह सम्बन्ध मात्र पति-पत्नी तक सीमित नहीं है, अपितु इसके अन्तर्गत बच्चों के संबंध भी आते हैं । इसके अतिरिक्त किसी परिवार में मतैक्य का अभाव ,पारिवारिक निष्ठा का अभाव भी पारिवारिक विघटन को व्यक्त करता है। " अधिकतर व्यक्तियों का विचार है कि पारिवारिक -विघटन का रूप पृथकता ,पति या पत्नी को छोड़ देना, विवाह-विच्छेद ,सहायता करने में असफल तथा शारीरिक उत्पीड़न आदि के रूप में देखने को मिलता है। वास्तव में यह कारण स्वयं में

---

• (Family disorganization means the break- down of consonsus and loyalty after the disruption of previous existing relation ship or the leas of family consiciousness and the development of detachmant. )

Martin Newmever:- Social broblame and the changing society D.Van Nastr and co. Newyorke , 1953

2- शम्भुरत्न त्रिपाठी :- समाजशास्त्री विश्वकोश, पृ0 सं0 -384 किताबघर प्रेस कानपुर, संस्करण 1980 ई0

महत्वपूर्ण है लेकिन परिवार को आवश्यक रूप से विघटित नहीं करते । ऐसे बहुत से परिवार देखने को मिलेंगे जो आंतरिक रूप से पूर्णतया विघटित हैं लेकिन इनमें उपर्युक्त परिस्थितियां देखने को नहीं मिलेंगी ।"1 अतः इस सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि पारिवारिक विघटन का का अर्थ पारिवारिक सम्बन्धों के नियंत्रण में कमी एवं परिवार के सदस्यों में ऐक्य का समाप्त हो जाना है ।

पारिवारिक विघटन के कारण :-

" परिवार एक सर्वव्यापी संस्था है । प्रत्येक समाज में इसके द्वारा समाज की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति होने के बाद भी समाजों में इसका रूप एक जैसा नहीं होता। यही कारण है कि परिवार को विघटित करने वाले कारकों की भी कोई सामान्य सूची नहीं बनाई जा सकती " 2 चूंकि विभिन्न समाजों की पारिवारिक व्यवस्था भिन्न -भिन्न होती है जिसकी वजह से विभिन्न प्रकार के समाजों के पारिवारिक विघटन के कारण भी पृथक -पृथक हो सकते हैं । उदाहरण के तौर पर भारत की सामान्य स्त्रियों के परिवार सम्बन्धी दृष्टिकोण को लिया जा सकता है। इस सम्बन्ध में डा0 गोपाल कृष्ण अग्रवाल का यह कथन सत्य प्रतीत होता है कि " भारत वर्ष में स्त्रियों का हजारों वर्षों से शोषण होते रहने के कारण वे मानसिक रूप से इतनी दुर्बल बन गई हैं कि पति के बड़े से बड़े अत्याचार भी परिवार को बहुत कम विघटित कर पाते हैं जबकि

---

1:- डा0 गोपाल कृष्ण अग्रवाल :- समाजशास्त्र पृ0 सं0 313
संस्करण 1980 एसबुक्स आगरा - 2

2:- वही - पृ0 सं0 314

पश्चिमी देशों में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियां अधिक अधिकारों की आकांक्षा करती है और उनके प्राप्त न होने की स्थिति में अक्सर पारिवारिक विघटन की समस्या उत्पन्न हो जाती है। " ।

प्रसिद्ध समाज शास्त्री कूपर ने पारिवारिक तनावों को पारिवारिक विघटन के प्रमुख कारण के रूप में स्वीकार किया जो उनके परिस्थितियों से उत्पन्न हो सकते है। ये परिस्थितियां इस प्रकार हैं । परिवार के सदस्यों में सामूहिक उद्देश्यों की एकता का समाप्त हो जाना, वैयक्तिक स्वार्थो में अतिवृद्धि ,पारस्परिक सहयोग का अभाव ,पारस्परिक सेवाओं का अवरुद्ध होना,परिवार का अन्य सामाजिक समूहों से सम्बन्ध विच्छेद,पति-पत्नी के सम्बन्धों में स्नेह मधुरता पारस्परिक विश्वास जैसी विशेषताओं का अभाव पति-पत्नी के प्रति पारस्परिक संवेगात्मक उदासीनता है ।

प्रसिद्ध समाजशास्त्री इलियट और मैरिल ने भी पारिवारिक विघटन के कारणों का विवेचन किया है इनके द्वारा बताये गये कारणों को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है ।

1- समाज की संरचना में परिवर्तन

2- परिवार के कार्यों में परिवर्तन

3- वैयक्तिक तथा समाजिक तनाव ।

उपर्युक्त कारणों के आधार पर पारिवारिक विघटनों के कारणों का स्पष्ट एवं सुव्यवस्थित व्याख्याकी जा सकती है।

समाजिक संरचना में परिवर्तन :-

डा0 गोपाल कृष्ण अग्रवाल के अनुसार " सामाजिक ढांचे का निर्माण उन बहुत सी स्थितियों और कार्यों से होता है जिनके अनुसार व्यक्ति एक दूसरे से अपने सम्बन्धों की स्थापना करते हैं। व्यक्ति की परिस्थिति तथा

1:- डा0 गोपाल कृष्ण अग्रवाल :- सामाजिक विघटन पृ0 सं0 81
चतुर्थ संस्करण 1984 ओम प्रिंटिग प्रेस, पंचकुइयां आगरा -2

भूमिकाओं में अनिश्चितता उत्पन्न होने से सामाजिक संरचना परिवर्तित होने लगती है। यही स्थिति पारिवारिक विघटन का प्रमुख कारण है। " । वर्तमान सामाजिक संरचना में यह परिवर्तन स्त्री ,पुरुष द्वारा किये जाने वाले कार्यों में बहुलता,उनके द्वारा किये जाने वाले कार्यों के प्रति असंतोष, विभिन्न भूमिकाओं के मध्य संघर्ष के रूप में दृष्टिगोचर होता है। उपर्युक्त दशायें परिवार में अशान्ति एवं अव्यवस्था उत्पन्न करने में सक्रिय योगदान देती है। इस प्रकार परिवार में उपर्युक्त कारणों से उत्पन्न अशान्ति एवं अव्यवस्था पारिवारिक विघटन को सूचित करती है ।

परिवार के कार्यों में परिवर्तन :-

" आज परिवार के सभी महत्वपूर्ण कार्य अन्य स्थानों और संघो को हस्तान्तरित हो जाने के कारण परिवार को एक उपयोगी संस्था के रूप में नहीं देखा जाता । इसका परिणाम यह हुआ कि एक बड़ी संख्या में व्यक्ति परिवार को केवल उपभोग की इकाई के रूप में देखने लगे । राज्य शिक्षण संस्थाओं और धार्मिक संघों द्वारा अधिकतम सुविधायें प्राप्त होने के कारण परिवार के प्रति व्यक्ति की निष्ठा बहुत कम हो गयी और इस प्रकार पारिवारिक सम्बन्धों में दिखावा उत्पन्न हो गया परिवार में व्यक्तिवादिता बढ़ने से वैवाहिक सम्बन्धों की स्थिरता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा तथा सदस्यों द्वारा निजी सफलताओं को अधिक महत्व दिया जाने लगा। " 2 उपर्युक्त परिस्थितियों में उत्पन्न पति-पत्नी के मध्य दिखावा,पारस्परिक मतविभिन्नता पारिवारिक अलगाव अथवा व्यक्तिवादी भावनाओं का दुराग्रह उनके पारिवारिक विघटन की ओर संकेत करता है ।

1- डा0 गोपाल कृष्ण अग्रवाल :- सामाजिक विघटन पृ0 सं0 82
संस्करण 1984 ,ओमप्रिंटिंग प्रेस, पचकुइयां आगरा - 2

2:- वही पृ0 सं0 - 8 3

वैयक्तिक तनाव :-

वैयक्तिक तनावों को प्राथमिक तनाव भी कहा जा सकता है क्योंकि ये तनाव प्राथमिक रूप से पति-पत्नी की व्यक्तिगत सम्बन्धी विशेषताओं से उत्पन्न होता है। " 1 इस प्रकार वैयक्तिक तनाव उत्पन्न करने में व्यक्ति के स्वभाव सम्बन्धी कारणों की प्रमुख भूमिका होती है। असुखी परिवार के प्रति पत्नी के स्वभाव के सम्बन्ध में प्रसिद्ध समाज शास्त्री टरमन का कथन सत्य प्रतीत होता है। " वे {पति-पत्नी} बहुत भावुक और उद्वेगात्मक होते हैं। सरलता से क्रोधित हो जाते हैं,अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए सदैव झगड़ालू प्रकृति के हो सकते हैं,दूसरे व्यक्तियों की आलोचना में सुख का अनुभव करते हैं। अन्य व्यक्तियों की भावना पर ध्यान नहीं देते, स्वभाव से ही व्यक्तियों से शत्रुता रखते हैं , दूसरे के प्रति घृणा के भाव को शीघ्र ही प्रदर्शित करने लगते हैं, किसी के द्वारा प्रशंसा करने अथवा आरोप लगाने पर शीघ्र ही प्रभावित हो जाते हैं,इनमें आत्म-विश्वास की कमी होती है, शीघ्र ही बहकावे में आ जाते हैं और अकारण शीघ्र ही प्रसन्न अथवा रूष्ट हो जाते हैं।" 2 ऐसी दशा में जब किसी परिवार में स्त्री-पुरूष परस्पर विरोधी स्वभाव के होते हैं तो उनके मध्य पारिवारिक विघटन का होना अवश्यम्भावी हो जाती है ।

किसी-किसी परिवार में पति-पत्नी के सामाजिक मूल्य पारस्परिक विभिन्नता लिए होते हैं जिससे उनमें सामाजिक

---

1:- डा0 गोपाल कृष्ण अग्रवाल :- सामाजिक विघटन चतुर्थ संस्करण 1984 पृ0सं0 84

2. L.M. Tereman, psycholojical Factores in Majeital- Happiness

Page. 369

मूल्यों को लेकर मतभेद उत्पन्न हो जाता है । प्राय: यह मतभेद पति-पत्नी सम्पत्ति,मनोरंजन,धर्मगत सामाजिक शिष्टता को लेकर उत्पन्न हो सकता है जो कालान्तर में परिवार को विघटित कर देता है ।

" परिवार का जन्म ही व्यवस्थित यौन इच्छाओं की पूर्ति के लिए हुआ था । "[1] । जब कभी भी किन्हीं कारणों से पति-पत्नी के मध्य यौनेच्छा की पूर्ति में व्यवधान उत्पन्न होता है,तो पारिवारिक विघटन हो जाता है । पारिवारिक विघटन के लिए असामंजस्यपूर्ण विवाह कम उत्तरदायित्व नहीं हैं। इसके अन्तर्गत,अनमेल विवाह रोमान्टिक विवाह,अन्तरजातीय विवाह भी आते है जो बहुधा पारिवारिक व्यवस्था को विघटित कर देते हैं ।

कुछ स्त्री-पुरुष मानसिक रुग्णता के शिकार होते हैं । इस प्रकार के स्त्री पुरुष को उनके क्रूर अमानवीय,घृणास्पद व्यवहारों को करने में संकोच नहीं करते । ऐसे स्त्री पुरुष परस्पर अपमानजनक शब्दों का प्रयोग करते हैं,साथ ही साथ एक दूसरे को घृणा एवं संदेह की दृष्टि से देखते हैं। उनका इस प्रकार का दृष्टिकोण उनके पारिवारिक विघटन का सूचक है। इसके अतिरिक्त पति-पत्नी के मध्य, सास-ससुर,देवर ज्येष्ठ का हस्ताक्षेप ,दुर्बलस्वास्थ्य, अवस्था-भेद,परिवार में बच्चों का न होना ,परिवार में बच्चों की अधिक संख्या आदि भी कभी-कभी परिवार को विघटित करने में सक्रिय भूमिका निवाहते हैं ।

सामाजिक तनाव :-

पति -पत्नी की सामाजिक स्थिति में भिन्नता होने पर सामाजिक तनाव उत्पन्न होते है। विवाह से पूर्व पति पत्नी की अपने समूह में एक विशेष स्थिति होती है जिसमें

---

1:- किरन बेदेल :- सामाजिक विघटन और अपराध शास्त्र ,द्वितीय संस्करण 1982 पृ0 सं0 114

विवाह के पश्चात परिवर्तन आ जाता है। यह परिवर्तन उच्च,मध्यम व निम्न सभी वर्गों में दृष्टिगोचर होता है । उच्चवर्ग दो प्रकार के होते हैं - पुराने और नये । जब पुराने उच्च परिवार अपनी परम्परित सामाजिक स्तर को बनाये रखने का भरसक प्रयास करते हैं तथा नये उच्च परिवार अपने को पुराने उच्च परिवारों की तुलना में श्रेष्ठ कहलाने की होड़ में लगे रहते हैं । ऐसी दशा में उच्च परिवारों में दिखावा,एवं वैयक्तिक स्वार्थों की अधिकता होती है जिसके कारण इस प्रकार के परिवारों में हुए वैवाहिक सम्बन्ध तिक्तता-पूर्ण हो सकते हैं। इस तथ्य को इस उदाहरण से समझाया जा सकता है कि एक उच्च परिवार की लड़की,निर्व्यसन, मितव्ययी श्वसुर को कंजूस कह सकती है ।

म

मध्यम वर्ग के सदस्यों में उच्च वर्ग के समान व्यवहार प्रदर्शित करने की प्रेरणा सर्वाधिक होती है। ऐसे वर्ग के कुछ सदस्य अपने को उच्च वर्ग के लोगों के स्तर को प्राप्त करने के लिए अपनी आय से अधिक व्यय करते हैं तथा दिखावे के चक्कर में पड़ जाते हैं तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्णता में असफल होने पर कुंठा,घुटन, निराशा के शिकार हो जाते हैं। उनकी यह निराशा पूर्ण स्थिति उनके पारिवारिक विघटन का कारण बनती है ।

निम्न वर्ग के लोगो की आर्थिक एवं सामाजिक दोनों स्थितियां ~~उत्पन्न~~ खराब होती हैं। इन्हें प्राय: विकास के अवसर भी नहीं मिल पाते हैं फलत: "इस वर्ग के व्यक्तियों में आर्थिक एवं मानसिक असुरक्षा की भावना तीव्र रहती है" दिन प्रतिदिन के पारिवारिक झगड़े,जुआ खेलने का स्वभाव,सस्ते मादक द्रव्यों का प्रयोग तथा स्त्रियों का शोषण इस वर्ग की सामान्य विशेषताएं होती हैं । बच्चों को शारीरिक दण्ड देने के कारण वे कभी कभी क्रूर हो जाते हैं । ये सभी परिस्थितियां सदस्यों में मानसिक तनाव उत्पन्न करके परिवार को विघटित करती है ।

आर्थिक तनाव :-

आर्थिक तनाव पारिवारिक विघटन का एक प्रमुख कारण है। " 2 आर्थिक तनाव निर्धनता, बेरोजगारी पत्नी की आर्थिक स्वंतत्रता, पत्नी की आर्थिक पराश्रयिता, के कारण मुख्य रूप से उत्पन्न होता है ।

निर्धन व्यक्ति पत्नी की ~~आवश्यकताओं~~ आवश्यकताओं को पूर्ण करने में असमर्थ होता है। इस असमर्थता के कारण पत्नी कालान्तर में पति को अयोग्य समझने लगती है तथा परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए घर से बाहर निकलने का प्रयत्न करती है । बहुधा ऐसी दशाओं में पति-पत्नी के मध्य आपसी तनाव उत्पन्न हो जाना स्वाभाविक है । बेरोजगारी निर्धनता की जननी है। फलत: बेरोजगारी की दशा में भी पति-पत्नी के मध्य तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता उसके मन में स्वंतत्र विचार उत्पन्न करते हैं और वह घर में पुरूष के साथ सहानुभूति -सहभागिता चाहने लगती है । " यद्यपि यह उचित हैं, लेकिन हमारे जैसे समाज में पुरूष के अंह और परम्परावादी स्वभाव के कारण घर की शान्ति में बाधा पड़ती है और कभी-कभी परिवार का विघटन हो जाता है । " 3

प्राय: सभी स्त्रियां कुछ सीमा तक आर्थिक स्वंतत्रा चाहती हैं । यह स्वंतत्रा उन स्त्रियों में अधिक प्रबल होती है, जिनका परिवार आर्थिक तंगी से

---

1:- डा० गोपाल कृष्ण अग्रवाल :- सामाजिक विघटन पृ० सं० 87
चतुर्थ संस्करण 1984 ,ओम प्रिटिंग प्रेस पचकुइयां आगरा - 2

2:- वही :- पृ० सं० 87

3:- वही :- पृ० सं० 88

गुजरता हुआ होता है । तथा वे सुशिक्षित होती है तथा नौकरी आदि करके आय में अच्छी खासी वृद्धि कर सकती हैं । फलत: वे घर से बाहर निकल कर काम करना चाहती हैं जिसमें पति द्वारा अवरोध उत्पन्न हो सकता है। इस परिप्रेक्ष्य में डा० गोपाल कृष्ण अग्रवाल का यह कथन सत्य प्रतीत होता है कि " भारत में शिक्षित स्त्रियों की आर्थिक पराश्रयिता आज बहुत बड़ी सीमा तक उनके पारिवारिक विघटन का कारण बन गया है । " ।

व्यवसायिक तनाव :-
==============

कतिपय व्यवसायों की प्रकृति स्वत: इस प्रकार की होती है कि उनके परिणामस्वरूप पारिवारिक तनावों में वृद्धि होती है । बहुत से व्यक्तियों में व्यवसायिक तनाव सम्बन्धित व्यवसाय करने में रुचि के अभाव के कारण उत्पन्न हो जाताहै। कहने का तात्पर्य यह है कि जब व्यक्ति अपने स्वभाव एवं योग्यता के अनुरूप जीविकार्जन का साधन नहीं प्राप्त कर पाता बल्कि जीविकार्जन के लिए उसे अपनी रुचि के प्रतिकूल व्यवसाय करना पड़ता है तब आर्थिक रूप से सफल होते हुए भी मानसिक रूप उसकी स्थिति तनाव पूर्ण होती है। " ऐसे व्यक्ति अक्सर विवाह को इन परिस्थितियों का कारण मान लेते हैं और फलस्वरूप पारिवारिक स्नेह की कमी विघटन की स्थिति उत्पन्न कर देती है । " 2

कुछ व्यवसाय इतने अस्थायी होते हैं कि उक्त व्यवसाय से सम्बन्धित व्यक्ति के मन में उस व्यवसाय के प्रति सदैव असुरक्षा की भावना बनी रहती है ।

==============================================

1- डा० गोपाल कृष्ण अग्रवाल :- सामाजिक विघटन पृ० सं० 94
चतुर्थ संस्करण 1984 ओम प्रिंटिंग प्रेस, पंचकुइयां आगरा -2

2:- वही :- पृ० सं० 88

सामुदायिक विघटन :-
================

सामुदायिक विघटन को पारिभाषित के पूर्व सामुदायिक विघटन और सामाजिक विघटन में अन्तर पर प्रकाश डालना आवश्यक है। " वास्तव में सामाजिक विघटन का प्रयोग साधारण अर्थों में होता है जिससे यह समझा जाता है कि किसी भी समाज का विघटन आ गया है। :-इसका संगठन अब प्रभावकारी नहीं रह गया है । सामुदायिक विघटन का विचार कुछ सीमित होता है। इसमें यह अर्थ निकलता है कि किसी समुदाय विशेष में विघटन है । " । समुदाय का निर्माण मुख्यत: भौगोलिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनों पक्षों के आधार पर होता है । भौगोलिक अर्थ में एक सीमित क्षेत्र में साथ-साथ रहने वाले व्यक्तियों का समूह और संस्थाएं जैसे: जिले विशेष के निवासी एवं संस्थाएं । मनोवैज्ञानिक अर्थ के अन्तर्गत वे तत्व आते हैं जो किसी समुदाय को एक गतिशील इकाई का रूप देते हैं ।

=================================================

1:- जी0 आर0 मदन :- भारतीय सामाजिक समस्याएं पृ0 सं0- 299
प्रथम भाग ,सरस्वती सदन,7 यू0पी0 जवाहर नगर दिल्ली,संस्करण 1969 ई0

समुदाय के लिए ये दोनों तत्व आवश्यक हैं क्योंकि " समुदाय एक ऐसा समूह है जिसकी भौतिक सीमाएं होती हैं और एक ऐसा मनोवैज्ञानिक सूत्र होता है जिससे सभी सदस्य बंधे होते हैं । " । समाज में समुदायों का अतिब्यापक विस्तार है,परिवार,जिला,राज्य,देश एवं विश्व । फिर भी समाज में छोटे समुदाओं का कम महत्व नहीं है । अत: सामुदायिक विघटन की विवेचना में ब्यक्ति,परिवार,सामाजिक संगठनों,संगठित संस्थाओं आदि पर भी ध्यान रखना पड़ता है क्योंकि सामाजिक ढांचे में ये समुदाय एक अभूतपूर्व ढंग से गुंथे होते हैं । सामुदायिक विघटन एक सापेक्षिक धारणा है क्योंकि प्रत्येक समुदाय में कुछ न कुछ अपूर्णता रह ही जाती है । इसी प्रकार कोई समुदाय पूर्णरूप से विघटित भी नहीं होता । ईलियट और मैरिल ने सामुदायिक विघटन की परिभाषा इस प्रकार दी है । " सामुदायिक विघटन एक जटिल प्रक्रिया है जिसके द्वारा ऐसे सभी समूहों, संस्थाओं एवं ऐच्छिक समितियां आंशिक या पूर्णरूप से टूट जाती है जिसकी एकीकृत गतिविधियां समुदाय की अन्त क्रियाओं के लिए उत्तरदायी होती है। " 2

==========================================================

1. Elliot and Earrill:- Social Disorganization, Page 473 Harper and Brae, Newyork, 1950
2. ( the disorganization of partial or complete breakdown of the groups, institutions and voluntary associations whose combined activities make up community interaction'') Elliot and Merrill:- Social disorganization page 463 Harbar and Bros, Newyork, 1950

शम्भूरत्न त्रिपाठी के अनुसार :- समुदाय को उस समय विघटित मान सकते हैं, जब यह उस बृहद् समुदाय, जिसका यह अंग होता है, के प्रतिबन्धों और सामाजिक नियंत्रणों की विधियों को मानता नहीं है। ऐसे समुदाय संगठित रूप में अपराध, गिरोहबन्दी को विकसित कर लेते हैं तथा अनैतिकता, गरीबी और पतन का जीवन स्वीकार कर लेते हैं। "" ।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि समाज का जब किसी समुदाय विशेष पर रहने वाला नियंत्रण अप्रभावी हो जाता है तथा वह समुदाय विशेष, समाज के उद्देश्यों के अनुरूप न चलकर निज के स्वार्थों के लिए सामाजिक मान्यताओं का उल्लंघन कर देता है तथा समुदाय में असंतुलन उत्पन्न हो जाता है तब उस स्थिति को सामुदायिक विघटन कहा जाता है।

## सामुदायिक-विघटन के कारण :-

संक्षेप में सामुदायिक विघटन के कारण निम्नलिखित हैं।

## सामुदायिक विघटन और विघटन :-

समाज में प्रत्येक समुदाय का निर्माण कुछ निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता है। जब तक व्यक्ति समुदाय में रहकर व्यक्तिगत हितों एवं स्वार्थों का सामुदायिक हितों एवं स्वार्थों के लिए उत्सर्ग करता रहता है।

---

1:- शम्भूरत्न त्रिपाठी :- समाज शास्त्रीय विश्व कोश, पृ0 सं0 364
किताबघर, परेड कानपुर, संस्करण 1980 ई0

तब तक समुदाय संगठित रहता है । लेकिन जब व्यक्ति समुदाय के हितों के बजाय वैयक्तिक स्वार्थों को अधिक महत्व देने लगता है तथा समुदाय का उपयोग वैयक्तिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए करने लगता है तो समुदाय का विघटन अवश्यम्भावी हो जाता है । प्रत्यक्ष रूप में सामुदायिक विघटन समूह के सदस्यों द्वारा सामुदायिक क्रियाओं में भाग लेने की मात्रा पर निर्भर करता है । उदाहरण के तौर पर देश में होने वाले नेताओं के चुनाव को प्रस्तुत किया जा सकता है । कुछ लोग इन चुनाओं में वोट डालने के अधिकार भी उपयोग नहीं करते जिसके कारण पेशेवर राजनीतिज्ञों के जीतने की एवं राज्य संचालन में उनके हस्ताक्षेप की सम्भावना बहुत बढ़ जाती है। ऐसी दशा में व्यक्तिगत हितों में वृद्धि स्वाभाविक है जिसका परिणाम विघटन होता है ।

## सामाजिक संस्थाएं और विघटन :-

सामाजिक पृष्ठभूमि में विभिन्न संस्थाएं एक दूसरे से सम्बन्धित होती हैं। सामाजिक संस्थाओं द्वारा विभिन्न सामाजिक स्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार को एक दिशा निर्देश मिलता है । जब रीति-रिवाज और संस्करण लक्ष्य प्राप्ति के साधन न रहकर स्वयं लक्ष्य बन जाते है तो सामुदायिक विघटन प्रारम्भ हो जाता है । सामाजिक संस्थाएं प्रमुख रूप से परिवर्तन का विरोध करती है जिसके कारण कभी-कभी उनका अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाता है। कोई भी संस्था अपने कार्यों एवं विधियों में होने वाले थोड़े से परिवर्तन का भी घोर विरोध करती है । ऐसी दशा में संस्थाएं परिवर्तन की गति से सामंजस्य स्थापित करने में असमर्थ होती हैं । इलियट और मैरिल ने इस दशा को सामाजिक विलम्बना की संज्ञा से सम्बोधित किया है जिसका परिणाम विघटन होगा । किसी संस्था द्वारा परिवर्तन को स्वीकार कर लेने पर भी उस समूह के सदस्यों द्वारा उसको मान्यता नहीं मिल पाती क्योंकि मनुष्य अपनी प्रकृति के अनुरूप विश्वासों आदर्शों एवं आदतों में और सामान्य व्यवहार प्रणाली में आसानी से किसी प्रकार के परिवर्तन को स्वीकार करना नहीं चाहता ।

संस्थाओं में शीर्षस्थ पदों पर आसीन व्यक्ति अपने पद एवं स्वार्थ की सुरक्षा के लिए संस्थाओं की व्यवस्था में जान बूझकर किसी प्रकार का सामाजिक परिवर्तन नहीं चाहते क्योंकि इस प्रकार के परिवर्तन से उनके पद अथवा अधिकार में कमी आ सकती है। आत्मनिहित स्वार्थों की यह प्रवृत्ति भारत की आर्थिक संस्थाओं में देखने को मिलता है । भारत में खाद्य पदार्थों, औषधियों और अन्य वस्तुओं में मिलावट तथा नकलीपन का कारण आत्मनिहित स्वार्थ है जिसके कारण प्रति वर्ष न जाने कितनी जाने जाती है। जनसाधारण का व्यवहार संस्थाओं से प्रेरित और नियंत्रित होता है। यदि संस्थाएं अपने कार्यों को भली प्रकार नहीं कर रही हैं । तो वह साथ-साथ सामुदायिक असंतुलन भी प्रतिबिम्बित कर रही होती हैं । " ।

सामुदायिक कार्यों का बाहरी संस्थाओं द्वारा हस्तान्तरण :-

औद्योगीकरण के कारण समाज के विभिन्न समुदायों में पर निर्भरता की प्रवृत्ति बढ़ी है जिसके कारण स्थानीय समुदायों के अनेक कार्य स्वयं राज्य ने अपने हाथ में ले लिया है । समुदाय के कार्यों के हस्तान्तरण के कारण आधुनिक सामाजिक व्यवस्था में एकतित्वीय समुदाय का अस्तित्व असम्भव हो गया है ।

---

1:- विश्वामित्र :- सामाजिक विघटन - पृष्ठ संख्या 78
केदारनाथ , रामनाथ मेरठ ।

स्थानान्तरण और विघटन :-

प्राय: स्थानान्तरित होने वाले व्यक्ति अथवा परिवार स्थानीय समुदाय से सरलतापूर्वक आत्मीकरण नहीं कर पाते । वे स्थानीय संस्थाओं से पूर्णत: एकीकृत भी नहीं हो पाते । स्थानान्तरित होने वाले समुदायों में किशोरापराध, एवं वेश्यावृत्ति को विशेष रूप से प्रश्रय मिलता है क्योंकि ऐसे समुदायों में नित्य-प्रति लोगों के आने -जाने के कारण पहचाने जाने का डर नहीं रहता । स्थानान्तरण के कारण बच्चों का प्रवेश नए-नए विद्यालयों में होता रहता है तथा वह नए-नए सहपाठियों एवं अध्यापकों के साथ अनुकूलन नहीं स्थापित कर पाता जिसके कारण बच्चों का व्यक्तित्व विघटित हो जाता है ।

सामुदायिक विघटन और झगड़े :-

समूहों संस्थाओं आदि के बीच होने वाले आपसी झगड़े भी सामुदायिक विघटन का कारण होता है । कभी-कभी समूहों और वर्गों के झगड़े हिंसात्मक रूप धारण कर लेते हैं । राजनैतिक दलों की पारस्परिक खींचा -तानी और फूट के कारण भी सामुदायिक विघटन हो जाता है । इसका प्रत्यक्ष उदाहरण धर्म के नाम पर अखण्ड भारत का हिन्दुस्तान एवं पाकिस्तान में विभाजन है । विश्वासों , विचारों और सामाजिक समस्याओं को लेकर किए गए सामुदायिक झगड़े एवं संघर्ष भी समुदाय को विघटित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ।

## राष्ट्रीय-विघटन :-

विश्व का प्रत्येक देश अपनी भौगोलिक अखंडता, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सामाजिक स्वतंत्रता को अक्षुण रखने का सतत प्रयत्न करता है, परन्तु जब कोई देश, दूसरे देश पर आक्रमण करके दूसरे देश के भूखण्ड पर अपनी सम्प्रभुता स्थापित कर लेता है तब पराजित देश का राष्ट्रीय विघटन हो जाता है देश की सम्प्रभुता का एक पार्टी के हाथों से दूसरी पार्टी के हाथों में चले जाने से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्बन्धों में तनाव उत्पन्न हो सकता है । इसके अतिरक्त सत्ता पक्ष वाली पार्टी समाज में रक्तपात एवं हिंसा फैलाने का प्रयत्न करती है जिससे सम्पूर्ण देश में अशान्ति एवं अराजकता उत्पन्न हो जाती है। देश की यह विषम स्थिति राष्ट्रीय विघटन के नाम से जानी जाती है ।

## अन्तर्राष्ट्रीय -विघटन :-

समसामयिक युग में विश्व के दो सुदूर देशों की दूरी आवागमन के द्रुतगामी साधनों के द्वारा घर ~~-बीच~~ आंगन की दूरी के समान रह गई हैं । जब एक देश में खपत से अधिक उत्पादन होता है तो वह देश आर्थिक संकट से मुक्त होने के लिए अपने उत्पादन को विश्व के दूसरे देश में खपाना चाहता है । इसके लिए वह देश विश्व में नए-नए बाजारों की खोज करता है। विश्व के अन्य देशों में बाजार प्राप्ति के लिए उस देश को पारस्परिक प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है । इस प्रतिस्पर्धा के कारण देशों में पारस्परिक तनाव बढ़ जाता है जिसके फलस्वरूप शांतियुद्ध की तैयारियां होती है, विश्वयुद्ध होता है । युद्ध सामाजिक विघटन का उग्र रूप है । युद्ध की स्थिति में उस देश में ही अशान्ति एवं असुरक्षा नहीं उत्पन्न होती बल्कि सम्पूर्ण विश्व के समक्ष अशान्ति

एवं असुरक्षा का खतरा पैदा हो जाता है क्योंकि आज युद्ध में ऐसे संहारक उपकरणों एवं आणविक संसाधनों का अविष्कार हो गया है जिसके दुरुपयोग से सम्पूर्ण विश्व की सभ्यता एवं संस्कृति के सभी उपादान समाप्त हो सकते हैं । इसके अतिरिक्त दो देशों की अन्तर्राष्ट्रीय नीति का प्रभाव उन देशों के आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन पर भी पड़ता है । अरब देशों के तेल -निर्यात नीति में परिवर्तन के कारण हमारे देश को करोड़ों रुपये प्रति वर्ष ईंधन पर अतिरिक्त व्यय करना पड़ेगा । अन्तर्राष्ट्रीय तनाव के कारण शांति युद्ध की व्यापक तैयारियां चलती हैं जिसके कारण देश के धन का अधिकांश भाग विकास कार्यों में खर्च होने के बजाय सैनिक साज -सज्जा पर व्यय करना पड़ता है । " इस प्रकार जब राष्ट्र अन्तराष्ट्रीय नियमों को नहीं मानते इसका परिणाम युद्ध और अराजकता होती है । " ।
इस विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जब एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के साथ स्थापित अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को किसी कारण से मानने से इनकार कर देता है तब इस स्थिति को अन्तर्राष्ट्रीय विघटन कहते हैं ।

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सामाजिक विघटन एक सापेक्षिक प्रक्रिया है जो सामाजिक संगठन की विपरीत दशा का बोधक है । सामाजिक विघटन समाज में उत्पन्न अशान्ति, अव्यवस्था, मतैक्य का अभाव, पारस्परिक संघर्ष सांस्कृतिक विलम्बना का सूचक है । समाज में सामाजिक विघटन की अभिव्यक्ति वैयक्तिक विघटन ,पारिवारिक विघटन ,सामुदायिक विघटन के रूप में होती है ।

---

1:- शम्भूरत्न त्रिपाठी :- समाजशास्त्री विश्वकोश , पृ0 सं0 354

किताब घर ,परेड कानपुर, संस्करण 1980 ई0 ।

सामाजिक विघटन के इन विविध रूपों के मध्य लक्ष्मण रेखाएं नहीं खींची जा सकती हैं । सामाजिक विघटन एक गतिशील प्रक्रिया है । सामाजिक विघटन की मात्रा का आकलन उस समाज में व्यक्तिगत क्षेत्र में होने वाले अपराध,बाल-अपराध, आत्महत्या, वेश्यावृत्ति पारस्परिक संघर्ष आदि, पारिवारिक क्षेत्र में विखंडित परिवार, विवाह-विच्छेद ,अवैध सन्तानों की जन्मदर में वृद्धि आदि,सामुदायिक क्षेत्र में निर्धनता,बेकारी,बीमारी,अपराध, अशिक्षा, जनसंख्या में अतिवृद्धि , स्वास्थ्य में सामान्य गिरावट आदि सामाजिक समस्याओं की मात्रा के आधार पर करते हैं । अर्थात उपर्युक्त समस्याओं में से जब कोई एक समस्या अथवा अनेक समस्यायें समाज में तीव्र गति से बढ़ती हैं तो कहा जाता है कि सामाजिक विघटन तेजी से हो रहा है ।

उपर्युक्त सामाजिक दशाएं सामाजिक विघटन का परिणाम और कारण दोनों हैं । परिणाम इस लिए कि ये स्थितियां विघटन के बाद अवश्य उत्पन्न होती हैं । और कारण इसलिए कि एक बार उत्पन्न होने के बाद समाज को और अधिक विघटित कर देती हैं ।

=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=

" 15 अगस्त 1947 ई0 को भारत में दो स्वतंत्र स्वशासित प्रदेश स्थापित किए जायेंगे, जिनका नाम क्रमशः भारत और पाकिस्तान होगा । " 1

उपर्युक्त बिल पेश होने के बाद सत्ता -हस्तान्तरण के कार्य में तेजी आई । 5 जुलाई 1947 ई0 को अस्थाई सरकार के मंत्रियों ने अपने-अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। 6 जुलाई 1947 ई0 को सिलहट एवं सीमाप्रान्त में मतगणना का कार्य प्रारम्भ हुआ और 11 जुलाई से 14 जुलाई 1947 ई0 के मध्य भारतीय सेना का स्थाई बटवारा भी हो गया । " 10 जुलाई को जिन्ना साहब पाकिस्तान के गवर्नर जेनरल बनाये गए तथा लार्ड माउण्टबैटन को भारत का प्रथम गवर्नर जेनरल बनाया गया । " 2 14 अगस्त एवं 15 अगस्त के सन्धि स्थल रात्रि के 12 बजकर 45 मिनट पर पण्डित नेहरू ने भारत के प्रथम गवर्नर जनरल को अपने मंत्रिमण्डल के सदस्यों की सूची दी । " नेहरू जी के साथ विधान सभा के अध्यक्ष डा0 राजेन्द्र प्रसाद भी थे । केवल 10 मिनट में यह रस्मी कार्यवाही पूरी हो गई ।

यद्यपि स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व हिन्दू मुसलमानों में व्याप्त साम्प्रदायिकता की भावना को दूर करने के लिए देश का विभाजन किया गया परन्तु देश के विभाजन ने इस भावना को दबाने के बजाय, जलती आग में घी का काम किया । पंजाब एवं सीमा प्रान्त में भीषण नरसंहार एवं विभीषिका का चित्रण आचार्य कृपलानी के शब्दों में इस प्रकार है । "भारत विभाजित हुआ और हम स्वतंत्र हुए किन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति पर हमारे उत्सव समाप्त भी न हो पाये थे कि पंजाब पारस्परिक रक्त-लिप्सा के मद में कांप उठा ।

---

1:- युगधारा मासिक:- जुलाई 1947 ई0 आवरण पृ0 सं0 3

2:- राजकुमार :- भारत का राजनीतिक इतिहास पृ0 सं0- 353
प्रकाशक :- ओम प्रकाश बेरी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी,
द्वितीय संस्करण 1962

3:- वही :- पृ0 सं0- 353

ऐसा भीषण नरसंहार भारतवर्ष ने चंगेज खां की जंगली टोली के अत्याचारों के बाद कभी नहीं देखा था । स्वेदा एवं सीमाप्रान्त में भी ऐसा ही हुआ । अगणित नर-नारी तथा बच्चे मारे गये, लाखों बेघरबार हो गये । अरबों की सम्पत्ति लूटी गई। "[1] ।

इस साम्प्रदायिक नर-संहार की रोकथाम के लिये गांधी जी ने 1 सितम्बर 1947 ई0 के कलकत्ते में अनशन प्रारम्भ किया । उनके इस अनशन का अनुकूल असर पड़ा और बिगड़ी हुयी स्थिति नियंत्रण में आ गयी । अत: गांधी जी ने 4 सितम्बर को अपना अनशन समाप्त कर दिया ।

पाकिस्तान में घटित होने वाली लूट-पाट की प्रतिक्रिया भारत में प्रारम्भ हुई । भारतीय राजनीतिज्ञों ने इस प्रतिक्रियावादी नीति के नियंत्रण का भरसक प्रयत्न किया परन्तु साम्प्रदायिकता की दबी चिंगारी दिल्ली में प्रज्वलित हो उठी । तत्कालीन भारतीय सरकार इस विष्फोटक स्थिति पर सेना के द्वारा भी नियंत्रण न कर सकी । स्थिति सुधारने के लिए गांधी जी दिल्ली बुलाये गये। गांधीजी ने 13 जनवरी 1948 ई0 को आमरणअनशन प्रारम्भ किया । शान्ति के प्रतिज्ञा पत्र पर विभिन्न मतावलम्बियों के हस्ताक्षर कराने एवं बिगड़ी स्थिति पर नियंत्रण के बाद गांधी जी ने 18 जनवरी 1948 ई0 को अपना आमरण अनशन समाप्त कर दिया ।

साम्प्रदायिक दंगे के कारण हिन्दू एवं मुसलमान दोनों को स्थान परिवर्तन के समय भारी धन-जन की हानि उठानी पड़ी और देश को एक लम्बे अरसे तक अशान्ति एवं अव्यवस्था का सामना करना पड़ा । इस दंगे ने सामूहिक हत्या, बलात्कार, लूट-खसोट बेकारी, आदि सामाजिक विघटन के कारणों को आश्रय दिया। स्वतंत्रता प्राप्ति के इन तीस वर्षों में भी हिन्दू-मुसलमान के पारस्परिक टकराहट की स्थिति पूर्णरूप से नियंत्रित नहीं हो सकी है । आये दिन मुरादाबाद, इलाहाबाद, अलीगढ़, लखनऊ जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में होने वाली साम्प्रदायिकता एवं अव्यवस्था सरकार के लिये सिर-दर्द बनी हुई है । सितम्बर 1980 में ईद के पुनीत पर्व पर मुरादाबाद में हुई सामूहिक हत्या, लूट एवं आगजनी शान्तिप्रिय हिन्दू-मुसलमान नागरिकों के लिये भयप्रद स्थिति उत्पन्न करता है। पारस्परिक सहयोग के जरिए साम्प्रदायिक टकराहट की समस्या को सुलझाना हर भारतीय का कर्तव्य

---

1:-राजकुमार:-भारत का राजनीतिक इतिहास पृ०सं०365, हिन्दी प्रचारकपुस्तकालय वाराणसी द्वितीय संस्करण 1962 ई0

है बिना इसके साम्प्रदायिक दंगों के द्वारा उत्पन्न सामाजिक विघटन से मुक्त नहीं हुआ जा सकता है ।

बापू का निधन :-

भारतीय उग्रवादियों को बापू द्वारा साम्प्रदायिक दंगों में सुधार की स्थिति असह्य थी । अतः उग्रवादियों ने महात्मागांधी की हत्या का षडयन्त्र रचा । 30 जनवरी 1948 ई0 को गांधी जी बिड़लामन्दिर में प्रार्थना के समय उपस्थित होने के लिए जा रहे थे कि " बिड़ला हाउस की ड्योढ़ी पर, राष्ट्रपिता बापू पर ,हिन्दू महासभा और राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के नेता,मराठी ब्राह्मण्य ,नाथूराम विनायक गोडसे ने पिस्तौल से चार गोलियां चलाई । गोलियां पेट और छाती में लगी । 80 वर्ष के बूढ़े कृष्काय राष्ट्रपिता ने एक बार अपने हत्यारे की ओर देखा । उनके मुख से हे राम निकला और बापू धराशायी हो गयी । चश्मा वहीं गिर गया ।पैर से चप्पलें छूट गई । खून से लथपथ राष्ट्रपिता का तड़पता शरीर आभा एवं मनु के सहारे यों ही टंगा रह गया ।

बापू के दुःखद निधन पर सारा देश कांप उठा। दिशायें भय एवं आतंक से थरथराने लगी । लोगों के मन में व्याप्त साम्प्रदायिकता की अग्नि पर बापू के निधन से तुषारापात हो गया । बापू के निधन से देश की सामाजिक,आर्थिक,धार्मिक एवं राजनीतिक क्षति हुयी । स्वतंत्र भारत बापू के शान्ति अहिंसा एवं आर्थिक नियोजन की भावी योजनाओं का लाभ न उठा सका ।

देशी राज्यों का विलयन

भारत में अंग्रेजों द्वारा सत्ता संभालने से पूर्व ही भारत में अनेक छोटे-बड़े राजा राज्य कर रहे थे । अंग्रेजों ने इन राजाओं में पारस्परिक फूट एवं कलह के बीज

---

1:- श्री कृष्ण दास :- साम्प्रदायिक विद्वेष पर बापू के विचार, पृ0सं0-141 इंडियन पब्लिशर्स 333 मोहतशिम गंज,इलाहाबाद ।

बोकर भारत पर अपना अधिपत्य जमा लिया था । उन्होंने शासन कार्य की सुविधा के लिए राजाओं एवं रियासतों को पूर्वत बनाये रखा । स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ देश के समक्ष लगभग पांच सौ रियासतों की समस्या थी । ये रियासतें भारतीय नरेशों के अधीन थीं ।

भारत की अखण्डता के पोषक कुछ नरेशों ने स्वत: भारतीय संघ में सम्मिलित होने की स्वीकृत दे दी । परन्तु कुछ रियासतों ने मनमानी करना शुरू कर दिया। इनमें जूनागढ़ एवं हैदराबाद की रियासतें मुख्य थी । जूनागढ़ की रियासत ने 18अगस्त 1947 ई0 को ही पाकिस्तान में सम्मिलित होने की घोषणा कर दी । भारत ने इस विचित्र निर्णय को स्वीकार नहीं किया । 5 अक्टूबर 1947 ई0को भारत सरकार ने घोषणा किया कि " जूनागढ़ को पाकिस्तान में शामिल होना भारत को स्वीकार नहीं"। 1

14 मई 1956 ई0 को प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू ने लोक-सभा में प्रश्नोत्तर काल के दौरान बताया कि " पाकिस्तान द्वारा प्रचारित नये मानचित्र में जूनागढ़ को पाकिस्तान में शामिल दिखाया गया है। " 2 जूनागढ़ की बिगड़ी हुयी स्थिति के नियन्त्रण के लिये भारत-सरकार ने सेना का सहारा लिया और 25 फरवरी 1947ई0 तक मतगणना कराकर सिद्ध कर दिया कि " जहां 190077९ मत भारत में शामिल होने के हैं वहीं 91 मत पाकिस्तान में शामिल होने के हैं । इस प्रकार जूनागढ़ भारत में शामिल कर लिया गया । 2

26 जून 1947 ई0 को हैदराबाद के निजाम ने घोषित किया कि " ब्रिटिश सम्प्रभुता समाप्त होने के बाद हैदराबाद को स्वतन्त्र घोषित करने का अधिकार मुझे प्राप्त हैं । " 4 निजाम की इस घोषणाके साथ रियासत में रजाकरों का अत्याचार बढ़ने लगा । लूटमार,चोरी-डाका,हत्यायें रोजमर्रा की घटनायें बन गई। भारतसरकार

---

1:-राजकुमार:- भारत का राजनीतिक इतिहास, पृ0 सं0- 412
प्रकाशक:- हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी,द्वितीय संस्करण 1962 ई0

2:- वहीं :- पृ0 सं0- 413

3:- राजकुमार भारत का राजनीतिक इतिहास, पृ0 सं0- 434
प्रकाशक - हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय,वाराणसी ,द्वितीय संस्करण 1962 ई0

4:- हैदराबाद की समस्या पर भारत सरकार द्वारा 10 अगस्त 1948 ई0को प्रकाशित श्वेत पत्र - पृ0 सं0 23

ने इस समस्या को शान्ति पूर्ण ढंग से सुलझने के लिए छतरी प्रतिनिधि मंडल के सुझावों पर कोई आपत्ति नहीं की, परन्तु यह प्रतिनिधि मंडल अपने कार्य में असफल रहा। भारत सरकार ने रजाकरों के बढ़ते हुये अत्याचार के दमन के लिये 13 सितम्बर 1948 ई0 को पुलिस कार्यवाही प्रारम्भ किया । 19 अक्टूबर 1958 ई0 को हैदराबाद में अस्थाई सैनिक सरकार का निर्माण हुआ तथा अगले वर्ष बीस फरवरी को सरकार ने निजाम की निजी जमींदारी अपने अधिकार में ले लिया । तत्पश्चात हैदराबाद में लोकप्रिय मंत्रिमंडल की स्थापना हुई और निजाम को राज्य का प्रमुख बनाकर रियासत को आत्मनिर्भर पृथक राज्य बना दिया गया ।

उड़ीसा एवं छत्तीसगढ़ की रियासतों ने भारत सरकार से 14 दिसम्बर 1947 ई0 को समझौता किया । अन्य बहुत सी छोटी-बड़ी रियासतों ने उड़ीसा एवं छत्तीसगढ़ की रियासतों का अनुकरण किया । 19 फरवरी को दक्षिण की 17 रियासतें बम्बई में तथा 10 जून 1948 ई0 को गुजरात की भी रियासत बम्बई में मिला दी गयी । 18 मार्च एवं 3 मार्च 1948 ई0 को क्रमशः लोहरू,पहोड़ी,दुजना की रियासतें पूर्वी पंजाब में सम्मिलित की गई । 1 जून 1948 ई0 को कच्छ भारत में सम्मिलित हुआ । कुछ इसी प्रकार छोटी-छोटी रियासतों को किसी न किसी प्रान्त से संयुक्त कर दिया गया और अति विशाल रियासतें जैसे कश्मीर,हैदराबाद,कोचीन,बड़ौदा,जयपुर,मैसूर,कोल्हापुर, ट्रावनकोर आदि को आत्मनिर्भर इकाई के रूप में स्वीकार किया गया ।

इस प्रकार संविधान के कार्यान्वयन के दिन,26 जनवरी 1950 ई0 तक वृहत्तर भारत का निर्माण हो चुका था । इस कल्पना को साकार करने वाले तत्कालीन गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने कहा था । " पांच सौ से कुछ अधिक रियासतों का इकाइयों में एकीकरण करके और शताब्दियों पुरानी स्वेच्छाचारिता का अन्त करके भारतीय लोकतन्त्र महान विजय प्राप्त की है । " ।

==========================================================

1:- भारत का राजनीतिक इतिहास , पृ0 सं0 -443
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी, द्वितीय संस्करण 1962 ई0

इन्दिरा -सरकार ने संविधान में संशोधन करके राजाओं को प्राप्त होने वाली वार्षिक वृत्ति को देना बन्द कर दिया है । इस प्रकार भारत में एक-तन्त्र का सर्वथा लोप हो चुका है ।

यदि देशी रियासतों का विलयन न किया जाता तो भारतीय संघ की भौगोलिक अखण्डता अक्षुण न रह पाती, उसका विभिन्न छोटे-छोटे राज्यों में भौगोलिक एवं सामुदायिक विघटन हो जाता । इस तथ्य की ओर संकेत करते हुए डा0 बाबूराम मिश्र ने लिखा है "नव भारत का इतना बड़ा खण्ड शताब्दियों पश्चात एक शासन संघ के अन्तर्गत आ सका है । ------ छोटी- बड़ी 565 रियासतों को पूर्ण स्वतंत्र होते ही भारत में मध्यकालीन स्थिति उत्पन्न हो जाती, आर्थिक और सामाजिक प्रगति असम्भव होती, देश की सुरक्षा और सुदृढ़ता एक समस्या बन जाती । "[1] ।
देशी रियासत के नागरिकों को धार्मिक निरपेक्षता न प्राप्त हो पाती जो स्वतन्त्र भारत में उन्हें प्राप्त है । इसके अतिरिक्त राज्य की आत्मनिर्भरता एवं सुरक्षा के लिए शासित वर्ग को पिसना पड़ता । ऐसी दशा में भारतीय समाज में वह क्रान्तिकारी परिवर्तन न आ पाता जो स्वतन्त्र भारत में देशी राज्यों के विलयन के बाद आ सका है।

## संविधान की संरचना एवं नवर्णित नागरिकता की व्याख्या

अंग्रेजों से शासन की बागडोर प्राप्त करने के पश्चात भारतीय राजनीतिज्ञ भारत की छोटी-बड़ी विभिन्न राजनीतिक समस्याओं के समाधान के साथ स्वतन्त्र भारत के संविधान की संरचना में प्रवृत्त हुए । संविधान संरचना का महत्वपूर्ण कार्य सात सदस्यों की एक विशेष समिति को सौंपा गया जिसके अध्यक्ष डा0 भीमराव अम्बेदकर थे । इस समिति ने नवम्बर 1949 ई0 में संविधान निर्माण का गुरुतर कार्य पूर्ण किया और 26 जनवरी 1950 ई0 को इसे देश में लागू किया गया ।

---

1:- डा0 बाबूराम मिश्र :- स्वतन्त्र भारत की एक झलक, पृ0 सं0- 107
प्रकाशन -शाखा सूचना विभाग, उ0प्र0 लखनऊ ,संस्करण 1959 ई0

स्वतन्त्र भारत की व्यवस्था हेतु संविधान में 355 धारायें और आठ परिशिष्टियां हैं जिनमें कालान्तर में परिमार्जन एवं संशोधन किया गया । आर्थिक,सामाजिक, राजनीतिक,एवं धार्मिक स्वतंत्रता एवं समानता प्रदान करना नये संविधान के मूलभूत सिद्धान्त हैं । संविधान के प्रथम भाग में राज्यों की सीमा निर्धारण सम्बन्धी संसद के अधिकारों का विवेचन हैं । दूसरे भाग में नागरिकता की व्याख्या है जिसमें उल्लेख किया गया है कि जाति,धर्म आदि के कारण किसी भारतीय के साथ भेदभाव नहीं किया जा सकता । मनुष्यों की तिजारत एवं बेगार लेना वर्जित है परन्तु सार्वजनिक कार्य के लिये राज्य अनिवार्य सेवा कार्य ले सकता है । चतुर्थ भाग में राज्य संचालन की विविध नीतियों का वर्णन है । पंचम भाग में राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति के चयन,उनके अधिकारों एवं सर्वोच्च न्यायालय की व्याख्या है। संविधान में देवनागरी लिपि को भारतीय संघ की सरकारी भाषा स्वीकार किया गया है,परन्तु संविधान के कार्यान्वयन के 15 वर्षों तक अंग्रेजी का उपयोग सरकारी तंत्र में पूर्ववत जारी रहेगा। संकट कालीन स्थिति में संघ को व्यापक अधिकार प्राप्त हैं । राज्य सरकार द्वारा संघ में आदेशों की अवहेलना पर राष्ट्रपति को अधिकार है कि वह राज्य में संकटकालीन स्थिति घोषित करके शासन की बागडोर अपने हाथों में ले ले । राष्ट्रपति एवं राज्यपाल के कार्यकाल में उनके विरुद्ध कोई मुकदमा नहीं चलाया जा सकता ।

प्रदेश को पूर्ण स्वशासन प्रदान करने पर भी संविधान में संघ को व्यापक अधिकार दिये गये हैं,संविधान में कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जिस पर राज्य सरकार का एकाधिकार हो । संविधान के उद्देश्य को व्यक्त करते हुए डा० बाबू राम मिश्र ने लिखा है कि" इससे नागरिकों को वैयक्तिक जीवन की अपूर्णता के कारण राष्ट्रीय जीवन के प्रवाह में उत्पन्न होने वाले अवरोधों को सदैव के लिये दूर करने का प्रयास सफल हो सकेगा।

प्राचीन काल से ही भारत में धर्म,जाति,लिंग,जन्मस्थान आदि के आधार पर भेद-भाव बरता जाता रहा है। वेदों की शिक्षा शूद्रों एवं स्त्रियों के लिए वर्जित थी।

---

1:- डा० बाबूराम मिश्र :- स्वतन्त्र भारत की झलक, पृ० सं०- 28
प्रकाशन शाखा सूचना विभाग उ०प्र० लखनऊ, संस्करण 1959 ई०

समाज में ब्राम्हणों का सर्वोपरित आदर एवं सम्मान था । सवर्णों के जलाशयों मंदिरों, भोजनालयों एवं मनोरंजन के स्थलों में अनुसूचित एवं अनुसूचित -जन जातियों का प्रवेश निषिद्ध था । राजनीतिज्ञों को स्वतन्त्र राष्ट्र को समुन्नत बनाने के लिये यह आवश्यकता महसूस हुयी कि जाति, धर्म, लिंग आदि के आधार पर किसी व्यक्ति के विकास को न रोका जाय । अनुसूचित एवं अनुसूचित जनजातियों को सवर्णों की भांति संविधान के अनुच्छेद 14, 15, 16 में समानाधिकार प्रदान किये गये हैं । समता के अधिकार के प्रचलन से जातिगत व्यवस्था में परिवर्तन हुआ जिसके फलस्वरूप जातिगत व्यवसाय की परम्परा विघटित हुई । अनुसूचित एवं जनजातियों के सरकारी सेवाओं में नियुक्तियों को दकियानूस सवर्णों ने धर्म-संकट की उपमा दी । आज किसी भी व्यक्ति को अस्पृश्य कहना कानूनन अपराध है, परंतु रोजमर्रा की जिंदगी में अनुसूचित एवं अनुसूचित जन जातियों को कभी-कभी अस्पृश्यता का कड़ुवा घूंट पीना पड़ता है ।

स्वतंत्रता

संविधान में सभी नागरिकों को भावाभिव्यक्ति एवं भाषण की स्वतन्त्रता की गई है । नागरिक शान्तिपूर्ण ढंग से एकत्र हो सकते हैं अथवा संगठन बना सकते हैं । उन्हें सम्पूर्ण भारत में परिभ्रमण एवं निवास की स्वतन्त्रता है, साथ ही साथ व्यवसाय चुनने की भी स्वतन्त्रता है । परन्तु यह स्वतन्त्रता सरकार द्वारा निर्दिष्ट नियमों के अधीन है । सम्पूर्ण भारत में परिभ्रमण एवं व्यवसाय चुनने की स्वतन्त्रता के फलस्वरूप पारम्परित जातिगत व्यवसाय विघटित होने लगे हैं।

सम्पत्ति रखने का अधिकार

संविधान में प्रत्येक नागरिक को अपनी सम्पत्ति रखने का अधिकार है। भारत सरकार विशेष परिस्थितियों में जनहित के लिये किसी की भी सम्पत्ति को विशेष कानून द्वारा ले सकती है। परन्तु इसके लिये सरकार को व्यक्ति की क्षति पूर्ति करना आवश्यक है ।

## धार्मिक स्वतन्त्रता

प्रत्येक नागरिक को धार्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त है। उन्हें अपने धर्म के प्रचार प्रसार की स्वतन्त्रता है लेकिन यह स्वतन्त्रता हिंसा का वरण नहीं कर सकती । धार्मिक संस्थाओं के निर्माण, संचालन एवं उसके लिये चल-अचल सम्पत्ति के प्राप्ति, प्रयोग की भी स्वतन्त्रता है । सरकारी सहायता प्राप्त शिक्षण संस्थाओं में किसी प्रकार की धार्मिक शिक्षा नहीं दी जायेगी ।

## शोषण का विरोध

किसी भी नागरिक का आर्थिक शोषण अपराध करना है । विपन्न वर्गीय सदस्यों को शोषण से मुक्त करने के लिये इन्दिरा सरकार ने प्रभावकारी कदम उठाये हैं । विभिन्न अनुसूचित एवं जनजाति के लोगों को ऋणों से मुक्त कर दिया गया । ऋणों से मुक्ति साहूकारों द्वारा दी गई धनराशि का किया गया । बैंकों एवं सरकारी ऋणों से उन्हें मुक्ति नहीं दी गई, क्योंकि सरकारी ऋण इन लोगों को आर्थिक कठिनाई से मुक्ति के लिए दिये गए थे जिससे वे पुन: साहूकारों के चंगुल में न फंसे ।

## संस्कृति एवं शिक्षा संबंधी अधिकार

प्रत्येक नागरिक को अपनी भाषा, संस्कृति एवं लिपि को स्वीकार करने की स्वतन्त्रता है । वह स्वेच्छा एवं योग्यतानुसार कोई भी शिक्षा ले सकता है। जाति या धर्म के नाम पर उसका प्रवेश किसी भी शैक्षणिक संस्था में निषिद्ध नहीं है। धर्म अथवा भाषा के कारण किसी प्रकार का भेदभाव नहीं रखा जायेगा । 2

---

1:- डा० बाबूराम मिश्र :- स्वतन्त्र भारत की एक झलक, पृ० सं०-30
प्रकाशन शाखा सूचना विभाग उ०प्र० लखनऊ, संस्करण 1959 ई०

2:- राजकुमार :- भारत का राजनीतिक इतिहास, पृ० सं०- 445
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी, द्वितीय संस्करण 1962 ई०

## संवैधानिक उपचारों का अधिकार

संविधान में प्रत्येक भारतीय नागरिक को निज के अधिकारों की रक्षा के लिये न्यायालय जाने का अधिकार है । यदि संसद या विधान मण्डल द्वारा निर्मित कोई कानून किसी भी रूप में मूलाधिकारों पर आघात करता है तो नागरिकों को उच्च एवं उच्चतम न्यायालय में अपीलकरके आदेश,निर्देश एवं लेख जारी करवाने का अधिकार है। अत: इस अधिकार को मूलाधिकारों का प्राण माना जा सकता है ।

संविधान की संरचना से पूर्व नागरिकों के मूलाधिकार की कोई सुनिश्चित व्यवस्था नहीं थी जिसके कारण निम्न मध्यम एवं विपन्न लोगों को शोषण का शिकार होना पड़ता था । इस प्रकार स्पष्ट है कि संविधान की संरचना एवं नवार्जित नागरिकता की व्याख्या ने अनूसूचित,अनुसूचित जन-जातियों एवं अल्पसंख्याकों के विकास एवं समृद्धि के लिये नया मार्ग प्रशस्थ किया है ।

## निष्क्रमणार्थियों का पुनर्वास

अखण्ड भारत का दो स्वतन्त्र राष्ट्रों में विखण्डन के पश्चात पूर्वी एवं पश्चिमी पंजाब की आबादी का इधर से उधर और उधर से इधर आना जाना इतिहास की अभूतपूर्व घटना है । " लगभग 500000 व्यक्ति अपने-अपने घरों को छोड़कर पाकिस्तान या हिन्दुस्तान में चले गए । अगर शान्तिपूर्वक यह अदला -बदली हो जाती तो कोई बात न थी । मगर जिस स्तर पर पंजाब में कत्लेआम हुआ,जिस प्रकार लाखों की तादाद में मर्द,स्त्री,बच्चे काटे गए उनकी जान लूटी गई,उनका धर्म बदला गया,उनका घरबार जलाया गया उसे यादकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं ।

भारत सरकार ने पश्चिमी पाकिस्तान से आये हुए लोगों की सुरक्षा एवं सहायता के लिए सन् 1947 ई0 में पुनर्वास मन्त्रालय की स्थापना की । सन् 1948 ई0 तक 46·14 लाख शरणार्थी पश्चिमी पाकिस्तान से एवं पूर्वी पाकिस्तान से 10·13 लाख हिन्दू आये।

---

1:- श्री कृष्णदास :- साम्प्रदायिक विद्वेष पर बापू के विचार , पृ0 सं0-104
इंडियन पब्लिशर्स 333 मोहतशिम गंज इलाहाबाद

2:- पुनर्वास मन्त्रालय का वार्षिक प्रतिवेदन 1954 ई0, पृ0 सं0- 1

सन् 1949 ई0 में निष्क्रमणार्थियों की संख्या 46·28 लाख थी । " सन् 1952 ई0 में पूर्वी बंगाल के हजारों निष्क्रमणार्थी भारत आए । " । पुनर्वास मन्त्रालय का वार्षिक प्रतिवेदन 1953-54 ई0 के पृष्ठ सं0 2 के अनुसार पूर्वी पाकिस्तान से आने वाले निष्क्रमणार्थियों का औसत 5 हजार प्रतिमास था । इससे देश के समक्ष लाखों लोगों के भोजन एवं आवास की विकट समस्या उत्पन्न हो गई । इस भयंकर स्थिति से निपटने के लिए पुनर्वास मंत्री ने कराची की यात्रा की तथा वहां के प्रधानमंत्री से मिलकर निष्क्रमण की प्रक्रिया को रोकने के लिए समझौता किया ।फिर भी पूर्वी पाकिस्तान से आने वालों का तांता न टूटा तब निष्क्रमण को रोकने के लिए भारत सरकार को निष्क्रमण पारपत्र न प्रदान करने का सुझाव दिया गया ।

पश्चिमी -पाकिस्तान से आये निष्क्रमणार्थियों को ग्रामीण क्षेत्रों में निष्क्रमणार्थियों का पुनर्वास एवं शहरी क्षेत्रों में निष्क्रमणार्थियों का पुनर्वास,दो वर्गों में विभक्त करके किया गया । प्रथम वर्ग के अन्तर्गत पंजाब एवं पेप्सू में इन राज्यों की इच्छा पर 33 हजार परिवार बसाये गए । " इनको सहायता के लिए ग्रामीण ऋण के रूप में 8·24 करोड़ रुपये का अग्रिम भुगतान किया गया । " 2 31मार्च 1961 ई0 तक लगभग 12·5 हजार विस्थापित परिवारों को अंडमान निकोबार द्वीप समूह में बसाने की योजना थी । इस योजना में प्रति परिवार 10 एकड़ भूमि एवं 70 रु0 मासिक जीविका भत्ता के अतिरिक्त 210 रु0 राह खर्च तथा मकान निर्माण पशु,बीज,बर्तन आदि के लिए प्रति परिवार 1730 रु० देने की व्यवस्था थी ।

---

1:- राजकुमार :- भारत का राजनीतिक इतिहास , पृ0 सं0- 461
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी, द्वितीय संस्करण 1962 ई0

2:- राजकुमार :- भारत का राजनीतिक इतिहास पृ0 सं0- 465
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी, द्वितीय संस्करण 1962 ई0

3:- वही :- पृ0 सं0- 820

नहीं समझता । " । पाकिस्तान ने पुनः सुरक्षा परिषद के अध्यक्ष को पत्र भेजकर यह प्रस्ताव रखा कि सुरक्षा परिषद कश्मीर के प्रश्न पर विचार करें । अतः 24 फरवरी 1957 ई0 को सुरक्षा परिषद ने घोषणा किया कि कश्मीर संविधान सभा के निर्णयों को यह कार्यउचित नहीं है कि उस राज्य का निपटारा हो गया। भारत ने इस प्रस्ताव को मानने से इनकार कर दिया । " 2 आज भी कश्मीर के प्रश्न को लेकर भारत-पाकिस्तान के मध्य अन्तर्विरोध व्याप्त है ।

## भूदान आंदोलन :-

जमींदारी उन्मूलन अधिनियम ‡ 1950 ई0 ‡ के कार्यान्वयन से कृषकों एवं जमीदारों के मध्य पारस्परिक प्रतिस्पर्धा एवं प्रतिहिंसा निरंतर बढ़ती गई । "देश के साम्यवादी दल के जनता को अपना उचित हिस्सा पाने के लिए हिंसात्मक पद्धतियों को अपनाने और इस प्रकार नया सम्यवादी समाज लाने के लिए खूनी क्रान्ति की प्रेरणा देने लगे थे । दक्षिण के तेलगांना प्रदेश में इस प्रकार की भयावह स्थिति उत्पन्न हो गई ।

---

1:- भारत की लोकसभा में नेहरू का भाषण 24 फरवरी 1957 ई0

2:- राजकुमार :- भारत का राजनीतिक इतिहास, पृ0 सं0- 317
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी -1 संशोधित संख्या 1982

3:- डा0 बाबू राम मिश्र :- स्वतंत्र भारत की एक झलक पृ0 सं0 211
प्रकाशन शाखा सूचना विभाग उ0प्र0 ,संस्करण 1959 ई0

इस प्रकार की भयावह स्थिति उत्पन्न हो गई । " [1]

तेलंगाना प्रान्त की खूनी- क्रान्ति के सूक्ष्म अध्ययन से आचार्य विनोबा भावे को ज्ञात हुआ कि " इस प्रदेश की समस्याओं की मूल-जड़ भूमि का असंतुलित वितरण है। " [2] । आचार्य विनोबा भावे ने बड़े-छोटे सभी जमींदारों से श्रमिकों एवं लघु कृषकों के जीवन निर्वाह के लिए स्वेच्छा से भूमिदान करने के लिए कहा और इस पुनीत यज्ञ का शुभारम्भ 18 अप्रैल 1951 ई0 को बाल पहले ग्राम के जमींदार बी0आर0 रेड्डी से 100 एकड़ भूमि दान लेकर किया । विनोबा जी ने पैदल यात्रा करके सन् 1956 ई0 तक आसाम, आन्ध्र ,उत्कल, कर्नाटक केरल, गुजरात, तमिलनाडु, दिल्ली, विदर्भ, पंजाब-पेप्सु, बंगाल, बम्बई, बिहार, महाकोशल, मध्यभारत ,महाराष्ट्र, मैसूर, राजस्थान, विन्ध्य-प्रदेश ,सौराष्ट्र और कच्छ, हिमांचल -प्रदेश ,हैदराबाद से भूदान में 412702 एकड़ भूमि अर्जित की । इस भूमि से 160206 परिवार लाभान्वित हुए ।

विनोबा भावे ने भूदानयज्ञ के समान्तर एक सम्पत्तिदान, जीवनदान एवं ग्रामदान की योजनाएँ भी कार्यान्वित किया। उन्होंने सम्पत्ति-दान का शुभारम्भ बिहार की पदयात्रा के समय किया। भूदान की भाँति आर्थिक असमानता दूर करनें में सम्पत्तिदान सहयोगी है। जो व्यक्ति स्वेच्छा से भूमि के अतिरिक्त किसी चल अथवा अचल सम्पत्ति का दान करना चाहता है , वह सम्पत्तिदान के कोष में दान कर सकता है। सम्पत्तिदान के बाद ग्रामदान एवं जीवनदान शुरु किया गया । अनेकों लोगों ने जीवनदान के अन्तर्गत अपनी सारी सम्पत्ति को छोड़कर समाज सेवा के लिये अपने को विनोबा का अनुगामी बना लिया। सामूहिक कृषि व्यवस्था के सरलीकरण

---

1- डा0 बाबू राम मिश्र- स्वतन्त्र भारत की एक झलक , पृष्ठ सं0-212 प्रकाशन शाखा सूचना विभाग उत्तर प्रदेश लखनऊ ,संस्करण 1959 ई0

2- वही - पृष्ठ सं0 213

के हेतु ग्रामदान का कार्यक्रम बना। इस कार्यक्रम में गाँव के सभी सदस्य अपनी अपनी सारी भूमि ग्राम समाज को दान कर देते हैं । इस प्रकार भूमिक का स्वामित्व ग्राम-समाज के हाथों में आ जाता है फिर सम्पूर्ण कृषिकार्य सामूहिक रूप से प्रतिपादित किया जाता है ।

यह तथ्य निर्विवाद है कि भूदान से अर्जित भूमिका कुछ अंश विवादस्पद अकृष्य, एवं अनुपजाऊ है परन्तु शेष भूमि भारतयि लघु कृषकों के लिए वरदान है जिससे उनके आर्थिक जीवन, सामाजिक प्रतिष्ठा, खान- पान ,रहनसहन में पर्याप्त अन्तर आने लगा है। भूदान द्वारा भूमि वितरण की व्यवस्था सौहाद्र,सहायोग एवं अहिंसा पर आधारित थी जिससे देश में भूमि वितरण की व्यवस्था के नाम पर होने वाली खूनी- क्रान्ति टल गई ।

सम्पत्तिदान ,ग्रामदान, एवं जीवनदान ,भारत के विभिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक समस्याओं की गुत्थी सुझलाने का सफल प्रयास है। सम्पत्ति दान के द्वारा समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता की खाई पाटने में सहयोगी मिला है । । सहकारी कृषी योजना के सफलीकरण में ग्रामदान एवं जीवनदान की महत्वपूर्ण भूमिका है। समाज के लिए जीवन की विभिन्न आकांक्षाओं को त्यागनें वाले लोगों से अन्य लोगों को त्याग की प्रेरणा प्राप्त होगी ।

भूदान- सम्पत्तिदान, जीवनदान एवं ग्रामदान ने ग्रामों मे व्याप्त अशिक्षा, भ्रष्टाचार, भूमि के असंतुलित वितरण की समस्या, आर्थिक विषमता ,निर्धनता आदि विभिन्न सामाजिक विघटन के घटकों के नियन्त्रण की नई सम्भावनाओं को विकसित किया है ।

---

1- {सम्पत्तिदान के द्वारा समाज मे व्याप्त आर्थिक विषमता को अहिंसा एवं शान्तिपूर्ण ,ढंग से सुलझ रहा है। जो रूस में भयंकर संघर्ष और क्रूर हिंसात्मक विधि से सम्भव हो सका।}
डा0 बाबू राम मिश्र- स्वतन्त्र भारत की एक झलक, पृष्ठ सं0- 223
प्रकाशन शाखा सूचना विभाग उत्तर प्रदेश लखनऊ संस्करण 1959 ई0 ।

पंचवर्षीय योजनाएं

भारतीय सरकार ने द्वितीय विश्वयुद्ध एवं देश के विभाजन से विक्षिप्त अर्थव्यवस्था में सुधार,खाद्य संकट के समाधान,कच्चे -माल के उत्पादन में अभिवृद्धि , मुद्रास्फीति की प्रवृत्ति को रोकने,आवागमन के साधनों में वृद्धि ,सिंचाई व्यवस्था, जल विद्युत परियोजनाओं के निर्माण,भविष्य में राष्ट्रीय आय एवं सामान्य व्यक्तियों के जीवन स्तर में शीघ्र सुधार के निमित्त सन् 1951 ई0में पहली पंचवर्षीय योजना शुरू हुई । 1 पंचवर्षीय योजनओं के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए डा0 बाबूराम मिश्र ने लिखा है । " विकास योजनाओं के अन्तर्गत समाज के प्राकृतिक और मानवीय शक्तियों के अधिक से अधिक उपयोग द्वारा उत्पादन और रोजगारी बढ़ाकर सामान्य जीवन स्तर को उठाना है, साथ ही आर्थिक और सामाजिक समानता भी लानी है। इसके लिए विभिन्न क्षेत्रों और विधियों में परिवर्तन ही नहीं लाना है जो उत्पादन ,रोजगारी और आर्थिक तथा समाजिक समानता और विकास लाने में बाधक हो रही है। " 2 पंचवर्षीय योजनाओं का कार्यकाल पांच वर्षों का निर्धारित किया गया । एक पंचवर्षीय योजना पूरी होने पर दूसरी पंचवर्षीय योजना कार्यान्वित की गई । बाद की योजनओं के लिए यही क्रम तृतीय,चतुर्थ आदि चलता रहा ।

प्रथम पंचवर्षीय योजना :-

इस योजना का कार्य-काल अप्रैल 1951 से मार्च 1956 ई0 था । प्रस्तुत योजनान्तर्गत भारतीयों के आर्थिक एवं सामाजिक विकास के लिए निर्धारित कार्यक्रम की योजना बनी । आयोग ने इस योजना के प्रारम्भ में कृषि कार्य की समुचित व्यवस्था ~~की व्यवस्था~~ खाद्यनीति ,कटीर-उद्योग, यातायात,खनिज पदार्थों की उपलब्धि ,सिंचाई

---

1:- रजनी पामदत्त:- भारत वर्तमान और भावी, पृ0 सं0 308
पीपुल्स पब्लिशिंर्स हाउस प्रा॰लि॰आसफ अली रोड दिल्ली प्रथम हिन्दीसं॰जून1956ई0

2:- डा0 बाबूराम मिश्र :- स्वतन्त्र भारत की एक झलक पृ0 सं0- 141
प्रकाशन शाखा सूचना विभाग उ0प्र0 लखनऊ ,संस्करण 1959 ई0

साधनों का विकास ,विद्युत का ग्रामीणीकरण जन सामान्य में शिक्षा का प्रचार , समाज सेवा,स्वास्थ्य रक्षा, आदि की विवेचना की थी ।

प्रथम पंचवर्षीय योजना तीन वर्गों में विभक्त थी । प्रथम वर्ग के अन्तर्गत इस तथ्य का विवेचन था कि अविकसित अर्थ व्यवस्था के अन्तर्गत विकास कैसे किया जाय । दूसरे वर्ग में शासन एवं जनता के पारस्परिक सहयोग एवं शासन में सुधार की व्याख्या है । तीसरे वर्ग में विकास कार्यों का विवरण क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया गया है ।

उन्नतिशील बीजों,कृषि यन्त्रों ,रासायनिक -उर्वरकों,सिंचाई की समुचित व्यवस्था कीटनाशक औषधियों के उपयोग से कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई । ग्रामीणों तक इस कार्यक्रम के प्रसारण के लिये प्रत्येक जिलों में आवश्यकतानुसार विकास खण्डों की थापना की गई जिसका अधिकारी विकास खण्ड अधिकारी कहलाता है। उचित व्यवस्था के फलस्वरूप " कृषि उत्पादन में 1949-50 ई0 के मुकाबले लगभग 14% की और 1950-51 ई0 के मुकाबले 19 प्रतिशत की वृद्धि हुई । " 1

प्रथम पंचवर्षीय योजनान्तर्गत पिछड़े एवं ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी दूर करने के लिए सहकारी -समितियों का निर्माण हुआ । जिसके द्वारा जनसामान्य को तकावी एवं कर्ज प्रदान किया जाता है। पिछड़ी हुई जनजातियों के लिए राजकीय सेवा में नियुक्ति हेतु उनका आरक्षण किया गया । इस प्रकार पिछड़ी हुई जनजातियों को विकास का अवसर प्राप्त हुआ ।

शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार को सफल बनाने के लिये 15 करोड़ रुपया खर्च करने का निश्चय किया गया। स्त्रियों की शिक्षा का प्रबन्ध किया गया ।

---

1:- राजकुमार :- भारत का राजनीतिक इतिहास, पृ0 सं0- 486
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी, पृ0 सं0- संस्करण 1962 ई0

ग्रामीण अशिक्षतों को शिक्षित बनाने के लिए रात्रि -पाठशालाओं का आयोजन किया गया । इन पाठशालाओं के शिक्षक गांव का शिक्षित व्यक्ति होता था जिसे सरकार से अल्प -सहायता मिलती थी ।

प्रथम पंचवर्षीय योजना के समापन काल तक औद्योगिक क्षेत्र में पर्याप्त उन्नति हुई । औद्योगिक उत्पादन का सूचकांक (1946 ई०का 100 मानकर) इस वर्ष 1954-55 ई०) बढ़कर 148 हो गया। " 1 प्रथम पंचवर्षीय योजना के कार्यान्वयन के चतुर्थ वर्ष तक इंजनों, सीमेंट तथा अमोनिया का उत्पादन, लक्ष्य क्रमशः 85,82 और 79 % रहा । 2 इस योजना में 80 मील नई रेल की लाइन का निर्माण हुआ, 293 मील रेलवे लाइन में सुधार किया गया, 140 मील लम्बी नई सड़क का निर्माण हुआ, पांच सेतुओं का निर्माण हुआ तथा सामुदायिक विकास हेतु 1200 विकास खण्डों की आवश्यकता थी जिसमें से 726 विकास खण्ड खुल चुके थे ।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना :-

राष्ट्रीय आय में तेजी से वृद्धि, सामान्य जीवन स्तर में सुधार, औद्योगीकरण की गति में तीव्रता लाने, रोजगार के अवसरों का विस्तार करने, आय एवं सम्पत्ति की असमानता को कम करने के लिए द्वितीय पंचवर्षीय योजना कार्यान्वित की गई । इस योजना का कार्यकाल 1 अप्रैल 1956 ई० से 30 मार्च 1961 ई० था ।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना में व्यय होने वाली धनराशि का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में इस प्रकार होना था । सार्वजनिक क्षेत्र में 4800 करोड़ रुपये और निजी क्षेत्रों में 2400 करोड़ रुपये के व्यय का विवरण निम्नलिखित है ।

---

1:- राजकुमार :- भारत का राजनीतिक इतिहास, पृ० सं० - 486
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी, संस्करण 1962 ई०

2:- वही:- पृ० सं०- 480

## सार्वजनिक क्षेत्र में व्यय होने वाली धनराशि का विवरण

| विकास क्षेत्र | व्यय की जाने वाली धनराशि करोड़ रुपये में |
|---|---|
| क- कृषि और सामुदायिक विकास | 568 |
| ख- सिंचाई और शक्ति | 913 |
| ग- उद्योग और खाने | 890 |
| घ- परिवहन और समाचार संवहन | 1385 |
| ग- सामाजिक सेवाएं | 945 |
| घ- विविध | 99 |
| योग | 480 |

## निजी क्षेत्र में व्यय होने वाली धनराशि का विवरण इस प्रकार था

| विकास क्षेत्र | व्यय होने वाली राशि करोड़ रुपयों में |
|---|---|
| 1:- कृषि,ग्रामीण तथा लघु-उद्योग | 300 |
| 2:- स्टाक | 400 |
| 3:- निर्माण-कार्य | 1000 |
| 4:- बगीचे,विद्युत उत्पादन संस्थाएं और रेल को छोड़कर अन्य परिवहन | 125 |
| 5:- संगठित उद्योग एवं खाने | 575 |
| योग | 2400/ " 2 |

1:- डा० बाबूराम मिश्र :- स्वतन्त्र भारत की एक झलक, पृ० सं०- 151 प्रकाशन शाखा सूचना विभाग उ०प्र० लखनऊ, संस्करण 1959 ई०

2:- वही , पृ० सं० -153

प्रस्तुत योजनाओं में औद्योगिक विकास को विशेष महत्व दिया गया और चाय, काजू, नारियल, लाख आदि नकदी फसलों के उत्पादन में वृद्धि की गई। फलत: कृषकों की स्थिति में सुधार आई और इन वस्तुओं के निर्यात के द्वारा विदेशी मुद्रा कमाई जा सकी। कृषि विकास की पूर्ववर्ती नीतियों, विकास योजनाओं आदि का प्रसार किया गया। " औद्योगिक उत्पादन का निर्देशांक 1950-51 के आधार पर 1980-81 में 164 हो गया। लोह तथा इस्पात, कोयला, उर्वरक, भारी इंजीनियरिंग के सामान और भारी -बिजली के सामान के उद्योग में अभूतपूर्व प्रगति हुई। इस योजनाकाल में आठ मिलियन अतिरिक्त व्यक्तियों को रोजगार प्रदान किया गया तथा जिनमें से कृषि के बाहर अन्य क्षेत्रों में 6.5 मिलियन व्यक्तियों को रोजगार मिला। " 1

जलवायु की विषमता ने इस योजना की प्रगति में बाधा पहुंचाई। दूसरे बाधक तत्वों के रूप में विदेशी -मुद्रा एवं कुछ ऐसे अधिकारी एवं कार्यकर्ता आते हैं जिन्होंने "सामाजिक हितों को अपेक्षा वैयक्तिक स्वार्थों को सर्वाधिक महत्व देकर के राष्ट्रीय साधनों एवं धन का दुरुपयोग किया। " 2

## तृतीय पंचवर्षीय योजना

राष्ट्रीय आय में वृद्धि, कृषि उत्पादन में आत्मनिर्भरता, आधारभूत उद्योगों के विस्तार, देश की मानवीय शक्तियों के उपयोग, रोजगार के अवसरों में वृद्धि एवं अवसरों की समानता तथा धन के वितरण की असमानता में कमी लाने के उद्देश्य को लेकर तृतीय पंचवर्षीय योजना का गठन किया गया। इस योजना का कार्यकाल भी पूर्ववर्ती योजनाओं की भांति पांच वर्षों का था।

---

1:- आर०एन०दुबे तथा बी०सी० सिन्हा:- भारत में आर्थिक विकास एवं नियोजन पृ० सं० -560-61
नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, चतुर्थ संस्करण 1977 ई०

2:- डा० बाबूराम मिश्र :- स्वतन्त्र भारत की एक झलक, पृ० सं० 157
प्रकाशन शाखा सूचना विभाग उ०प्र० लखनऊ, संस्करण 1959 ई०

तृतीय योजनाकाल में वित्तीय साधनों के निर्धारित लक्ष्यों एवं उनकी वास्तविक उपलब्धियों का विवरण इस प्रकार था ।

तीसरी योजना के चुने हुये लक्ष्य और प्रगति

| मदें | योजना के लक्ष्य संशोधित | 1965 ई0 |
|---|---|---|
| खाद्यान्न (लाख टन) | 1000 | 720 |
| कपास ( लाख गांठें ) | 70 | 48 |
| पटसन ( लाख टन ) | 62 | 45 |
| तिलहन " | 100 | 63 |
| गन्ना-गुड़ " | 102 | 121 |
| प्रस्थापित बिजली क्षमता (लाख किलोवाट) | 127 | 102 |
| सीमेंट (लाख टन ) | 132 | 102 |
| कोयला " | 970 | 703 |
| तैयार स्पात(हजार टन) | 6900 | 4510 |
| मिल का सूती कपड़ा(करोड़ मी0) | 530 | 440 |
| कागज का गत्ता(हजार टन) | 711 | 558 |

1

इस योजना के कार्यकाल में कृषि उत्पादन के विकास की स्थिति निराशाजनक रही क्योंकि खाद्यान्न 82 मिलियन से घटकर 72·3 मिलियन मीटरीटन (लक्ष्य 100 मिलियन मीटरी टन), तिलहन 7 मिलियन से घटकर 6·14 मीटरीटन कपास 5·3 मिलियन गांठों से घटकर 4·8 मिलियन गांठे तथा जूट 5·3 मिलियन से घटकर 4·5 मिलियन गांठे था ।" 2

1:- आर0 एन0 दूबे तथा बी0सी0 सिन्हा:- भारत में आर्थिक विकास एवं नियोजन पृ0 सं0 - 563

नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, चतुर्थ संस्करण 1977 ई0

2:- राजकुमार :- भारत का राजनीतिक इतिहास, पृ0 सं0- 139

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी संस्करण 1962 ई0

मौसम की प्रतिकूलता ,कृषि विकास की योजनाओं के संचालन में ढील भारत का चीन एवं पाकिस्तान से युद्ध आदि ऐसे महत्वपूर्ण कारण थे जिसकी वजह से कृषि के क्षेत्र में यह योजना ‖ पूर्णतया असफल रही । " ।

तीन वार्षिक योजनाएं ‖ अप्रैल 1966 ई0 से मार्च 1969 ई ‖

तृतीय पंचवर्षीय योजना के असफल होने पर कृषि उत्पादन में वृद्धि के लिए एक वर्षीय योजनाएं बनी । इन तीनों वार्षिक योजनाओं में कुल 912 करोड़ रुपया खर्च किया गया । इन योजनाओं में सिंचाई एवं सामुदायिक विकास पर जोर दिया गया । फलतः चतुर्थ पंचवर्षीय योजना के प्रारम्भ में खाद्यान्न का उत्पादन बढ़कर 98 मिलियन मीटरीटन हो गया । " 2

चतुर्थ पंचवर्षीय योजना

सामान्य नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार के लिये आर्थिक कार्यक्षमता को गतिशील रूप प्रदान करने,खाद्यान्नों की बढ़ती हुई कीमतों को रोकने के उद्देश्य की पूर्ति के लिये अप्रैल 1969 ई0 चतुर्थ पंचवर्षीय योजना का गठन किया गया। इस योजना पर खर्च होने वाली धनराशि 24882 करोड़ रुपये थी जिसमें से 15902 करोड़ रुपया सार्वजनिक क्षेत्र में तथा 8980 करोड़ रुपये निजी क्षेत्र में खर्च होना था।

कृषि उत्पादन में वृद्धि के लिए न केवल पिछले कार्यक्रमों को लागू किया अपितु कुछ नए कार्यक्रम भी चालू किये गये । कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा के समन्वय पर जो दिया गया । कृषि कर्म में सिंचाई की सुव्यवस्था उर्वरकों एवं रसायनिक कीटनाशक दवाओं के उपयोग को प्रोत्साहित किया गया । कृषि उपजों के भंडारण सुविधाओं ,सहकारी बिक्री संगठनों एवं राज्यव्यापार निगम की सुदृढ़ व्यवस्था की गई ।

---

1:- आनन्द स्वरूप गर्ग:- अर्थशास्त्र की रूपरेखा , पृ0 सं0 - 140
राजहंस प्रकाशन मन्दिर संस्करण 1971 ई0

2:- वही :- पृ0 सं0 -140

चतुर्थ पंचवर्षीय योजना अपने लक्ष्य को पूर्णरूप से न प्राप्त कर सकी। औद्योगिक क्षेत्र में 9 % प्रतिवर्ष का लक्ष्य था जबकि राष्ट्रीय आय में वृद्धि 5.5 % की अपेक्षा थी। जनसंख्या की वृद्धि के कारण 2.8% की वृद्धि सम्भव न हो सकी। अन्य सेक्टरों के निर्धारित लक्ष्यों की सफलता को आंशिक रूप में प्राप्त हुई।

पंचवर्षीय योजनाओं के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि इनके कार्यान्वयन से भारतीय नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है। यह प्रगति बहुत सी क्षेत्रीय है। कृषि उत्पादन,सूती कपड़ो के निर्माण,सीमेंट,उत्पादन, स्पात निर्माण उर्वरकों एवं चीनी उत्पादन में आशातीत सफलता प्राप्त हुई है। इन पंचवर्षीय योजनाओं में हजारों बेकारों को काम मिला है। विद्युतीकरण ,सिंचाई एवं परिवहन की सु सुविधाओं से जन सामान्य अधिक लाभान्वित हुआ है। बेकारी की समस्या से जूझने के लिये इन योजनाओं में विभिन्न औद्योगिक संस्थाओं की व्यवस्था की गई है। इतना होते हुए भी " यह कटु सत्य है कि हमारी प्रत्येक योजनाओं में जितने लोग काम करने के योग्य हुये उतने व्यक्तियों के लिये भी काम की व्यवस्था नहीं की जा सकी ..............गत वर्षो में सामग्रियों की कीमतों में बहुत ही अधिक वृद्धि हुई निर्धनता अथवा काम आय वाले लोगों के उपयोग पर बहुत ही अधिक प्रभाव पड़ा यह भी स्पष्ट हो गया कि अधिकतम आय वाले लोगों की आय में सैकड़ो प्रतिशत वृद्धि हुई। ----- इससे तो स्पष्ट होजाता है कि नियोजित विकास से अधिक लाभ व्यापारियों,पूंजीपतियों एवं उद्योगपतियों को हुआ है। यही नहीं शासन में घूसखोरी बेईमानी और पक्षपात की क्रियाओं के बढ़ जाने से प्रशासकों,विधायकों एवं मंत्रियों द्वारा अधिक पैसा बनाया गया।" । निसंदेह घूसखोरी,बेईमानीएवं अर्थ का असंतुलित वितरण सामाजिक अशान्ति का सूचक है जो सामाजिक विघटन का ही पर्याय है।

---

1:- आर० एन० दूबे तथा बी०सी० सिन्हा :- भारत में आर्थिक विकास एवं नियोजन, पृ० सं०- 580-581
नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, चतुर्थ संस्करण 1977 ई०।

## चीन का भारत पर आक्रमण

प्राय: हर देश की आंतरिक सुरक्षा एवं प्रगति का सीधा सम्बन्ध सीमावर्ती पड़ोसी देशों से होता है । इसका मुख्य कारण यह है कि पड़ोसी देशों के साथ कटु एवं तनावपूर्ण सम्बन्ध होने पर न तो एक दूसरे को आर्थिक सहायता मिल पाती है, न तो तकनीकी ज्ञान का ही आदान-प्रदान हो पाता है । इसके अतिरिक्त दोनों देशों को सीमावर्ती सुरक्षा के लिये व्यापक तैयारियां पर पर्याप्त धन व्यय करना पड़ता है । यह स्थिति विकासशील देश के लिए कष्टप्र है। चीन, विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या वाला भारत की उत्तरी सीमा पर स्थित पड़ोसी देश है । अतिप्राचीन काल में ही भारत का चीन से सांस्कृतिक सम्बन्ध था । इस सम्बन्ध का बीजारोपण बौद्धकाल में हुआ था जो कालान्तर में पल्लवित एवं पुष्पित होता रहा । अत: स्वतन्त्र भारत

एवं चीन के सम्बन्धों में भारत के स्वतन्त्रता प्राप्ति के आरम्भकाल में प्रगाढ़ता आई। भूतपूर्व प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरु के कार्यकाल में दोनों देशों के सम्बन्धों में मधुरता आई और दोनों देशों के प्रधानमन्त्रियों ने हिन्दू-चीन भाई-भाई का नारा बुलंद किया। परन्तु यह सम्बन्ध अधिक दिनों तक सुमधुर न रह सका। चीन और भारत के बीच सीमा-रेखा का विवाद उठ खड़ा हुआ। भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरु चीन के साथ इस विवाद को शांति पूर्ण ढंग से निपटाना चाहते थे, तभी चीन ने भेड़िया चाल चली और 1962 ई0 में अचानक भारत पर आक्रमण कर दिया। भारत को इस युद्ध की सम्भावना नहीं थी जिसके कारण सैन्य-सज्जा के प्रति गहरी नींद सो रहा था। युद्ध के प्रारम्भिक दिनों में लद्दाख क्षेत्र में भारतीय सेना पराजित हुई, परन्तु शीघ्र ही भारतीय जांबाज सैनिकों ने चीन पर प्रत्याक्रमण किया और सफलता प्राप्त की। विश्व के बड़े-बड़े राष्ट्रों के हस्तक्षेप करने पर यह युद्ध बंद हो गया लेकिन सीमा सम्बन्धी विवाद पूर्वत बना हुआ है।

चीन भारत की सैन्यशक्ति से भयभीत है अतः अब वह सीधा भारत पर आक्रमण करने के बजाय पाकिस्तान को भारत से युद्ध करने के लिए भड़काता है और उसका साथ देता है। भारत ने सीमावर्ती क्षेत्रों की सुरक्षा की व्यापक तैयारियां कर ली है और अब पड़ोसी देशों द्वारा होने वाले आक्रमणों के प्रति सजग है।

चीन के साथ हुआ युद्ध सीमावर्ती भारतीय जन-जीवन को अस्तव्यस्त करने में सफल रहा। चीन की सीमावर्ती क्षेत्रों में की गई तैयारियों से निपटने के लिये हमारी सरकार को आवश्यकता से अधिक सामरिक शक्ति पर व्यय करना पड़ा जिसका प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों में विकास कार्यों पर बुरा असर पड़ा।

---

1:- श्री नेत्र पाण्डेय :- भारत का बृहद इतिहास, पृ0 सं0- 605
स्टूडेन्ट्स फ्रेन्ड, विवेकानन्द मार्ग, इलाहाबाद

भारत- पाक द्वन्द्व

अंग्रेजों ने देश के बटवारे के समय ही भारत एवं पाकिस्तान के बीच कुछ कलह के बीज बो दिये थे जिसके कारण भारत एवं पाकिस्तान के बीच पारस्परिक अविश्वास, विद्वेष एवं संघर्ष उत्पन्न हो गया । कश्मीर की समस्या के समाधान के लिए दोनों देशों के बीच कई वार्तायें हुई, परन्तु यह मसला सुलझने के बजाय और उलझता गया । पाकिस्तानी सरकार ने कश्मीर के अधिग्रहण एवं भारत को क्षति पहुंचाने के उद्देश्य से प्रेरित होकर सितम्बर 1965 ई0 में छम्ब एवं जुरियन सेक्टर की अन्तर्राष्ट्रीय भारत -पाक सीमा निर्धारण रेखा का अतिक्रमण करके भारत पर आक्रमण कर दिया । आत्मरक्षा के लिए भारतीय वायु सेना लाहौर, सियालकोट, खमकारन, बरमर, सेक्टर की ओर आगे बढ़ी। विशाल कवचबद्ध पाक सेना ने भारतीय सैनिकों को जम्बू सेक्टर में रुकने के लिए विवश कर दिया । जम्बू सेक्टर में बढ़ती हुई विशाल पाक-सेना को रोकने के लिये भारत के छम्ब एवं जूरियन सेक्टर पर भी युद्ध प्रारम्भ करना पड़ा । यह युद्ध 23 सितम्बर 1965 ई0 को समाप्त हुआ। रूस के प्रधान मन्त्री कोशिगिन के आमन्त्रण पर" ताशकंद "" में दोनों देशों के प्रधान मन्त्रीयों में संधि हुई । इस संधि के तुरन्त बाद प्रधान मन्त्री लाल बहादुर शास्त्री का निधन हो गया ।

यह संधि स्थायित्व न प्राप्त कर सकी क्योंकि पाकिस्तान भस्म में दबी अग्नि की भांति सुलगता रहा । 1971 ई0 तक पूर्वी एवं पश्चिमी पाकिस्तान के मध्य पारस्परिक विद्वेष की स्थिति अपनी चरम सीमा पर पहुंच गई। पूर्वी पाकिस्तान के जननेता मुजीबुर्रहमान ने पश्चिमी पाकिस्तान के शोषण के विरोध में आवाज उठाई । तत्कालीन पश्चिमी-पाकिस्तानी के राष्ट्रपति याहियां खां बलपूर्वक पूर्वी-पाकिस्तान के राजनीतिज्ञों एवं नागरिकों का दमन प्रारम्भ किया जिसके फलस्वरूप पूर्वी-पाकिस्तान में विद्रोह एवं क्रान्ति का बिगुल बज उठा। इस क्रान्ति का भारत पर भी असर पड़ा । पश्चिमी पाकिस्तान के अत्याचार से परेशान होकर पूर्वी-पाकिस्तान से शरणार्थियों का काफिला भारत की ओर बढ़ा । शरणार्थियों की यह संख्या दिन-दूनी रात-चौगुनी होती गई। शरणार्थियों के भोजन एवं आवास की समुचित व्यवस्था, भारत के लिये कठिन समस्या बन गई।

पूर्वी पाकिस्तान के लोगों द्वारा शोषण का विरोध किए जाने पर पश्चिमी पाकिस्तान के राजनीतिज्ञों ने सेना के माध्यम से जनता को त्रस्त करना प्रारम्भ किया । इस कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए पश्चिमी पाकिस्तान के सैनिकों ने बंगला देश के प्रमुख सार्वजनिक स्थलों पर बम वर्षा की । बंगला देश की मुक्ति-वाहिनी गुरिल्ला सैनिकों ने शौर्यपूर्वक पश्चिमी पाकिस्तान के सैनिकों का सामना किया । मुक्तिवाहिनी सैनिकों द्वारा घमासान युद्ध किए जाने पर पश्चिमी पाकिस्तान के सैनिकों को रणक्षेत्र से पीछे की ओर मुड़ने के लिए विवश होना पड़ा । पश्चिमी पाकिस्तान के सैनिकों ने बंगला देश की रणभूमि से पीछे मुड़कर भारतीय सीमा में प्रवेश किया । पश्चिमी पाकिस्तान के सैनिकों द्वारा भारतीय सीमाक्षेत्र में प्रवेश भारत के लिए हानिप्रद थी परन्तु भारतीय सैनिकों ने युद्ध को टालने का भरसक प्रयत्न किया ।

बंगलादेश पर आक्रमण के साथ-साथ 3 दिसम्बर 1971 ई० को पाकिस्तानी बमवर्षा ने अमृतसर ,पठानकोट,श्रीनगर,अवन्तिपुर,अतरल्ला,फरीदपुर,जोधपुर चण्डीगढ़ अम्बाला एवं आगरा में प्रातःकाल लगभग 6 बजे पाकिस्तानी सेना के उच्चाधिकारियों की सुनिश्चित योजना थी कि सर्वप्रथम भारतीय नौसेना की प्रमुख हवाई पट्टियों को नष्ट कर दिया जाय। परन्तु पाकिस्तानी सेना को इस कार्य में सफलता न मिल सकी । भारतीय थलसेनाध्यक्ष एस०एच०एफ० जे० मानेकशा ने 8 दिसम्बर 1971 ई० को पाकिस्तानी सैनिकों को आत्मसमर्पण के लिये विवश कर दिया ।अन्ततः 16 दिसम्बर 1971 ई० को पाकिस्तान की सेना ने बंगला-देश में भारतीय सेना के समक्ष आत्मसमर्पण किया । तत्कालीन भारतीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरागांधी ने खून खराबी को रोकने एवं जीवितों की रक्षा के लिए पाकिस्तानी सैनिकों को आत्मसमर्पण की अनुमति दी ।

90 हजार शस्त्र पाकिस्तानी सैनिकों का आत्मसमर्पण भारतीय राजनीतिज्ञों, सैनिकों एवं नागरिकों की कर्तव्यनिष्ठा एवं प्रबन्धपटुता का परिचायक है । इस तरह स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में बंगला देश का अभ्युदय हुआ ।

इस युद्ध में भारत की विजय हुई परन्तु आर्थिक दृष्टि से भारत को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा । युद्ध काल में आए शरणार्थियों के भोजन एवं आवास की व्यवस्था तथा 90 हजार युद्ध -कैदियों के आवास एवं भोजन की सुव्यवस्था के लिए भारत को काफी धनखर्च करना पड़ा जिसकी वजह से देश को कई विकास योजनाएं स्थगित करनी पड़ी । युद्ध में भारतीय सैनिक भी हताहत हुये । सीमावर्ती क्षेत्रों की फसलें युद्ध में रौंद डाली गई एवं वहां का जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया था । इस युद्ध में भारत का मुनवरतवी का पश्चिमी क्षेत्र एवं देवा का दक्षिणी क्षेत्र मां भारती के आंचल से छिन गया । उक्त क्षेत्रों के निवासियों को विवश होकर पाकिस्तान की आधीनता स्वीकार करनी पड़ी उनके मन में यह उत्कृट अभिलाषा दबी ही रह गई कि वे युद्ध के बाद भारत के स्वतंत्र नागरिक बन सकेंगे । इस प्रकार भारतीय गणराज्य के उक्त क्षेत्र का साम्प्रदायिक विघटन हो गया ।

## दहेज प्रथा उन्मूलन का प्रयास

सामान्यत: दहेज का अर्थ उस धन अथवा सम्पत्ति से किया जाता है जिसे कन्या - पक्ष वाले वर-पक्ष को विवाहोत्सव में देते हैं । प्राचीन काल में भी यह परम्परा प्रचलित थी परन्तु इसका उतना उग्र रूप नहीं था जिस प्रकार वर्तमान में है । अनुचित दहेज के अभाव में लड़कियों के विवाह में रुकावटें आती हैं । जब लड़की परिवार वालों को अपने विवाह के कारण अत्यधिक परेशान देखती है तब उसके मस्तिष्क में विद्रोही भाव एवं कुंठा जागृत होती है । वह शान्तिपूर्वक किन्तु अन्तर्मन में सुलगती हुई इस सब को सहने की कोशिश करती है और जब कभी सहन

की सीमा का अतिक्रमण कर जाता है तो वह या तो वेश्यावृत्ति अपना लेती है अथवा आत्महत्या कर लेती है। परिवार के सदस्य भी कन्या के विवाह के लिए प्रयत्न में कोई कोर कसर नहीं रखते कभी-कभी वे दहेज के लिए चोरी,डाका या हत्या कर जाते हैं । कुछ निर्धन धनाभाव में लड़कियों का अनमेल विवाह कर देते हैं जिसके फलस्वरूप विधवा समस्या उत्पन्न होती है क्योंकि इस वर्ग के अधिकांश वर रुग्ण,अधेड़ अथवा वृद्ध होते हैं ।

भारत सरकार ने दहेज प्रथा को रोकने के लिए 1959 ई0 में दहेज निरोध अधिनियम पारित किया जिसके अनुसार दहेज लेना और देना दोनों दण्डनीय अपराध है । " दहेज लेने और देने वाले को 5000 रु0 का जुर्माना तथा 6 माह की कैद की सजा दी जा सकती है । " । सन् 1961 ई0 में पास दहेज-निरोधक अधिनियम में न केवल हिन्दुओं अपितु अन्य सभी जातियों एवं धर्मों के भारतीय नागरिकों के लिए भी दहेज प्रथा पर कानूनी प्रतिबंध लगा दिया गया। इस अधिनियम का सबसे अच्छा प्रभाव देखने को यह मिला कि अब लोग विवाह के समय खुले तौर पर लेन-देन की बात नहीं कर सकते । इतना होने पर भी यह नहीं कहा जा सकता है कि दहेज प्रथा समाज से पूर्णतः समाप्त हो गई है बल्कि अब दहेज का लेन-देन गुप्त रूप से होने लगा है। आपातकाल में दहेज की बुराई से जनता जनता को मुक्त करने के लिये प्रयास किया गया ।स्वर्गीय संजय गांधी ने अपने पांच सूत्री कार्यक्रम में इसे एक सूत्र के रूप में भारतीय नवयुवकों एवं नवयुवतियों के समक्ष रखा । इस कार्यक्रम में उतनी सफलता नहीं मिली जितनी की अपेक्षा थी । हां इतना अवश्य हुआ कि शिक्षित समुदाय की कुछ ऐसी नवयुवतियां सामने आई जो यह दृढ़ संकल्प किए हुए हैं कि "वे दहेज लेने वाले वर से विवाह नहीं करेंगी । " 2

---

1:- उदयबीर सक्सेना:- समाजशास्त्र की रूपरेखा, पृ0 सं0- 409
स्वास्तिक,प्रकाशन,अस्पताल मार्ग, आगरा - 3

2:- दैनिक पत्र" भारत" 20 जनवरी 1976 ई0
इलाहाबाद से प्रकाशित

निम्नलिखित ऐसे प्रमुख कारण है जो समाज में दहेज प्रथा को पोषित करते है । समाज में सगोत्रीय एवं सजातीय विवाहों के प्रचलन एवं प्रधानता के कारण कोई भी व्यक्ति यह नहीं चाहता कि उसके परिवार का विवाह विजातीय हो । इससे बचने के लिए कन्या का पिता सजातीय वर का सामर्थ्य से अधिक धन देने की कोशिश करता है। जिससे विवाह दहेज के कारण न टलें ।

अन्तर्जातीय-विवाहों के अप्रचलन के कारण भारत का मध्यवर्ग प्राचीन रुढ़ियों एवं मान्यताओं के प्रतिमोहाविष्ठ है । वह अपनी प्राचीन सजातीय विवाह -पद्धति को त्यागना नहीं चाहता । इसलिए सजातीय श्रेष्ठ एवं योग्य वरों की संख्या अल्प होने के कारण अर्थशास्त्र के मांग एवं पूर्ति के नियमानुसार उनके दहेज का भाव बढ़ जाता है। यदि समाज में अन्तार्जातीय विवाहों का पूर्ण प्रचलन हो जाय तो दहेज प्रथा स्वयं टूटने लगेगी ।

## नारी : स्वातंत्र्य

उन्नीसवीं शताब्दी तक भारतीय नारी - समाज कूप मंडूक था । उसके विचरण की चहारदीवारी परिवार तक ही सीमित थी । उसके सामाजिक तथा वैयक्तिक - चेतना एवं अहं - भाव का मूल्य समाज में नगण्य था । इस काल तक स्त्रियां पुरुषों के उपभोग की वस्तु समझी जाती थी । सती प्रथा , अनमेल -विवाह, वृद्ध विवाह, बाल विवाह, बहु विवाह के प्रचलन एवं पुनर्विवाह के अप्रचलन जैसी सामाजिक कुरीतियों ने भारतीय नारी की सामाजिक एवं वैयक्तिक चेतना को रसातल में पहुंचा दिया था ।

ईसाई धर्म के प्रचारकों ने भारतवर्ष में नारी की सामाजिक प्रतिष्ठा स्थापित करने के निमित्त भारतीय मनीषियों का ध्यान आकर्षित किया। राजा मोहनराय, स्वामी

विवेकानन्द, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, श्रीमती एनी बेसेंट, महात्मागांधी आदि लोगों के अथक प्रयत्नों के फलस्वरूप देश के स्वतंत्र होने से पूर्व ही भारतीय नारी की स्थिति में पर्याप्त सुधार हो चुका था ।

स्वतंत्र भारत के संविधान में स्त्रियों को पुरूषों की भाँति समानाधिकार प्राप्त हैं । स्त्रियों की पारिवारिक एवं सामाजिक स्थिति में सुधार लाने के लिए भारतीय सरकार ने हिन्दू विवाह तथा विवाह विच्छेद अधिनियम 1958 ई0 , दहेज -निरोधक अधिनियम 1961 ई0 पास किये हैं ।

स्वतंत्र भारत की नारियां अपने अधिकारों के प्रति पूर्ण सजग हैं । उदाहरण के रूप में प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरागांधी, विजयलक्ष्मी पंडित, सुचेता कृपलानी श्रीमती स्वरूप कुमारी बक्शी ,राजेन्द्री कुमारी बाजपेई को प्रस्तुत किया जा सकता है। स्वतंत्र भारत की नारियां केवल राजनीति के क्षेत्र में ही पदार्पण नहीं किया है अपितु आज वे उच्च कोटि के वैज्ञानिक ,डाक्टर, इंजीनियर, प्रशासक आदि भी हैं । इन क्षेत्रों में वे पुरूषों से किसी मायने में पीछे नहीं हैं ।

यह कहना अत्युक्ति न होगा कि स्वतंत्र भारत में स्त्रियों की दशा एवं अधिकार क्षेत्र में पर्याप्त उन्नति हुई है जिसके कारण उनके सम्मुख घर-बाहर की समस्या ,पारिवारिक संतुलन की समस्या एवं वैयक्तिक प्रतिष्ठा की समस्या उत्पन्न हो गई है। एक ओर वह नौकरी करना चाहती है, सामाजिक क्षेत्र में उतरना चाहती है दूसरी ओर वह पारिवारिक व्यवस्था के प्रलोभन को भी नहीं त्यागना चाहती अत: इस वर्ग की स्त्रियों के समक्ष परिवार एवं नौकरी में संतुलन की समस्या, बच्चों के उचित संरक्षण की समस्या देखने को मिलती है । ये समस्यायें सामाजिक विघटन को प्रोत्साहित करती हैं ।

समाज की मध्यम एवं विपन्न वर्गीय नारियों की दशा में उतना सुधार नहीं हो सकता है जितने की अपेक्षा की जाती रही है । यही कारण है कि समाज में अब भी माता - पिता , सास-ससुर और पति के अंकुश और नियंत्रण में अवगुंठनवती नारी और बाल वधुओं के साथ - साथ विश्व - भ्रमण और पर्वतारोही नारी और आधुनिकतम ज्ञान - विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करने वाली नारी का अस्तित्व बराबर दृष्टिगोचर होता है ।"[1] उपर्युक्त कथन से स्पष्ट होता है कि भारतीय नारी की आर्थिक , राजनीतिक, सामाजिक सभी स्थिति में परिवर्तन आ रहा है जिसकी अन्तिम परिणति भविष्य पर निर्भर है ।

---

1:- डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय :- द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ०सं० 57 राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 1973ई०

वैज्ञानिक दृष्टिकोण :-

वर्तमान शती वैज्ञानिक उपलब्धियों की है । इस शती में भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र,जीवविज्ञान, वनस्पतिशास्त्र,भूगर्भ विज्ञान, चिकित्साविज्ञान, तथा उनकी अन्य शाखाओं एवं प्रशाखाओं में अभूतपूर्व उपलब्धियां प्राप्त की है जिससे समसामयिक मानव ने आवागमन के साधारण साधनसे लेकर चन्द्रलोक तक पहुंचने में सफलता प्राप्त की है । वैज्ञानिक आविष्कारों ने उन्हें सुख-सुविधा प्रदान की। साथ ही साथ इन्हें परम्परित अंधविश्वासों जादू-टोने आदि भ्रान्तिपूर्ण धारणाओं के प्रति फिर से सोचने के लिए विवश किया । स्वतंत्र भारत भी उपर्युक्त सोचने की प्रक्रिया से अछूता न रह सका । इस संदर्भमें डा0 चण्डीप्रसाद जोशी का यह कथन उपयुक्त ही है । " आधुनिक भारत के सांस्कृतिक नवनिर्माण में विज्ञान का सबसे अधिक,महत्वपूर्ण योगदान रहा है। विज्ञान ने न केवल भौतिक सभ्यता के उपकरणों का निर्माण किया वरन् उसने चिंतन पद्धति का आधार ही बदल दिया । " । वैज्ञानिक उपलब्धियों की चकाचौंध ने ईश्वर एवं धर्म सम्बन्धी आस्था को गौण बना दिया तथा मानव को प्रधान । इस धारणा के कारण सामाजिक जीवन में भी परिवर्तन के चिन्ह शहरीकरण ,औद्योगीकरण, वैयक्तिकता की प्रधानता के रूप में उभरे । शहरीकरण, औद्योगीकरण,नारी स्वतंत्रता,अछूतोद्धार स्पृश्यता निवारण,भाई चारे की प्रवृत्ति आदि को प्रोत्साह प्राप्त हुआ साथ ही साथ वैज्ञानिक उपलब्धियों से उत्पन्न औद्योगीकरण एवं शहरीकरण से गंदी बस्तियां ,वर्ग संघर्ष ,पूंजी का केन्द्रीयकरण औद्योगीक दुर्घटनाओं ,बेकारी ,निर्धनता से सम्बन्धित विभिन्न सामाजिक समस्याएं उत्पन्न हुई । उपर्युक्त सामाजिक विघटन की अभिव्यक्ति हैं ।

---

1:- चण्डी प्रसाद जोशी :- हिन्दी उपन्यास समाजशास्त्रीय विवेचन,पृ0सं0 405
अनुसंधान प्रकाशन आचार्य नगर कानपुर प्रकाशन तिथि 15 अक्टूबर 1962

## विशाल कारखानों का निर्माण

स्वतन्त्र भारत में औद्योगिक विकास पर भी ध्यान दिया गया। देश के विभिन्न प्रान्तों में तकनीकी एवं औद्योगिक प्रशिक्षण के लिये विभिन्न संस्थाएं खोली गई है। औद्योगिकरण में विद्युत शक्ति अत्यन्त उपयोगी है। विद्युत शक्ति की प्राप्ति के लिए ताप-विद्युत गृहों की स्थापना की गई। वाराणसी में डीजल इंजन बनाने का कारखाना, नैनी (इलाहाबाद) में टेलीफोन बनाने का कारखाना लगाया गया रायबरेली जिले में टेलीफोन बनानेकी एक नई यूनिट कायम की गई। रसायनिक उर्वरकों की प्राप्ति में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिये फूलपुर (इलाहाबाद) में उर्वरक संयंत्र स्थापित किया गया है, विश्व के अन्य विकासशील देशों की भांति भारत के सम्मुख उर्जा -संकट है। भारत मिट्टी के तेल, डीजल, एवं पेट्रोल के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्ति के लिए बम्बई के तटवर्ती क्षेत्रों में तेल उत्पादन कारखाना स्थापित किया गया है " जिसकी उत्पादन क्षमता पहले के कारखानों से कहीं अधिक होगी।"[1]। परमाणु विस्फोट के संरचनात्मक कार्यों पर किया जा रहा अनुसंधान कार्य उर्जा संकट से मुक्ति प्रदान कर सकेगा। 18 मई 1947 ई0 से पूर्व विश्व के प्रमुख पांच देश संयुक्त राज्य अमरीका, इग्लैंड, फ्रान्स सोवियत रूस तथा साम्यवादी चीन न्यूक्लियर क्लब के सदस्य थे। इस क्लब की सदस्यता किसी भी देश की सामरिक एवं तकनीकी अभ्युन्नति का द्योतक है। 18 मई 1974 ई0 को राजस्थान प्रान्त के पोखरान स्थान पर भूमिगत परमाणु विस्फोट की सफलता ने भारत को न्यूक्लियर क्लब के छठें सदस्य की ख्याति प्रदान की। भारत ने न्यूक्लियर नान प्रालीफेरेशन ट्रीट पर हस्ताक्षर नहीं किया क्योंकि यह परमाणु शक्ति वाले देशों एवं अन्य देशों के मध्य भेद-भाव की नीति पर आधारित है।

---

1:- दैनिक पत्र आज, 2 जून 1976 ई0
वाराणसी से प्रकाशित

ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के व्यापक प्रसार एवं प्रचार के लिए अमरीका के सहयोग से 30 मई 1974 ई0 को कैनेडी स्पेस सेंटर से एप्लीकेशन टैक्नोलाजी सेटलाइट प्रक्षेपित किया गया । भारतवर्ष के लगभग 2400 ग्रामों में उतनी ही संख्या में टैलीवीजन सेट लगाए जाएँगे तथा वे विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रसारण किया करेंगे । इस कार्यक्रम के लिए चुने गए गांव 400 समूहों में आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, बिहार, उड़ीसा एवं राजस्थान प्रान्तों में स्थित हैं । इस योजना के अन्तर्गत स्वास्थ्य, परिवार - नियोजन, कृषि शिक्षा आदि से संबंधित विषयों पर समय समय पर वार्ता, कहानी, नाटक आदि का प्रसारण क्षेत्रीय भाषाओं में किया जाता है । शैक्षणिक उपग्रह के कार्यक्रम से भारत की साधारण एवं अशिक्षित जनता सर्वाधिक लाभान्वित होगी क्योंकि इस कार्यक्रम का गठन जन - सामान्य की भाषा में इस प्रकार किया गया है कि उन्हें समझने में विशेष कठिनाई न हो तथा साधारण से साधारण ग्रामीण भी नित्य प्रति होने वाली विश्व की प्रमुख घटनाओं को सोचने एवं समझने के योग्य बन सकें । इस प्रकार अंधविश्वासी एवं परम्परित कुरीतियों से जन साधारण परिचित होकर उन्हें त्यागने के लिये तत्पर होगा । यह कार्य देश में विकासशील सामाजिक परिवर्तन के रूप में उभर कर सामने आएगा ।

बढ़ती गरीबी :-

बेकारी की भांति निर्धनता भी एक सामाजिक आर्थिक समस्या है। यह एक आर्थिक समस्या इसलिए है क्योंकि धनाभाव ही निर्धनता को उत्पन्न करता है तथा सामाजिक समस्या इसलिए है क्योंकि निर्धनता से उत्पन्न दशाएं सामाजिक जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव डालती हैं। " निर्धनता का तात्पर्य एक ऐसे अभावग्रस्त जीवन से है जो समाज के सामाजिक आर्थिक कुसमायोजन से उत्पन्न होता है तथा जिसके फलस्वरूप व्यक्ति अपनी तथा अपने आश्रितों की अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ रहता है। " ।

आज भारत के समक्ष निर्धनता की गम्भीर समस्या है क्योंकि इसके कारण लोगों को पर्याप्त भोजन आवास एवं मनोरंजन की सुविधा नहीं मिल पाती जिसके कारण निर्धन व्यक्ति वैयक्तिक स्तर पर विघटित हो जाता है तथा धनार्जन के लिए विभिन्न प्रकार के समाज विरोधी कार्य अपना लेता है, अपराध करने लगता है। देश में निर्धनता की समस्या अपर्याप्त पोषण के रूप में स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। भारत के अधिकांश व्यक्तियों का स्वास्थ्य सामान्य स्तर से निम्न है क्योंकि उन्हें पर्याप्त भोजन नहीं मिलपाता है। इस तथ्य को पुष्टि "दिनमान में " दिये गए इस तथ्य से होती है ।" साधारण रूप से स्वास्थ्य के लिए 3,000 कैलोरी भोजन की आवश्यकता होती है। परन्तु भारत में एक सामान्य व्यक्ति को बहुत कठिनता से 1,990 कैलोरी भोजन ही प्राप्त होता है। इसके विपरीत एशियाई देशों में ही वर्मा में व्यक्तियों को 2010 ईरान में 2030 चीन में 2050 तथा पाकिस्तान में 2410, कैलोरी भोजन में प्राप्त हो जाती है। (2) हमारे देश में व्याप्त निर्धनता का संकेत प्रति व्यक्ति की आय से भी मिलता है। भारत में सरकारी आंकड़ों के अनुसार प्रति व्यक्ति आय बढ़कर 1537 रू० हो गई है। 3 परन्तु साधारण व्यक्ति को इससे विशेष लाभ नहीं मिल सका है। क्योंकि "हमारे देश के 60 प्रतिशत लोगा कुल राष्ट्रीय आय का केवल 20 प्रतिशत

---

1:- डा० गोपाल कृष्ण अग्रवाल:- सामाजिक विघटन पृ० सं० 287-288
आगरा बुक स्टोर पंचकुइयां आगरा, प्रथम सं० 1979, प्रयुक्त सं० 1984

2:- दिनमान 17-23 दिसम्बर 1978 "गरीबी की रेखा नहीं लक्ष्मण रेखा।"

3:- भारत -1982 पृ० सं० 165

भाग प्राप्त कर पाते हैं जब कि ऊपर के 20 प्रतिशत व्यक्ति देश की लगभग 60 प्रतिशत आय पर अपना अधिकार जमाये हुए हैं। पंचवर्षीय योजनाओं में काफी विकास कार्य होने के पश्चात भी जनसामान्य को इन योजनाओं का कोई व्यावहारिक लाभ प्राप्त नहीं हो सका । दूसरे देशों की अपेक्षा भारत अभी भी बहुत पिछड़ा हुआ है और इस कारण इसे संसार के निर्धन देशों में गिना जाता है ।

निर्धनता से समाज में अपराधों की वृद्धि होती है क्योंकि जब व्यक्ति साधारण तौर पर ईमानदारी एवं निष्ठापूर्वक कार्य करके अपनी दैनिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने में असफल हो जाता है तो वह चोरी,डकैती,हत्या जेबकटी,जालसाजी आदि करके अपने आवश्यकताओं की पूर्ति की चेष्टा करता है व्यक्ति की उपर्युक्त अपराधिक प्रवृत्ति उसे नैतिक एवं चारित्रक पतन की ओर उन्मुख करता है । निर्धनता मद्यपान,जुआ,वेश्यावृत्ति आदि सामाजिक दुर्व्यसनों को भी बढ़ावा देता है । निर्धनता के कारण उत्पन्न सामाजिक विघटन की ओर संकेत करते हुए डा० गोपाल कृष्ण अग्रवाल ने लिखा है । " भारत में कितने ही व्यक्ति निर्धनता के कारण जुए,मद्यपान और वेश्यावृत्ति की ओर प्रवृत्त हो रहे है । गृह -मन्त्रालय की रिपोर्ट से भी यह स्पष्ट हुआ कि बाल -अपराधियों में 25 प्रतिशत वे किशोर है जिनके माता-पिता की आय 150 रू० मासिक से भी कम है। निर्धनता की स्थिति चरित्र के पतन तथा भिक्षावृत्ति को प्रोत्साहित देकर भी समाज को विघटित कर रही है । " 2

==========================================================

1:- डा० गोपाल कृष्ण अग्रवाल:- सामाजिक विघटन, पृ० सं० 289
आगरा बुक स्टोर पचकुइयां आगरा प्रथम सं० 1979 ई० प्रयुक्त 1984 ई०

2:- वही :- पृ० सं०-130-131

बेरोजगारी :-

बेकारी एक सामाजिक -आर्थिक समस्या है । जब किसी समाज के लोगों को आवश्यक योग्यता और कार्य करने की इच्छा रहते हुएभी जीविका के ऐसे साधन प्राप्त नहीं हो पाते जिससे उनकी न्यूनतम कार्य-कुशलता बनी रहे, तब इस दशा को बेरोजगारी के नाम से जाना जाता है। भारत भी बेकारी की समस्या से बच नहीं सका है। देश में बेकारी की समस्या का आरम्भ वस्तुओं से प्रतियोगिता न कर सकने के कारण छोटे-छोटे उद्योग धन्धे नष्ट हो गये । इसी समय से लाखों व्यक्ति काम की खोज में गांवों से नगरों की ओर आने लगे । मशीनों में अपेक्षाकृत रूप से कम श्रमिकों की आवश्यकता होती है। इसके फलस्वरूप बहुत से व्यक्ति बेकारी में अपना जीवन व्यतीत करने के लिये बाध्य हो गये । "1 कालान्तर में असंतुलित शिक्षा व्यवस्था और नौकरी के प्रति तीव्र लालसा की प्रवृत्ति ने बेकारी की समस्या उत्पन्न करने में आग में घी डालने का काम किया है जिसके फलस्वरूप सन् 1982 ई0 तक ही देश में लगभग 3 करोड़ से अधिक बेरोजगार व्यक्ति हो गये थे जिनमें से 1 करोड़ 62 लाख बेरोजगार व्यक्ति रोजगार कार्यालय में पंजीकृत हो चुके थे । 2

भारत वर्ष में बेकारी की समस्या ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों के शिक्षितों,अशिक्षितों,मजदूरों में दृष्टिगोचर होती है। मोटे तौर पर बेकारी की समस्या को ग्रामीण बेकारी एवं नगरीय बेकारी में विभक्त कर सकते हैं ।

भारत एक कृषि प्रधान देश है तथा यहां की अधिकांश जनता ग्रामों में रहकर कृषि ~~[illegible]~~ अथवा कृषि संबंधी व्यवसायों से जीविकोपार्जन करती है। ग्राम में निवास करने वाले कृषक श्रमिकों में भूमिहीन कृषकों की एक बहुत बड़ी संख्या है जो वर्ष में मात्र आठ माह तक ही काम कर पाते हैं शेष चार माह बेकारी की स्थिति से गुजरते है । 3

---

1:- डा0 गोपाल कृष्ण अग्रवाल :- सामाजिक विघटन , पृ0 सं0- 302
आगरा बुक स्टोर पंचकुइयां आगरा,प्रथम सं0 1979,प्रयुक्त सं0 1984

2:- भारत 1982 पृ0 सं0 -177

3:- डा0 गोपाल कृष्ण अग्रवाल :- सामाजिक विघटन पृ0 सं0 305
आगरा बुक स्टोर पंचकुइयों आगरा,प्रथम सं0 1979 प्रयुक्त सं0 1984

गांवों में कृषि के अलावा अन्य उद्योग धंधे भी इतने पिछड़े हुए हैं कि ग्रामीणों को रोजगार की अन्य सुविधाएं नहीं मिल पाती । यद्यपि गांवों के बेरोजगार व्यक्तियों की संख्या का शुद्ध अनुमान लगाने की कोई निश्चित कसौटी नहीं है, परन्तु सेन्सस रिपोर्ट से यह अनुमान लग जाता है कि सन् 1971 ई० की जनगणना के समय गांवों की कुल जनसंख्या 43 करोड़ 88 लाख थी जिसमें से केवल 15 करोड़ 84 लाख व्यक्ति ही खेती और दूसरी सेवाओं में लगे थे । " 1 जिससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण कृषकों की बहुत बड़ी संख्या बेरोजगारी अथवा आंशिक बेरोजगारी की स्थिति में है । ग्रामीणों में व्याप्त बेकारी के कारणों में जनसंख्या में तीव्र वृद्धि, खेतों का दोषपूर्ण विभाजन, सहायक उद्योगों का अभाव, खेती का मौसम पर निर्भर रहना, दोषपूर्ण कृषि पद्धति असंगठित कृषि उद्योग, दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली आदि प्रमुख है। स्वतंत्र भारत सरकार ने ग्रामीणों में बेकारी उत्पन्न करने वाले उपर्युक्त कारणों की कृषि व्यवस्था में चकबन्दी के द्वारा सुधार, सिंचाई सुविधाओं में वृद्धि, कुटीर उद्योगों में वृद्धि कृषि बाजारों का संगठन, बेकारों को बेकारी की दशा से मुक्त होने के लिए ऋण सुविधा कृषि में आधुनिक कृषियन्त्रों के प्रयोग को प्रोत्साहन देकर के ग्रामीणों की बेकारी की समस्या को सुलझाने का प्रयास किया है ।

" भारत में बेकारी की समस्या का सबसे गम्भीर रूप शिक्षित व्यक्तियों की बेकारी के रूप में देखने को मिलता है । इस समय वास्तव में कितने शिक्षित व्यक्ति बेरोजगार है इसका अनुमान लगाना भी कठिन है । हमारी मनोवृत्ति कुछ इस प्रकार की रही है कि व्यक्ति अपने प्रयासों में जब तक बिल्कुल असफल नहीं हो जाता, वह रोजगार दफ्तरों में अपना नाम लिखवाना पंसद नहीं करता इसके पश्चात भी सरकारी सूचनाओं के अनुसार इस समय रोजगार कार्यालयों में 1 करोड़ 43 लाख से भी अधिक बेरोजगार व्यक्तियों के नाम पंजीकृत हैं। 2

---

1:- सेन्सस रिपोर्ट 1971

2:- डा0 गोपाल कृष्ण अग्रवाल :- सामाजिक विघटन पृ0 सं0- 308
आगरा बुक स्टोर पंचकुइयां आगरा, प्रथम संस्करण 1969, प्रयुक्त 1984

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट होता है कि भारत में शिक्षितों की बेकारी की भी विकट समस्या है ।

बेकारी का सम्बन्ध आर्थिक पक्ष से जुड़ा होते हुए भी यह एक प्रमुख सामाजिक समस्या है क्योंकि बेकारी के फलस्वरूप अपराध, मानसिक तनाव, निर्धनता और दुर्व्यसन बढ़ने से व्यक्ति का व्यक्तित्व विघटित होता है तो दूसरी ओर यही समस्याएं बाद में सामाजिक विघटन में वृद्धि करती हैं । " ।

---

1:- डा० गोपाल कृष्ण अग्रवाल :- सामाजिक विघटन ,पृ० सं०-312
आगरा बुक स्टोर पंचकुइयां आगरा, प्रथम संस्करण 1979 ई० प्रथम सं01984ई0

सम्पत्ति का केन्द्रीयकरण :-

स्वतंत्र भारत में सैद्धान्तिक रूप में समाजवादी संरचना को भले ही एक लक्ष्य के रूप में मान्यता प्राप्त हुई है,परन्तु आज की भारत की वर्ग संरचना पूंजीवादी व्यवस्था से प्रभावित है । इस तथ्य की पुष्टि करते हुए डा0गोपाल कृष्ण अग्रवाल ने लिखा है । " यहां आज भी पूंजी व सम्पत्ति का एक बड़ा हिस्सा कुछ बड़े उद्योगपतियों के हाथों में केन्द्रित है जो स्वाभाविक रूप से श्रमिक वर्ग तथा समाज का शोषण करने का प्रयत्न करते हैं । " अधिक से अधिक लाभार्जन करना पूंजीपतियों की प्रकृति है । अधिक से अधिक लाभ के लिए यह वर्ग मध्यम वर्ग के या श्रमिक वर्ग के लोगों को अपने चंगुल में फांसता है। मध्यम या श्रमिक वर्ग का साधारण सदस्य पूंजीपति वर्ग की चकाचौंध पूर्ण सुविधाएं प्राप्त करने के लिए नैतिक -अनैतिक सभी कार्य करने के लिए तैयार हो जाता है । यही कारण है है कि बड़ी-बड़ी मिलों एवं प्रतिष्ठानों के श्रमिक नेताओं में यह प्रवृत्ति देखने को मिलती है क्योंकि "आज श्रमिकों का नेतृत्व करना भी एक लाभकारी व्यवसाय बन गया है । यही व्यवसाय नेताओं को अपराध करने की प्रेरणा देता है। " 2 इस संबंध में उल्लेखनीय है कि प्रारम्भ में बहुत से श्रमिक नेता वाक्चातुर्य से श्रमिकों का विश्वास जीत लेते हैं और बाद में मिल मालिकों से कभी गुप्त समझौता करते हैं तो कभी प्रदर्शन व हड़ताल का भय दिखाकर ब्लैक मेल करते है । इसके अलावा पूंजीवादी वर्ग के लोगों ने जालसाजी ,चोरबाजारी , करों की चोरी ,वाक्य-प्रदर्शन ,ट्रेडमार्कों की चोरी को बढ़ावा मिलता है। यह पूंजीवादी व्यवस्था का ही दुष्परिणाम है कि हमारे देश के 60 प्रतिशत लोग कुल राष्ट्रीय आय का केवल 20 प्रतिशत भाग प्राप्त कर पाते हैं जब कि ऊपर के 20 प्रतिशत व्यक्ति देश की लगभग 60 प्रतिशत आय पर अपना अधिकार जमाए हुए हैं । 3

---

1:- डा0 गोपाल कृष्ण अग्रवाल :- सामाजिक विघटन पृ0 सं0 -177
आगरा बुक स्टोर पंचकुइयां आगरा, प्रथम सं0 1979,प्रयुक्त सं0 1984ई0

2:- वही :- 176

3:- वही :- 289

जातिवाद का नया समीकरण :-

हमारा देश विभिन्न जातियों एवं उपजातियों का देश रहा है । विभिन्न जातियों के नैतिक एवं सामाजिक मान्यताओं में जाति के आधार पर नैतिक एवं सामाजिक मान्यताओं में जाति के आधार पर नैतिक एवं सामाजिक सम्बन्धों में विभिन्नता दृष्टिगोचरहोती है ।

स्वतंत्र भारत में जाति प्रथा में उत्पन्न पारस्परिक विद्वेष एवं वैमनस्य के कारण अखण्ड भारत का विभाजन प्रन्द्रह अगस्त उन्नीस सौ सैतालिस को हो गया । स्वतंत्र भारत में जाति के आधार पर व्यवसाय के निर्धारतण के परम्परित तरीके में परिवर्तन आ गया है। "क्योंकि आज पेशा जाति के आधार पर नहीं योग्यता के आधार पर किए जाते हैं,चाहे वह उस जाति के अनुसार हो या न हो फलत: जाति व्यवस्था में अब जातिवाद की भावना उग्ररूप से घर कर गई है। जातिवाद को स्पष्ट करते हुए श्री पणिक्कर ने लिखा है। " राजनीतिक भाषा में उपजाति के प्रति निष्ठा का भाव ही जातिवाद है। " 2 इससे प्रकट होता है कि जातिवाद का पालन पोषण राजनीतिक हितों में किया गया है तथा इसका प्रमुख कार्य व्यक्ति में अपनी उपजाति के प्रति निष्ठा का भाव जागरित करना है। डा० नर्मदेश्वर प्रसाद ने भी पणिक्कर के कथन का समर्थन किया है। 3 नर्मदेश्वरप्रसाद ने जातिवाद में निहित जातीय पूर्वाग्रह को स्पष्ट करते हुए लिखा है। " पूर्वाग्रह एक प्रकार का निर्णय अथवा दृष्टिकोण या विश्वास है,जिसे लोग वास्तविक तथ्य से परिचित होने के पहले ही अपने मन में कायम कर लेते हैं । 4 इस प्रकार का पूर्वाग्रह एक उपजाति को दूसरी उपजाति से पृथक रहने का

---

1:- रवीन्द्रनाथ मुकर्जी:- व्यवहारिक समाज शास्त्र, पृ० सं०-30 सरस्वती सदन दिल्ली,संस्करण 1969 ई०

2:- पणिक्कर :- हिन्दू समाज निर्णय के द्वार पर पृ० सं०- 22

3:- डा० नर्मदेश्वर प्रसाद :- जाति व्यवस्था पृ० सं० 124

4:- वही :- पृ० सं०- 158

प्रोत्साहन देता है तथा कभी-कभी पृथक्की करण की यह प्रवृत्ति पारस्परिक हिंसा का रूप ले लेता है ।

स्वतंत्र भारत में संविधान की संरचना करके, जाति के आधार पर व्यवसाय चुनने की प्रवृत्ति के बजाय प्रत्येक व्यक्ति को इसके योग्यतानुसार व्यवसाय चयन की स्वंतत्रता प्रदान की गई है । परन्तु व्यावहारिक स्तर पर उक्त समायन का पूर्ण रूप से कामी चयन नहीं हो सका है। लोग जाति या उपजाति का उपयोग वैयक्तिक स्वार्थों के लिए करने लगे हैं जिससे उनके जीवन में अशान्ति एवं अव्यवस्था उत्पन्न हो जाती है । इस सम्बन्ध में पणिक्कर का कथन है कि जातिवाद का सबसे भीषण अभिशाप यह है कि हिन्दू जाति अगणित उपजातियों में बट गई है और इनमें से प्रत्येक उपजाति के भी टुकड़े-टुकड़े हो गये हैं । जातियां एक दूसरे से बिल्कुल अलग-अलग हैं और उनमें से हर एक दूसरे से श्रेष्ठ होने का दावा करती है । उसके बीच सामान्यत: अन्तरजातीय विवाह और खान-पान के सम्बन्धों की भी छूट नहीं है । इस प्रकार सामाजिक जीवन में वे एक दूसरें से अनजान प्रतीत होते हैं । " । उपर्युक्त कथन स्वतंन्त्र भारत के हिन्दू जाति के सामुदायिक विघटन की ओर संकेत करता है।

जातिवाद की प्रवृत्ति को राजनीतिक क्षेत्र में भी पर्याप्त प्रोत्साहन मिला है क्योंकि आज साधारणतया चुनाव जाति के आधार पर लड़े जाते हैं। जातिवाद के आधार पर चुने गए जनप्रतिनिधि राष्ट्रीय भावना को पोषित करने के बजाय कभी-कभी जातीयता को महत्व देने लगते हैं जिससे राष्ट्रीय गति विधियों के विकास में अवरोध उत्पन्न होता है ।

---

1:- के0 एम0 पणिक्कर :- हिन्दू समाज निर्णय के द्वार पर , पृ0 सं0 12

## साम्प्रदायिकता का नया उभार :-

15 अगस्त सन् 1947 ई० को देश स्वतंत्र होने के साथ-साथ साम्प्रदायिकता के कारण दो स्वतंत्र राष्ट्रों में विभक्त हो गया । देश के दो स्वतंत्र राष्ट्रों में विभक्त होने मात्र से साम्प्रदायिकता की प्रवृत्ति का समापन नहीं हो गया बल्कि हिंसा,प्रतिहिंसा,आगजनी,बलात्कार,बेकारी आदि अनेकों सामाजिक आर्थिक समस्याओं से नागरिकों को जूझना पड़ा । भारत में व्याप्त साम्प्रदायिकता के सम्बन्ध में यह कथन उपयुक्त ही है कि "साम्प्रदायिकता के आधार भारत का विभाजन हुआ लेकिन भारत में साम्प्रदायिकता की समस्या आज भी विदयमान है । इतना अवश्य है कि स्वतंत्रता से पूर्व और स्वतंत्रता के पश्चात् की साम्प्रदायिकता की प्रकृति में कुछ भिन्नता जरूर दिखलाई देती है । " । इस विभिन्नता का मुख्य कारण यह है कि स्वतंत्रता से पूर्व हिन्दू मुसलमानों के मध्य यह भावना तीव्र रूप से मुखरित हुई थी जबकि " आज साम्प्रदायिकता का मुख्य कारण जाति और धर्म के आधार पर चुनाव में खड़े होने वाले प्रत्याशियों की मनोवृति कुर्सी की राजनीति और धर्म निरपेक्षता की अपरिपक्व मर्यादाओं का होना है । आज भी भारत में केवल हिन्दू मुसलमानों,के बीच ही साम्प्रदायिक दंगे नहीं होते बल्कि हिन्दू,मुसलमानों ,सिक्खों और जैनियों के अपने-अपने विभिन्न सम्प्रदायों के बीच भी तनाव बढ़ता जा रहा है। इसके मूल में न कोई दर्शन है,न वैचारिक मतभेद ,बल्कि व्यक्तिगत स्वार्थ और राजनैतिक स्वार्थ ही सभी झगड़ों का कारण है । " 2 उपर्युक्त कथन से प्रकट होता है कि स्वतन्त्र भारत में साम्प्रदायिकता की भावना एक नया उभार लेकर सामने आई है । खालिस्तान की मांग,प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरागांधी की हत्या साम्प्रदायिकता के भीषणतम स्वरूप को प्रकट करता है ।

साम्प्रदायिकता के कारण होने वाली राष्ट्रीय हानि की ओर संकेत करते हुए डा० गोपाल कृष्ण अग्रवाल ने लिखा है "वास्तविकता यह है कि साम्प्रदायिक तनाव अथवा सम्प्रदाय वाद आज एक चक्रीय प्रक्रिया के रूप में हमारे सामाजिक,राजनैतिक तथा आर्थिक जीवन को विघटित कर रहा है। 3

---

1:- डा० गोपाल कृष्ण अग्रवाल : सामाजिक विघटन पृ० सं० 392
आगरा बुक स्टोर पंचकुइयां आगरा,प्रकाशन सं० 1984

## स्वतंत्र भारत की शिक्षा :- संरचना का सामाजिक विघटन के संदर्भ में विवेचन

यद्यपि स्वतंत्र भारत की शिक्षा संरचना के साक्षरता के व्यापक प्रचार प्रसार एवं उपयोगिता पर विशेष बल दिया गया है, परन्तु शिक्षा के औसत में वृद्धि के साथ साक्षरता का मान दण्ड अवनमित हुआ है। समसामयिक भारतीय शिक्षा व्यवस्था समाज को ऐसे नवप्रवर्तन प्रदान करने में असमर्थ है जो सामाजिक संरचना में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर सके। इस संदर्भ में भारतीय शिक्षा की प्रकृति [illegible] सामाजिक विघटन को प्रश्रय देती है।

स्वतंत्र भारत में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम संचालित किया गया है परन्तु उसमें अभीष्ट उपलब्धि नहीं प्राप्त हो सकी है । जब तक प्रौढ़ों को शिक्षित करके उनमें विकास नहीं कराया जाता तब तक देश का विकास पूर्णतः सम्भव नहीं है । इस संबंध में हुमांयू कबीर का यह कथन सत्य प्रतीत होता है । यदि ऐसा नहीं किया जाता तो जनतंत्र का कोई महत्व नहीं है। " ।

भारतीय शिक्षा संरचना में छात्रों के मानसिक शक्तियों के विकास पर विशेष जोर दिया गया है लेकिन उच्च शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों के आध्यात्मिक ‖नैतिक‖ एवं शारीरिक विकास की कोई समुचित व्यवस्था नहीं है। छात्र मात्र इस उद्देश्य से शिक्षा ग्रहण करता है कि परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरांत उसे नौकरी मिल जाय,नौकरी के अवसर इतने अधिक नहीं है कि हर छात्र को नौकरी मिल सके फलतः नौकरी न मिलने पर जीवन भर इधर उधर ठोकरें खाते फिरना शिक्षा का यही उद्देश्य गत शताब्दी से चला आ रहा है, और आज भी विद्यमान हैं । अतः देश को शिक्षितों में व्याप्त बेकारी की समस्या से जूझना पड़ रहा है ।

वर्तमान परीक्षा प्रणाली ने रटन्त प्रवृत्ति को प्रोत्साहित किया है जिससे व्यक्ति का सर्वांगीण विकास के बजाय अस्थाई ज्ञान प्राप्त होता है। शिक्षा में शारीरिक श्रम को महत्व न देने के कारण छात्रों का शारीरिक विकास सम्यक रूप से नहीं हो पाता है और उनके जीवन में उल्लास,महत्वकांक्षा,साहसिक कृत्यों को पूर्ण करने की भावना,चारित्रिक एवं नैतिक दृढ़ता में अल्पता आई है। नैतिक एवं चारित्रिक दृढ़ता के अभाव में नवयुवक समाज में अवसर पाकर अशान्ति एवं अव्यवस्था उत्पन्न करता है ।

---

1:- ‖जब तक देश का मतदाता अपने मत एवं कर का उपयोग नहीं समझ पाता तब तक जनतंत्र एक धोखा मात्र है। ‖

हुमांयू कबीर :- एजूकेशन इन न्यू इंडिया,पेज 76
लन्दन ,जार्ज एलन एण्ड अनविन लिमिटेड 1958

देश में स्त्री-शिक्षा की समुचित व्यवस्था नहीं हो सकी है। स्त्रियों की शिक्षा की दिशा में जो कुछ सफलता प्राप्त हुई है वह भी स्त्रियों के लिए अव्यवहारिक है क्योंकि स्त्रियों के लिए उनके उपयोग में आने वाले विषयों से सम्बन्धित पाठ्यक्रम नहीं है, उन्हें भी पुरुष छात्रों की भांति उच्च शिक्षा में गणित, विज्ञान, कला, अर्थशास्त्र आदि विषयों को पढ़ने पड़ते हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त युवतियों में से अधिकांश स्त्रियों का उच्च शिक्षा प्राप्त करना मात्र इस उद्देश्य से होता है कि उन्हें सरकारी नौकरी मिल जाय। स्त्रियों द्वारा नौकरी के क्षेत्र में पदार्पण करने से नवयुवकों में नौकरी प्राप्त करने की प्रतिस्पर्धा और अधिक बढ़ गयी है। अधिकांश उच्च शिक्षा प्राप्त युवतियों का पारिवारिक जीवन कार्य की अधिकता, व्यस्तता, वैयक्तिक प्रतिष्ठा आदि के कारण असंतुलित हो जाता है।

अतः संक्षेप में हम कह सकते हैं कि स्वतंत्र भारत की शिक्षा संरचना के द्वारा सामाजिक विघटन के प्रमुख कारणों शिक्षितों में बेकारी, नारी के घर-बाहर की समस्या, जीवन मूल्यों में परिवर्तन को प्रश्रय मिला है।

## मनोरंजन के साधन :-

मानव जीवन में मनोरंजन का व्यापक एवं महत्वपूर्ण स्थान है। मनोरंजन का तात्पर्य अवकाश के क्षणों का मानसिक एवं शारीरिक दोनों दृष्टियों से सदुपयोग करने से हैं। अतः मनोरंजन को शारीरिक एवं मानसिक दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है। मनोरंजन में फुटवाल, वालीबाल, क्रिकेट, टेनिस, कुश्ती हाकी आदि श्रम साध्य खेल आते हैं। मनोरंजन के मानसिक साधनों में शतरंज, ताश, चौपड़ आदि बुद्धि प्रधान खेल आते हैं।

मनोरंजन का व्यक्ति के आर्थिक स्थिति एवं उसके रहन-सहन से घनिष्ठ सम्बन्ध है । कहने का अर्थ यह है कि विपन्नवर्गीय,शारीरिक श्रम से जीविकार्जन करने वाला व्यक्ति मनोरंजन के क्षणों में ताश या शतरंज खेलने के बजाय मुर्गी लड़ाना,तीतर लड़ाना,कुश्ती लड़ना,फुटबाल खेलना अधिक पसंद करेगा । यही कारण है कि आर्थिक स्तर पर मनोरंजन के साधनों का विभक्तीकरण हो गया है ।जहां सम्पन्न वर्ग के लोग अधिक पैसे खर्च करके सैर-सपाटे कर के अपना मनोरंजन करते हैं वहीं विपन्न कृषक एवं खेतिहर श्रमिक रात्रि में सामूहिक गान या गप-शप के द्वारा अपना मनोरंजन करते हैं । सिनेमा टी॰वी॰सेट॰टेपरिकार्डर आदि मनोरंजन के आधुनिकतम साधन सम्पन्न वर्ग में अधिक लोकप्रिय हैं । आज भी विपन्न वर्ग के लोगों में मुर्गी लड़ाना तीतर लड़ाना,कुश्ती लड़ना आदि मनोरंजन के साधनों का पूर्ववत उपयोग हो रहा है।

स्वतंत्र भारत की स्त्रियां भी मनोरंजन के साधनों के उपयोग में किसी से पीछे नहीं है। पुरुषों की भांति आज स्त्रियां भी क्रिकेट,वालीबाल,हाकी, टेनिस ,बैडमिंटन आदि खेल अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेल रही हैं । परन्तु मनोरंजन के उपर्युक्त उपकरण विपन्न वर्गीय स्त्रियों को सर्वसुलभ नहीं है।

स्वतंत्र भारत में सिनेमा प्रमुखतम मनोरंजन के साधनों में से एक है जो अमीर-गरीब सबका समान रूप से मनोरंजन करा रहा है। बुद्धिजीवी वर्ग में मनोरंजन के साधन के रूप में उपन्यास,कहानी,कविता,गल्प,रेखाचित्र एवं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं का प्रचलन है ।

मनोरंजन व्यक्ति के चरित्र और व्यक्तित्व से घनिष्ट सम्बन्ध में । समुचित मनोरंजन के अभाव में व्यक्ति अवकाश के क्षणों में एक विशेष प्रकार का खालीपन अनुभव करता है। यह खालीपन समय पाकर व्यक्ति में हीन भावना उत्पन्न करता है। यह हीनभावना व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन ला देता है यह परिवर्तन कभी-कभी व्यक्ति को वैयक्तिक स्तर पर विघटित कर देता है। इस प्रकार वैयक्तिक विघटन का शिकार व्यक्ति समाज विरोधी कार्यों को प्रश्रय देकर कभी-कभी पारिवारिक एवं साम्प्रदायिक विघटन भी उत्पन्न कर देता है।

घटिया किस्म के फुटपाथी उपन्यास एवं पत्र-पत्रिकाएं व्यक्ति के व्यक्तित्व को सन्तुलित बनाने के बजाय समाज विरोधी जीवन-मूल्यों को बढ़ावा देते है। फुटपाथी साहित्य के नाम पर उपन्यासों एवं कहानियों की बहुत बड़ी पंक्ति है जिसमें अश्लीलता, विलासिता, कुंठा के अतिरिक्त कुछ नहीं है।

चित्रपट में प्रदर्शित यौनिक क्रिया-व्यापार, यौन-सम्बन्धों का विकृत स्वरूप, नग्नचित्रों का प्रदर्शन जैसी कुप्रवृत्तियाँ व्यक्ति को समाज विरोधी कार्यों की ओर उन्मुख करती है। चोरी, गिरहकटी, हिंसा जैसी प्रवृत्तियाँ दिशाहीन किशोर-किशोरियाँ चित्रपट से सीखते है।

# अध्याय - 3

## उपन्यासों में सामाजिक विघटन के कारण :-

विघटन चाहे वैयक्तिक हो, चाहे पारिवारिक हो वस्तुतः वृहद स्तर पर होने वाले सामाजिक विघटन का ही एक लघु रूप है । अतः देखने की बात यह है कि स्वतंत्र भारत में सामाजिक विघटन के सम्भावित कारण कौन-कौन से हैं और सन् उन्नीस सौ पचास से सन् उन्नीस सौ पचहत्तर तक के उपन्यासों में उनका चित्रण किस सीमा तक हुआ है ।

समाजशास्त्रियों के अनुसार दो या अधिक संस्कृतियों की पारस्परिक टकराहट, धर्म के महत्व में कमी, पारिवारिक संरचना में परिवर्तन, नैतिक पतन अपराध, निर्धनता ,सरकार की सम्प्रभुता में अभिवृद्धि ,दोषपूर्ण मनोरंजन के साधन, दुर्घटनाएं, औद्योगीकरण, युद्ध अतिवृष्टि अनावृष्टि भूकम्प आदि ऐसे अनेकों कारण हैं जो व्यष्टि या समष्टि रूप में सामाजिक विघटन उत्पन्न करते हैं । डा० सत्येन्द्र त्रिपाठी ने सामाजिक विघटन नामक पुस्तक में सामाजिक विघटन के कारणों को आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक वर्गान्तर्गत विभक्त किया है । उनके अनुसार " आर्थिक कारणों में औद्योगीकरण, नागरीयकरण, औद्योगिक झगड़े , निर्धनता, आय कम होना, बेरोजगारी, कृषि की पिछड़ी दशा तथा जनसंख्या की अधिकता आदि प्रमुख हैं, सामाजिक कारणों में जाति-प्रथा , अस्पृश्यता ।

जातिवाद,विवाह सम्बन्धी नियम, सामाजिक जीवन में भ्रष्टाचार तथा परिवारों और सामाजिक संस्थाओं का टूटना प्रमुख कारण हैं । राजनैतिक कारणों में न्याय व्यवस्था का त्रुटिपूर्ण होना,राजनैतिक स्वार्थ,राजनैतिक दलबन्दी,युद्ध तथा राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए समाज विरोधी कार्यप्रणाली को अपना लेना महत्वपर्णू है । भारत में सामाजिक विघटन के लिए सांस्कृतिक कारण सर्वाधिक महत्वपूर्ण है । ------ सामाजिक मूल्यों में संघर्ष, नए मूल्यों का उदय और मूल्यों मे व्यक्तियों के विश्वासों में परिवर्तन नैतिकता में परिवर्तन,त्रुटि-पूर्ण शिक्षा पद्धति तथा नयी मनोवृत्तियों और प्राचीन मू ल्यों में संघर्ष की स्थिति,भाषा का संघर्ष तथा धार्मिक विश्वासों में कमी और धार्मिक मान्यताओं में परिवर्तन तथा मनोरंजन के सिनेमा आदि साधन तथा साहित्य सामाजिक विघटन उत्पन्न करते है। " । कहना न होगा कि यह वर्गीकरण पूर्णत: वैज्ञानिक नहीं है क्योंकि आर्थिक सामाजिक,राजनैतिक एवं सांस्कृतिक कारण अभ्यन्तर में एक दूसरे को कहीं न कहीं प्रभावित अवश्य करते हैं । अत: इन कारणों के मध्य विभाजन की लक्ष्मण रेखाएं नहीं खींची जा सकती । यही कारण है कि मैंने प्रस्तुत अध्याय में सामाजिक विघटन के कारणों को आर्थिक,सामाजिक,राजनीतिक एवं सांस्कृतिक वर्गों में विभाजित करने के बजाय स्वतंत्र शीर्षक के रूप में रखकर उनका अध्ययन एवं अनुशीलन किया है ।

---

1:- डा0 सत्येन्द्र त्रिपाठी:- सामाजिक विघटन , पृ0 सं0- 42-43 उ0प्र0 हिन्दी ग्रंथ अकादमी लखनऊ, संस्करण 1973 ई0 ।

## पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति का प्रभाव :-

भारत में अंग्रेजों द्वारा औपनिवेशिक सत्ता की स्थापना के साथ पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति का भी आगमन हुआ । स्वतंत्र भारत के आर्थिक विकास के लिए विभिन्न तकनीकी, औद्योगिक एवं सामाजिक विकास की योजनायें कार्यान्वित की गई । इन योजनाओं की स्थापना पाश्चात्य औद्योगिक तकनीकी से अछूती न रह सकी । यही कारण है कि भारत की स्वतंत्रता प्राप्त किए लगभग 33 वर्ष हो रहे हैं, परन्तु देश की प्रशासनिक भाषा पूर्वत अंग्रेजी ही है । यही नहीं आज भी भारत में अधिकांश तकनीकी एवं उच्च शिक्षण का प्रारूप वही है जो अंग्रेजों द्वारा साधारण तकनीशियन एवं क्लर्क उत्पन्न करने के लिए बनाई गई थी । शिक्षा की प्रगति के औसत में वृद्धि तो हुई है, परन्तु शिक्षा के व्यवहारिक न होने के कारण शिक्षित बेकारों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है जिसकी वजह से समाज में अपराध, भ्रष्टाचार आदि को बढ़ावा मिला है ।

पाश्चात्य सभ्यता-संस्कृति तथा भारतीय सभ्यता-संस्कृति में कुछ मौलिक अन्तर है । इस मौलिक अन्तर का कारण पाश्चात्य सभ्यता-संस्कृति में भौतिकता की प्रधानता एवं भारतीय सभ्यता-संस्कृति में अध्यात्मिकता की प्रधानता है । इन दोनों संस्कृतियों की सभ्यता में भी पर्याप्त अन्तर है । मोटे तौर पर यह अन्तर इस बात में देखने को मिलता है कि पाश्चात्य स्त्री-पुरुष परस्पर हाथ मिलाकर अभिवादन करते हैं जबकि भारतीय सभ्यता में स्त्री पुरुष का सार्वजनिक रूप में हाथ मिलाकर अभिवादन करना वर्जित है ।

पाश्चात्य सभ्यता में स्त्री-पुरुष के सामूहिक नृत्य को वैधानिक माना जाता है जब कि भारतीय सभ्यता में ऐसा करना हेय माना जाता है ।

स्वतंत्रता प्राप्त्योपरान्त भारतीय स्त्रियों को सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक राजनीतिक सभी दृष्टियों से वैधानिक स्वतंत्रता प्राप्त हुई । अब स्त्रियां घर की चहरदीवारी लांघ - कर व्यापक स्तर पर विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने के लिए निकली । स्त्रियों का अधिकांश समय पुरुषों के साथ विभिन्न कार्यालयों में व्यतीत होने लगा । अतः स्वतंत्र भारत की विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत स्त्रियों में से अधिकांश ने स्त्रियों के सम्मुख उत्पन्न घर-बाहर की समस्या, अस्मत की सुरक्षा से संबंधित समस्या आदि का समाधान पाश्चात्य देशों की कार्यरत स्त्रियों के अनुकरण द्वारा पूर्ण करने का सफल- असफल प्रयत्न किया है जिसके कारण परम्परित पारिवारिक व्यवस्था विघटित होने लगी है ।

पाश्चात्य सभ्यता की आधुनिक उपज, बीटनिक्स और हिप्पी पीढ़ी वाले नवयुवकों एवं नवयुवतियों का प्रभाव भारत के सम्पन्न एवं आर्थिक वर्गीय नवयुवकों एवं नवयुवतियों पर विशेष रूप से पड़ा है । यही कारण है कि स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में चित्रित इस प्रकार के कुछ नवयुवक एवं नवयुवतियां परम्परित हिन्दू धर्म की नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा पारिवारिक उत्तर- दायित्वों एवं कर्तव्यों की अवहेलना करके प्रदर्शन की प्रवृत्ति, उन्मुक्त प्रेम, सही गलत अधिकारों के लिए हड़तालें अप्राकृतिक मैथुन विवाह-विच्छेद, मादक द्रव्यों का सेवन भ्रूण हत्या आदि कुप्रवृत्तियों का शिकार होकर समाज में अराजकता उत्पन्न करने में सहायक बनते हैं जो एक स्वस्थ्य सामाजिक संगठन के लिए अहितकर है ।

बीसवी शताब्दी के चिंतन और साहित्य को तीन विचारकों ने सर्वाधिक प्रभावित किया है । डार्विन ने मानवीय विकास की सतत परम्परा को विकासवाद के सिद्धान्त द्वारा, फ्रायड ने मनोविश्लेषण की नवीन पद्धति के सूत्रपात द्वारा और कार्लमार्क्स ने द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के सिद्धान्त के माध्यम से अधिकार संघर्ष की दिशा के विवेचन के द्वारा। -----समूचे मानवीय चिंतन और उसके द्वारा नियोजित सृजनात्मक क्षेत्रों को एक नवीन परिपार्श्व प्रदान किया है इस तथ्य को हृदयंगम किए बिना इस शताब्दी के साहित्य को चाहे वह विश्व की किसी भी भाषा का साहित्य हो, सही रूप में नहीं समझा जा सकता अतः पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति के प्रभाव के कारण आलोच्य कालीन हिन्दी उपन्यासों में उत्पन्न सामाजिक विघटन के कारणों का विश्लेषण पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति के तीन आधारभूत स्तम्भों मानोविज्ञान, मार्क्सवाद एवं अस्तित्ववाद के आधार पर किया जा रहा है।

मनोविज्ञान:-

आधुनिक विज्ञान से मानव मन को भी अछूता नहीं छोड़ा फ्रायडीय उसका भी विवेचन और विश्लेषण किया गया है । यह विज्ञान मनोविज्ञान कहलाता है ।इसमें मन के विभिन्न वृत्तियां ,प्रवृत्तियां एवं उस पर पड़ने वाले विभिन्न प्रभावों का अध्ययन किया जाता है।इस प्रकार मनोविज्ञान का क्षेत्र आज अपने विकास के पश्चात अति विस्तृत हो गया है। विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान, मनउर्जा मनो विज्ञान ,पूर्णांगवादी मनोविज्ञान गेस्टाल्ट मनोविज्ञान, क्षेत्रवादी और गति मनोविज्ञान चिकित्सात्मक मनोविज्ञान, समाज मनोविज्ञान, परामनोविज्ञान आदि मनोविज्ञान की विभिन्न शाखायें प्रशाखायें विकसित हो गई हैं जिनका अलग-अलग विकास क्रम है। उपर्युक्त विभिन्न मनोविज्ञान की शाखाओं में फ्रायड का मनोविश्लेषण प्रमुख है। इस संबंध में डा० रामनाथ शर्मा का यह कथन उपयुक्त ही है। - । मनोविज्ञान में फ्रायड के योगदान की उपर्युक्त रूप रेखा से स्पष्ट होता है कि

---

डा० श्यामसुन्दर मिश्र :- अस्तित्ववाद और द्वितीय समरोत्तर हिन्दी साहित्य पृ० सं०- 233

विद्याप्रकाशन मन्दिर दरियागंज दिल्ली, प्रथम संस्करण 1971 ई०

2:-डा०भोलानाथ आधुनिक हिन्दी साहित्य संस्कृति पृष्ठभूमि पृ०सं०599

उसने जीवन के लगभग सभी पहलुओं पर विशेष दृष्टिकोण से प्रकाश डाला है। धर्म,संस्कृति और योग से लेकर दैनिक जीवन की भूलों,स्वप्नों,कहावतों आदि सभी छोटी और बड़ी बातों,मानव जीवन के हर एक पहलू की फ्रायड ने मनोविश्लेषणवादी व्याख्या उपस्थित की । " । युग एवं एडलर के अतिरिक्त "मनोविश्लेषणवाद में कुछ अन्य मनोवैज्ञानिकों ने भी महत्वपूर्ण बातों की खोजें की। " । इनमें उल्लेखनीय है अब्राहम,फेरेंजी,अलेक्जेण्डर,इयूश,राङ्क,करनैन हार्नी,एरिक फ्राम ,अन्ना फ्रायड इत्यादि ।" 2

मनोविज्ञान का मानव जीवन से घनिष्ट सम्बन्ध है । सामाजिक परिवेश और मूलप्रवृत्तियों से अभिप्रेरित होकर मनुष्य किस प्रकार का व्यवहार करता है, मनोविज्ञान का अध्ययन क्षेत्र है । उपन्यास मानव जीवन के वैयक्तिक अथवा सामाजिक जीवन के विविध सम्बन्धों एवं व्यवहारों से संबंधित होता है। यहीं पर उपन्यास एवं मनोविज्ञान एक दूसरे के अधिक समकक्ष हो जाते हैं। अतः मनोविश्लेषण की मनोवैज्ञानिक प्रणाली उपन्यास के लिए वरदान स्वीकार की गई । इस प्रणाली के प्रवर्तक सिगमंड फ्रायड हैं । " 3 फ्रायड ने मन को चेतन एवं अचेतन दो वर्गों में विभक्त किया है तथा इन दोनों स्थितियों के मध्य पूर्व चेतन की स्थिति स्वीकार किया । अचेतन में प्रवेश के लिए यह पूर्वचेतन द्वारा का कार्य करता है ।" फ्रायड विश्लेषण करके बतलाते हैं कि चेतन से कम से कम तीन गुना अचेतन है। अचेतन की शक्ति भी असी अनुपात में हैं । " 3 मनुष्य का चेतन मस्तिष्क सामाजिक जीवन के लिए सदैव तत्पर रहता है । अचेतन को हम उन इच्छाओं और क्रियाओं का समूह कह सकते हैं जो अनेक कारणों से पूर्ण नहीं हो पाती ।

==========================================================

1:- डा० रामनाथ शर्मा:- मनोविज्ञान का इतिहास पृ० सं०- 25।
लक्ष्मीनारायण अग्रवाल,हास्पिटल रोड आगरा, प्रथम संस्करण 1969 प्रयुक्त सं॰ 1972

2:- वही पृ० सं० - 25।

3:- महेन्द्र हिन्दी उपन्यास ,सिद्धान्त और विवेचन पृ० सं० 67
साहित्य रत्न भण्डार ,साहित्य केन कुंज आगरा,प्रथम सं० 1963 ई०

4:- वही :- पृ० सं० - 67

हैं और चेतन मन की संस्कारों या धर्म आदि के डर के कारण उन्हें स्थान नहीं देता तब वे नीचे चली जाती है। " । ये अतृप्त इच्छायें स्वप्नावस्था में विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से पूर्ण होने का प्रयत्न करती है। स्वप्नों में जो प्रतीकीकरण दिखाई देता है वह एक निष्पती विषय होता है जिसमें निषिद्ध इच्छा को छिपाने के लिए अन्य वस्तुएं स्थानापन्न कर ली जाती हैं। साधारणतया स्वप्न संबंधी प्रतीक लैंगिक होते हैं । " 2

फ्रायड ने मन को इड,इगो और सुपरइगो में विभक्त किया है जिन्हें हिन्दी में इद,अहं और अतिअहं कहा जाता है जो चेतन ,अचेतन और अतीक्षक से बहुत भिन्न नहीं है । रागों के समूह को इद की संज्ञा से अभिहित किया जाता है । इसे हम वासना का समकक्षी कह सकते हैं अहं वह चेतनमन है जो कुंठाओं के कारण सामाजिक मूल्यों के प्रति सदैव सजग रहता है। अतिअंह पूर्वार्जित सामाजिक मान्यताओं का प्रतिनिध है। " हमारा अचेतन मन काम-कुंठाओं का समूह है। ये काम कुंठाएं चारों और केन्द्रित हैं ।इस प्रकार मूल प्रवृत्ति काम है । इस काम वासना को लिबिडो कहा गया है। " 3

डा० एल्फ्रेड एडलर ने शक्ति प्रदर्शन की भावना पर विशेष बल दिया है तथा काम भाव को प्रधानता न देकर शक्ति प्रदर्शन की भावना का एक अंशमात्र या सहायक समझता है । " 4 प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक युंग ने फ्रायड की काम भावना एवं एडलर की शक्ति प्रदर्शन की भावना के अपूर्व संयोग को लिबिडो माना है । उसने संसारभर के सभी लोगों को अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी दो वर्गों में विभक्त किया है। अन्तर्मुखी वे व्यक्ति कहलाते हैं जो आत्मकेन्द्रित

==============================================

1:- महेन्द्र :- हिन्दी उपन्यास सिद्धान्त और विवेचन,पृ० सं०-88
साहित्यरत्न भण्डार,साहित्य कुन्ज आगरा,प्रथम संस्करण, 1983 ई०

2:- महेन्द्र:- हिन्दी उपन्यास सिद्धान्त और विवेचन पृ० सं०"68
साहित्य रत्न भण्डार,साहित्य कुंज आगरा,पृ० सं० 1963 ई०

3:- वही :- पृ० सं० 69

होते हैं अर्थात वे अपने जीवन के पुष्प तत्व और संतोष को कल्पनालोक में पाते हैं । यह कल्पना लोक इनकी इच्छानुसार निर्मित होता है। बहिर्मुखी वे व्यक्ति कहलाते हैं जिनकी इच्छाओं का वहिर्गमन होता है ।

सम्बन्ध प्रत्ययवाद के प्रवर्तक रूसी मनोवैज्ञानिक पावलव के अनुसार प्रत्येक वस्तु सम्बन्ध है । ज्ञानभी वातावरण से सम्बन्ध एवं प्रभावित होता है इस तथ्य की पुष्टि उन्होंने कुत्तों पर किये गए प्रयोगों के आधार पर किया है। उन्होंने अनेकों कुत्तों पर प्रयोग करके अनुभव किया कि यदि कुत्तों को एक निश्चित समय पर घंटी बजने के साथ खाना दिया जाय तो कुछ समय बाद कुत्तों को निश्चित समय पर खाना न देने, मात्र घंटी बजाने पर भी उनके मुख से लार टपकने लगती है। कुत्ता अपने मन में रोटी की कल्पना में मग्न होकर लार टपकाता है किन्तु यह समस्त वाह्य परिस्थितियों से संबंधित ज्ञान हुआ ।

कर्क को फ्का अवयवीवाद के प्रवर्तक हैं । उनकी मान्यता के अनुसार किसी वस्तु का पूर्ण बिम्ब हमारे समक्ष आता है । उस पूर्ण चित्र का बाद में विखण्डन किया जा सकता है । इस मान्यता के अनुसार सौन्दर्य अवयव न होकर अवयवी है। गेस्टाल मत के प्रवर्तक को हलर महोदय ने सिद्ध किया कि "काव्य में चित्र और अनुभूतियां पूर्ण रूप में ही हमारे सामने आती है खण्डित स्वरूप में नहीं । " । मनोवैज्ञानिक उपन्यास कहने का तात्पर्य उन उपन्यासों से है जो मूलत:मनोविश्लेषण पर आधारित है। मनोविज्ञान साहित्य के लिए नयी वस्तु नहीं है ।

---

1:- महेन्द्र:- हिन्दी उपन्यास : सिद्धान्त और विवेचन,पृ0 सं0- 71
साहित्यरत्न भण्डार, साहित्य कुंज आगरा,प्रथम संस्करण 1983 ई0 ।

वह आदि कवि बालमीकी से लेकर आज तक के सभी कवियों और साहित्यकारों की कृतियों में लक्षित होता है,किन्तु मनोविश्लेषण वाद अपने सीमित अर्थ में आधुनिक चीज है । " । डा0 देवराज के अनुसार अलग-अलग रूप में हिन्दी लेखकों को भिन्न-भिन्न मनोवैज्ञानिक सम्प्रदाओं का परिचय नागण्य है । " 2

यदि उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर हिन्दी उपन्यासों का अध्ययन किया जाय तो ज्ञात होगा कि अधिकांश मनोवैज्ञानिक हिन्दी उपन्यासों में प्रचण्ड की हिविडों अथवा लिविडो जनित विकृति का विश्लेषण एवं चित्रण प्रचुर मात्रा मेंहुआ है । दमित इच्छाओं की स्वच्छंद पूर्ति समाज के लिय हितकर न होगी, वह समाज को विघटित ही अधिक करेगी क्योंकि मनोविश्लेषण प्रणाली का पर्वतक होता हुआ भी फ्रायडवाद असामाजिक जीवनदर्शन है। " ।

अज्ञेय कृत " नदी के द्वीप " उपन्यास की कथावस्तु फ्रायड केयोनाभाव सम्बन्धी मान्यताओं पर आधारित है । प्रस्तुत उपन्यास का श्रेष्ठ वैज्ञानिक भुवनकाम कुंठित है । वह अपनी काम कुंठा को क्रमशः रेखा और गौरा के द्वारा प्रशमित करना चाहता है। रेखा और गौरा भी कामसम्बन्धों के प्रति दिग्भ्रमित हैं । रेखा,भुवन के सहवास से गर्भवती हो जाती है परन्तु रेखा इस गर्भधारण को अनावश्यक समझती है और भुवन के लाखमना करने पर भी अपना गर्भपात करवा लेती है । इस प्रकार भुवन के चाहते हुए भी रेखा उसके साथ वैवाहिक बंधन में बंधने के बजाय स्वतंत्र जीवन या पन करती है। गौरा के जीवन में भी काम कुंठा व्याप्त है । उसे पति के साथ सम्भोग की सुखद यात्रा में गुजरने के बजाय मीलों दूर भुवन की स्मृतियों में खोना ज्यादा अच्छा लगता है । इस प्रकार भुवन ,रेखा और गौरा का पारिवारिक जीवन सुखमय नहीं बन पाता है ।

================================================================

डा0 रामदरश मिश्र :- हिन्दी उपन्यास:- एक अन्तर्यात्रा पृ0 सं0-66 राजकमल प्रकाशन दिल्ली संस्करण 1968

2:- डा0 देवराज :- आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान पृ0सं-342

3:-महेन्द्र :- हिन्दी उपन्यास सिद्धान्त और विवेचन,प्रथम संस्करण 1983ई0। साहित्य रत्न भण्डार साहित्य कुंज आगरा,प्रथम संस्करण 1983 ई0 ।

प्रस्तुत उपन्यास के हेमेन्द्र और रेखा के पारिवारिक विघटन का कारण मनोविज्ञान के सहचर्य का प्रभाव है । हेमेन्द्र काम कुंठित व्यक्ति है। उसने रेखा के साथ मात्र इसलिए विवाह किया था क्योंकि रेखा की स्पाकृति उसके [हेमेन्द्र] के पुरुष प्रेमी से मिलती थी । । सहचर्य के आवेश में वह विवाह करता है और बाद में हेमेन्द्र रेखा से विवाह-विच्छेद कर लेता है।

डा० देवराज कृत" दोहरी आग की लपट" उपन्यास की "इरा" काम कुंठित है। इरा के मन में यह काम कुंठा सहपाठी मनोज द्वारा एकान्त में स्थापित असफल यौन सम्बन्ध के प्रयत्न से उत्पन्न होता है। इरा विवाहित साथी सुरेन्द्र से विवाह-विच्छेद करके कालान्तर में डाक्टर देव से विवाह करती है,परन्तु उसकी अतृप्त वासना प्रशमित नहीं होती । यही कारण है कि अवसर पाकर वह अपनी यौनक्षुधा की तृप्ति सुबोध से करने लगती है। इस प्रकार काम विकृति के कारण इरा वैयक्तिक स्तर पर विघटित है । उसके वैयक्तिक विघटन की अभिव्यक्ति इस कथन से होती है। " काश कि तुमने [देव] मेरा इतना विश्वास न किया होता । तब मुझे उस तरह की अजीब सी पीड़ा न होती जैसी की आज हो रही है । " 2

भगवतीचरण वर्मा कृत" रेखा" औपन्यासिक कृति में फ्रायड के लिविडो की महत्ता को स्वीकार किया गया है। इस उपन्यास की रेखा,प्रोफेसर शंकर,

==========================================================

1:- अज्ञेय :- नदी के द्वीप, पृ० सं०- 144
प्रोग्रेसिव पब्लिशर्स फिरोजशाह रोड दिल्ली,प्रथम संस्करण 1851 ई० ।

2:- डा० देवराज :- दोहरी आग की लपट , पृ० सं०-5
राजपाल एण्ड सन्स ,दिल्ली, प्रथम संस्करण 1973 ई० ।

योगेन्द्र एवं निरंजन सुशिक्षित व्यक्ति हैं, परन्तु इन सब के मन को दमित काम भावना मथ रही है । रेखा भावुकता में आकर नहीं, जान-बूझकर कि प्रभाशंकर दूध के धोये नहीं हैं उनका विवाहेतर यौन संबंध है, वह प्रोफेसर शंकर से विवाह करती है। वय की अधिकता के कारण प्रोफेसर शंकर रेखा को यौन सतुष्टि प्रदान करने में असमर्थ है। अत: रेखा अपनी यौन-क्षुधा पति प्रोफेसर शंकर के बजाय योगेन्द्रनाथ एवं निरंजन से पूरी करती है । रेखा जीवन में सेक्स को भूखरूप में स्वीकार करती है। उसका कहना है कि-" भूख-भूख है, वह बढ़ाने के लिए नहीं होती, वह शान्त करने के लिए होती है । भूख प्रकृति है, उसे दबाना प्रकृति के साथ अन्याय करना है। " [1] रेखा प्रारम्भ में शारीरिक भूख शांत करने के लिए डा० योगेन्द्र से यौन सम्बन्ध स्थापित करती है परन्तु कालान्तर में उसका शारीरिक सम्बन्ध भावनात्मक स्तर पर उतर आता है और रेखा पति को छोड़कर डा० योगेन्द्र के साथ विदेश जाने को तैयार हो जाती है। रेखा स्वयं पति के समक्ष निज के विवाहेतर प्रसंगों का उद्घाटन करती है। डा० प्रभाशंकर की रेखा के विवाहेतर काम सम्बन्धों के कारण उत्पन्न पक्षाघात से मृत्यु हो जाती है। इस प्रकार रेखा का वैयक्तिक और पारिवारिक विघटन हो जाता है। प्रस्तुत उपन्यास की शीरी चावला और रत्ना चावला नामक युवतियां भी यौन-दुर्बलता से ग्रसित हैं । रत्ना चावला निरंजन के साथ यौन संतुष्टि करना चाहती है इसके लिए वह एक चाल चलकर निरंजन को भावी जामाता नहीं बनाना चाहती है वह निरंजन एवं शीरी के विवाह में अड़चनें डालती है। निरंजन के अभाव में शीरी जीना नहीं चाहती, वह पहाड़ी से कूदकर आत्महत्या करना चाहती है ।

---

1:- भगवती चरण वर्मा:- रेखा, पृ० सं०- 117
राजकमल प्रकाशन प्रा०लि० दिल्ली, प्रथम संस्करण 1964 ई० ।

शीरी का आत्महत्या के लिए तैयार होना उसके वैयक्तिक विघटन का सूचक है ।

राजकमल चौधरी कृत " मछली मरी हुई " औपन्यासिक कृति में कामशक्ति की दुर्दमनीय शक्ति को स्वीकार किया गया है । यह स्वीकारोक्ति उपन्यास के शीरी, कल्याणी एवं निर्मल पद्मावत के चरित्रों में देखने को मिलती है । जब किशोरावस्था में शीरी को यह आघात लगता है कि उसकी मां की मृत्यु पुरूष संसर्ग के कारण हुई है तो शीरी आजीवन पुरूष के संसर्ग में जाने का विचार करती है । शीरी की कामभावना की विषमलैंगिक संतुष्टि के अभाव में अपनी ही बहन के साथ समलैंगिक यौनाचार में प्रवृत होती है। 1 यह समलैगिक यौनाचार उसे पुरूष संसर्ग से दूर हटा देता है अत: चाहते हुए भी वह निर्मल पद्मावत के साथ यौन संतुष्टि न कर पाती थी । 2 इस प्रकार वे वैयक्तिक एवं पारिवारिक विघटन की शिकार है । 3 उपन्यासकार ने उन सभी परिस्थितियों को विश्लेषण कर के शीरी एवं निर्मल पद्मावत के समक्ष इस प्रकार की विरेचित स्थितियां उत्पन्न कर देता है कि आवेगमें आकर शीरी एवं निर्मल पद्मावत परमानन्द की अनुभूति में आलिप्त हो जाते हैं । यह विरेचित स्थिति निर्मल का दीवालानिकलता है । दीवाला निकल जानेसे निर्मल वास्तविक भावभूमि पर आ जाता है ।

1:- राजकमल चौधरी :- मछली मरी हुई, पृ0 सं0 119
राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0 दिल्ली, प्रथम संस्करण 1966 ई0

2:- ( वह दोनों हाथों से निर्मल की देह पीटने लगी "बस" । इतना ही चाहते थे । सिर्फ इतना ही चाहते थे । बोला, तुम मुझे मारक्यों नहीं डालते )
वही :- पृ0 सं0- 115

3:- वही :- पृ0 सं0 - 117

मार्क्सवाद :-

"लेनिन के अनुसार"मार्क्स के विचारों और उपदेशों का ही नाम मार्क्सवाद है।" 1 वास्तव में उन्नीसवीं शताब्दी के क्रान्तिकारी विचारक कार्लमार्क्स ने व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं,सेक्स,रोटी,कपड़ा एवं मकान को सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हुए जिन सिद्धान्तों को प्रतिपादित किया है,कालान्तर में वे सिद्धान्त मार्क्सवाद के नाम से विश्वप्रसिद्ध हुए। मार्क्सवाद मात्र कार्लमार्क्स के सिद्धान्तों का संग्रह ही नहीं है,अपितु समाज में उसका एक गतिशील स्वरूप रहा है। इस संबंध में एमिलबर्न्स का यह कथन सत्य प्रतीत होता है कि"जैसे जैसे इतिहास की नई-नई तहें खुलती जाती हैं,जैसे-जैसे मनुष्य और अनुभवयुक्त होता जाता है, वैसे-वैसे मार्क्सवाद का भी अनवरत विकास किया जा रहा है तथा उसे नये-नये तथ्यों पर लागू किया जा रहा है जो अब प्रकाश में आते जा रहे हैं।" 2 यही कारण है कि मार्क्सवाद के विकास की एक परम्परा दृष्टिगोचर होती है जिसकी ओर संकेत करते हुए डा० एन०रवीन्द्रनाथ ने लिखा है। " मार्क्स और एंगल्स के बाद इस विकास में सबसे महत्वपूर्ण योग ख्रुश्चेव,माओत्सेतुंग आदि चिंतको ने भी इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य किए हैं। किन्तु इस दर्शन विशेष के विकास के समस्त मूलाधार मार्क्स और एंगल्स के चिंतन में ही निहित है जिसके द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद और ऐतिहासिक भौतिक वाद दो प्रमुख आधार स्तम्भ हैं। 3

मार्क्स व्यक्ति के लिए आध्यात्मिक क्षेत्र में कल्पना की उड़ाने भरने के बजाय जीवन की यथार्थ आवश्यकताओं के आधार पर सोचने के लिए विवश किया। " मार्क्स के अनुसार जगत के मूल में

---

1:- लेनिन अनुवादक बी०पी०सिन्हा :- मार्क्स और मार्क्सवाद,पृ०सं०-6
गंगा पुस्तकमाला कार्यालय लखनऊ ,प्रथम संस्करण 1946 ई०

2:- एमिल बर्न्स, अनुवादक ओम प्रकाश संगल, मार्क्सवाद क्या है, पृ०सं०-6

3:- एन रवीन्द्रनाथ:- मार्क्सवाद और हिन्दी उपन्यास पृ० सं०- 17

भौतिक तत्व मैटर है । यही इस विश्व की चरम सत्ता है। मार्क्स का भूतत्व ही सबका जनक है । चेतना की उसी से अविर्भूत हुई । प्रतिदिन के अनुभव का संसार ही सच्चा संसार है । आत्मा या ब्रह्म्य का हमारे लिए कोई महत्व नहीं है । इसके विपरीत भौतिक पदार्थ,जैसे मिटटी ,पत्थर रक्त मांस मज्जा आदि को हम प्रत्यक्ष देखते और अनुभव करते हैं । अत: वे हमारे लिए सत्य एवं अन्तिम है।" 1 वस्तुजगत

मार्क्सवाद के अनुसार वस्तुजगत के सारे क्रिया व्यापार परस्पर विरोधी स्थितियों पर निर्भर करते हैं । अर्थात एक वस्तु की जयपर उससे संबंधित वस्तु की पराजय निश्चित है । उदाहरणार्थ कर्जदार का ऋण ही महाजन का धन है ।

द्वन्द्वात्मक विकास को स्पष्ट करते हुए मार्क्स ने स्वीकार किया है कि विकास के लिए पूर्वस्था को निषेध जरूरी है । 2 कहने का तात्पर्य यह है कि एक स्थिति से दूसरी स्थिति में पहुंचने के लिए आवश्यक है कि उससे पूर्व की स्थिति का निषेध किया जाय । " विरोधी तत्वों का समागम और उनका संघर्ष निषेध का निषेध सिद्धान्त में कार्य करता है । " 3

मार्क्स का विश्वास है कि भूख और सेक्स प्राणी की मूल प्रवृत्तियां हैं । इन प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर प्राणी अपने जीवन अस्तित्व को अक्षुण बनाए रखने में सतत प्रयत्नशील रहता है । बुद्धिशील प्राणी होने के नाते मानव इन प्रवृत्तियों की पूर्ति समुचित एवं स्थाई ढंग से चाहता है जिसके लिए वह विभिन्न प्रकार के विविध निषेधों से अपने आपको आछन्न कर लेता है । भूख से मुक्ति के लिए हर जीवन कुछ न कुछ करता है । उनके जीविकार्जन का ढंग समान होने की वजह से उनका जीवनस्तर भी समान होता है । इस प्रकार उत्पादन के आधार पर ही समाज में व्यक्ति के सम्बन्धों की स्थापना होती है ।

---

1- डा० पारसनाथ मिश्र:- मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल, पृ० सं०-23
लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद प्रथम संस्करण 1972 ई०
2- वही 25 एवं 26

सामाजिक सम्बन्धों में स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध महत्वपूर्ण सम्बन्धों में से एक है। इस सम्बन्ध के द्वारा स्त्री-पुरुष परस्पर यौन संतुष्टि एवं जातीय वंशवृद्धि की परम्परा को आगे बढ़ाते हैं । अत: मार्क्सवाद की धारणा है कि "स्त्रियां भी पुरुषों की तरह मनुष्य हैं उनके कन्धे पर भी समाज का उत्तरदायित्व उतना ही है जितना की पुरुषों के कंधे पर । " ।
परन्तु पुरुष सत्ता का समाज में जहां उत्पादन के साधन स्त्रोतों और उत्पादित सम्पत्ति पर अधिकार रहा है, नारीकी स्वतंत्रता कभी भी सम्भव नहीं रही है । " वास्तव में वहां नारी पुरुष के संकेतों पर नाचने वाली वासना तृप्ति और सन्तानोत्पत्ति का साधन समझी जाती है । " 2

मार्क्सवाद के अनुसार समाज की पूंजीवाद व्यवस्था में पूंजीपति एवं श्रमिक दो वर्ग होते हैं । मार्क्सवाद में मजदूर से अभिप्राय" केवल हल फावड़ा चलाने वाले लोगों से ही नहीं बल्कि वे सब लोग मजदूर श्रेणी में आते हैं जो अपने परिश्रम की कमाई से अपना निर्वाह करते हैं । इस श्रेणी में किसान,मजदूर,क्लर्क, अध्यापक,नाटक के पात्र गायक,------इंजीनियर,लेखक,डाक्टर यहां तक कि मिल के मैनेजर आदि सभी पेशे के लोग आ जाते हैं । मजदूरों की श्रेणी में केवल वे ही लोग नहीं आते जो इस प्रकार के कार्य करते हैं जिनमें वे दूसरों से काम कराकर उनमें से अपना मुनाफा बचाते हैं । इस प्रकार मुनाफा बचाने के कार्य के प्रबन्ध में चाहे कितना ही कठोर परिश्रम

==========================================

1:- यशपाल :- मार्क्सवाद, पृ0 सं0- 117
विप्लव कार्यालय लखनऊ, संस्करण 1940 ई0
2:- डा0 पारसनाथ मिश्र:- मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल, पृ0सं-33
लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1972 ई0 ।

किया जाय, मार्क्सवाद की दृष्टि में दूसरों का शोषण ही कहलाएगा और अपराध होगा । " ।[1] मार्क्सवाद पूंजी को समाप्त करना नहीं चाहता अपितु पूंजी लगाकर स्थापित की गई शोषण की इकाई को समाप्त करना चाहता है । इस संबंध में मार्क्स का कथन है " हम उस व्यक्तिगत उपज= या सम्पत्ति को कभी भी नष्ट नहीं करना चाहते, जो मजदूर उत्पन्न करता जो उसके जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक है और जिसमें इतनी अधिक बचत नहीं होती कि वह एक दूसरों के श्रम पर अधिकार कर सके । अर्थात दूसरे श्रमिकों को पारिश्रमिक देकर उनसे काम ले सके । हमतो केवल इतना ही चाहते हैं कि अतिरिक्त मूल्य का खतरनाक लक्षण समाप्त कर दिया जाय, क्योंकि इस पद्धति के अन्तर्गत मजदूर का जीवन केवल पूंजी वृद्धि के लिए होता है और वह केवल उसी हद तक जीवित रखा जाता है, जितना कि शोषक वर्ग अपने स्वार्थ के लिए आवश्यक समझता हो । "[2] मार्क्सवाद के अनुसार सर्वहारा वर्ग, पूंजीवाद से जन्म लेकर पूंजीवाद के विनाश का कारण है जो ~~पूंजीवाद व्यवस्था द्वारा~~ ।सर्वहारा वर्ग मजदूरों श्रमिकों अथवा ऐसे अन्य लोगों का वर्ग है जो पूंजीवाद व्यवस्था द्वारा शोषित किए जाते हैं । सर्वहारा वर्ग द्वारा लाई गयी क्रान्ति साधारण क्रान्ति नहीं है बल्कि वह व्यापक एवं सुनियोजित ढंग से की गई सशक्त क्रान्ति होती है । सर्वहारा वर्ग की यह क्रान्ति के साधन के रूप में मार्क्स ने घोषणा की थी - " हम दृढ़ता पूर्वक यह नहीं कह सकते कि साधन निश्चित रूप से इस लक्ष्य [श्रमिक स्वातंत्र्य] की प्राप्ति के लिए सभी एक जगह एक ही प्रकार के प्रयुक्त किए जाएंगे । हमें विभिन्न देशों के संस्थान, रीति -रिवाज और परम्पराओं को भी जानना होगा

---

1:- यशपाल :- मार्क्सवाद, पृ0 सं0-81, विप्लव कार्यालय लखनऊ, संस्करण 1940 ई0

2:- डा0 पारसनाथ मिश्र :- मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल, पृ0सं0-40 लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1972 ई0।

3:- वही :- पृ0 सं0- 42

क्रान्ति के अनन्तर देश की सम्प्रभुता सर्वहारा वर्ग के लोगों के हाथों में होगी । सम्प्रभुता के इस काल को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है । मुल्य संक्रमण काल,वर्ग विहीन समाज वादी समाज । संक्रम ण काल में सर्वहारा वर्ग अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के लिए अपने शत्रुओं को सदा के लिए समाप्त कर देने में प्रयत्नशील रहता है । इस अवधि में सर्वहारा वर्ग,पूंजीवादी व्यवस्था के समूल नाश के लिए उग्रवादी एवं दमनात्मक पद्धति अपनाता है। इस काल में उत्पादन के समस्त साधनों पर पूर्ण सम्प्रभुत्व राज्य का होगा । इस व्यवस्थानुसार प्रत्येक व्यक्ति को उसकी योग्यतानुसार एवं क्षमतानुसार कार्य मिलेगा । "अब समाज में न तो कोई बेकार होगा और न ही किसी को कम मजदूरी मिलेगी और न तो कोई ऐसा पूंजीपात होगा जो अतिरिक्त मूल्य को हड़प सके । इस समाज में न कम उत्पादन होगा, न अधिक, जिससे मांग और पूर्तिमें असंतुलन आ सके । " 1

उपर्युक्त व्यवस्था के कार्यान्वयन से समाज मे वर्गीय भावना का तिरोधान हो जा एगा और उत्पादन के सभी उपादानों पर समाज का आधिपत्य होगा । योग्यतानुसार सब को कार्य और वेतन प्राप्त होगा। इस प्रकार एक वर्गविहीन समाज की स्थापना होगी । इस वर्गविहीन समाज के सदस्यों में स्वत: नैतिकता का विकास होगा तथा मानव प्रेम उत्पन्न होगा और वह अपने श्रमकार्य में किसी प्रकार की कृपणता नहीं करेगा । " यही से व्यक्ति के मन में सामूहिकता का पूर्ण विकास होगा और तब ऐसे राज्य का श्रीगणेश होगा जहां न सेना होगी, न पुलिस, न राज्य के कर्मचारी । " 2

---

1:- डा0 पारसनाथ मिश्र :- मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल, पृ0 सं0- 44

लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण -1972 ई0 ।

2:- वही:- पृ0 सं0- 46

सन् 1917 ई0 में रूस में हुई जनक्रान्ति द्वारा स्थापित समाजवादी व्यवस्था ने यह सिद्ध कर दिया कि कार्लमार्क्स द्वारा प्रतिपादित द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद मात्र बौद्धिक विलास नहीं है अपितु व्यवहारिक दर्शन है। रूसी जनक्रान्ति से प्रभावित होकर भारत में समाजवादी विचारों का अध्ययन 1925 ई0 में प्रारम्भ हुआ किन्तु चिंतन पर उसका प्रभाव आठ-दसवर्षों में पश्चात ही पड़ा । " 3 उपर्युक्त कथन से प्रकट होता है कि भारतवर्ष में भी मार्क्सवादी ढंग से समाजिक ,आर्थिक एवं राजनीतिक मूल्यों का निर्धारण प्रारम्भ हुआ । अत: स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों के पात्रों के जीवनदर्शन में मार्क्सवादी दृष्टिकोण का दिखलाई पड़ना आश्चर्य की बात नहीं है ।

पाण्डेय बेचनशर्मा " उग्र" की गंगा माता" उपन्यास की प्रमुख स्त्री पात्र गंगा माता समाज में स्त्रियों को पुरुषों की भांति समानाधिकार दिलवाना चाहती है तथा पुरुषों द्वारा किए जा रहे स्त्रियों के शोषण का विरोध करती है । गंगामाता स्त्रियों को संगठित करने के लिए परिवार का त्याग करके क्रान्तिकारिणी बन जाती है तथा स्त्रियों को पुरुषों के प्रति विद्रोही भावना जागृत करने के लिए कहती है। " भद्र महिलाओं । तुम मानों या न मानों, पर मैं पुरुष जाति को स्त्री जाति का शत्रु मानती हूं । भविष्य में लड़कियों को लड़कों से किसी बात में कम या कमजोन न समझें । भरसक पुरुष प्रसंग से,माता बनने से बचें।बनना ही पड़े तो लड़की की मां बनने की इच्छा करें और वे मर जांय तो रोयें पीटें नहीं । पुरुष बच्चों का मारना ही बेहतर है क्योंकि जियेंगे तो पड़ोसियों को कदापि जीने नहीं देंगे । स्वार्थ,विशाद उन्माद के ये पापी पुतले विधाता की बुद्धि के विकार है। 2

==========================================

1:- डा0 पारसनाथ मिश्र :- मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल,पृ0सं-112
लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद ,प्रथम संस्करण 1972 ई0

2:- पाण्डेय बेचन शर्मा" उग्र" :- गंगा माता पृ0 सं0- 29
आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 1971 ई0 ।

गंगा- माता द्वारा संचालित संघर्ष के प्रभाव से पुरूष भी संगठित हो जाते है तथा पुरूष वर्ग अपने बुद्धि पराक्रम से गंगामाता के वर्ग संघर्ष को विफल कर देता है । इस प्रकार पुरूषों के विपक्ष में संचालित विद्रोह निरर्थक साबित होता है । इस प्रकार गंगा माता द्वारा चलाया गया वर्ग संघर्ष जीवितावस्था में समाज में अशान्ति एवं अव्यवस्था कारक ही अधिक रहा । गंगा माता भी मार्क्स की भांति स्त्री समाज का अधिनायकत्व स्थापित करना चाहती है, परन्तु अन्त में असफलता ही प्राप्त होती है ।

यशपाल विद्रोही उपन्यासकार हैं । उनके, अधिकांश औपन्यासिक पात्र मार्क्सवादी दृष्टिकोण पर अवलम्बित हैं । फलित: उनके उपन्यासों में परम्परागत जीवन मूल्यों का विखण्डन एवं नवार्जित मूल्यों की पुर्नस्थापना है । " नारी और पुरूष ,प्रेम और विवाह, धर्म और ईश्वर आदि समस्त सामाजिक प्रश्नों को उपन्यासकार यशपाल ने मार्क्सवादी दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया है । " । उनका यह मार्क्सवादी दृष्टिकोण परम्परागत नारी विषयक दृष्टिकोण से भिन्न है क्योंकि यशपाल स्त्री-पुरूष के स्वाभाविक आकर्षण एवं उनके यौन सम्बन्धों के पक्षपाती है । अत: परम्परित सामाजिक मूल्यों के अनुसार इनके पात्र नैतिक च्युत एवं समाज में अशान्ति एवं अव्यवस्था उत्पन्न करते दिखलाई पड़ते है । उनके पात्रों की यह अशान्तिपूर्ण स्थिति सामाजिक विघटन की सूचक है । उदाहरण स्वरूप इनके "बारह घंटे" नामक औपन्यासिक कृति के लारेंस नामक व्यक्ति को लिया जा सकता है। लारेंस की धारणा है कि "नर-मादा का आकर्षण प्राकृतिक बात है। मैं तो कहूंगा पशुओं का प्रेम अधिक निश्छल है

---

1:- डा० पारसनाथ मिश्र :- मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल, पृ०सं०-250 लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1972 ई० ।

केवल प्रकृति की पुकार का परिणाम होता है । किसी अन्य प्रलोभन का विचार उसके आकर्षण को प्रभावित नहीं करता । " 1 वह सावित्री की पौराणिक कथा का विश्लेषण कर यह सिद्ध कर देता है कि सावित्री का सारा प्रयासभौतिक आवश्यकता की पूर्ति का प्रयास था । " 2 इस उपन्यास की विनी एवं पेंटम का आकर्षण भी कुछ इसी प्रकार का है। ये दोनों सेक्स की मूलभूत आवश्यकता से प्रेरित होकर पहले आकर्षित होते हैं, एक दूसरे के प्रति समर्पित होते हैं फिर वैवाहिक सूत्र में बंधते हैं । "मार्क्सवाद के अनुसार व्यक्तियों का स्वच्छंद सम्बन्ध केवल समाजवादी समाज में स्वाभाविक होता है, बुर्जुआ समाज में नहीं । परन्तु यशपाल ने इस मूल सिद्धान्त को समाजवादी समाज में नहीं बर्जुआ समाज में प्रस्तुत किया है जहां विधवा विनी का पेंटम के प्रति समर्पण की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। " 3 इस प्रकार विनी का पेंटम के प्रति समर्पण उसके वैयक्तिक विघटन का द्योतक हैं ।

यशपाल कृत" झूठा-सच " औपन्यासिक कृति के कथानक में वर्ग-संघर्ष और "निषेध का निषेध अच्छी तरह दिखाया गया है। शोषक और शोषित वर्गों का संघर्ष कथानक के आरम्भ में दिखाई पड़ता है। यह संघर्ष कहीं धार्मिक कटुता के रूप में पनपता है तो कहीं पूंजीपतियों के बंगलों के वैभवशाली वातावरण में । " 4 प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित यह वर्ग संघर्ष परम्परित सामाजिक व्यवस्था के विघटन को प्रकट करता है ।

==========================================================

1:- यशपाल :- बारह घंटे, पृ0 सं0- 97
विप्लव कार्यालय शिवाजी मार्ग लखनऊ, संस्करण 1963 ई0

2:- डा0 पारसनाथ मिश्र :- मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल,पृ.सं. 20

लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1972 ई0 ।

3:- वही :- पृ0 सं0- 151

4:- वही:- पृ0 सं0- 149

भैरव प्रसाद गुप्त कृत "शोले" उपन्यास में पुरुषों द्वारा स्त्रियों के शोषण की कथाकही गई है तथा इस शोषण के प्रति विरोध प्रदर्शित किया गया है। उपन्यासकार का यह विरोध मार्क्सवादी दृष्टिकोण पर आधारित है क्योंकि उपन्यासकार यौन सम्बन्धों की दृष्टि से स्त्रियों को पुरुषों की भांति समानाधिकार दिलाना चाहता है । " एक ही क्रिया कर पुरुष जहां पवित्र बना रहता है, वहीं नारी कलंकित क्यों ठहरा दी जाती है ----- नारी के छत अंग और गर्भ की बात लेकर उसे कलंकित करने का अधिकार किसी को कैसे प्राप्त हो जाता है । " ।

रामदरश मिश्र कृत " जल टूटता हुआ " उपन्यास के श्रमिकों एवं सर्वेक्षों के मध्य उत्पन्न अशान्ति एवं तनाव का कारण श्रमिकों में उत्पन्न कौमी एकता है । इस उपन्यास का जगपतिया कलकत्ता से लौटकर गांव के मजदूरों का नेता बन जाता है । वह अपने गांव के मजदूरों को कार्लमार्क्स का समता का पाठ पढ़ाता है । " सो जगपतिया कलकत्ते से आग भर लाया है, लाल झंडा लिए फिरता है, और गांव के तमाम मजदूरों को ललकार रहा है कि क्रान्तिकर दो ------ मजदूरी बढ़ाओं, जो मजदूरी कम दे या खराब जबान बोले उसके यहां काम करने मत जाओं । " 2

---

1:- भैरव प्रसाद गुप्त :- शोले, पृ0 सं0- 132
धारा प्रकाशन, लूकरगंज, छठा संस्करण 1970 ई0 ।

2:- रामदरश मिश्र :- जल टूटता हुआ, पृ0 सं0- 250
हिन्दी प्रचारक संस्थान वाराणसी ,प्रथम संस्करण 1969 ई0 ।

श्रमिकों की हड़ताल के कारण गांव के सवर्णों एवं श्रमिकों में पारस्परिक तनाव बढ़ जाता है और दोनों ओर से अपने-अपने अधिकार के लिए व्यापक तैयारियां होने लगती है । " पार्टी केलोग नारा लगाने लगे और जगपतिया के नेतृत्व में हथियार चमक उठे, लाठियां खड़खड़ा उठीं, सबमें उत्तेजित खून दौड़ने लगा । महीप सिंह के दल में काफी लोगों थे और जगपतियां के साथ कम लोग । " । उपर्युक्त गांव में व्याप्त पारस्परिक तनाव सामुदायिक विघटन का सूचक है ।

नागार्जुन कृत " बलचनमा " औपन्यासिक कृति में भी वर्गसंघर्ष की भावना मुखरित हुई है । प्रस्तुत उपन्यास के बलचनमा के पिता पर मालिकों द्वारा किए गए अत्याचार के सम्बन्ध में कहता है । अपने जीवन की सबसे पहली घटना जो मुझे याद है --- मालिक के दरवाजे पर मेरे बाप को एक खंभेली के सहारे कसकर बांध दिया गया है । जांघ,चूतर पीठ और बांह--- सभी पर बांस की हरी कैली के निशान उभर आए हैं,चोट से कहीं कहीं की खाल उखर गयी है । और आंखों से बहते आंसुओं के टधार गाल और छाती पर से सूखते नीचे चले गये हैं ---- चेहरा काला पड़ गया है --- अलग कुछ दूर छोटी चौकी पर यमराज की भांति मझले मालिक बैठे हुए हैं। 2 बलचनमा के पिता के साथ हुआ उपर्युक्त वर्गगत अत्याचार उसके वैयक्तिक विघटन का सूचक है ।

---

1:- रामदरश मिश्र:- जल टूटता हुआ, पृ0 सं0- 25।
हिन्दी प्रचारक संस्थान वाराणसी, प्रथम संस्करण 1969 ई0 ।

2:- नागार्जुन :- बलचनमा पृ0 सं0- 5-6
किताब महल इलाहाबाद ,प्रथम संस्करण 1952 ई0

जगदीश चन्द्र कृत " धरती धन न अपना " औपन्यासिक कृति में भी वर्गसंघर्ष की भावना मुखरित हुई है । प्रस्तुत उपन्यास में " रलहन " में हरिजनों और चौधरियों के बीच संघर्ष उत्पन्न हो जाता है । यह संघर्ष बाद में हड़ताल का रूप ले लेता है । यह हड़ताल हरिजनों द्वारा मजदूरी के प्रश्न पर की गई थी और चौधरियों द्वारा उसका विरोध किया जाता है । हड़ताल के कारण हरिजन परिवार भुखमरी की स्थिति में पहुंच जाते हैं । " । उपर्युक्त भुखमरी की स्थिति हरिजनों के सामुदायिक विघटन को प्रकट करता है ।

---

1:- यहीं कि कुछ लोग फाके काट रहे हैं और कुछ आधी रोटी खाकर गुजारा कर रहे हैं । मुहल्ले में शायद कोई ही ऐसा घर होगा जो आजकल पूरी रोटी खाता है ।

जगदीश चन्द्र :- धरती धन न अपना , पृ० सं०- 296
राजकमल प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1972 ई०

अस्तित्ववाद :-

पश्चिम में जन्मीं यांत्रिकता और द्वितीय विश्वयुद्ध ने वहां के परम्परित आदर्शों एवं जीवन के प्रति प्रश्न चिन्ह लगाकर उन्हें गलत प्रमाणित कर दिया । युद्ध की विभिषिका और आसन्न मृत्यु भय के संत्रास से वहां का व्यक्ति बौखला उठा । उन्हें अपनी रक्षा के लिए चिंतित होना पड़ा । डेनमार्क में जन्में गुमनामी जीवन गुजारने वाले विद्रोही चिंतक सारेन की कंगार्द§ 1813-1855ई0§ ने " अपने समय में दर्शन के क्षेत्र में हीगेल के प्रत्ययवाद का और धर्म के क्षेत्र में धर्म मीमांसा का विरोध किया।" 1 उन्होंने अस्तित्व को शांत और अनन्त के संयुक्त रूप में देखा जो कालिक एवं शास्वत दोनों रूपों में है। इनके अनुसार व्यक्ति के अस्तित्व के तीन स्तर हैं प्रथम स्तर वह है जब व्यक्ति इन्द्रियानुभव के धरातल पर विषय और विषयी के द्वैत में जीता है। यह दैहिक भोग की वह अवस्था होती है जहां व्यक्ति सचेतन निर्वाचन में असमर्थ रहता है। अस्तित्व का दूसरा स्तर नैतिक स्तर पर विषय एवं विषयों के निर्वाचन के रूप में होता है। इस स्तर पर व्यक्ति के अस्तित्व का अन्तिम रूप मृत्यु के वरण के रूप में होता है । अस्तित्व का तीसरा स्तर धार्मिक अथवा अध्यात्मिक है । यह वरण आस्थागत होता है जिसमें व्यक्ति स्थूल स्थितियों का परित्याग करके विशुद्ध मन से आत्मलीन हो जाता है । कीर्केगार्द का संपूर्ण चिंतन विषय के स्थान पर विषयी के अतिक्रमण पर आधारित है । यही कारण है कि उन्होंने " ज्ञान के लिए बुद्धि को नकार कर अविवेक तत्व को ग्रहण किया है । " 2

---

1:- प्रकाश दीक्षित:- अस्तित्वाद और नयी कविता, पृ0 सं0 - 41
अनादि प्रकाशन 609 कटरा इलाहाबाद, प्रथम संस्करण ।

2:- वहीं :- पृ0 सं0 - 44

सारेन कीर्केगार्द की अस्तित्वादी परिकल्पना के पश्चात सुप्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक एवं तत्ववेत्ता फ्रेडरिक नीत्से ने नवीन नैतिक मूल्यों एवं अवधारणाओं का सहारा लेकर अस्तित्ववाद के बहुमूल्य सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया, परन्तु अस्तित्वाद के जन्मदाता सारेन कीर्केगार्ड ही माने जाते हैं। ।

बीसवी शताब्दी के अस्तित्वादी विचारकों में कार्ल- यास्पर्स, गैब्रियल, मार्शल डा मार्टिन, हेडगर, ज्यापाल सात्र तथा अल्बेयर काम्रु का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। सम्पूर्ण अस्तित्वादी दर्शन इन्हीं विचारकों के सिद्धान्तों पर आधारित है। ज्यापाल सात्र, काल-यास्पर्स और गैब्रियल, मार्शल को कैथोलिक ईसाई वाद का समर्थक और ईश्वरवादी अस्तित्वादी मानता है तथा डा0 हेडगर और अपनी तथा अन्य फ्रांसीसी विचारकों एवं लेखकों की गणना अनीश्वरवादी चिंतकों में करता है। दोनों तरह के विचारकों में यह समानता है कि वे यह मानते हैं, अस्तित्व मानवीय तत्व की दिशा में उन्मुख है और यह कि विषयात्मकता अथवा विषयगत सम्बद्धता ही प्रारम्भिक बिन्दु होना चाहिए।"" 2

---

1:- डा0 श्यामसुन्दर मिश्र :- अस्तित्वाद और द्वितीय समरोत्तर हिन्दी साहित्य पृ0 सं0 - 15

विद्या प्रकाशन मन्दिर, दरियागंज दिल्ली,6, प्रथम संस्करण 1971 ई0 ।

2. ( What complicates matters is that here are two kinds of Existentialist, firest, those who are chriistan,among whome I would include Jaspers and Gabriel, Marcel both catheis and on the other hand the atheistic existentialists among whome I class Heidger, and than the French existentialists and ———that the subjectivity sust be the starting point.)

Jean paul Saretree:- Exiatantialism page- 15

the publication library Newyork. 1947

"" ज्यापाल सात्र, फ्रेंज काफ्का ,कार्ल यास्पर्स, मार्शल, अल्बेयर कामू ने इस विचारधारा को साहित्य लेखन के क्षेत्र में लोकप्रिय बना दिया है । " कुछ स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास लेखक भी अस्तित्वाद की लोकप्रियता से मुक्त न रह सके । इसका एक कारण यह भी है कि द्वितीय महायुद्ध के पश्चात पाश्चात्य एवं भारतीय विचारधारा में अद्भुत साम्य दृष्टिगोचर होता है । इस साम्यता का मुख्य कारण यह है कि भारतीय जीवन के पिछले अस्सी वर्षों में प्राप्त भौतिक उपलब्धियों के फलस्वरूप यहां की मध्ययुगीन जड़ता में तीव्र गति से विखण्डन हुआ है । हां इतना अवश्य है कि विज्ञान के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियां पाश्चात्य देशों की वैज्ञानिक उपलब्धियों की तुलना में अल्प ही हैं । पाश्चात्य देशों के अनुकरण के आधार पर भारत में औद्योगिककरण एवं नगरी करण तीव्रगति से हुआ है । "द्वितीय समरोत्तर भारतीय साहित्य इन्हीं नगरों में रहने वाले साहित्यकारों के द्वारा लिखा गया है । द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात हिन्दी साहित्य में स्थापित होने वाले अधिकांश कवि और साहित्यकार नवनिर्मित नगर परिवेश और वातावरण के प्रति नवीन बौद्धिक असन्नता का परिचय देते हैं । "" 2

वैज्ञानिक क्षेत्रों में प्राप्त भौतिक उपलब्धियां , औद्योगीकरण एवं नागरीकरण की योजनाओं ने भारतीयों को भौतिक समृद्धि अवश्य प्रदान की है, परन्तु उनकी ईश्वर सम्बन्धी एवं सामाजिक अवधारणायें पूरी तौर पर वैसी नहीं बन सकी हैं जैसे कि पश्चिम में हैं । यही कारण है कि आलोच्यकाल के उपन्यासों में चित्रित अस्तित्वाद से प्रभावित पात्रों का सामंजस्य भारतीय सामाजिक संगठन में नहीं हो पाता है उनका विघटन हो जाता है । अस्तित्ववाद की कतिपय प्रमुख प्रवृत्तियों संक्षेप में इस प्रकार हैं ।

---

1:- डा0 श्यामसुन्दर मिश्र :- अस्तित्ववाद और द्वितीय समरोत्तर हिन्दी साहित्य पृ0 सं0 -233

विद्या प्रकाशन मन्दिर , दरियागंज ,दिल्ली -6, प्रथम संस्करण 1971 ई0

2:- वही :- पृ0 सं0 - 100

ईश्वर की परमसत्ता को स्वीकारने एवं अस्वीकारने के आधार पर अस्तित्ववादी दार्शनिकों को दो खेमों में विभक्त किया जा सकता है । ईश्वरवादी अस्तित्वचिंतक अनीश्वरवादी अस्तित्वचिंतक । ईश्वरवादी अस्तित्वचिंतक धार के प्रमुख प्रचारक और अग्रकर्ता कार्ल जेस्पर्स थे । इन्होंने अस्तित्व को तीन स्तर पर स्वीकार किया है। उनके अनुसार अस्तित्व का प्रथम स्तर वह है जो देशकाल, अनुभव गम्य और वरण की स्वतंत्रता से रहित है । उन्होंने इसे वह अस्तित्व [बीइंग देयर] के नाम से सम्बोधित किया है । अस्तित्व का द्वितीय स्तर तब होता है जब व्यक्ति " वह अस्तित्व " का अतिक्रमण करके अपनी आत्मा में प्रतिष्ठित होकर स्वतंत्रता के साथ उपभोग की क्षमता उत्पन्न कर लेता है । अस्तित्व का तृतीय स्तर तर्कातीत है जिसे मात्र अन्त: प्रज्ञा से ही जाना जा सकता है । "" जेस्पर्स के ये तीन प्रकार के अस्तित्व भारतीय दर्शन के जगत आत्मा एवं परमात्मा के समान है । "" । अन्य आस्तिक अस्तित्ववादियों में गैब्रियल और मार्टिन बूबर मुख्य हैं ।

" इन ईसाई अवधारणाओं से प्रभावित अस्तित्वादियों के अतिरिक्त विचारकों का दूसरा वर्ग है जिसके दर्शन में अस्तित्व के सप्रत्ययातों अत्यंत उग्र हैं तथापि अतीन्द्रिय, मानवेतर और अलौकिक परमसत्ता को स्वीकार नहीं करता । यह निरीश्वरवादियों का वर्ग है जिसमें हेडगर, सार्त्र और काम्यू आते हैं । "" 2अस्तित्ववादी दर्शन में अस्तित्व के अन्तर्गत केवल मनुष्य आता है । मनुष्य चेतना युक्त प्राणी है तथा शेष जगत चेतना रहित है । चेतना नामक तत्व ही मनुष्यका शेष जगत से अलगाव प्रकट करता है ।

==========================================================

1:- प्रकाश दीक्षित :- अस्तित्ववाद और नयीकविता, पृ0 सं0 -47

अनादि प्रकाशन 609 कटरा इलाहाबाद, प्रथम संस्करण

2:- वहीं - पृ0 सं0 - 51

अस्तित्ववाद के अनुसार अस्तित्व सार का पूर्ववर्ती है । अर्थात पहले मनुष्य संसार में आता है फिर उसके बाद वह अपने स्वतंत्र निर्णयों एवं कार्यों के द्वारा अपने अस्तित्व को सार प्रदान करता है । "" इस प्रकार अस्तित्ववाद मैं सोचता हूं, अत: मैं हूं के विपरीत मैं हूं अत: मैं सोचता हूं के सूत्र में आस्था रखता है ।" ।

सम्भावना परक होने के कारण वैयक्तिक अस्तित्व की अन्तिम रूप से व्याख्या नहीं की जा सकती है । " अत: मानव अस्तित्व की व्याख्या का एक ही तरीका शेष रह जाता है कि विश्व में उसकी परियोजनाओं के कार्यकलापों के माध्यम से उसका विश्लेषण किया जाय । अस्तित्ववादी इस स्तर पर प्रत्येक व्यक्ति को उसके कार्यों का उत्तरदायी मानता है । "" 2

अस्तित्ववादी दर्शन में मनुष्य द्वारा चयन की स्वतंत्रता का महत्वपूर्ण स्थान है । मनुष्य चयन के लिए स्वतंत्र है । " वरण की यह स्वतंत्रता मानव-जीवन में हर क्षण एवं हर दशा में मौजूद रहती है और व्यक्ति पर ऐसा उत्तरदायित्व लाद देती है जिससे वह अपने को मुक्त नहीं रख सकता । "" 3

==================================================================

1:- डा0 बालचन्द्र गुप्त मंगल :- अस्तित्ववाद और नयी कहानी, पृ0 सं0 -104 शोध प्रबन्ध प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 1975 ई0

2- डा0 श्यामसुन्दर मिश्र :- अस्तित्ववाद और द्वितीय समरोत्तर हिन्दी साहित्य पृ0 सं0 -30 विद्या प्रकाशन मन्दिर दरियागंज दिल्ली-6 प्रथम सं0 1971 ई0

3. (Thous the first affact of existentialism is that it puts every man in possession of him6elf as he is, and plascs the antire responsibility for his existance sequarealy up on his own shoulders.)
Jean paul sartre:- Existentialism and humaniam
Tr. and Introduction by PHILIPS: MAIRET.
Mathuen and Co. Ltd.London,1949.

मनुष्य यह चयन वैयक्तिक विवेक के आधार पर करता है और वह सम्भावना परक होता है। वह उस चयन से बच नहीं सकता तथा मनुष्य अपने चयन का उत्तरदायी स्वयं होता है । यही कारण है कि इस दर्शन के अनुसार वह समाज कीव्यवस्था में उत्पन्न होकर भी समूह के विच ार ,परम्परा,व्यवस्था एवं नियम से पूर्णतः बंधा हुआ नहीं है। सभी अस्तित्त्ववादी दार्शनिक मनुष्य के नैतिक आचरण पर बल देते हैं, परन्तु यह नैतिकता समाज द्वारा व्यक्ति पर थोपी हुई नहीं होती है बल्कि व्यक्ति के विवेक पर आधारित होती है तथा व्यक्ति से कर्म एवं संघर्ष के द्वारा सफल बनाने का प्रयत्न करता है ।

अस्तित्ववाद के अनुसार मनुष्य का ऐतिहासिकता से घनिष्ठ सम्बन्ध है । " वह अपने अतीत के प्रति पूर्ण उत्तरदायी है । "' । मनुष्य के लिये क्षण का विशेष महत्व है क्योंकि प्रत्येक मनुष्य का जीवन अनेक क्षण के संयुग्म पर निर्भरकर्ता है। क्षण मात्र में उसका जीवन समाप्त हो सकता है । " अस्तित्ववादी चिंतन निराशा,व्यथा,संत्रास, एकाकीपन, विसंगति शून्यता आदि प्रत्यय मानव अस्तित्व के महत्वपूर्ण अंग हैं। इनके निराकरण के लिए अस्तित्वादी दार्शनिक तीन सामान्य सत्यों को स्वीकार करते हैं । "' 2 प्रथम सत्य के अन्तर्गत दुःख एवं पीड़ा को अनुभूति का अनिवार्य आधार बताया गया है । " अर्थात दुखी और पीड़ित हुए बिना मनुष्य अपने अस्तित्व का अनुभव नहीं कर सकता । दूसरे दुःख और पीड़ा से मुक्ति प्रदान करने का सबसे बड़ा उपाय यही है कि वह उसे स्वीकार कर लें। तीसरे मनुष्य को ऐसा कार्य करना चाहिए, जिसमें

---

1:- डा० लालचन्द गुप्त मंगल :- अस्तित्वाद और नयी कहानी पृ० सं० -106

शोध प्रबन्ध प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 1975 ई० ।

2:- वही :- पृ० सं० 106

उसकी सारी शक्तियां लग जाएं तथा वह अपनी संवेदनाओं को गम्भीरतम रूप में संवेदित कर सके। इसके लिए उसे भयंकर से भयंकर परिस्थितियों का सामना करना चाहिए।" ।

अस्तित्ववाद के अनुसार मृत्यु मानव जीवन की एक अनिवार्य स्थिति है। कोई भी मनुष्य मृत्यु की इस निवार्य दशा से मुक्त नहीं है।
" जहां हैडगर मृत्यु को मानव अस्तित्व की प्रमुख सम्भावना मानता है, वहां सास्त्र मृत्यु को एक सीमा स्वीकार करता है " मैं मरने के लिए स्वतंत्र नहीं हूं बल्कि एक दर्शन व्यक्तित्व हूं जो मरता है। मृत्यु मेरे लिए अबूझ सीमा है।" 2

अज्ञेय कृत नदी के द्वीप औपन्यासिक कृति में स्त्री -पुरुष के सम्मोहनात्मक रूप की जगह उन सम्बन्धों की संकलित निरर्थकता का बोध होता है। यह निरर्थकता अस्तित्ववाद के वरण की स्वतंत्रता एवं उस वरण के द्वारा उत्पन्न दायित्व बोध से उत्पन्न हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास की रेखा, हेमेन्द्र, चन्द्रमाथ व एवं भुवन वैवाहिक सम्बन्धों के चयन में स्वतंत्र है। हेमेन्द्र यौन संतुष्टि के लिए समलैंगिक यौन सम्बन्ध का चयन करता है तथा रेखा के साथ मात्र इसलिए विवाह करता है क्योंकि उसकी स्वाकृति उसके

===============================================================

1:- डा० लालचन्द गुप्त मंगल :- अस्तित्ववाद और नयी कहानी, पृ०सं० -106
शोध प्रबन्ध प्रकाशन दिल्ली -संस्करण 1975 ई०

2:- लालचन्द्र गुप्त मंगल :- अस्तित्ववाद दार्शनिक तथा साहित्यिक भूमिका पृ० सं० -101

अनुपम प्रकाशन मन्दिर 2139/4 गली नं. 2 धर्मपुरा पटियाला [पंजाब] संस्करण 1977 ई० ।

पुरुष साथी से मिलती थी । " । वह रूपताम्यता के आधार पर रेखा की रूपाकृति में अपने पुरुष साथी का अन्वेषण करता है जिसमें उसे असफलता ही प्राप्त होती है। यौन संतुष्टि की विपरीत लिंगी विधि के चयन के बजाय हेमेन्द्र द्वारा अपनाई गई समलैंगिक रति को स्वाभाविक यौन संतुष्टि न कहकर काम विकृति ही कहा जायगा । हेमेन्द्र की काम विकृति उसके वैयक्तिक विघटन की द्योतक है तथा रेखा से विवाह -विच्छेद उसके पारिवारिक विघटन को प्रकट करता है । चयन की स्वतंत्रता के आधार पर चन्द्रमाधव परम्परित वैवाहिक व्यवस्था का विरोध करता है । " विवाह सन्तान को जायज करने की रस्म से अधिक कुछ नहीं है, न हो सकता है । मैं अलग हूं, अपने को अलग और मुक्त मानता हूं और मेरा परिवार भी मुझसे न कुछ चाहता है, न कुछ अपेक्षा रखता है, सिवाय अर्थ के जो मैं भेजता हूं और भेजता रहूंगा । " 2 चन्द्रमाधव की उपर्युक्त धारणाउसके वैयक्तिक एवं पारिवारिक विघटन को प्रकट करती है । रेखा,भुवन के प्रति पूर्ण समर्पण भाव रखते हुए भी अपने व्यक्तित्व की रक्षा में सजग एवं तत्पर है। वह भुवन के साथ प्रेम एवं यौन सम्बन्ध दोनों रखती है लेकिन अपने और भुवन के सम्बन्धों भावी अस्तित्व के लिए गर्भधारण से इन्कार करती है तथा अपने सम्बन्धों के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए वरण की स्वतंत्रता के आधार पर भुवन के लाख मना करने पर भी गर्भपात करवा लेती है । 2 वह भुवन से विवाह न करके अन्यत्र

---

1:- अज्ञेय - नदी के द्वीप पृ0 सं0 -144
प्रोग्रेसिव पब्लिकेशन्स फिरोजशाह रोड, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1951 ई0 ।

2:- वहीं :- पृ0 सं0 - 118-119

विवाह कर लेती है। अन्यत्र विवाह कर लेनेपर भी रेखा का भुवन के प्रति समर्पण एवं यौन आकर्षण चयन की स्वतंत्रता पर आधारित है तथा उसके इस चयन को सामाजिक वर्जनाएं रोक नहीं पाती इस प्रकार वैवाहिक सम्बन्धों से उत्पन्न निरर्थकता व्यक्त हुई है। वास्तव में नदी के द्वितीय में जीवन व्यापी निरर्थकता को सेक्स के माध्यम से व्यक्त किया गया है। अस्तित्ववादी विचारक इस तरह के वर्णनों द्वारा प्रमाणित करना चाहते हैं कि मानवीय जीवन निरर्थकता का प्रवाह क्रम है और वह जीवन ,जीवन के प्रत्येक कार्यरूप के अन्त में निहित बोध है। अस्तित्वमय यौनाचार जैसे सर्वाधिक आदिम कार्यरूप में भी निरर्थकता का बोध कराता है। इस उपन्यास में इसे रेखा,भुवन,चन्द्रमाधव, एवं हेमेन्द्र के नैतिक मान्यताओं एवं वर्जनाओं के रूप में व्यक्त हुआ है। अतः इस उपन्यास के उपर्युक्त औपन्यासिक पात्र विवाह,प्रेम अथवा सेक्स के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए बने बिखरते, टूटते-जुड़ते हैं। उनके इस कार्य में पारिवारिक नैतिकता अथवा सामाजिक वर्जना में बाधक नहीं है। इस प्रकार इन पात्रों का परम्परित सामाजिक संकठन में विश्वास नहीं है। चन्द्रमाधव की पारिवारिक स्थिति मध्यम वर्गीय परिवार के माप दण्ड के अनुसार है। 2 परन्तु पलायन की प्रवृत्ति के कारण उसका पारिवारिक विघटन हो जाता है। परिवार छोड़ने के पश्चात चन्द्र माधव रेखा और गौरा से यौन सम्बन्ध स्थापित करना चाहता है। इस कार्य में असफल होने एवं परिवार से अलग कर परम्परित व्यवस्था का विरोध करता है जो उसके वैयक्तिक विघटन का सूचक है। 3

अज्ञेय के ही दूसरी औपन्यासिक कृति " अपने-अपने अजनबी" में मृत्यु के विरोध में जीवन अस्तित्व को सुरक्षित रखने का प्रयास है। बर्फ के नीचे सम्पु में योके और सेल्मा वैयक्तिक स्तर पर जीने के अस्तित्व के लिए संघर्षरत है। ये परस्पर घृणा करती है,परन्तु आसन्न संकट की स्थिति में एक दूसरे के प्रति मानवीय संवेदना एवं ममत्व से अविभूत हो उठती है ।

---

1:- डा0 श्यामसुन्दर मिश्र :- अस्तित्ववाद और द्वितीय समरोत्तर हिन्दीसाहित्य पृ0 सं0 -322
विद्या प्रकाशन मन्दिर,दरियागंज दिल्ली-6,प्रथम संस्करण 1971 ई0 ।

2:- अज्ञेय नदी के द्वीप पृ0 सं0 49
प्रोग्रेसिव पब्लिशर्स 14 डी फिरोजशाह रोड दिल्ली प्रथम संस्करण 1951 ई0।

3:- मैं क्यों इस बुर्जुआ ढाँचे के साथ समझौता करना चाहूं .....इन मान्यताओं को पैदा करने वाले समाज को मैं नहीं मानता

वही पृ0 सं0 332

सेल्मा आस्थावादी विचारों से प्रभावित होकर मृत्यु को ईश्वर के साक्षात्कार का साधन समझती है । । योके तर्कसंगत ढंग से अस्तित्व को मानने से इनकार करती है तथा वैयक्तिक अस्तित्व को अधिक महत्व देती है। इस संदर्भ में वह कहती है । ......यह है", के जोड़ का बोध यह ो है कि वह नहीं है । -------- लेकिन मैं हूं के साथ उसका उल्टा कुछ नहीं है, मैं वही हूं । यह बोध नहीं है बल्कि बोध का न होना है । "" 2 सेल्मा की मृत्यु के अनंतर योके अकेलेपन की व्यथा से व्यथित होकर,मृत्यु से संघर्ष करती हुई जीवन व्यापी निरर्थकता का अनुभव करती है और अन्तत:परिस्थितियों की उपज मृत्यु को विवशत: स्वीकार करती है। वह मृत्यु का वरण जीवन में व्याप्त एकाकीपन एवं निरर्थकता के कारण करती है । उसके मृत्यु का ~~कारण की~~ स्वरूप अन्तत: आत्महत्या का रूप धारण कर लेती है । यो के द्वारा मृत्यु का वरण भी आत्महत्या के समान है क्योंकि योके की भांति आत्महत्या भी इस संसार की असारता एवं निरर्थकता से ऊबकर मृत्यु का चयन करता है। मृत्यु का वरण करते समय योके कहती है । "" मैं अपने मन से चुना है । मैं मर रही हूं----- अपनी इच्छा से चुनकर मर रही हूं, हरामी मौत । ...3
सेल्मा एवं योके द्वारा मृत्यु का चयन उनके वैयक्तिक विघटन का सूचक है ।

राजेन्द्र यादव कृत " उखड़े हुए लोग " औपन्यासिक कृति की माया देवी का अपने पति से अच्छे सम्बन्ध नहीं है । वह नेता भैया के साथ

==========================================================

1:- अज्ञेय - अपने अपने अजनबी पृ0 सं0 - 54
ज्ञानपीठ लोकोदय ग्रन्थमाला, प्रथम संस्करण 1961 ई0 ।
2:- वही : पृ0 सं0 - 55
3:- वही :- पृ0 सं0 - 125

जुड़ी हुई है । मायादेवी नेता भैया के साथ होने वाले यौन - संसर्ग के अस्तित्व को सार्थकता प्रदान करने के लिए अस्तित्ववाद के चयन की स्वतंत्रता के आधार पर नेता भैया को चुनती है तथा पति के अस्तित्व से मुक्त होने के लिए पति को विषपान करा देती है। उसका पति यह जानता है कि उसे जहर दिया जाना है और उसकी मृत्यु निश्चित है फिर भी वह मृत्यु का चयन नहीं करना चाहता लेकिन मृत्यु के आसन्न संकट से वह नहीं बच पाता । उपन्यासकार ने मायादेवी के पति द्वारा मृत्यु के विपरीत चल रहे संघर्ष का चित्रण इस प्रकार किया है ।
" मरीज दवा पीने से मना कर रहा था --- दोनों हाथ पकड़ लिये,दोनों पांव एक ने बीच से इन्हें दबा लिया, उस वक्त मैंने मौत से संघर्ष करते आदमी की ताकत देखी । वह पांच दिन तक बीमार कभी इधर सिर कर लेता कभी उधर और सात आदमियों के बस में नहीं आ रहा था । सिर पकड़ा गया लेकिन उसने कसकर दांत भींच लिए एक की अंगुली को किचकिचा कर काट लिया ------ आखिर मुंह में चम्मच डालकर दवा पेट में पहुंचा दी गई और यों दूसरे दिन वे चल बसे । "[1] । इस प्रकार मायादेवी द्वारा अपनायी गयी चयन की स्वतंत्रता के कारण मायादेवी का पारिवारिक विघटन हो जाता है ।

निर्मल वर्मा" वे दिन" नामक औपन्यासिक कृति अस्तित्ववादी चिन्तनधारा एवं पाश्चात्य पृष्ठभूमि पर आधारित है । इस उपन्यास का कथानायक मैं, रायना आदि पात्र निज के अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्षशील

==========================================

1:- राजेन्द्र यादव :- उखड़े हुए लोग , पृ0 सं0 - 383
राजकमल पब्लिकेशन्स लि0 बम्बई, संस्करण 1958 ई0 ।

है। रायना एवं कथानायक में व्यक्ति की अलग- अलग इकाइयों के रूप में हैं । रायना अपने पति से विलग है परन्तु इस संबंध में उसे किसी प्रकार की शिकायत नहीं है। वह इस अलगाव को सहज ढंग से स्वीकार करती है क्योंकि उसे अतीत की विश्रम छाया में मंडराना रुचिकर नहीं है। वह पति से अलग होकर कथानायक में से विभिन्न प्रकार के शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करती है । उसका कथानायक से यौन सम्बन्ध भावुकता अथवा समर्पण के भाव से नहीं है, वह समय काटने के लिए ऐसा करती है। इस प्रकार इस उपन्यास में मूल्यहीन एवं सम्बन्धहीन समाज की सृष्टि की गई है जो परम्परित सामाजिक संगठन के विघटन को प्रकट करता है। कथानायक में ,और कथानायिका रायना के लिए न तो कोई समाज है, न परम्परित मान्यताएं एवं मूल्य ही है । " वे वैयक्तिकता के विश्वासी है और वे इस तथ्य में विश्वास करते हैं कि मूल्यों के निर्माता वे स्वयं हैं और उनकी कोई सीमा नहीं है । वे पूर्णतया स्वतंत्र हैं । "[1] । मैं और रायना की उपर्युक्त धारणा उनके वैयक्तिक विघटन की द्योतक है ।

रमेश बक्षीकृत " अठारह सूरज के पौधे " का नायक मैं" अपने विकृत जीवन के अनुभवों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करता है । वह अपने वर्तमान जीवन की सारहीनता से विक्षुब्ध है । वह अपने अस्तित्व की रक्षा एवं अनुसंधान के निमित्त अपने परिवार एवं पत्नी का परित्याग करके सात्र के वरण की स्वतंत्रता वाले सिद्धान्त का पालन करता है। वह सारहीन एवं निरर्थक पारिवारिक दशाओं को जीवन में अपनाने के बजाय उससे उत्पन्न मर्मान्तक अनुभूति को भोगता है। जिस प्रणय संबंध के माध्यम से वह अपने जीवन को सार्थकता प्रदान

---

1:- डा0 सुरेश सिन्हा :- हिन्दी उपन्यास, पृ0 सं0 -356
लोकभारतीप्रकाशन 15 ए महात्मागांधी मार्ग, इलाहाबाद द्वितीय सं0 1972 ई0 ।

करना चाहता था वह उसके वरण की स्वतंत्रता के कारण अपनाये गए अव्यवहारिक आचरण के कारण उसके हाथ से छूट जाता है। उसके पास एक गहरी निरर्थकता एवं चरम अनुभूति के अतिरिक्त कुछ शेष नहीं बचता । यहां पर सार्त्र के इस सिद्धान्त की पुष्टि होती है कि व्यक्ति स्वयं अपने कार्यों का उत्तरदायी होता है। इस प्रकार अस्तित्ववादी जीवन दर्शन की निरर्थकता के तीव्र बोध के कारण नायक मैं का पारिवारिक विघटन हो जाता है ।

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर हम कह सकते हैं कि पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति के प्रभाव के कारण उत्पन्न सामाजिक विघटन का चित्रण आलोच्य काल के उपन्यासों में हुआ है ।

देश की तीन स्वतंत्र राष्ट्रों में विभाजन :-

भारतीय महाद्वीप की राजनीतिक स्वंतत्रता प्राप्त होने के पूर्व 3 जून 1947 ई0 को मुस्लिम लीग की उग्र साम्प्रदायिक प्रवृत्ति,अंग्रेजों की कूटनीतिक चालबाजी,जिन्ना की राष्ट्र विरोधी नीतियों के फलस्वरूप अखण्ड भारत को भारत एवं पाकिस्तान दो स्वतंत्र राष्ट्रों में विभाजन की व्याख्या की गई तथा 15 अगस्त 1947 ई0 को इनकी स्वतंत्र राष्ट्रों के रूप में घोषणा की गई ।

देश का यह विभाजन जातिगत बहुसंख्यक व्यक्तियों पर आधारित था जिसके कारण देश के विभाजन के अनन्तर दोनों देशों से अल्पसंख्यकों का आदान-प्रदान प्रारम्भ हुआ । अल्पसंख्यकों के इस आदान-प्रदान की प्रक्रिया ने साम्प्रदायिकता की भीषण ज्वाला को और प्रज्वलित किया जिसकी वजह से हिन्दुओं और मुसलमानों में व्यापक तनाव एवं कटुता उत्पन्न हो गई । इस तथ्य का यथार्थ परक विश्लेषण राम दरश मिश्र ने जल टूटता हुआ उपन्यास में इस प्रकार किया है। " सन् 47 का जमाना पाकिस्तान ,हिन्दुस्तान का बटवारा । आजादी की भोर में कौआ रोर ।---खबरें आती थी कि आज यह ट्रेन लूट ली गई,आज हिन्दुस्तान-पाकिस्तान की शरहद पर इतने गांव जला दिये गये । ----- इतनी बहू- बेटियों को बेइज्जत कर पेड़ की डालों पर उल्टा टांग दिया गया । " । उपर्युक्त खबरों के व्यापकप्रचार से प्रेरित होकर खानपुर के सैयद हिन्दुओं से निबटने के लिए तैयार थे और हिन्दू मुसलमानों से ।" 2 खानपुर की उपर्युक्त दशा हिन्दू मुसलमान समुदायों के साम्प्रदायिक विघटन की ओर संकेत करता है ।

1:- रामदरश मिश्र :- जल टूटता हुआ, पृ0 सं0 - 12
हिन्दी प्रचार संस्थान वाराणसी, प्रथम संस्करण 1969 ई0

2:- वही:- पृ0 सं0- 13

भगवती चरण वर्मा कृत " भूले बिसरे चित्र" औपन्यासिक कृति में साम्प्रदायिक दंगे के कारणउत्पन्न सामुदायिक एवं वैयक्तिक विघटन का चित्रण ,उपन्यासकार ने गंगाप्रसाद नामक औपन्यासिक पात्र के माध्यम से किया है ।" फिर गंगा प्रसाद ने कहा," मलाबार में मोपला मुसलमानों ने जो उत्पात किया है वह तो अभी चल ही रहा है। कितने हिन्दू जान से मारे गये,कितने हिन्दू जबरदस्ती मुसलमान बनाये गये। तो चाचा जहां तक लूट मार और धार्मिक कट्टरता का सवाल है,वहां यह हिन्दू - मुस्लिम एकता का नारा निहायत खोखला नारा है । " ।

भीष्म साहनी कृत" तमस" औपन्यासिक कृति में साम्प्रदायिक दंगे के कारणउत्पन्न सामाजिक विघटन का बड़ा विशद एवं मार्मिक चित्रण किया गया है। म्युनिसिपल कमेटी का कारिन्दा और अंग्रेजी सरकार का पिट्ठू मुराद अली अंग्रेज अधिकारी के संकेत पर नत्थू चमार से एक सुअर मरवा कर मस्जिद की सीढ़ियों पर फेंकवा देता है। इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप दूसरा वर्ग गाय की हत्या करवा देता है। उपर्युक्त दोनों घटनाओं ने पूरे शहर में साम्प्रदायिक विद्वेष की अग्नि प्रज्जवलित कर दी। देखते देखते सम्पूर्ण शहर में तनाव का वातावरण उत्पन्न हो जाता है।हिन्दू मुसलमान दोनों तरफ से लड़ने की तैयारियां की जाती है। देवव्रतजी आपातकालीन बैठक बुलाते हैं तथा आत्मरक्षार्थ युवकों को लाठी चलाने की शिक्षा देना चाहते हैं। 3 कमेटी के युवकों द्वारा अपने समुदाय की रक्षा के लिए"अन्य सभी चीजों का प्रबन्ध कर लिया गया था । पर युवकों को तेल उबालने के लिए बड़ी कड़ाही नहीं मिल रही थी । खिड़की के चाले पर तीन चाकू एक छूरा ,एक छोटी सी किरपान साथ-साथ जोड़ कर रख दिये गये थे । कमरे के एक कोने मे दस लाठियां रखी थीं। जिनके सिर पर पीतल की मूठ और नीचे मेखें गाड़ दी गयी थी । दीवार के साथ, एक के साथ एक तीन

---

1:- भगवती चरण वर्मा:- भूले बिसरे चित्र:- पृ0 सं0 292
प्रथम संस्करण 1955 ई0 प्रयुक्त संस्करण 1980 ई0,राजकमल प्र0लि0दिल्ली

2:- भीष्म साहनी:- तमस, पृ0 सं0 56
प्रथम संस्करण 1973 प्रयुक्त संस्करण 1977 ई,राजकमल प्र0प्रा•लि•दिल्ली

3:- वही :- पृ0 सं0- 59

तीरकमान लटक रहे थे " । एक समुदाय का दूसरे समुदाय की प्रति इस प्रकार की जा रही तैयारी उनके साम्प्रदायिक विघटन का सूचक है। साम्प्रदायिक दंगे फैलाने वालों ने मंडी में आग लगा दी जिसमें जलकर सत्रह दूकाने राख हो जाती है। ।अब हिन्दू और मुसलमानों के " मुहल्लों के बीच लीकें खिंच गयी थी । हिन्दुओं के मुहल्ले में मुसलमान को जाने की अब हिम्मत नहीं थी, और मुसलमानों के मुहल्ले में हिन्दू सिक्ख अब नहीं आ जा सकते थे । आखों में संशय और भय उतर आये थे । गलियों के सिरों पर, और सड़कों के नाकों पर जगह-जगह कुछ लोग हाथों में लाठियां और भाले लिये और मुश्कें बांधे, छिपे बैठे थे । " 2 यही नहीं गुरुद्वारों में सुरक्षा का कड़ा प्रबन्ध किया गया । 3 मुसलमानों का एक दल एक जुट होकर गुरुद्वारे पर आक्रमण करते है । 4 सिक्खों एवं तुर्कों के मध्य " घमासान युद्ध हुआ । दो दिन और दो रात तक चलता रहा । फिर असला चुक गया और लड़ना नामुमकिन हो गया । अब गुरुग्रन्थ साहब की चौकी के पीछे, सफेद चादरों से ढकी सात लाशें पड़ी थी । 5 सिक्खों की औरतें तुर्कों से अपने को बचाने के लिए सामूहिक रूप में आत्म हत्या करती हैं । 6 सिक्ख स्त्रियों द्वारा की गई आत्म हत्या उनके वैयक्तिक एवं पारिवारिक विघटन की अभिव्यक्ति हैं ।

देश के विभाजन के साम्प्रदायिक दंगे में स्त्रियों के साथ किए गये अत्याचार का मूल्यांकन करते हुए डा० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय ने लिखा है । " जितनी निर्ममता एवं बेशर्मी से इनके साथ व्यवहार किया गया, वह न केवल स्त्री जाति के लिये अपमान जनक बात थी वरन सम्पूर्ण मानवता के लिए लज्जा एवं ग्लानि की बात थी जिसकी पुष्टि ~~यशकाल~~ यशपाल कृत झूठ-सच औपन्यासिक कृति से भी होती है।

---

1:- भीष्म साहनी :- तमस, पृ० सं० 108
प्रथम संस्करण 1973 ई० प्रयुक्त सं० 1980 ई राजकमल प्र०प्रा०लि०दिल्ली ।
2:- वही :- पृ० सं०- 108
3:- वही पृ० सं० 146
4- वही पृ० सं० 179
5- वही पृ० सं०- 179
6- [सबसे पहले जसबीर कौर कुंए में कूद गयी ।उसने कोई नारा नहीं लगाया।
---- उसके कूदते ही कुएं की जगत पर कितनी ही स्त्रियां चढ़ गयी ।
----देखते ही देखते गांव की दसियों औरते अपने बच्चों को लेकर कुएं में कूदगयी।
वही - पृ० सं० 188

साम्प्रदायिक विद्वेष के कारण उस काल में अनेकों स्त्रियों का अपहरण किया गया और उनके साथ सामूहिक बलात्कार किया गया । यशपाल कृत सच" उपन्यास की तारा, वंती, दुर्गा आदि कई स्त्रियां इसी प्रकार की हैं । इस बलात्कार के कारण वंती का पति पुन: अपने घर में उसे {वंती} प्रश्रय नहीं देता, जिसकी वजह से वंती अपना सिर फोड़कर आत्महत्या कर लेती है । वंती की आत्महत्या उसके वैयक्तिक विघटन की सूचक है । बलात्कार के कारण तारा के गुप्तांग में घाव हो गया था जिसके कारण वह पारिवारिक व्यवस्था से दूर रहना चाहती थी । वैयक्तिक एवं पारिवारिक विघटन की यह स्थिति केवल तारा, एवं वंती की ही नहीं थी बल्कि तत्कालीन समाज की अनेकों स्त्रियों की सम्भवत: यही दशा रही होगी । प्रस्तुत उपन्यास के बहालपुर में मुसलमानों ने " पचास हजार हिन्दुओं को जबरदस्ती निकालकर कैम्पों में भर दिया गया उन्हें प्रति दूसरे दिन केवल दो रोटियां दी जाती रही हैं, जल भी पर्याप्त नहीं दिया जाता रहा है । एक सौ से अधिक व्यक्ति भूख से मर चुके हैं । " 2 इस प्रकार बहालपुर के हिन्दुओं के वैयक्तिक एवं पारिवारिक विघटन पर्याप्त भोजन का अभाव एवं असामयिक मृत्यु के रूप में प्रकट हुआ है । कुछ इसी प्रकार की तनाव एवं संघर्षपूर्ण स्थिति पश्चिमी पंजाब के हिन्दुओं की भी हैं जिसकी ओर संकेत करते हुए उपन्यासकार ने लिखा है । "पश्चिमी पंजाब के हिन्दुओं ने अपने वतन से निकाल दिये गए थे । वे त्रस्त लोग बसों में अथवा पैदल भारतीय शस्त्र सैनिकों की रक्षा में शरण के लिए पूर्वी पंजाब की ओर आ रहे थे । " 3 इस प्रकार पश्चिमी पंजाब से निष्क्रमण करने वाले हिन्दुओं का साम्प्रदायिक विघटन हो जाता है ।

==========================================

1:- लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय:- हिन्दी उपन्यास उपलब्धियां, पृ० सं० 125 प्रथमसंस्करण 1969 ई०
2:- यशपाल :- झूठा सच, पृ० सं० -247,
लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, छात्रोपयोगी संस्करण 1969 ई० ।

3:- वहीं :- पृ० सं० = 248

देश के विभाजन के द्वारा उत्पन्न बेकारी, आर्थिक विवशता एवं प्रति हिंसा वश मुसलमान ही नहीं बल्कि हिन्दू -हिन्दू को लूटने लगे थे जिसका मार्मिक चित्रण उपन्यासकार के शब्दों में इस प्रकार है । " अभी पूरी कालेज की इमारत से सौ कदम आगे ही बढ़ा होगा कि लुटेरों ने आकर उसे लूटना चाहा । उसने कहा कि मैं हिन्दू हूं । इस पर लूटने वालों ने कहा कि यहां तो सब हिन्दू हैं, हम लुटकर आए हैं, हमें भी तो अपना और अपने बच्चों का पेट भरना है । लुटेरे उसकी कलाई घड़ी और उसकी कुल जमा-पूंजी भी लेगए । " । लूटपाट की यह घटनाएं सामाजिक विघटन की द्योतक हैं । इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे लोग भी थे जो वैयक्तिक विघटन के शिकार होकर धन प्राप्ति के लिए अपहृत निर्वस्त्र स्त्रियों का विक्रय कर रहे थे । 2 साम्प्रदायिकता की भावना से ग्रसित उग्रवादी व्यक्ति नाथूराम गोडसे ने राष्ट्रपिता को गोली मार कर हत्या कर दी । 3 गांधी जी की असामयिक मृत्यु उनके वैयक्तिक विघटन को प्रकट करती है । इस असामयिक मृत्यु पर सारा देश रो पड़ा तथा राष्ट्र-ज्योति महात्मा गांधी के अभाव में भारत को अनेकों कठिनाइयाँ झेलनी पड़ी ।

देश के विभाजन-काल में व्याप्त उग्रवादी साम्प्रदायिकता का दुष्प्रभाव तत्कालीन उद्योगो पर भी पड़ा । मिलों एवं विभिन्न औद्योगिक इकाइयों में कार्य करने वाले मुसलमान एवं अल्पसंख्यक कर्मचारी काम पर आना बन्द कर दिए जिसकी वजह से नित्यप्रति की वस्तुओं के प्राप्ति में कठिनाई उत्पन्न

==========================================================

1:- यश पाल - झूठा-सच , पृ0 सं0 -196
लोकभारती प्रकाशन, 15 ए, महात्मागांधी मार्ग, इलाहाबाद, तृतीय छात्रोपयोगी संस्करण 1969ई0

2:- {भीड़ के बीचों बीच एक आदमी चोटी से पकड़कर निर्वस्त्र लड़कियों को नीलाम कर रहा था}

वही :- पृ0 सं0 -197

3:- वही = पृ0 सं0 - 286

हुई तथा चोर बाजारी की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला । उपर्युक्त तथ्यों को यशपाल के झूठा-सच उपन्यास में फतह मुहम्मद की मृत्यु एवं कातिब मशीन मैन की दुर्दशा के प्रसंग में व्यंजित है ।

शिवप्रसाद सिंह कृत " अलग-अलग वैतरणी " उपन्यास में देश के विभाजन के कारण उत्पन्न साम्प्रदायिक प्रवृत्ति को खलील चाचा के पारिवारिक विघटन के रूप में स्वीकार किया गया है । खलील चाचा विभाजन के बाद भारत छोड़ना नहीं चाहते जब कि उनका पुत्र बदरूल साम्प्रदायिकता केवशीभूत होकर लगी लगाई पुलिस की नौकरी एवं पत्नी को त्यागकर पाकिस्तान चला जाता है ।

जिस प्रकार देश का विभाजन अल्पसमय में हो गया, उसी प्रकार विभाजन से उत्पन्न सामाजिक विघटन की समस्यायें भी समाप्त हो गई,ऐसा कहना अति कठिन है क्योंकि देश के विभाजन के कारण भारत एवं पाकिस्तान के मध्य कश्मीर की समस्या को लेकर अन्तर्द्वन्द्व एवं तनावपूर्ण स्थिति है । आये दिन दोनों देशों की ओर से समझौते के लिए शिखर वार्तायें बुलाई जाती है परन्तु पाकिस्तान की हठवादी नीति के कारण मसला सुलझने के बजाय और उलझ गया है ।

भारतीय उप महाद्वीप का पाकिस्तान एवं भारत दो स्वतंत्र राष्ट्रों में विभाजन 15 अगस्त ,1947 ई0 को हुआ । इस विभाजन का मुख्य आधार जातीय जनसंख्या के घनत्व की सघनता थी । यही कारण है कि अखण्ड

==========================================

1:- पुलिस में उसने तरक्की की और हेड कान्सटेबिल हो गया । रुपये -उपये कुछ भेजता न था । जमनियें ने उसकी भीउसकी शादी की थी। बीबी भी खूब सूरत और लायक । सोचा मुझे कुछ नहीं देता तो न सही। बीबी ही सम्हाले यही बहुत है। तभी एक दिन सुना कि जमनिये के कई मुसलमानों के साथ साला पाकिस्तान चला गया ।"
शिवप्रसाद सिंह:-अलग-अलग वैतरणी ,पृ0 सं0 -272,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ,प्रथम संस्करण 1967 ई0 ।

भारत की पूर्वी एवं पश्चिमी भाग को एकीकृत करके पाकिस्तान नामक स्वतंत्र राष्ट्र का निर्माण हुआ था । प्रारम्भ से ही पश्चिमी -पाकिस्तान पूर्वी पाकिस्तान में रहने वाले लोगों के साथ भेद भाव की नीति रखते थे जिसके कारण पूर्वी एवं पश्चिमी पाकिस्तान के लोगों में पारस्परिक विद्वेष की भावना प्रबल हुई और पूर्वी-पाकिस्तान के लोग पश्चिमी पाकिस्तान के अधिकारियों द्वारा किए जा रहे शोषण का विरोध किया । पूर्वी पाकिस्तान ने मुजीबुर्रहमान के नेतृत्व में सास्त्र क्रान्ति की । पूर्वी पाकिस्तान की मुक्तिवाहिनी गुरिल्ला सैनिकों द्वारा खदेड़े जाने पर पाकिस्तानियों ने भारतीय क्षेत्र में प्रवेश किया साथ ही साथ 3 दिसम्बर 1971 ई0 कोभारतीय क्षेत्र में व्यापक गोलाबारी की विवश होकर आत्मरक्षा के लिए भारत को पाकिस्तान से युद्ध करना पड़ा । इस युद्ध में भारत विजयी रहा और भारत के सहयोग से पूर्वी -पाकिस्तान का बंगला देश के रूप में अभ्युदय हुआ ।

इस युद्ध में हमारा देश विजयी रहा, परन्तु इस युद्ध में प्रवृत्त होने के कारण देश को आर्थिक हानि उठानी पड़ी । यह हानि शरणार्थियों को भोजन एवं आवास जुटाने में व्यय हुए धन के रूप में थी । इस युद्ध में अनेक भारतीय वीर मां भारती के काम आए उनका अभाव हम लोगों के दि ल को सालता रहेगा । युद्धकाल में भारतीय सीमा क्षेत्र का जीवन अस्त-व्यस्त हो गया था । हमारे देश का मुनवरतवी का पश्चिमी क्षेत्र एवं देवा का दक्षिणी क्षेत्र पाकिस्तानियों के कब्जे में चला गया । इस प्रकार इस युद्ध में हमारे देश का राष्ट्रीय विघटन कर दिया है ।

राही मासूम रजा कृत " दिल एक सादा कागज " औपन्यासिक कृति में बंगलादेश के अभ्युदय के समय युद्ध से उत्पन्न सामाजिक विघटन का चित्रण हुआ है । प्रस्तुत उपन्यास के रफ्फन नामक पात्र के" भाई जानू पाकिस्तान इसलिए गये थे कि हिन्दुस्तान में मुसलमानों की इज्जत-आबरू महफूज नहीं थी । और अब उनकी इज्जत आबरू ढाके में लुट पड़ रही है ।" । उपर्युक्त कथन से प्रकट होता है कि ढाका में मुसलमानों की स्थिति और दयनीय हो गयी है ।यही नहीं ब्रिगेडियर न्याजी जन्नत बाजी को अपने घर में रख लेते हैं तथा शहरबानों के साथ जनरल न्याजी की इस्लामी फौज के सिपाहियों ने कई रातें गुजारी थी और अब वह मां बनने वाली थी और उसके कंवारपे की जिल्लत की कहानी उसके चेहरे पर उर्दू लिपि में लिखी हुई थी क्योंकि रफ्फन ने उसे साफ-साफ पढ़ लिया था । " 2 मेरठ में मुसलमान शरणार्थियों का कैम्प लगा था । " 3 भाई जानू मेरठ के शरणार्थियों के कैम्प में दूसरे मुसलमान शरणार्थियों के साथ रह रहे थे । 4 भाई जानू का शरणार्थि बनना उसके वैयक्तिक विघटन का सूचक है ।

उपर्युक्त स्थिति से ज्ञात होता है कि बंगला देश के निर्माण से पाकिस्तान का राष्ट्रीय विघटन हो गया,साथ ही साथ मुसलमान समुदाय के लोगों का सामुदायिक एवं पारिवारिक विघटन भी कम नहीं हुआ ।

---

1:- राही मासूम रजा :- दिल एक सादा कागज,पृ0 सं0-192
प्रथम संस्करण 1973 ई0 तृतीय संस्करण 1984 ई0 ,राजकमल प्रकाशन प्रा॰लि॰दिल्ली
2:- वहीं :- पृ0 सं0- 211
3:- वहीं :- पृ0 सं0- 210
4:- वही :- पृ0 सं0 - 210

स्त्री पुरुष सम्बन्ध :-

सम्भवत: आदिम पुरुष एवं स्त्री जंगलों में,यायावर्त जीवन व्यतीत करते रहे होंगे । उनके सम्मुख वर्तमान सभ्यता और संस्कृति के मापदण्ड नहीं रहे होंगे । सम्भवत: तत्कालीन स्त्री-पुरुष काम-भाव की मूल प्रवृत्ति की नैसर्गिक भावना के वशीभूत होकर पारस्परिक आकर्षण के बंधन में बंधे होंगे । कालान्तर में स्त्री के पांव भारी होने पर,उसके समक्ष विभिन्न कठिनाइयां आई होंगी,जिससे मुक्ति के लिए पुरुष का सहारा लिया होगा शिशु के जन्म देने के अनन्तर उसके लालन-पालन की समस्या, सम्भवत: पुरुष से पहले नारी के समक्ष उपस्थित हुई होगी । इस प्रकार स्त्री एवं पुरुष एक दूसरे के सुख-दुख में मिल-जुलकर रहने की भावना से अविभूत हुए होंगे, यहीं से पारिवारिक व्यवस्था का श्री गणेश हुआ रहा होगा ।

स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों को सुदृढ करने वाली सामाजिक,आर्थिक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक मान्यताएं आज तीव्र गति से विखण्डित हो रही है। बाल-विवाह,अनमेल विवाह,दहेज प्रथा के व्यापक प्रचलन,अन्तर्जातीय विवाहों पर रोक,विधवा -विवाह के प्रचलन का अभाव वैज्ञानिक प्रगति की चकाचौंध, व्यक्ति केन्द्रित विचारधारा,औद्योगिककरण एवं नवविकसित अर्थव्यवस्था, ईश्वर के प्रति उठते हुए अविश्वास आदि तत्वोंने स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों में क्रान्तिकारी परिवर्तन उपस्थित किये हैं । जिसके फलस्वरूप भारतीय समाज द्रुत-गति से विघटित हो रहा है ।

स्त्री -पुरुष का सम्बन्ध, उनके शारीरिक, मानसिक,आर्थिक , राजनीतिक एवं सांस्कृतिक आदि विभिन्न स्थितियों पर निर्भर करता है। उनके सम्बन्धों को स्थायित्व प्रदान करने में एकमत्य का होना अत्यंत आवश्यक है। उनके एकमत्य के अभाव में उत्पन्न कटुता,कुंठा, विक्षोभ आदि अशान्ति उत्पन्न करने वाले तत्व उन्हें सामाजिक एवं वैयक्तिक उत्तरदायित्वों की अवहेलना करने को प्रेरित करते हैं । उनकी यह अशान्ति-पूर्ण एवं उत्तरदायित्वहीन स्थिति समाजशास्त्रीयभाषा में वैयक्तिक विघटन, पारिवारिक विघटन एवं सामुदायिक विघटन के रूप में जानी जाती है । सामाजिक विघटन के संदर्भ में स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों को निम्नलिखित शीर्षकों में विभक्त किया जा सकता है ।

## वासना की तृप्ति :-

समाज की कुछ स्त्रियां पति की यौन सन्तुष्टि से सम्बन्धित अयोग्यता के कारण पति के अतिरिक्त काम-क्षुधा की शान्ति के लिए किसी अन्य पुरुष से यौन सम्बन्ध स्थापित कर लेती हैं तथा कुछ पुरुष पत्नी की यौन संसर्गात्मक अयोग्यता के कारण किसी अन्य स्त्री से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं । जब तक यह अवैध यौन-सम्बन्ध गुप्त रीति से चलता रहता है तब तक तो ठीक है लेकिन जब इसका भेद खुल जाता है तो उक्त स्त्री-पुरुष के पारिवारिक व्यवस्था में अशान्ति एवं सामाजिक प्रतिष्ठा में बट्टा लग जाता है । अतः इस प्रकार के लोग ऐसे सम्बन्धों को गोपनीय रखने का भरसक प्रयत्न करते हैं ।

लक्ष्मीनारायण लाल कृत " बड़के भैया " उपन्यास की स्त्री पात्र, दुलारी, पति से यौन सम्बन्ध रखने के अतिरिक्त यौन-संतुष्टि के लिए बड़के भैया से अवैध यौन -सम्पर्क रखती है। यह यौन सम्बन्ध स्थापित होने का मुख्य कारण दुलारी का अपने पति से मन न भरना है। इस तथ्य की पुष्टि दुलारी के इस कथन से होती है " जइसे तोहार मन सखी से नाही भरत वइसे हमार मन हमरे ठाकुर से पूर नहीं होत। " 1
बड़के भैया और दुलारी यह अवैध सम्बन्ध काफी समय तक अबाध गति से चलता है और अन्त में दुलारी का पांव भारी हो जाता है। दुलारी और बड़केभैया इस विकट स्थिति से उबरकर सामाजिक प्रतिष्ठा बनाये रखना चाहते हैं। इस कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए बड़के भैया ~~के मित्र की ट्रेन~~ दुलारी को शहर की ओर ले जाते हैं। शहर जाते समय बड़के भैया के मित्र की ट्रेन पर काम क्षुधा शान्त न करने के कारण बड़के भैया का मित्र, दुलारी को चलती ट्रेन ~~[illegible]~~ के नीचे ढकेल देता है जिसके कारण दुलारी की असामयिक मृत्यु हो जाती है। 2 इस प्रकार दुलारी की अतृप्त वासना उसके पारिवारिक एवं वैयक्तिक विघटन का कारण बनती है।

शैलेश मटियानी कृत " किस्सा नर्मदाबेन गंगू बाई " औपन्यासिक कृति की नायिका नर्मदाबेन का पति नगीन भाई शीघ्र, स्खलन का रोगी है। 3 इस रोग के कारण नगीन भाई अपनी पत्नी नर्मदाबेन

==========================================

1:- लक्ष्मीनारायण लाल:- बड़के भैया, पृ0 सं0-18
साहित्य भवन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1973 ई0
2:- वही :- पृ0 सं0 - 23
3:- शैलेश मटियानी :- किस्सा नर्मदाबेन गंगू बाई, पृ0 सं0-15
आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 1961 ई0।

की यौन-पिपासा शान्त करने में असमर्थ है । नगीन भाई शीघ्र स्खलन के रोग को छिपाने के लिए पत्नी से विमुख होकर कोठे परजाने लगता है। इस प्रकार उन दोनों के पारिवारिक जीवन में एक सत्य का अभाव आ जाता है नर्मदाबेन पारिवारिक उत्तरदायित्व की अवहेलना करते हुए बांसुरी वादक के सम्बन्ध स्थापित करके अपनी काम-क्षुधा की शान्ति का सहारा ढूंढ लेती है । 2 नगीन भाई अपनी पारिवारिक व्यवस्था एवं सामाजिक सुरक्षा को बचाये रखने के लिये नर्मदाबेन के लिए एक पुरुष को बांसुरी वाद के रूप में मन्दिर में नियुक्त करता है । नर्मदाबेन बांसुरी वाद के को पाकर निहाल हो जाती है, वह बांसरी वादक से सम्बन्ध स्थापित करके एक शिशु की जननी बनती है । नगीन भाई भी यही चाहते थे कि नर्मदाबेन को किसी न किसी प्रकार पुत्र प्राप्त हो जाय जिससे उसकी ﴾नर्मदाबेन﴿ की बाहरी दुनिया पर स्वयं रोक लग जायेगी और घर की बात घर में ही रह जायेगी । 3 परन्तु ऐसा न हो सका क्योंकि नवजात शिशु की रूपाकृति बांसुरी वादक की रूपाकृति से मेल खाती थी। नगीन भाई अपने कुल गौरव की रक्षा के लिए नाटकीय ढंग से नवजात शिशु की हत्याकर देता है । 4 इस रहस्य पर पर्दा डालने के लिए नगीन भाई ने होटल के एक मैनेजर की सहायता से शराब में विष मिलवाकर बाके को पिलवा देता है । इस प्रकार बाके की दुःखद

==========================================================

1:- शैलेश मटियानी :- किस्सा नर्मदाबेन गंगू बाई, पृ0 सं0- 17
आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 1961 ई0 ।

2:- वही :- पृ0 सं0- 17

3:-﴾ तब नगीन भाई ने सोचा कि -----कुल की मर्यादा और लीक रखने की व्यवस्था हो गई । नर्मदाबेन को बहलाने का साधन भी जुट गया और वंश चलाने वाला भी मिल गया । ﴿

वही :- पृ0 सं0- 21

8:- वहीं:- पृ0 सं0 - 25

मृत्यु हो जाती है तथा इस कांड का कुप्रभाव नर्मदाबेन के व्यक्तित्व पर बड़ा बुरा पड़ता है । अब वह खुलकर पुरुषों को फंसाकर उनके साथ यौन सम्बन्ध स्थापित करने लगी । नर्मदाबने एक ग्वाले को जो उसके यहां आता-जाता था ,अपने चंगुल में फांसना चाहा ।ग्वाले द्वारा इनकार करने पर नर्मदाबने ने उसे चोरी में फंसाकर जेल भजवा दिया । नर्मदाबेन की अतृप्त काम-वासना न केवल उसके पारिवारिक एवं वैयक्तिक विघटन के लिए जिम्मेदार है, वरन बांसुरीवादक,बांके एवं ग्वाले के वैयक्तिक एवं पारिवारिक विघटन के लिए जिम्मेदार है ।

रांगेय राघव कृत " कब तक पुकारूं " उपन्यास की धूपो नामक युवती के एकान्त में पाकर बांके की वासनात्मक प्रवृत्ति उद्वेलित हो उठती है। 1 बांके,चरन सिंह,और हरनाम सिंह के सहयोग से धूपो के साथ बलात्कार करने में सफल हो जाता है । 2 इस बलात्कार के पाश्चाताप से मुक्त होने के लिए धूपो अपना शिर फोड़ कर आत्म हत्या कर लेती है । 3 धूपों द्वारा आत्महत्या कर लेने पर चमारों के समुदाय के लोग एक जुट होकर बांके के विरुद्ध प्रतिहिंसा की ज्वाला उत्पन्न करते हैं । 4 दरोगा जी उक्त प्रतिहिंसा को पुलिस बल से दबाना चाहते हैं । चमारों पर पुलिस ने अपने जुल्म शुरु किए। उन्होंने पहले अपना आंतक जमाया । उन्होंने सिपाहियों को भेजा जिन्होंने इक्के -दुक्के चमारों को पकड़कर थाने में बंद करके खूब पीटा और फिर भी नहीं छोड़ा । नौजवान चमारिनों के साथ कितने ही लोगों ने छेड़-छाड़ की, परन्तु अब उनकी रक्षा करने वाला कोई भी नहीं था । उनका रोदन घरों में डूब गया । पर बाहर आने पर उसका कोई भी मूल्य नहीं था ।बच्चों को वे रोने से चुप करके घरों में घुसा लेती और राह परभी सिपाही देखकर थर-थर कांपने लगती । " 5 उपर्युक्त दशा चमारों के सामुदायिक विघटन का द्योतक है।

राजेन्द्र यादव कृत "उखड़े हुए लोग" उपन्यास की माया देवी चालीस वर्ष की अवस्था पारकर जाने पर भी वासनात्मक दृष्टि से असंतुष्ट है।वहशरदकोबेट

1-रांगेय राघव:-कब तक पुकारूं,पृ0 सं0 268,छठा सस्करण 1980 ई0 रा•पा•ए•दि
2:-वही पृ•स•-272,3-वही पृ•सं•-282,4 वही-पृ•स•307 5-वही-पृ•स•349

शब्द से सम्बोधित करती है परन्तु उसके साथ यौन-सम्बन्ध स्थापित करना चाहती है । माया देवी का यह कृत्य समाज विरोधी एवं सामाजिक अनुशासनहीनता है जो माया देवी के वैयक्तिक विघटन को सूचित करता है ।

उपर्युक्त विवेचन से प्रकट होता है कि समाज में वैयक्तिक एवं पारिवारिक विघटन की प्रक्रिया कभी-कभी मात्र अतृप्ता वासना की पूर्ति के चक्कर में उत्पन्न हो जाती है तथा विघटन की इस प्रक्रिया के परिणामी प्रभावों से सामाजिक व्यवस्था बच नहीं पाती है ।

धन -लिप्सा :-

प्राय: अर्थ का महत्व हरयुग में रहा है । आज के भौतिकवादी युग में अर्थ का महत्व विशेष रूप से बढ़ गया है । इसका प्रभाव स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों पर भी गहरा पड़ा है क्योंकि आजकल परिवार की सम्पन्नता का आकलन वैज्ञानिक साधनों द्वारा निर्मित विभिन्न दैनिक जीवन की सुख सुविधाओं के भौतिक संसाधनों के आधार पर किया जाता है । अत: समाज के कुछ सदस्य सच्चरित्रता ,नैतिक सम्बन्ध एवं न्यायप्रियता पर निर्भर रहने के बजाय आर्थिक सम्पन्नता के आश्रित रहने लगे हैं ।धन की अधिकता के कारण व्यक्ति की सामाजिक एवं वैयक्तिक कमजोरियों पर कुछ समय के लिए पर्दा पड़ जाता है।

समाज के कुछ लोग धन का संग्रह पारिवारिक सम्बन्धों एवं मानवीय संवेदनाओं को तिलांजलि देकर अनैतिक ढंग से करते हैं, उनकी यह प्रवृत्ति सामाजिक विघटन की प्रवृत्ति है। रमेश बक्षी कृत " किस्से ऊपर किस्सा " औपन्यासिक कृति का " सहकारी विभाग का क्लर्क " के जीवन का चरम लक्ष्य धनार्जन है। उसके अनुसार यह संसार तकलीफों एवं दरिद्रता का घर नहीं है। वह धन संग्रह के मामले में नैतिकता -अनैतिकता को कोई महत्त्व नहीं देता। " 1 वह उपर्युक्त मान्यतानुसार लखपती बनने के लिए "अपने श्वसुर को खिलाया जहर और कह दिया कि हार्टफेल हो गया। फिर पहली बीबी को साले ने जला दिया, कह दिया वर्तन में साड़ी लग गई। -------- और वहां से सारा माल मत्ता लेकर बम्बई आ गया। यहां डोरे डाले एक सर्राफ पे। उसकी लौंडिया से ब्याह रचाया और सर्राफ को घर से निकलवाकर यह खबर फैला दी कि मेरे श्वसुर तीरथ यात्रा पर गये हैं। " 2 इस प्रकार उपन्यास के कथावस्तु के संक्षिप्तांश से ही यह प्रकट होता है कि " सहकारी विभाग का क्लर्क " धन -लोलुपता व्यक्ति है। धन-लोलुप्ता की कुप्रवृत्ति ने उसकी सारी मानवीय संवेदनाओं को सदा के लिए समाप्त कर दिया है। उसकी दृष्टि में श्वसुर, पत्नी अथवा रिश्तेदारों का कोई मूल्य नहीं है। वह सामाजिक उत्तरदायित्वों की अवहेलना करता है, वह पत्नी के बजाय रूपये को अधिक महत्त्व देता है। एक स्थान पर स्वयं कहता है :- जरूरत पत्नी की नहीं करेंसी की है। पत्नी बह जाएगी, रूप भी माट गर्ल भी वह जाएगी, रुपया बच

---

1:- रमेश बक्षी :- किस्से ऊपर किस्सा, पृ0 सं0 -113
इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन दिल्ली, नवीन संस्करण 1973 ई0।

2:- वही :- पृ0 सं0 - 99

जाएगा । " । इस प्रकार सहकारी विभाग के "क्लर्क" का वैयक्तिक एवं पारिवारिक विघटन हो चुका है। यही नहीं उसके सम्पर्क में आनें वाला उसका श्वसुर असामयिक मृत्यु के रूप में वैयक्तिक विघटन का शिकार होता है तथा सर्राफ एवं उसकी पुत्री का क्रमशः वैयक्तिक एवं पारिवारिक विघटन हो जाता है।

भगवती चरण वर्मा कृत" भूले बिसरे चित्र " औपन्यासिक कृति का "श्याम " अपनी संतानहीन चाची की सम्पत्ति को हड़पनें के लिए अपनी योजनानुसार अपनी चाची को अफीम खिलाकर सादे कागज पर उसके निशान अँगूठा लगवा लेता है। 2- रहमत खाँ को जब ज्ञात होता है कि "श्यामू के कब्जें में चाची की सम्पत्ति चली जायेगी, तब वह श्यामू पर उक्त सम्पत्ति के सम्बन्ध में मुकदमा दायर कर देता है। 3- रहमत एवं श्यामू के मध्य चल रही मुकदमें बाजी उनके वैयक्तिक विघटन की सूचक है ।

लक्ष्मीकान्त वर्मा कृत" सफेद चेहरे" का डाक्टर भी एक धनलोलुप व्यक्ति है। उपन्यासकार ने डाक्टर की धनलोलुपता और स्वार्थपरता को अभिधा में इस प्रकार व्यक्त किया है।" डाक्टर - - - - - वह तो उन सभ्य हत्यारों में से है जो केवल अपने स्वार्थ के लिए सब

= ==========================================================

1- रमेश बक्षी :- किस्से ऊपर किस्सा पृष्ठ संख्या 184
इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन दिल्ली, नवीन संस्करण 1973 ई० पुण्य ।

2- [सलीमा चाची को अफीम खिला खिलाकर श्यामू दादा ने उसके अँगूठे का निशान एक कोरे दस्तावेज पर करा लिया और उस पर लिख लिया कि वह अपनी जायदाद श्यामू दादा के नाम लिखा कर रही है । ]
भगवती चरण वर्मा :- भूले "बिसरें चित्र पृष्ठ संख्या 95
प्रथम संस्करण - 1959 ई० प्रयुक्त संख्या- 1980ई०, राजकमल प्र०प्रा०लि०दिल्ली ।

3- वहीं - पृष्ठ संख्या -95

कुछ कर सकता है । आदमी का मांस तक बेंच सकता है । " [1] । डाक्टर की यह समाज विरोधी प्रवृत्ति उसके वैयक्तिक विघटन को प्रकट करती है । प्रस्तुत उपन्यास का एक बनिया इतना अधिक धनलोपुप है कि वह लोगों को बजरे के आटे में सिमेंट मिलाकर बेंचता है, जिससे कई मजदूरों की असामयिक मृत्यु हो जाती है । [2] इस प्रकार बनिया के द्वारा समाज में अशान्ति एवं अव्यवस्था उत्पन्न की जाती है । यह अशान्ति एवं अव्यवस्था सामाजिक विघटन की द्योतक है । उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि व्यक्ति की धनलोलुपता की प्रवृत्ति भी स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों को विघटित कर देती है ।

## सामाजिक प्रतिष्ठा का लोभ :-

मानव एक सामाजिक प्राणी है । अतः व्यक्ति के उत्थान -पतन, नैतिकता-अनैतिकता आदि मूल्यों को मापदण्ड समाज के लोगों द्वारा प्रतिस्थापित मूल्यों पर निर्भर करता है । अतः समाज का हर सदस्य अपनी अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि एवं उसे अक्षुण रखने का सतत प्रयास करता है । यही कारण है कि समाज के सम्पन्न व्यक्ति भी अनैतिक कार्यों को करते समय ,सामाजिक प्रतिष्ठा बचाए रखने का भरसक प्रयत्न करते हैं । इसके लिए इस प्रकार के सदस्य अनैतिक कार्यों को गोपनीय ढंग से सम्पादित करते हैं ।

---

1:- लक्ष्मीकान्त वर्मा :- सफेद चेहरे, पृ0 सं0- 127
साहित्य भवन लिमिटेड इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1971 ई0 ।

2:- वही :- पृ0 सं0- 322

रांगेय राघव कृत " राई और पर्वत " औपन्यासिक कृति की फूलों विवाहोपरान्त पति के समानान्तर हरदेव नामक व्यक्ति के साथ यौन सम्बन्ध कायम रखती है । इस काम सम्बन्ध को सफल बनाने के लिए फूलो ने अपने देवर की पूर्वनिश्चित योजनानुसार विष देकर हत्या करती है । ¹ फूलों के पास पड़ोस के लोग इस अनैतिक सम्बन्ध से परिचित थे । वृद्धावस्था में पति के मृत्यु हो जाने पर फूलो अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा कायम रखने के लिए बेटी विद्या एवं हरदेव को छोड़कर सती हो जाती है इस प्रकार फूलो का वैयक्तिक विघटन हो जाता है और सामाजिक सुरक्षा के अभाव में विद्या के जीवन का अधिकांश अंश अशांतिपूर्ण एवं असंतुलित हो जाता है।

डा० देवराज कृत " भीतर का घाव " औपन्यासिक कृति का कथ्य सामाजिक प्रतिष्ठा की रक्षा पर आधारित है । इस उपन्यास का प्रमुख पात्र राजन एक सफल वकील है । वह अपनी भावनाओं एवं हृदय की अनुभूतियों को नियंत्रित रखता है । वह सामाजिक मान्यताओं के परिप्रेक्ष्य में अनुभूतियों एवं वैयक्तिक इच्छाओं को कोई महत्व नहीं देता है । उपर्युक्त धारणा के कारण ही राजन न तो सुमित्रा का ही उद्धार कर सका और तो सहपाठिनी अख्तर के साथ ही वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर सका । वह पिता की आज्ञा शिरोधार्य करके कान्ता के साथ विवाह कर लेता है क्योंकि उसकी स्पष्ट धारणा है कि "मनुष्य समाज से

---

1:- रांगेय राघव :- राई और पर्वत पृ० सं०- 190
राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 1958 ई०

विच्छिन्न होकर नहीं रह सकता । उसकी इच्छाएं, उसका सुख-दुख सब सामाजिक चीजें हैं । विवाह सामाजिक है और प्रेम का सुख भी समाज से असम्बन्ध नहीं । समाज विरोधी प्रेम और विवाह व्यक्ति को कभी भी सुखी नहीं बना सकते । " । राजन का कहना है कि व्यक्तिगत रुचि नहीं ,समाज को हमारे महत्वपूर्ण निर्णयों में प्रधानता मिलनी चाहिए । यही कारण है कि वह अपनी भाभी सुमित्रा के प्रति व्यवहारिक स्तर पर निष्क्रिय एवं उदासीन है । परन्तु राजन का अन्तर्मन मानसिक अन्तर्द्वन्दों की चक्की में पिस रहा है । सुमित्रा,राजन की उदासीनता एवं पारिवारिक कलह से त्रस्त होकर विक्षिप्त हो जाती है । " 2 इस प्रकार राजन के कारण सुमित्रा का वैयक्तिक विघटन हो जाता है ।

जैनेन्द्र कुमार कृत " सुखदा " औपन्यासिक कृति की सुखदा, क्रान्तिकारिणी बनकर समाज में प्रतिष्ठित होना चाहती है । वह पारिवारिक जिम्मेदारियों को निबाहने के बजाय क्रान्ति को सफल बनाने वाले कार्यों में सक्रिय भाग लेती है जिसके कारण उसका पारिवारिक जीवन असंतुलित एवं अशान्त हो जाता है । सुखदा का क्रान्ति के चक्कर में पड़कर लाला साहब से पृथक सम्बन्ध स्थापित हो जाता है जो पार्टी पर मुकदमा चलने से टूट जाता है । पार्टी के अन्तर्द्वन्दों एवं विसंगतियों से ऊबकर वह मायके चली जाती है, मायके में वह क्षय रोग का शिकार होकर असामयिक मृत्यु को प्राप्त

==========================================

1:- डा0 देवराज :- भीतर का घाव, पृ0 सं0 - 138
राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 1971 ई0

2:- वही :- पृ0 सं0 142

करती है । इस प्रकार क्रान्ति के चक्कर में सुखदा का वैयक्तिक एवं पारिवारिक विघटन हो जाता है ।इसी प्रकार राजनीतिक सफलता एवं प्रतिष्ठा के चक्कर में पड़कर कमलेश्वर कृत काली आंधी की मालती पारिवारिक दायों को तिलांजलि दे देती है । जिससे उसका पारिवारिक विघटन हो जाता है ।

मोहन राकेश "कृत अँधेरे बंद कमरे " की सुषमा श्रीवास्तव समाज में सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त करने एवं पुरुष के समान कार्यकुशलता प्राप्त करने के भ्रम में जीवन के पैंतीस वर्षों तक अविवाहित रहती है । उसके मन में वैवाहिक सम्बन्धों के प्रति यह हीनभावना रहती है कि परिवार में रहकर स्त्री सामाजिक प्रतिष्ठा नहीं प्राप्त कर सकती । इस धारणा के कारण उसके जीवन का आधा समय वैयक्तिक विघटन का शिकार रहता है । वैयक्तिक विघटन के लम्बे अन्तराल के बाद उसे ज्ञान होता है कि "स्त्री की सार्थकता कुशल गृहणी एवं पत्नी बनने में है । " । वह अपना परिवार बसा लेती है । इस प्रकार सुषमा श्रीवास्तव सुबह की भूली शाम को घर लौटती है ।

पाण्डेय बेचन शर्मा " उग्र " कृत " गंगा माता" औपन्यासिक कृति की गंगा माता नामक युवती का चरित्र बड़ा दबंग है । वह समाज में स्त्रियों को पुरुषों के समकक्ष प्रतिष्ठित करना चाहती है । इसके लिएवह

---

1:- मोहन राकेश :- अँधेरे बन्द कमरे, पृ0 सं0- 462
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली,प्रथम संस्करण 1961 ई0।

पुरुषों से सहयोग करने के बजाय क्रान्तिकारी दृष्टिकोण अपनाती है । वह पुरुष जाति को नारियों का शोषक मानती है। वह पुरुषों के विरुद्ध स्त्रियों को इस प्रकार भड़काती है, भद्र महिलाओं तुम मानो या न मानो पर मैं पुरुष जाति का शत्रु मानती हूँ । भविष्य में लड़कियों को लड़कों से किसी बात में कम न समझें । "  । वह स्वयं पुरुष संसर्ग से दूर रहती ही है, समाज की अन्य स्त्रियों को भी पुरुष संसर्ग से बचने की ही शिक्षा नहीं देती , अपितु उन्हें पुरुष शिशु की निर्मम हत्या का उपदेश देती है ।   2 गंगा माता की नारी प्रतिष्ठा विषयक उपर्युक्त धारणा स्वस्थ्य दृष्टिकोण पर आधारित नहीं है । सामाजिक प्रतिष्ठा की प्राप्ति में नारी के समक्ष मात्र शिशु एवं पुरुष संसर्ग की समस्या नहीं है बल्कि आर्थिक समस्या भी है जो बहुधा पति के अभाव में पत्नी के समक्ष उत्पन्न हो जाती है । इस प्रकार गंगा माता का उपर्युक्त दृष्टिकोण उसके वैयक्तिक एवं पारिवारिक विघटन का द्योतक है ।

अमृतलाल नागर कृत " बूंद और समुद्र," का महिपाल सुशिक्षित,ख्याति प्राप्त , आकर्षक व्यक्तित्व का लेखक है । शीला स्विंग, महिपाल के व्यक्तित्व की गरिमा पर मुग्ध होकर उससे प्रेम करने लगती है। महिपाल का शीला के साथ सम्बन्ध पत्नी के समानान्तर चलता है। पारिवारिक प्रतिष्ठा के प्रश्न पर महिपाल के लिए आवश्यक हो जाता है कि वह शीला के

---

1:- पाण्डेय बेचन शर्मा :- गंगा माता, पृ0 सं0- 29
आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 1971 ई0 ।

2:- वही :- पृ0 सं- 29

साथ स्थापित सम्बन्धों को त्याग दे । महिपाल के जीवन के लिए यह विषम स्थिति एक ओर जाने पर कुआं और दूसरी ओर जाने पर खाई के समान थी । पारिवारिक प्रतिष्ठा के लिए महिपाल शीला-स्विंग का परित्याग कर देता है क्योंकि उसकी धारणा है कि " कुटुम्ब व्यक्तिगत प्रेम से बड़ी वस्तु है । वैवाहिक कुटुम्ब समाज को सुसम्बद्ध बनाए रखने के लिए एक शक्तिशाली परम्परा है, व्यक्तिगत प्रेम से समाज के बंधन ढीले पड़ जायेंगे । कुटुम्ब की भावना नष्ट हो जाएगी । " । परन्तु वैयक्तिक स्तर पर शीला -स्विंग के आत्मिक सम्बन्ध से मुक्त नहीं है ,जिससे मुक्ति के लिए उसे आत्महत्या करनी पड़ी है । इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सामाजिक प्रतिष्ठा को बनाए रखने के चक्कर में महिपाल का वैयक्तिक विघटन हो जाता है ।

मोहन राकेश कृत " अँधेरे बंद कमरे की नायिका, नीलिमा पति की एवं परिवार की उपेक्षा नृत्यकला में बहु-प्रतिष्ठित ख्याति को विशेष महत्व देती है । फलत: उसे वैवाहिक जीवन के प्रारम्भिक दिनों में पति विमुख रहना पड़ा । हरबंश पारिवारिक सम्बन्धों को सुमधुर बनाए रखने का भरसक प्रयत्न करता है । नीलिमा नृत्यकला में ख्याति न पाने पर पारिवारिक दायाएं को सुचारु रूप से संचालित करने लगती है । इस प्रकार उन दोनों का विघटित परिवार संगठित हो जाता है ।

---

1:- अमृतलाल नागर :- बूंद और समुद्र , पृ0 सं0 - 518
किताब महल इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1956 ई0 ।

शिवप्रसाद सिंह कृत " अलग-अलग वैतरणी " के देवपाल और राजमती के वैयक्तिक विघटन का कारण दोनों के परिवार की प्रतिस्पर्धात्मक सामाजिक प्रतिष्ठा है । देवपाल का बड़ा भाई जैपाल सिंह, राजमती के पिता मेधन सिंह से राजमती का देवपाल से विवाह करने का अनुरोध करता है,परन्तु मेधन सिंह उसे अपनी तौहीनी समझता है, वह विवाह करने से इन्कार कर देता है और पूर्वनिश्चित षड़यन्त्रानुसार राजमती के हाथों शरबत में विष मिलाकर देवपाल को पिलवा देता है । इस प्रकार देवपाल की दुखद मृत्यु हो जाती है । राजमती को जब ज्ञात होता है कि देवपाल की हत्या स्वयं उसके हाथों हुई है,वह आत्मग्लानि में डूबकर हात्महत्या कर लेती है ।

==========================================

1:- शिवप्रसाद सिंह :- अलग-अलग वैतरणी, पृ0 सं0- 45
लोकभारतीय प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1967 ई0 ।

संदेह :-

स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों एवं पारिवारिक व्यवस्था में अशांति और असंतुलन उत्पन्न करने में संदेह का कम योगदान नहीं है । संदेह का तात्पर्य उस स्थिति से है, जब एक व्यक्ति के समक्ष कुछ ऐसे महत्वपूर्ण तथ्य आते हैं जो दूसरे के प्रति उन तथ्यों को लेकर संदिग्ध स्थिति उत्पन्न कर देते हैं, जब कि वास्तविकता स्थिति इसके ठीक विपरीत होती है । संदेही व्यक्ति के समक्ष कुछ ऐसे स्पष्ट प्रमाण होते हैं जिसके आधार पर उसे असत्य तथ्य भी सत्य प्रतीत होते हैं संदेह तब और अधिक भयानक स्थिति उत्पन्न करता है जब दोनों ओर से उसके निराकरण के प्रति उदासीनता प्रदर्शित की जाती है ।

डा० देवराज कृत " दोहरी आग की लपट " औपन्यासिक कृति की कथावस्तु से ज्ञात होता है कि सुबोध के पारिवारिक विघटन का कारण बाल-विवाह नहीं अपितु पत्नी का ईर्ष्यालु एवं संदेही व्यवहार है । " । सुबोध की पत्नी को संदेह हो गया था कि सुबोध का विवाहेतर काम सम्बन्ध है । फलत: सुबोध का किसी भी लड़की से

---

1:- { वह अपने अधिकारों के बारे में बड़ी सतर्क थी ----------- और बेहद ईर्ष्यालु । शायद इसीलिए कि वह सुन्दर नहीं उसे किसी भी मुहल्ले, बिरादरी की लड़की को लेकर संदेह हो जाता कि सुबोध उसका पति उसकी ओर आकर्षित है । इसलिए वह अक्सर ही वैसे आरोप लगाकर सुबोध से झगड़ती । }

डा० देवराज :- दोहरी आग की लपट, पृ० सं० 98
राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 1973 ई० ।

से मिलना जुलना पसंद नहीं था । प्रारम्भ में सुबोध ने पत्नी के उपर्युक्त संदेह के निवारण का भरसक प्रयास किया । इस प्रयत्न का उसकी पत्नी पर विपरीत प्रभाव पड़ा जिसके कारण इन दोनों के सम्बन्धों में उत्तरोत्तर कटुता में अभिवृद्धि होती गई और अन्त में दोनों का पारिवारिक सम्बन्ध टूट गया ।

विवाह विच्छेद :-

पारिवारिक व्यवस्था को संतुलित करने एवं बच्चों के सुखमय भविष्य की कामना को सफलीभूत करने के लिए प्राचीन काल से ही भारत वर्ष में विवाह -विच्छेद को हेय दृष्टि से देखा जाता रहा है । भारतवर्ष में विवाह को धार्मिक संस्कार एवं पति को परमेश्वर तुल्य माना जाता रहा है । अत: सामाजिक प्रतिष्ठा को बचाये रखने के लिए स्त्रियां साधारणत: विवाह विच्छेद नहीं करती थी,परन्तु कौटिल्य ने विशेष परिस्थितियों में स्त्रियों में स्त्रियों को विवाह-विच्छेद एवं पुनर्विवाह की स्वीकृति दी थी । " 2 कालान्तर में समाज में सती प्रथा के प्रचलन

---

1:- डा0 देवराज :- दोहरी आग की लपट,पृ0 सं0- 192
राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 1973 ई0 ।

2:" {नीचत्वं परदेशं वा प्रस्थितो राज किल्विषी ।
प्राणाभिहन्ता पतित त्याज्य: क्लीबेऽपि वा पति: ।।
नीचे आचरण वाले ,प्रवासी ,राजद्रोही,प्राणघाति ,जाति और धर्म से गिरे हुए एवं नपुंसक पति को स्त्री त्याग सकती है ।}
आचार्य विष्णुगुप्त {चाणक्य} सम्पादक श्री गैरोला :- कौटिल्य का अर्थशास्त्र पृ0 सं0 - 281
संस्कृत संस्थान इब्वाजा कुतुबरोड दिल्ली,प्र॰ सं॰ 1971 ई0 ।

के फलस्वरूप भारतीय समाज में विवाह-विच्छेद कल्पना की वस्तु बन गई थी स्त्रियों को पुरुषों की भांति समानाधिकार एवं सामाजिक प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए स्वतंत्र भारत की कानून व्यवस्था में किसी भी व्यक्ति का विवाह -विच्छेद की कानूनी स्वतंत्रता प्राप्त है । परन्तु विवाह-विच्छेद भारतीय समाज की स्वाभाविक प्रवृत्ति नहीं है। इस संदर्भ में डा0 ज्ञानचन्द्र गुप्त का यह कथन उपयुक्त ही है कि " तलाक पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण और नारी के अधिकार बोध का परिणाम है । " 1
यही वजह है कि विवाह -विच्छेद की अधिकतर घटनाएं सम्पन्न एवं आढ्य मध्यवर्ग में देखने को मिलती है ।

जहां विवाह-विच्छेद के द्वारा पति-पत्नी को कटुमय जीवन से मुक्ति मिलती है तथा समाज में शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा मिलती है, वहीं बच्चों के समुचित संरक्षण की समस्या उत्पन्न हो जाती है। मन्नू भंडारी कृत" आपका बंटी " उपन्यास के अजय और शकुन नामक पति-पत्नी का पारिवारिक जीवन कटुमय है । उन दोनों के बीच यह कटुता आर्थिक कठिनाई, संतानहीनता,यौन सम्बन्धी दुर्बलता के कारण नहीं है, बल्कि पारस्परिक प्रतिस्पर्धा एवं पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण के कारण

---

1:- डा0 ज्ञानचन्द गुप्त :- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्राम चेतना
पृ0 सं0- 133
अभिनव प्रकाशन वेस्ट सीलमपुर दिल्ली, प्रथम संस्करण 1974 ई0 ।

है । वे दोनों कलह एवं अशांतिपूर्ण परिवार के मुक्त होने के लिए विवाह विच्छेद कर लेते हैं । 1 प्रस्तुत दम्पति विवाह-विच्छेदोपरान्त नये जीवन साथी का चुनाव करता है । 2 अजय एवं शकुन के टूटते सम्बन्धों से बंटी को मानसिक आघात पहुंचता है जिसके कारण वह न तो अपने को अपनी मां शकुन के साथ जोड़ पाता है, न तो अपने पिता अजय के साथ ही क्योंकि मां के साथ रहने में उसे पिता का अभाव खटकता है, पिता के साथ रहने पर मां का । माता-पिता के समुचित प्रेम के अभाव में वह उद्दण्डता हो जाताहै । उसकी उद्दंडता वैयक्तिक विघटन की सूचक है ।

===================================================

1:- समझौते का प्रयत्न भी दोनों में एक अंडरस्टैंडिंग पैदा करने की इच्छा से नहीं होता था वरन् एक दूसरे को पराजित करके अपने अनुकूल बना लेने की आकांक्षा से । तर्कों और बहसों में दिन बीतते थे और ठंडी लाशों की तरह लेटे-लेटे एक दूसरे को, बेचैन और छटपटाते हुए देखने की आंकांक्षा में रातें भीतर ही भीतर चलने वाली एक अजीब सी लड़ाई थी, वह भी जिसमें दम साधकर दोनों ने हर दिन प्रतीक्षा की थी कि कब सामने वाले की सांस उखड़ जाती है और वह घुटने टेक देता है, जिससे कि फिर वह बड़ी उदारता और क्षमाशीलता के साथ उसके सारे गुनाह माफ करके उसे स्वीकार कर ले, उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को निरे शून्य में बदलकर । और इस स्थिति को लाने के लिए सभी तरह के दांव पेंच खेले गए । ||

मन्नू भंडारी :- आप का बंटी, पृ0 सं0- 37

अक्षर प्रकाशन मन्दिर दिल्ली, प्रथम संस्करण 1971 ई0 ।

2:- वही :- पृ0 सं0- 125

डा0 देवराजकृत " दोहरी आग की लपट " औपन्यासिक कृति की नायिका इरा ,पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित है । वह मनोनुकूल पति की प्राप्ति के लिए विवाहित पति सुरेन्द्र से विवाह-विच्छेद कर लेती है और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने का सफल प्रयास करती है । कालान्तर में वह डा0 देव नामक शान्तिप्रिय व्यक्ति से विवाह कर लेती है,परन्तु डा0 देव के साथ भी उसका पारिवारिक जीवन सुखमय न बन सका । क्योंकि उसे डा0 देव की शालीनता एवं शान्तिप्रियता से विशेष लगाव न था । वह मनोरंजनार्थ अपने आपको डा0 देव के प्रिय शिष्य सुबोध के प्रति समर्पित करके यौन-सम्बन्ध स्थापित कर लेती है । 1 जिसके कारण उसको जीवन पर्यन्त आत्मशान्ति न मिल सकी । 2

कुछ इसी प्रकार की स्थिति अज्ञेय कृत " नदी के द्वीप " की रेखा नामक युवती की भी है । रेखा भी पति हेमेन्द्र से विवाह -विच्छेद करने के उपरान्त सुखमय पारिवारिक जीवन व्यतीत न कर सकी । हेमेन्द्र के साथ प्राप्त पारिवारिक जीवन की कुंठा के कारण रेखा,आर्थिक, सामाजिक,नैतिक किसी प्रकार का ।

==================================================

1:- ﴾ देवजी के प्रति कृतज्ञ थी कि उनका उतना ज्यादा विश्वास था कि वह महीने में तीन-चार बार सुबोध के साथ सिनेमा देखने जाने लगी और प्रत्येक बार अपने को अधिक निकट पाती और महसूस करती । इस दौरान कब उसका और सुबोध का सम्बन्ध एक जटिल और कोमलतर भावभूमि में पहुंच गया, इसकी अब उसे पूरी स्मृति नहीं । ﴿
डा0 देवराज :- दोहरी आग की लपट:- पृ0 सं0 -104
राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 1973 ई0

2:-﴾ काश । कि तुमने मेरा इतना विश्वास न किया होता । तब मुझे उस तरह की अजीब सी पीड़ा नहीं होती,जैसी कि आज हो रही है ।﴿
वही:- पृ0 सं0- 5

प्रतिरोध न होने पर भी भूवन के विवाह प्रस्ताव को ठुकराकर गर्भपात करवा लेती है । 1 । रेखा की यह प्रवृत्ति समाज की मान्यताओं के विपरीत तथा उसके वैयक्तिक विघटन की ओर संकेत करती है ।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विवाह-विच्छेद के कारण उत्पन्न सामाजिक विघटन का चित्रण आलोच्य कालीन हिन्दी उपन्यासों में हुआ है जो पाठकों के मनको विवाह -विच्छेद से उत्पन्न सामाजिक विघटन की भयावह स्थिति से बचने के लिए प्रेरित करता है ।

विलम्ब- विवाह :-
=============

बाल -विवाह के कारण उत्पन्न होने वाली सामाजिक विघटन को उत्पन्न करने वाली जनसंख्या में वृद्धि ,योग्य जीवन साथी का चुनाव स्त्री-पुरुष के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास,विधवाओं की बढ़ती हुई संख्या,परिवार पर आर्थिक दबाव आदि विभिन्न सामाजिक समस्याओं से बचने के लिए विद्वानों ने विलम्ब-विवाह की संस्तुति की है। विलम्ब -विवाह के समर्थकों के अनुसार लड़कों का विवाह 20 और 30 वर्ष की आयु के बीच और लड़कियों का

==================================================

1:- {आई लव्ड हर, वी फेयर टू हैव ए चाइल्ड, आई किल हिम । }
अज्ञेय :- नदी के द्वीप पृ० सं०- 286
प्रोग्रेसिव पब्लिशर्स फिरोजशाह रोड दिल्ली, प्रथम संस्करण 1951 ई० ।

विवाह 20 वर्ष और 25 वर्ष की आयु के बीच होना चाहिए ।" ।
परन्तु उपर्युक्त समस्याओं से मुक्ति के साथ ही विलम्ब-विवाह के कारण विवाहेतर काम सम्बन्ध, वैयक्तिक रुचि को विशेष महत्व देने की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है जो सामाजिक विघटन उत्पन्न करने में विशेष भूमिका निभाती है । इस स्थिति की ओर संकेत करते हुए सरला दुबे ने लिखा है। "फिर भी इतना कहना ही पड़ेगा कि विलम्ब -विवाह यदि अधिक विलम्ब से होता है तो हानिकर ही होगा ।" 2

विलम्ब -विवाह के कारण अधिकांश अविवाहित नवयुवक एवं नवयुवतियों में यौनापराध की प्रवृत्ति देखने को मिलती है । इस प्रवृत्ति के कारण उनमें पारिवारिक उत्तरदायित्व की भावना पूर्णरूप से विकसित नहीं हो पाती । "साथ ही साथ अधिक विलम्ब हो जाने पर पति-पत्नी में पारस्परिक अनुकूलन एक तरह से कठिन हो जाता है,क्योंकि दोनों ही कुछ स्थिर आदतों को पनपा लेते हैं ।" 3

डा० देवराज कृत " दोहरी आग की लपट नामक उपन्यास की नायिका इरा के वैयक्तिक विघटन का मुख्य कारण विलम्ब-विवाह है । विलम्ब विवाह के कारण वह पति सुरेन्द्र के साथ पारस्परिक अनुकूलन नहीं स्थापित कर

---

1:- रवीन्द्रनाथ मुकर्जी:- भारतीय सामाजिक संस्थाएं,पृ0 सं0- 398 सरस्वती सदन मसूरी,संस्करण 1964 ई0 ।

2:- श्रीमती सरला दूबे :- भारतीय समाज और संस्थाएं,पृ0 सं0- 244 प्रकाश बुक डिपो बरेली संस्करण 1967 ई0 ।

3:- वही:- पृ0 सं0- 244

पाती और दोनों का विवाह -विच्छेद हो जाता है। विवाह में विलम्ब के कारण इरा मनोज नामक सहपाठी से यौन-सम्बन्ध स्थापित करती है परन्तु मनोज की यौन-दुर्बलता के कारण उसे यौन संतुष्टि न मिल सकी । । सुरेन्द्र से विवाह -विच्छेदोपरान्त इरा डा० देव से विवाह करती है । विलम्ब से विवाह करने के कारण डा० देव में पारिवारिक उत्तरदायित्व एवं विलम्ब से विवाह करने के कारण डा० देव में पारिवारिक उत्तरदायित्व एवं पारस्परिक आकर्षण का अभाव है । पति-पत्नी दोनों की अलग-अलग वैयक्तिक रुचियां हैं । इरा की चित्रपट देखने में विशेष रुचि है तथा डा० देव की रुचि शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करने में है । उपर्युक्त वैयक्तिक रुचि के वशीभूत होकर इरा डा० देव के शिष्य सुबोध से गोपनीय यौन-सम्बन्ध स्थापित करती है । कालान्तर में इरा इस अवैध सम्बन्ध के कारण कुंठाग्रस्त होकर वैयक्तिक विघटन का शिकार हो जाती है ।

अमृतलाल नागर कृत " बूंद और समुद्र " औपन्यासिक कृति की डा० शीला स्विंग का बचपन आर्थिक अभावों में व्यतीत हुआ । उसके पिता एक स्कूल के मास्टर थे, आर्थिक कठिनाई से मुक्ति के लिए उसकी मां भी अध्यापिका का काम करती थी । छः भाई-बहनों वाला शीला का परिवार गरीबी में दिन गुजार रहा था । शीला के मन में गरीबी के प्रति

==============================

1:- ( यदि अन्त में उसे (मनोज) अपने संकल्प से विरत होकर हार माननी पड़ी तो उसका हेतु उसका स्वयं का विवेक या इरा का अनुनय नहीं था। अपनी अत्यान्तिक उत्तेजना से मनोज के व्यक्तित्व में छिपे हुए भौतिक जन्तु ने मानो स्वयं ही अपने को दण्ड दे डाला । )
डा० देवराज :- दोहरी आग की लपट, पृ० सं०- 32
राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 1973 ई० ।

विद्रोह उत्पन्न होता है । वह कठिन श्रम करके डाक्टर बन जाती है । डाक्टर बनने के बाद चौदह-पन्द्रह वर्षों में उसने सामाजिक प्रतिष्ठा एवं पर्याप्त धन अर्जित कर लिया । शीला समाज में स्थापित तो हो गई, परन्तु इस कार्य के लिए उसे विवाह से हाथ धोना पड़ा । कालान्तर में शीला का महिपाल से यौन-सम्बन्ध हो जाता है क्योंकि महिपाल का व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक था । 1 महिपाल का विवाह शीला से नहीं हो सकता था क्योंकि महिपाल अपने बीबी बच्चों को छोड़ना नहीं चाहता था। इस प्रकार प्रेम सम्बन्ध स्थापित करने के चक्कर में शीला के विवाह की उम्र निकल जाती है और वह आजीवन अविवाहित ही रह जाती है ।

कला के प्रति प्रेम :-

पारिवारिक व्यवस्था के लिए धन अत्यावश्यक है । धन के अभाव में भोजन, आवास, नाते-रिश्तेदारों की खातिरदारी, मनोरंजन आदि से सम्बन्धित विभिन्न समस्याएं उत्पन्न हो जाती है । कला प्रेमी धन को महत्व देने के बजाय उपरोक्त समस्याओं से विशेष चिंतित होने के बजाय ,कला सृजन में आत्मलीन रहना अधिक पसंद करता है जिसके कारण उसका पारिवारिक जीवन कलहपूर्ण हो जाता है। न तो कलाकार को आत्मशान्ति मिल पाती है और न तो परिवार के सदस्यों को ही । सर्वदानन्द कृत "माटी खाई जनावरा " औपन्यासिक कृति के मुंशी दिलकश की पारिवारिक स्थिति भी कुछ इसी प्रकार है । मुंशी दिलकश पढ़ने -लिखने

---

1:- अमृतलाल नागर:- बूंद और समुद्र , पृ0 सं0 - 506
किताब महल इलाहाबाद, संस्करण 195 ई0 ।

के शौकीन एवं आर्टिस्ट होने के कारण जीवन-पर्यन्त आर्थिक कठिनाइयों से ग्रस्त रहा । उसके लिए काव्यानन्द आवश्यक था धन नहीं । धनाभाव में उसके परिवार की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो जाती है और परिवार के सदस्यों की दैनिक आवश्यकतायें नहीं पूरी नहीं हो पाती । उसकी बड़ी लड़की समुचित चिकित्सा के अभाव में "बिना पथ्य पानी के मर जाती है 1 उसकी पत्नी उसकी सारी हस्तलिखित प्रतियों में आग लगाकर स्वयं आत्महत्या कर लेती है। पत्नी की मृत्यु के अनन्तर दिलकश की सहायता क उसकी बूढ़ी खाला जान करती है। वह हमेशा आर्टिस्टिक मूड में बना रहता दिलकश के जीवन में फाके मस्ती अवश्य है परन्तु चारित्रिक दोष नहीं है । दिलकश अपनी पारिवारिक स्थिति का जायजा वंदना के समक्ष इस प्रकार प्रस्तुत करता है। :- " मैं ठहरा फालतू आदमी, शायर और आर्टिस्ट होने के नाते दुनिया की नजरों में निकम्मा ,माँ तक ऊबकर मायके चली गई,बीबी खुदा के घर । " 2 उपर्युक्त परिस्थितियों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि मुंशी दिलकश के पारिवारिक विघटन का मूल कारण कला के सृजन में व्यस्तता के कारण समुचित अर्थोपार्जन का अभाव है ।

रांगेयराघव कृत " राई और पर्वत " उपन्यास के गायकों की दो मंडली में गायन प्रारम्भ के प्रश्न पर मार-पीट हो जाती है । मारपीट में कई लोगो को चोटें लगती हैं और सम्पूर्ण वातावरण में अशान्ति उत्पन्न हो जाती है तथा उमेश नामक गायक की असामयिक मृत्यु हो जाती है ।उमेश

=====================================================

1: सर्वदानन्द :- माटी खाई जनावरा, पृ0 सं0- 159
हिन्दुस्तानी एकेडमी उ0प्र0 इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1960 ई0

2:- वही:- पृ0 सं0- 205

की असामयिक मृत्यु ,विद्या, के पारिवारिक विघटन का कारण बना है क्योंकि विद्या, पुनर्विवाह की विरोधी है । " ।

राही मासूम रजा कृत " दिल एक सादा कागज " उपन्यास के बाबू राम को कुश्ती लड़ने का और गाने -बजाने का बड़ा शौक था । 2 बाबू राम का कुश्ती लड़ने में पैर टूट गया । पैर टूट जाने के बाद वह दूकान पर बैठने लगा तथा दंगल लड़ने के किस्से लोगों को सुनाने लगा । इस प्रकार पैर टूट जाने व मनोवांछित कुश्ती लड़ने के कार्य के छूट जाने से बाबू राम का वैयक्तिक विघटन हो जाता है ।

---

1:- रांगेय राघव :- राई और पर्वत , पृ0 सं0 - 51
राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 1958 ई0 ।

2:- राही मासूम रजा :- दिल एक सादा कागज ,पृ0 सं0-98
प्रथम संस्करण 1973 ई0 पुनमुद्रित सं0 1984 ई0,राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0 नेताजी सुभाष मार्ग दिल्ली ।

3:- ‌{ पर जब से वह पांव तोड़कर दूकान पर बैठने लगा है, सारा समय पुराने दंगलों और जल्सों के किस्से सुनाया करता है। }
वही :- पृ0 सं0- 98

अवैध-सन्तान :-

कभी-कभी कुछ व्यक्ति यौनाभाव के प्रबल उद्रेक अथवा यौन-संबंधों की स्वाभाविक संतुष्टि में व्यवधान पड़ने पर गोपनीय ढंग से अपने परिवार के अतिरिक्त अन्यत्र यौन सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं । ऐसे गोपनीय सम्बन्धों को समाज हेय दृष्टि से देखता है, अतः गोपनीय यौन-सम्बन्ध स्थापित करने वाले स्त्री पुरुष संतान न उत्पन्न होने पावे, इसके प्रति सजग रहते हैं,लेकिन यदि कोई अवैध संतान आ ही जाती है तो कुछ लोग बाल-हत्या कर के छुटकारा पाने का प्रयत्न करते हैं । शैलेशमटियानी कृत " किस्सा नर्मदाबेन गंगू बाई" के मन में संतान प्राप्ति की असीम लालसा है । वह स्वंय को संतान उत्पन्न करने में अक्षम पाकर पूर्वनिश्चित योजना नुसार अपनी पत्नी का सम्बन्ध बांसुरी वादक से करवा देता है जिससे नर्मदाबेन के पुत्र उत्पन्न होता है पुत्र की रूपाकृति बांसुरी वादके से मिलती -जुलती होने के कारण नगीन भाई के मन में शंका उत्पन्न होती है कि बच्चें की उपर्युक्त रूप-साम्यता से लोग यह जान जायेंगे की बच्चा नगीन भाई का न होकर बांसुरी वादक का है। नगीन भाई अवैध संतान के कलंक से बचने के लिए निर्दोष,नवगत शिशु की हत्या कर देता है ।

कुरूपता :-

शायद ही ऐसा कोई मनुष्य हो जो कुरूप से विवाह करना चाहे। परन्तु समाज के कुछ लोग धन की लालच,सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि अथवा दिखावे के चक्कर में पड़कर कुरूपा कुरूप से विवाह कर लेते हैं । ऐसे लोगों मे से अधिकांश व्यक्ति वैयक्तिक स्तर पर विघटित हो जाते हैं । सर्वदानन्द कृत "माटी खाई जनावरा" उपन्यास की रजनी के सर्वगुण सम्पन्न होनेपर भी कोई व्यक्ति इसलिए उससे विवाह करने को तैयार नहीं है क्योंकि वह कुरूप है । इस तथ्य की ओर संकेत करते हुये रजनी के पिता ने कहा है । " एक दिन जब विवाह की ह ट में उसका मोल लगाने चला तब मेरी आंखें खुली । लोग गुण नहीं देखते थे,सुन्दरता चाहते थे, कोई बात करने को राजी न होता । " । अतः रजनी के विवाह

में दो-तीन वर्षों का विलम्ब हो गया । अन्ततः धन के लोभ में एक युवक ने गंगादास की सारी जमा-पूंजी लेकर रजनी के साथ विवाह करने को तैयार हो गया । 2 रजनी का पारिवारिक जीवन सुखमय न बन सका क्योंकि उसका पति महानगरीय जीवन के सौन्दर्य की मृगतृष्णा से ग्रस्त था । उसका पति कहीं से एक सुन्दर स्त्री धर लाता है, पारिवारिक कलह और सौतिया डाह से मुक्त होने के लिए रजनी गृह त्याग कर देती है ।

इसी प्रकार पाण्डेय बेचन शर्मा " उग्र कृत " गंगा माता " उपन्यास की रामकली नामक युवती की असामयिक मृत्यु एवं पारिवारिक कलह का मुख्य कारण उसकी कुरूपता है । रामकली का पति उसे प्रायः इस बात के लिए पीटा करता था कि वह कुरूप क्यों है । वह हमेशा उससे यही कहता था कि यदि अपनी जान की खैर चाहती है तो किसी सुन्दर सहेली से उसकी शादी करा दें । इसी बात पर एक दिन पति से पिटकर रामकली असामयिक मृत्यु को प्राप्त हो जाती है । 3

धर्म-परायणता :-

हमारा देश,एक धर्म प्रधान देश है । यहाँ की जनता जन्म

1:- सर्वदानन्द :- माटी खाई जनावरा, पृ0 सं0- 275
हिन्दुस्तानी एकेडमी उ0प्र0 इलाहाबाद,प्रथम संस्करण 1980 ई0
2:- वही:- पृ0 सं0- 276
3:- पाण्डेय बेचन शर्मा "उग्र" गंगा माता,पृ0 सं0--56-57
आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली, संस्करण 1971 ई0 ।

से लेकर मृत्यु तक विभिन्न धार्मिक कृत्यों से बंधी है । साधारण तौर पर समाज ~~धार्मिक~~ का कोई सदस्य धार्मिक मान्यताओं का उलंघन नहीं करना चाहता । रांगेयराघव कृत " राई और पर्वत " औपन्यासिक कृत की फूलों धर्मभीरु स्त्री है । उसका हरदेव नामक व्यक्ति से विवाहेतर काम संबंध है, परन्तु पति की मृत्यु होने पर सती होकर धार्मिक महत्व प्राप्त कर लेती है । 1 फूलों का सती होना स्वस्थ नागरिक का कार्य नहीं है। यह स्थिति उसके वैयक्तिक विघटन का ~~कारण भी~~ सूचक है। इसी उपन्यास की विद्या नामक युवती के वैयक्तिक विघटन का कारण भी धर्म परायणता है । वह अपने जेठ व श्वसुर द्वारा विवाहेतर यौन संतुष्टि के लिए प्रोत्साहित करने पर भी ऐसा नहीं करती । 2 विद्या की माँ फूलों भी चाहती है कि विद्या का यौन सम्बन्ध राम आसरे से हो जाय परन्तु विद्या इसे पाप समझती है । विद्या कहती है । "पर यह तो पाप है अम्मा । 3 प्रत्युत्तर में उसकी माँ कहती है "पाप अम्मा ने धीरे से मुस्कुराकर कहा था ------- तेरी उमर पर मुझे भी यही लगता था पगली । पर पाप क्या है दूसरों के हाथ पकडा जाना ।बाभनों के घर-घर में यह पाप है, कोई कहता है कुछ ।

---

1:- रांगेय राघव :- राई और पर्वत, ,पृ0 सं0- 91

राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 1956 ई0

2:( एक रात सीढ़ी पर चढ़ रही थी कि जेठ ने बांह थाम ली ।छिटक कर खड़ी हुई तो कहा उसने, अरी । मत बन ,घर की घर में बात छिपी तो रहेगी, कही बाहर जाकर कुल की नाक न कटा दीजो । )

वही :- पृ0 सं0- 52

3:- वही :- पृ0 सं0- 74

बूढ़े को जवान लुगाई ब्याहना पाप नहीं है । गूजर, जाट माली सब में फिर-फिर घर बसता है। उनके यहां पाप नहीं,फिर बामनों में क्यों पाप है । ---------- मैं भी पतबरता थी,पर मुझे किसने इस राह पर डाला । जो धरम का बिस्तर बिछाकर धरम की चादर ओढ़ता था, उसी ने बताया मुझे सब । " । विद्या के मन पर फूलों के उपरोक्त कथन का कुछ असर नहीं पड़ता । वह अपने आपको विवाहेतु यौन संतुष्टि से मुक्त रखना चाहती है । इस कार्य में उसे काम - पिपासु हरदेव पर प्रहार करना पड़ता है जिसके कारण हरदेव की मृत्यु हो जाती है । विद्या के ऊपर कचहरी में मुकदमा चलता है। इस प्रकार धर्मपरायणता के कारण विद्या के जीवन का अधिकांश अंश अशांति पूर्ण रहा ।

अमृत लाल नागर कृत " बूंद और समुद्र " उपन्यास की वनकन्या की विधवा भाभी का धर्मपरायणता के कारण पुनर्विवाह न हो सका वह परिवार में ही यौन सम्बन्ध स्थापित कर लेती है और अवैध गर्भ के कारण आत्म हत्या कर लेती है ।

उपर्युक्त तथ्यों के विश्लेषण और विवेचन के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि स्त्री-पुरुष का संबंध मकड़ी के जाले के एक पतले तंतु से जुड़ा हुआ है जो सामाजिक प्रतिष्ठा,धन-लिप्सा ,वासानात्म

============================================================

1:- रांगेय राघव:- राई और पर्वत, पृ0 सं0- 74
राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली,प्रथम संस्करण 1956 ई0 ।

आवेग, संदेह, कुरूपता, सौन्दर्यमयता आदि के कारण बहुधा विघटित हो जाता है । स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों का विघटन समाज में वैयक्तिक विघटन एवं पारिवारिक विघटन, दोनों रूपों में देखने को मिलता है ।

तस्करी, मिलावट एवं प्रशासनिक अक्षमता :-

'देश की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए भारतीय सरकार ने आवश्यक औषधियों, मादक द्रव्यों एवं दैनिक उपयोग की वस्तुओं के क्रय-विक्रय आयात-निर्यात पर प्रतिबन्ध लगा दिया है परन्तु समाज के कुछ लोग देश की आर्थिक स्थिति की चिंता किए बिना धन के लालच में तस्करी अथवा मिलावट करते हैं। सरकार ने तस्करी पर नियंत्रण करने के लिए आयकर विभाग, आबकारी विभाग कस्टम विभाग, खाद्यपूर्ति निगमआदि की स्थापना की है । तस्करी पर कठोर नियंत्रण होने के बावजूद तस्कर विभिन्न प्रविधियों द्वारा अपने कार्य में सफल हो जाते हैं । तस्करी के कारण देश की आर्थिक हानि के साथ मिलावट, भ्रष्टाचार हत्या, जालसाजी आदि तत्वों को प्रश्रय मिलता है । ये तत्व समाज मे विघटन की स्थिति उत्पन्न करते हैं ।

प्रभाकरमाचवे कृत " सच्चा" औपन्यासिक कृति में अफीम की तस्करी का वर्णन है । इस तस्करी में जरायम पेशा वालों का एक समुदाय संलग्न है । ये लोग अफीम को चीने के मार्ग से सेन्फ्रान्सिसको भेजते हैं ।

इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अफीम की तस्करी से देश की भारी आर्थिक क्षति हो रही है । । तस्कर इस कार्य को बड़ी बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से करते हैं, परन्तु चतुराई बरतने पर भी कभी-कभी कस्टम विभाग की पकड़ में आ जाते हैं । उपर्युक्त औपन्यासिक कृति " सांचा" का ही एक तस्कर अपनी मोटर की सीट में लोहे की दो परतों के बीच मनो अफीम ले जा रहा था, परन्तु रास्ते में पकड़ लिया गया । 2 कुछ इसी प्रकार की स्थिति राही मासूम रजा कृत " दिल एक सादा कागज के सिंह साहब की है । सिंह साहब एक रेस्तरा खोल रखा था जिसका नाम मालिन रूम था । उक्त रेस्तरा में मार्डन कला कृतियों का विक्रय केन्द्र स्थापित करके मूर्तियों के- माध्यम से तस्करी किया करते थे ।

लक्ष्मीकान्त वर्मा कृत " सफेद चेहरे, कृति का तस्कर "मटियानी" अपने व्यवसाय की चर्मोन्नति के लिए ममता नामक सौन्दर्य मयी युवती से विवाह करता है मटियानी की दृष्टि में ममता के नारोचित

---

1:- प्रभाकर माचवे :- सांचा , पृ0 सं0- 7।
नवसाहित्य प्रकाशन नई दिल्ली, 1, प्रयुक्त संस्करण 1955 ई0

2:- वही , पृ0 सं0- 7।

3:- ॥ इस मालिन रूम" की दीवारों पर पेण्टिगें नहीं टंगा करता था ।
तस्वीरें ऊपर और माल भीतर। कोकीन ,हीरे,घड़िया,डालर,---
इसलिए मुनीश की तस्वीरें टंगने से धन्धे पर कोई फर्क नहीं पड़ता था।॥
राही मासूम रजा :- दिलएक सादा कागज , पृ0 सं0 47
प्रथम संस्करण 1973 ई,प्रयुक्त संस्करण 1984,राजकमल प्रकाशन प्रा॰लि॰नेताजी सुभाष मार्ग दिल्ली ।

गुणों का कोई मूल्य नहीं है, वह तस्करी में कितना मदद कर सकती है, इसका मूल्य है क्योंकि विवाह प्रस्ताव पर चल रहे वार्तालाप के समय मटियानी स्वयं ममता से कहता है । " यह शादी कल ही होगी, इसलिए नहीं कि तू बड़ी सुन्दर है बल्कि इसलिए कि तुझे लोग मेरी बीबी समझें और यह पेटियां जिसे लेकर तुझे बम्बई से आगे अन्य प्रदेशों में जाना है, उसमें कोई रो-टोक न हो । " 1 अन्ततः ममता और मटियानी का विवाह हो जाता है तथा ममता तस्कर गिरोह की सक्रिय सदस्या बन जाती है । एक दिन ममता सोने की तस्करी करते हुए पकड़ी जाती है और जेल भेज दी जाती है । 2 कारागार से छूटने पर ममता का पारिवारिक विघटन हो जाता है क्योंकि उसका पति मटियानी उसकी ही सौन्दर्यमयी बहन विनती के साथ अनैतिक यौन-सम्बन्ध स्थापित कर लेता है। मटियानी अपने पिता की हत्या एवं तस्करी के अपराध में फांसी की सजा पाता है । ममता मटियानी को बचाने का भरसक प्रयत्न करती है । वी०के० ममता के अनुरोध पर मटियानी की जगह गुप्त रूप से फांसी के तख्ते पर चढ़ जाता है । इस प्रकार मटियानी को जीवनदान मिल जाता है परन्तु वह समाज में असमानपूर्ण ढंग से जीवित नही रहना चाहता ,वह ~~अक्समक्किकि~~ आत्मग्लानि में डूबकर आत्म हत्या कर लेता है । समाज में घटित उपर्युक्त घटनाएं सामाजिक विघटन की सूचक है ।

---

1:- लक्ष्मीकान्त वर्मा :- सफेद चेहरे, पृ0 सं0- 81

साहित्य भवन लिमिटेड इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1971 ई0

2:- वही :- पृ0 सं0- 73

देश के कुछ व्यापारी जनहित को ध्यान में रखे बिना, अधिक मुनाफा कमाने के उद्देश्य से वस्तुओं में मिलावट करते हैं । इस प्रकार खाद्य पदार्थों, औषधियों आदि में की गई मिलावट समाज के लिए बड़ी अहितकर हैं । औषधियों में मिलावट के कारण रोगियों की असामयिक मृत्यु हो जाती है । मिलावट के कारण होने वाली दुर्घटनाओं के जिक्र दैनिक पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं । लक्ष्मीकांत वर्मा कृत " सफेद चेहरे " उपन्यासकार डा० सेठी औषधियों में मिलावट करने में माहिर है । जाली औषधियों के लाने ले जाने में भी सावधानी बरतता है जिसकी वजह से एक होटल पर जाली दवाइयां के एक थैले के साथ पकड़े जाने पर भी पुलिस उस पर मुकदमा न चला सकी । । यही नहीं डा० सेठी जब दुबारा जाली औषधियोंके विक्रय मे अभियोग में पकड़ा जाता है तो वह बड़ी चतुरता से इस अभियोग में वी·के· को फंसाकर स्वयं मुक्त हो जाता है ।

---

1:- लक्ष्मीकांत वर्मा :- सफेद चेहरे, पृ० सं०- 144
साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद ,प्रथम संस्करण 1971 ई० ।

2:- {और तुम जाली दवाओं के चक्कर में कैसे पड़ गए । मैं नही पड़ा ममता ---मैं फंसाया गया हूं । ---- डा० सेठी के षडयन्त्रों का यह परिणाम है । वह इलाहाबाद से बराबर मेरे पते पर पत्र व्यवहार करता था । कलकत्ते में जाली कम्पनी का एजेन्ट मेरे यहां हरहफ्ते मिस्टर सेठी का भाई बनकर आता था और पत्र ले जाता था । मैं समझता था भाई-भाई का पत्र है । मैंने भी ध्यान नहीं दिया। लेकिन सहसा एक रोज पुलिस आ धमकी और आगरे की पुलिस के वारन्ट के साथ मुझे कैद कर लिया गया । }
वही :- पृ० सं०- 181

प्रस्तुत उपन्यास का एक बनिया बजरे के आटे में सिमेन्ट मिलाकर बेचता था जिसे खरीदकर सैकड़ो श्रमिक खाते थे । इस मिलावट के कारण सैकड़ो श्रमिकों को असामयिक मृत्यु का शिकार बनना पड़ा होगा । । मिलावट केइस काम में नेता,सरकारी तन्त्र के अन्य लोग एवं व्यापारियों की मिली - जुली भगत होती है जिसके कारण कोई भी अपराधी जल्दी पकड़ा नहीं जाता । इस उपन्यास में मिलावट करने वालों की साठ-गांठ के बारे में मिलावट करने वाला बनिया कहता है। सिमेंट वजनी होता है। हल्का बजरे का आटा वजनी सीमेंट पाकर कम चढ़ता था, ज्यादा पैसा लाता था,सीमेंट भी तो आसानी से नहीं पाता होगा । ---- वह जो नेता हैं जिसने मुझे परमिट दिलाकर सिमेंट दिलाया है जो फी बोरी कुछ न कुछ रिश्वत लिया है,उसे कोई नहीं पकड़ेगा और पकड़ा भी गया तो क्याछमहीने की सजा काट आएगा । " 2 इस प्रकार मिलावट करने वाला बनिया,घूस लेने वाला नेता,मिलावट करने वाला सेठी सभी अपराधी हैं। इन लोगों के कार्यो से समाज में अशान्ति एवं अव्यवस्था के साथ अपराधीवृत्ति को सहारा मिलता है। उपर्युक्त सभी प्रवृत्तियां सामाजिक विघटन की सूचक है ।

किसी भी समाज की शान्ति एवं सुव्यवस्था के लिए आवश्यक है कि उस समाज का प्रशासन सुदृढ़ हो । प्रशासन के सुदृढ होने पर भी कभी कभी ऐसी विषम स्थिति उत्पन्न हो जाती है कि अपराधी एवं निरपराधी ~~होजातेहै~~ को किस प्रकार विभक्त किया जाय। यह स्थिति न्याय के समुचित माप दण्ड के अभाव में उत्पन्न होती है।

==========================================

1:- लक्ष्मीकान्त वर्मा :- सफेद चेहरे, पृ0 सं0 - 322
साहित्य भवन लिमिटेड इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1971 ई0

2:- वही:- पृ0 सं0 -322

वर्तमान न्याय व्यवस्था का सबसे बड़ा दोष यह है कि धनहीन व्यक्ति को समुचित न्याय मिलना कठिन होता है। रांगेय राघव कृत "राई और पर्वत " उपन्यास की विद्या नामक युवती द्वारा आत्मरक्षार्थ अनजान में हरदेव की हत्या हो जाती है। प्रारम्भ में धनाभाव में विद्या के मुकदमें की पैरवी ठीक से न हो सकी जिसके कारण उसे जेल जाना पड़ा । विद्या को न्याय के नाम पर फांसी के तख्ते पर लटका दिया जाता,यदि रामआसरे उसकी आर्थिक सहायता न किया होता ।

अपराधी को समाज में हेय-दृष्टि से देखा जाता है और उसके पास-पड़ोस के लोग उससे सम्बन्ध रखने के बजाय समाजिक बहिस्कार करते हैं । यही कारण है कि आज भी भारतवर्ष में बेड़िया,नट,कंजर,करनट आदि अपराधी जातियों का अलग समुदाय बन गया है। इन जातियों में अब भी पुरानी मान्यताएं पूर्वत विद्यमान हैं । रांगेय राघव कृत "कब तक पुकारूं " उपन्यास में जराइम पेशा के अन्तर्गत आने वाली करनट जाति की स्थिति के बारे में लिखा गया है। इनमें करनट जरायम पेशा कहे जाते हैं । इनकी कोई नैतिकता नहीं होती । इनमें मर्द औरत को वेश्या बनाकर उसके द्वारा धन कमाते हैं। ज्यादातर ये लोग चोरी आदि करते हैं और ढोल मढ़ना ,हिरन की खाल बेचना इनका काम है । " 2 प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु से स्पष्ट है कि सुखराम प्यारी,कजरी,करनट जाति के हैं । इनका सामाजिक जीवन अत्यन्त गिरी दशा का है। ये सभी पात्र वैयक्तिक विघटन के शिकार हैं ।क्योंकि सुखराम पुलिस वालों से बचने का प्रयत्न करता है और उसकी पत्नी सुखराम से राय लेकर रुस्तम खां नामक पुलिस की रखैल बनती है। 3,इस अपराधी जाति में अनमेल विवाह,विधवा विवाह,पुनर्विवाह तथा अवैध यौन सम्बन्धों को लेकर उनके समाज में न तो कोई रोक है न तो ये कोई सामाजिक समस्यायें ही हैं। इन अपराधी जातियों का पुलिस द्वारा अधिक से अधिक शोषण किया जाता है ।

---

1:- रांगेय राघव:- राई और पर्वत,पृ0 सं0- 152
राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 1958 ई0

बहुधा अपराध न करने पर भी इन्हें संदेह वश जेल भेज दिया जाता है। जिसके कारण इस वर्ग के लोगों को और अधिक कठिनाई उठानी पड़ती है। वास्तव में इन जातियों के उन्नयन के लिए इनके सामाजिक नियमों एवं नैतिकता में समाज के अनुरूप परिवर्तन आवश्यक है। साप्ताहिक हिन्दुस्तान का 21 दिसम्बर 1975 ई० अंक में प्रकाशित " अपराधी महिलाओं के साथ कुछ क्षण " लेख उपर्युक्त तथ्य की ओर संकेत करता है। इस लेख में एक ऐसी युवती के अपराधिक जीवन का लेखा जोखा है जो अपराध वृत्ति त्यागना चाहती है। परन्तु उस युवती को इस बात का डर है कि क्या कोई पुरुष उसके साथ विवाह करने को राजी होगा और समाज उसे सफल जीवन व्यतीत करने देगा। [1] इस प्रकार के अपराधियों को दण्ड भुगतने के बाद समाज में सफल जीवन व्यतीत करने की समाज में लोगों व प्रशासन द्वारा प्रेरणा एवं प्रोत्साहन मिलना चाहिए तभी अपराधवृत्ति पर नियन्त्रण हो सकेगा।

समाज में सम्मान पूर्ण स्थान न पाने के कारण जहाँ अपराधियों का वैयक्तिक विघटन हो जाता है, वहीं कुछ अपराधियों में से ऐसे भी होते हैं जो उचित संरक्षण पाकर भी अपराध-वृत्ति नहीं त्यागते शिवानी कृत "रति-विलाप" उपन्यास की हीरा एक ऐसी ही अपराधिनी है। कारागृह से छूटने पर आश्रयहीन हीरा को अनसूया अपने घर में रहने की जगह देती है। अवसर पाने पर हीरा धन की लालच में पड़कर अनसूया के श्वसुर की हत्या न करके सारा धन लेकर घर से भाग जाती है। इस उपन्यास

---

1:- साप्ताहिक हिन्दुस्तान :- 21 दिसम्बर 1975 ई०

की कथावस्तु से स्पष्ट होता है कि इस उपन्यास में उपन्यासिका का प्रमुख उद्देश्य हीरा को दण्ड दिलाने के बजाय उसके अपराधों का मानवीय मूल्यों एवं सम्बन्धों के आधार पर आकलन करना है। यही कारण है कि अनसूया यह जानते हुये भी कि उसके श्वसुर की हत्या हीरा ने की है, उसे पुलिस को नहीं सौंपती ।

समाज में शान्ति और सुव्यवस्था स्थापित करने के लिए सरकार ने पुलिस विभाग की स्थापना की है । इस विभाग को देश में शान्ति एवं सुव्यवस्था कायम करने के लिए शासन से विशेष अधिकार मिले हैं । परन्तु पुलिस के कुछ कर्मचारी अधिकार का दुरुपयोग करते है जिससे समाज में अशान्ति एवं अव्यवस्था उत्पन्न होती है । इलाचन्द्र जोशी कृत -जहाज का पंछी, उपन्यास के पुलिस के कर्मचारी बनवारी नामक बदमाश की तलाश के नाम पर बरसाती के यहां छापा मारते हैं और उसकी जवान बेटी के साथ व्यभिचार करते है तथा इस व्यभिचार को दबाने के लिए उस लड़की की हत्या भी कर देते है । 2 कानून की गिरफ्त से बचने के लिए पुलिस वाले

---

1:- { मैं चीखता कैसे पगली, हीरा की करुणाभरी हंसी ने मेरा मुंह फिर बन्द कर दिया था, क्षणभर पहले मेरा नन्हा देवर मुझसे अपने उन परिचित आंखों के भिक्षापात्र में दया की भीख जो मांग गया था। }

शिवानी :- रति विलाप, पृ0 सं -36

राजपाल एण्ड सन्स काश्मीरी गेट दिल्ली, प्रथम संस्करण 1974 ई0

2:- { उस लड़की के साथ जो ज्यादती फिर पुलिस वाले ने की बाबू उसकी दूसरी मिसाल कहीं खोजे नहीं मिलेगी । लड़की की अस्मत और आबरू तो उन लोगो ने बिगाड़ ही डाली, साथ ही लड़की की जान भी ले ली । }

इलाचन्द्र जोशी :- जहाज का पंछी , पृ0 सं0 97

राजकमल ~~एण्ड सन्स~~ प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1955 ई0

उक्त लाश को नदी में प्रवाहित कर देते हैं । पुलिस के इस अत्याचार को बरसाती सह न सका, वह विक्षिप्त हो जाता है जिसके कारण उसकी पारिवारिक व्यवस्था सदा के लिए नष्ट हो जाती है । पुलिस प्रशासन के सामुदायिक विघटन के कारण बरसाती की पुत्री का वैयक्तिक विघटन असामयिक मृत्यु के रूप में होता है । प्रस्तुत उपन्यास का नायक " मैं " निरापराध होते हुए भी पुलिस के द्वारा ठगी के अपराध में न्यायालय भेज दिया जात है । नायक मैं" मजिस्ट्रेट के सामने पुलिस के द्वारा समाज में किए जा रहे अत्याचार के प्रति विक्षोभ व्यक्त करते हुए कहता है । " ऐसा समाज जिसमें पुलिस वालों को इस बात की खुली छूट दे दी गई हो कि किसी भी आदमी को -------- जिस हद तक भी चाहे परेशान कर सके और दो जाली गवाहों को खड़ा करके उसे चोर या खूनी तक साबित कर सके । " । इसी उपन्यास का सी॰आइ॰डी॰का एक अफसर अधिकार का दुरुपयोग के लिए एक षडयन्त्रपूर्ण योजना बनाता है । उक्त अफसर "मैं " को एक होटल में डिनर देता है और उसके बाद एकान्त में लेजाकर उससे कहता है । " तुमने मेरी जेब से पर्स निकाला है,उसे अभी वापस करो । उसमें चार सौ रूपये थे । अगर वापस नहीं करते तो मैं तुम्हें इसी क्षण लाल बाजार थाने में पहुंचाता हूं । तुम्हें पता होना चाहिए कि मैं सी॰आइ॰डी॰ विभाग का एक अफसर हूं । इसलिए थाने में माई वई इन ला । तुम्हारी कोई नहीं सुनेगा । " 2 इस प्रकार कलकत्ता की पुलिस एवं सी॰आई॰डी॰ में व्याप्त भ्रष्टाचार इन विभागों के

==========================================================

1:- इलाचन्द्र जोशी :- जहाज का पंछी, पृ0 सं0- 109
राजकमल प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1955 ई0 ।

2:- वही :- पृ0 सं0- 198

सामुदायिक विघटन को प्रकट करता है ।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि समाज के कुछ अधिकारी शान्ति एवं सुव्यवस्था स्थापित करने में अधिकार का प्रयोग न करके वैयक्तिक स्वार्थों से वशीभूत होकर अधिकार का दुरूपयोग करते हैं । अधिकार के इस दुरूपयोग से समाज में वैयक्तिक, पारिवारिक एवं सामुदायिक विघटन की प्रक्रिया को गति मिलती है ।

सामाजिक संस्थाओं का दुरुपयोग :-

सामाजिक संस्थाओं का निर्माण समाज के सदस्यों के कल्याण एवं विकास के लिए होता है । परन्तु कभी-कभी संस्था के उच्चाधिकारी एवं सदस्य आपस में सांठ-गांठ कर के वैयक्तिक अथवा कुछ सामूहिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए संस्था का दुरुपयोग करने लगते हैं जिसके कारण समाज में अपराधी वृत्ति को प्रोत्साहन मिलता है । इस प्रकार की संस्थाएं प्रत्यक्ष रूप में समाज की हित चिंतक होती हैं परन्तु परोक्ष रूप से समाज विरोधी कार्यों में संलग्न रहती हैं । अमृतलाल नागर कृत "बूंद और समुद्र " उपन्यास में चित्रित महिला सेवा मण्डल उपर्युक्त प्रकार की ही एक संस्था है जिसके अन्तर्गत नारी-उद्धार के बहाने व्यभिचार होता है। वाह्य स्तर पर महिला सेवा मंडल की वार्षिक रिपोर्ट प्रकाशित होती है, विधवा विवाह सम्पन्न कराये जाते हैं परन्तु इस प्रकार प्रतिष्ठा की चहरदीवारी खींचकर महिला सेवा मंडल के भवन के अन्दर मंत्री,कर्मचारियों सदस्यों उनके मित्रों और पुलिस वालों के लिए व्यभिचार का अड्डा चलता है । " 1

इस प्रकार की संस्थाओं का आंतरिक प्रबन्ध इतना गुप्त एवं सुगठित होता है कि साधारण तौर पर किसी भी व्यक्ति को यह अनुमान नहीं हो सकता कि इन संस्थाओं के द्वारा समाज का विघटन हो रहा है। महिला सेवा मंडल के आंतरिक क्रियाकलाप का पर्दाफाश सज्जन के अथक प्रयास से होता है । महिला सेवा मंडल की स्त्रियां साम्प्रदायिक विघटन एवं वैयक्तिक विघटन की शिकार है । इनके वैयक्तिक विघटन का एवं

---

1:- अमृतलाल नागर :- बूंद और समुद्र :- पृ० सं० - 523
किताब महल इलाहाबाद संस्करण 1956 ई० ।

सामुदायिक विघटन का कारण भिन्न-भिन्न है ।

कुछ स्त्रियों के सामुदायिक विघटन एवं वैयक्तिक विघटन का कारण आर्थिक विसंगति है, तो किसी का यौन- अतृप्ति । ।

महिला सेवा मंडल की स्त्रियों की सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि सामाजिक तौर पर इस संस्था में उन्हें आने की पूर्ण छूट होती है जिसके कारण कोई भी उन पर संदेह नहीं करता । " एक बार बुरे जीवन में फंस जाने के कारण नारी का चरित्र क्रान्तिकारी रूप में बदल जाता है । षडयन्त्र

---

।:-। शौकीन पैसे वालियां शौक से आती हैं । उनके पति उन्हें धोखा देते हैं वे अपने पतियों को ।मजबूरी का जीवन बिताने वाली विधवाएं क्रमशः प्रलोभन में पड़कर यहां आती हैं । ------ विधवाएं धर्म चर्चा के बहाने,सिलाई सीखने के बहाने,मजदूरी करने के बहाने यहां आती है। कम आमदनी वाले मध्यम वर्ग की वे युवतियां आती हैं जिनकी चाहत के सपने रियायत भरे होते हैं । ---सिनेमा के आधुनिक दौर से गुजरते हुए आज के कमजोर दिमाग की तरह उनके मन में नए हीरो की तलाश रहती है । ऐसा हीरो की जो उनके पतियों के विपरीत उनके सौन्दर्य और गुणों पर रीझकर उन्हें सुख-सुविधा के हिंडोले पर झुलाये । ---- सज्जन ने देखा कि संगीत नृत्य सीखने के बहाने नई उम्र की लड़कियां भी फंसाकर लाई जाती हैं । जिनके मन में अनुभव न किए हुए सेक्स का प्रचण्ड कौतूहल होता है । वे बड़ी उम्र की युवतियां भी आती है जिनका पैसे की कमी के कारण विवाह नहीं हो पाता । ।

अमृतलाल नागर:- बूंद और समुद्र , पृ0 सं0 -532
किताब महल इलाहाबाद, प्रथम संस्करण , 1956 ई0।

एवं भेद का वातावरण होने के कारण बहुत सी स्त्रियों में संघबद्धता वाली स्थिति अपने-आप फूट पड़ती है । " ।

प्रस्तुत उपन्यास के महिला सेवा मंडल की अध्यक्ष धनवती देवी उक्त संस्था का दुरूपयोग यौन संतुष्टि एवं धनप्राप्ति के लिए करती है तथा इस संस्था में आने वाली सभी स्त्रियां वेश्यावृत्ति अपनाने के कारण वैयक्तिक विघटन की भी शिकार हैं । इस संस्था के सभी लोग संस्था का उपयोग वैयक्तिक स्वार्थों एवं हितों की पूर्ति के लिए करते हैं तथा समाज में असंतुलन उत्पन्न करते हैं । 2 अतः यह कहा जा सकता है कि उक्त संस्था के सभी सदस्यों का वैयक्तिक विघटन हो चुका है ।

गांवो के विकाश के लिये सरकार ने विभिन्न संस्थाओं को खोल रखा है जिसमें गांव सभी व सहकारी समिति मुख्य हैं । इस प्रकार की संस्थाओं के दुरूपयोग एवं असफलता का चित्रण भैरव प्रसाद गुप्त कृत " सत्ती मैया का चौरा" औपन्यासिक कृति में इस प्रकार किया गया है "बीज मिलता है ,परन्तु खेत में न जाकर स्वार्थियों के पेट में जाता है । सभापति के घर में रेडियो बजता है, पंचायती कार्यक्रम चलता है, पर सुनने वाला कोई नहीं----- अखबार और न जाने कितना साहित्य आता है, परन्तु पढ़ने-पढ़ाने वाला कोई नहीं । पंचायत का सेक्रेटरी उनको बटोर कर बनिये के यहां बेंच आता है। 3 गांव पंचायत की उपर्युक्त असफलता सामुदायिक विघटन का द्योतक है ।

===========================================

1:- अमृतलाल नागर :- बूंद और समुद्र ,पृ0 सं0 -532
किताब महल इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1956 ई0 ।

2:- वही :- पृ0 सं0- 523

3:- भैरव प्रसाद गुप्त :- सत्ती मैया का चौरा,पृ0 सं0-624
नीलाम प्रकाशन प्रयाग, प्रथम संस्करण 1959 ई0

बेकारी :-

वर्तमान में बेकारी की समस्या, विश्व की प्रमुख समस्याओं में से एक है । हमारा देश भी इस समस्या से अछूत नहीं है । बेकारी का तात्पर्य व्यक्ति को उसकी योग्यता और क्षमता के अनुकूल चाहते हुए भी काम न मिल पाना है । डा0 स्वर्णलता ने स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य की समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि में बेकारी को वैयक्तिक बेकारी,यांत्रिक बेकारी,मौसमी बेकारी में विभक्त किया है । 1

हमारे देश में बेकारी के समस्या शिक्षितों एवं अशिक्षितों दोनों में व्याप्त है । बेकारी की यह समस्या आंशिक एवं पूर्णकालिक दोनों रूपों में देखने को मिलती है । बेकारी की समस्या उत्पन्न करने वाले कारणों में औद्योगिकरण दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली,जनसंख्या में तेजी से वृद्धि , मशीनीकरण,कृषि की ~~पिछड़ी व्यवस्था~~ पिछड़ी दशा ,तकनीकी का अभाव आदि है ।

रामदरस मिश्र कृत " पानी के प्राचीर " उपन्यास के पाण्डेयपुर गांव का सामुदायिक विघटन बेकारी के उत्पन्न आर्थिक विसंगतियों के कारण होता है । गांव के अधिकांश सदस्य गांव में भरपेट भोजन के अभाव में कोयलारियों का मजदूर बनते हैं ,बैराग्य धारण करते हैं अथवा भिक्षा -वृत्ति अपनाते हैं । पाण्डेयपुर गांव के है । " हाय रे । पाण्डेयपुरवा गांव,तेरी यह हालत । कन्नू पांडे महात्मा बने हुए हैं ।दोनों पक्के गंवार ,किन्तु महात्मा बनकर लोगों को ठग रहे हैं ।

---

1:डा0 स्वर्णलता :- स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य की समाजशास्त्रीय पृष्ठ भूमि , पृ0 सं0 - 232

टीसुन और पांडे में क्या अन्तर दोनों भी मांग रहे हैं । ।
इस प्रकार हम देखते हैं कि कन्नू ,रग्घू ,टीसुन का बेकारी के कारण वैयक्तिक विघटन हो जाता है ।

रामदरश मिश्र कृत " जलटूटता हुआ " उपन्यास कातिवारीपुर गांव बेकारी जन्य विसंगतियों से अभिशाप्त है । तिवारीपुर गांव का रहने वाला सतीश बेकारी के कारण शिक्षा लेना बन्द करके दर-दर नौकरी की टोह में भटकता है । आस-पास नौकरी न मिलने पर सतीश नौकरी की तलाश में कलकत्ता जाता है और वहां से निराश होकर पुन: गांव लौट आता है । बेकारी के कारण उत्पन्न आर्थिक विसंगतियों से जूझते-जूझते उसका आत्मबल टूट जाता है । उसकी मन: स्थिति को उपन्यासकार ने इस प्रकार चित्रित किया है । " वह दरवाजे पर बैठा हुआ अपने सामने बहते हुए सूनेपन को एकटक निरीह आंखों से देखता रहा । सूनेपन की हर लहर जैसे उसकी आंखों के तटपर घोंघा से वार छोड़ जाती और उसका अपना सब कुछ बहा ले जाती है । " 2सतीश की उपर्युक्त निराशपूर्ण स्थिति उसके वैयक्तिक विघटन को प्रकट करता है ।

देवेन्द्र सत्यार्थी कृत " ~~ब्रह्मपुत्र~~ ब्रम्हपुत्र " उपन्यास में यांत्रिकता जन्य बेकारी का चित्रण हुआ है । आर्थिक कठिनाई के कारण बादल के परिवार की सुख शान्ति छिन्न -भिन्न हो जाती है । बादल नाव चलाकर अपने परिवार का भरण-पोषण में समर्थ है परन्तु चैतन को अउसन साहब द्वारा

==========================================

1:- रामदरश मिश्र:- पानी के प्राचीर, पृ0 सं0 - 227
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी,प्रथम संस्करण -1961 ई0

2:- रामदरश मिश्र :- जल टूटता हुआ, पृ0 सं0 -112
हिन्दी प्रचारक संस्थान वाराणसी ,प्रथम संस्करण 1969 ई0 ।

इंजनवाली नौका दिलवा देने पर उसकी आमदनी कम हो जाती है जिससे उसके परिवार को आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता है बादल की आर्थिक तंगी इसके वैयक्तिक विघटन की भी सूचक है ।

उदयराज सिंह कृत " अंधेरे के विरुद्ध " औपन्यासिक कृति में निम्नवर्गीय अशिक्षितों में व्याप्त बेकारी की समस्या के मूल में मशीनीकरण की प्रक्रिया को स्वीकार किया गया है। मशीनों के प्रचलन से श्रमिकों के श्रम की मांग कमजोर पड़ गई है क्योंकि श्रमिक का शारीरिक श्रम मशीनों के श्रम की अपेक्षा मंहगा पड़ता है । प्रस्तुत उपन्यास का निम्नवर्गीय डोमन रिक्शा खींचकर जीविकार्जन करता था,परन्तु आटोरिक्शा चल जाने से उसका जीविकार्जन का यह साधन भी जाता रहा । वह अपनी दयनीय स्थिति के विषय में कहता है । " क्या करूं " बाबूगंज के बाबुओं का तिन-पहिया फिटफिटिया चलने लगे हैं । कहां पैर की सवारी,कहां पेट्रोल की ------गिनना,बचपनमा बेचारे भोर से लेकर रात तक पैर नाचते रहते हैं फिर भी तिनपहिया के आगे पार नहीं पाते ।[1]" ।

दयानाथ झा कृत " जमींदार का बेटा " औपन्यासिक कृति का विनोद एक सुशिक्षित सदस्य नवयुवक है । वह काम करना चाहता है परन्तु उसकी शिक्षा के मुताबिक कोई काम नहीं मिलता । वह गांव में ठाले बैठकर बेकारी के दिन गुजर रहा है। विनोद के मित्र भोला जब उसकी आर्थिक स्थिति पर क्षोभ प्रकट करता है तो विनोद भारत में व्याप्त बेकारी की विभीषिका को स्पष्ट करते हुए कहता है। " यह बात आज के दिन मेरी नहीं है भोला । मुझ जैसे बेशुमार शिक्षितों,

---

1:- उदयराज सिंह :- अंधेरे के विरुद्ध , पृ0 सं0- 186
अशोक प्रेस , प्रथम संस्करण 1970 ई0 ।

अर्द्धशिक्षितों ,अशिक्षितों ,युवकों वयस्कों और वृद्धों तक भी, समानरूप से सबकी है । ----- बेकारी के कारण आज प्रतिदिन का जीवन संघर्षमय बन गया है। देश के नागरिक इसी में जुटे रहते हैं।" विनोद गांव में रहकर ही जीविकोपार्जन करना चाहता है,परन्तु इस कार्य में वह सफल नहीं हो पाता । उसके पास इतने पैसे भी नहीं रहते कि वह ठंडक से बचने के लिए कपड़े सिलवा सके । 2 वह आर्थिक कठिनाई एवं बेकारी से मुक्ति के लिए गांव छोड़कर आगरा में नौकरी कर लेता है । इस प्रकार बेकारी के कारण विनोद के चले जाने से इसके गांव का सामुदायिक विघटन हो जाता है ।

इलाचन्द्र जोशी कृत " जहाज का पंछी " उपन्यास की अमला के पिता को कलकत्ता में बहुत कोशिश करने पर भी जब नौकरी नहीं मिलती तो वह बेकारी की स्थिति से ऊबकर आत्म-हत्या कर लेता है । अलमा के पिता का आत्महत्या कर लेना उसके वैयक्तिक विघटन को प्रकट करता है। पिता की मृत्यु के बाद अलमा को उसका मकान मालिक आर्थिक कठिनाई से बचने के लिए अवैध यौन-सम्बन्ध स्थापित करने के बाध्यकर देता है । मां की मृत्यु के पश्चात अमला अनाथ हो जाती है। ऐसी विषम स्थितियों में "बाड़ी वाली" बहला-फुसलाकर वेश्यावृत्ति में लगा देती है । 3 इस प्रकार बेकारी के कारण अमला का भी अपने पिता के साथ वैयक्तिक विघटन हो जाता है। यही नहीं वेश्यावृत्ति के द्वारा अमला समाज के अन्य लोगों को भी वैयक्तिक विघटन की ओर अग्रसर करती है ।

==================================================

1:- दयानन्द झा :- जमींदार का बेटा, पृ0सं0 - 142 ।
हिन्दी भवन प्रयाग, संस्करण 1959 ई0 ।

2:- वही :- पृ0 सं0 - 192

3:- इलाचन्द्र जोशी :- जहाज का पंछी,पृ0 सं0 309 ।
[illegible] प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1955 ई0 ।

निर्धनता :-

आर्थिक दृष्टि से समाज के सदस्य समान नहीं हैं । समाज के कुछ सदस्यों के पास अकूत धन है तो कुछ सदस्यों को बड़ी मुश्किल से सूखी रोटी मिल पाती है । इस असमानता का मुख्य कारण शारीरिक श्रम की अपेक्षा मानसिक श्रम को विशेष महत्त्व देना, प्रत्येक व्यक्ति की मानसिक एवं शारीरिक कार्यक्षमता का अलग-अलग होना, बेकारी, जनसंख्या के घनत्व में अतिवृद्धि आदि हैं । समाज का विपन्न वर्ग निर्धनता का शिकार है । निर्धन व्यक्ति की आय इतनी अल्प होती है कि वह व्यक्ति अपने परिवार के सदस्यों के भोजन, वस्त्र एवं अन्य सुख-सुविधाओं की पूर्ति में अक्षम होता है जो एक साधारण नागरिक के लिए आवश्यक है । उचित भोजन एवं आवास के अभाव में प्राय: निर्धन व्यक्ति का स्वास्थ्य खराब हो जाता है, रोग लग जाता है और परिणाम स्वरूप व्यक्तिगत पारिवारिक और सामुदायिक विघटन आता है।

---

1:- डी० आर० मदन :- भारतीय सामाजिक समस्याएं , पृ० सं० -204
सरस्वती सदन 7 यू०ए० जवाहर नगर दिल्ली, संस्करण 1969 ई० ।

लक्ष्मीनारायण लाल कृत " बया का घोंसला और सांप" औपन्यासिक कृति की विधवा जमुना निर्धनता की शिकार है । वह गरीबी से मुक्ति के लिए नौकरानी का काम करने लगती है लेकिन तहसीलदार के स्थानान्तरण के कारण उसकी नौकरी छूट जाती है । विवश होकर वह अपने गांव परेना लौट जाती है। निर्धनता से मुक्त होने के लिए जमुना तहसीलदार साहब के यहाँ नौकरी करती है । । सुभागी अपने रूग्ण पति रामानन्द की चिकित्सा व्यवस्था के लिए तहसीलदार साहब के यहाँ नौकरी करती है । तहसीलदार उसकी गरीबी का नाजायज फायदा उठाना चाहता है । अन्तत: सुभागी को तहसीलदार की कामुकता के समक्ष घुटने टेकना पड़ता है । रामानन्द सुभागी की विवशता एवं अपनी पराश्रयिता से ऊबकर आत्महत्या कर लेता है । 2 इस प्रकार निर्धनता के कारण उत्पन्न हीन-भावना के कारण रामानन्द एवं सुभागी का पारिवारिक विघटन हो जाता है ।

सर्वदानन्द कृत " माटी खाई जनावरा" उपन्यास के मुंशी दिलकाश की आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय है । मुंशी दिलकश अपने परिवार के सदस्यों को साधारण भोजन एवं चिकित्सा प्रदान करने में असमर्थ है । धन के अभाव में दिलकश की पुत्री की चिकित्सा नहीं हो पाती अत: वह "बिना पथ्य पानी के मर जाती है । 3 दिलकश की पत्नी अभावग्रस्त जीवन से ऊबकर आत्महत्या लेती है । इस प्रकार हम देखते हैं कि निर्धनता के कारण मुंशी दिलकश की पुत्री एवं पत्नी का वैयक्तिक विघटन तथा मुंशी दिलकश का पारिवारिक विघटन हो जाता है ।

==============================================

1:- लक्ष्मीनारायण लाल :- बया का घोंसला और सांप, पृ0 सं0 -49
नीलाभ प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1953 ई0 ।

2:- वही:- पृ0 सं0 -24

3:- सर्वदानन्द :- माटी खाई जनावरा, पृ0 सं0 159
हिन्दुस्तानी एकेडमी उ0प्र0 इलाहाबाद,प्रथम संस्करण 1960 ई0

उपेन्द्रनाथ अश्क कृत " संघर्ष का सत्य" उपन्यास का जगमोहन एक निर्धन छात्र है । वह आर्थिक कठिनाइयों से जूझते हुए बी0ए0 तक शिक्षा प्राप्त करता है । बी0ए0 पास होने के बाद कवि चातक के सम्पर्क में आकर सांस्कृतिक कार्यक्रम नामक संस्था का महामंत्री बन जाता है । यहीं से वह सत्या नामक सुशिक्षित युवती के सम्पर्क में आता है । जगमोहन एवं सत्या का सम्पर्क अन्ततः गहन प्रेम में परिवर्तित हो जाता है । दोनों एक दूसरे को प्राणपण से चाहने लगते हैं । ट्रिब्यून में प्रकाशित वैवाहिक विज्ञापन के आधार पर सत्या के पिता सत्या का विवाह करना चाहते हैं सत्या इस विवाह की स्वीकृति के पूर्व जगमोहन से विवाह प्रस्ताव रखती है । जब जगमोहन अपनी आर्थिक विवशता प्रकट करता है तब सत्या उससे सगाई कर लेने को ही कहती है । । जगमोहन अपनी आर्थिक विवशता को एक पत्र के माध्यम से सत्या के समक्ष रखता है जो इस प्रकार है " मैं आपको पसंद करता हूं,आपकी इज्जत करता हूं,आपसे मुझे सहानुभूति भी है,लेकिन बात यह है कि मैं विवाह करने की स्थिति में नहीं हूं ।एम0ए0 करने का ख्याल मैंने छोड़ दिया है । क्या करूंगा ,कैसे रहूंगा,इसका कोई ठिकाना नहीं । आपने जो स्नेह दिया,मेरी सहायता का जो आश्वासन दिया,उसके लिए आभार शब्द बहुत छोटा जान पड़ता है । आप इतना स्नेह न करती तो ठीक-ठीक स्थिति से आपको परिचित करने के लिए मैं इतना बेचैन न होता आप मेरा ख्याल छोड़ दीजिये ,आप कहीं विवाह कर लीजिए,। "2 सत्या ट्रिब्यून में विज्ञापित वर से विवाह की मौन स्वीकृति दे देती है और उसका विवाह हो जाता है। परन्तु सत्या के मन में जगमोहन के लिए पूर्वत स्थान बना रहा । जगमोहन के मन में सत्या के प्रति अपनाये गए कठोर व्यवहार के कारण हीन भावना

---

1- उपेन्द्रनाथ अश्क :- संघर्ष का सत्य, पृ0 सं0- 158
नीलाभ प्रकाशन इलाहाबाद, तृतीय संस्करण 1968 ई0

2:- वही :- पृ0 सं0 - 160

उत्पन्न हो जाती है जिससे उसके मस्तिष्क में वैचारिक अन्तर्द्वन्द उत्पन्न हो जाता है और वह चाहते हुए भी रेलवे स्टेशन पर सत्या से न मिल सका। 1

शैलेश मटियानी कृत " दो बूंद जल " उपन्यास की रेशमा नामक स्त्री की आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय है । वह अपने परिवार के भरण पोषण एवं बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था करने में असमर्थ हैं । रेशमा के पास न तो विद्यालय की अच्छी शिक्षा ही है न तो उसे पितृगृह से ही सहयोग प्राप्त है। वैयक्तिक स्तर पर मौटिया काम करके इतना कुछ सम्भव नहीं था कि वह पुत्र सुरेन्दर की समुचित शिक्षा व्यवस्था कर सके । अतः रेशमा भी अपनी अन्य निर्धन साथिनों की भांति वेश्यावृत्ति अपनाए हुए है । 2 वह वेश्यावृत्ति द्वारा अर्जित आय से सुरेन्दर की शिक्षा की व्यवस्था करती है । रेशमा द्वारा वेश्यावृत्ति आर्थिक विवशता के कारण स्वीकार की गयी है क्योंकि वह स्पष्ट शब्दों में कहती है । " सुरेन्दर हाई स्कूल तक पढ़

==========================================

1:- उपेन्द्र नाथ अश्क :- संघर्ष का सत्य पृ0 सं0 - 206
नीलाभ प्रकाशन इलाहाबाद,तृतीय संस्करण 1988 ई0 ।

2:- [अपनी साथिनों की ओर देखती तो रेशमा को लगता कि वह औरतों को नहीं पक्षियों के से झुंड को देख रही है,जो उस पेड़ से काटकर गिराए जा रहे हैं। ऐसे वृक्ष के आस-पास चीं-चीं-चीं चिचियाती उड़ रही हो जिनकी शाखाओं में उनके घोंसले पड़े हुए थे। वे वीरान और गंदे घोंसले जहां बैठकर रेशमा जैसी न जाने कितनी औरतें गौरैया चिड़िया के जैसे झुंड अपने ऊपर लटकाए हुए चमगादड़ों को झेल-झेल कर उन बच्चों के लिए चारा बटोरती थी जो कहीं दूर पहले बसाए हुए घोंसलों में छूटे हुए थे ।
शैलेश मटियानी :- दो बूंद जल, पृ0 सं0 -12
किताब महल इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1966 ई0 ।

लेगा तो सारे मनस्तापों से मुक्ति मिल जाती । आज तक की जिन्दगी में जितना पाप किया है । इनका दण्ड नर्क लोक में जितना मिलता, मिलता मगर इस लोक में आत्मा शीतल हो ही जाती । " । इस प्रकार निर्धनता के कारण रेशमा का वेश्यावृत्ति में प्रवृत्त होना उसके वैयक्तिक विघटन का द्योतक है ।

गिरधर गोपाल कृत" चांदनी के खंडहर " उपन्यास के वसंत के संयुक्त परिवार के विघटन का कारण निर्धनता है। वसंत के पिता उसकी पांच साल की पढ़ाई का खर्च जुटाने के लिए सारा परिवार अपना सर्वस्व अर्पण कर चुका है । तारा के घर की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो जाती है जिसके विषय में तारा स्वयं कहती है, " घर का खर्च । चलता ही रहा किस तरह खींच-खींच कर । चौका-बर्तन करने वाली कहारिन, खाना बनाने वाली महराजिन और कपड़े धोने वाली धोबिन छुड़ा दी गई । पहले बाबू और राजू तांगे पर स्कूल जाते थे । बाबू के स्तीफा देने बाद राजू पैदल स्कूल जाने लगा । घरमें बहुत जरूरी चीजें ही खरीदी जाती थी । खाने पीने कपड़े लत्ते में भी सावधानी बरती जाती थी ।सवेरे दाल रोटी बनती थी ।शाम को तरकारी पराठा । और चीजों का बनना बन्द हो गया। घी की जगह वनस्पति तेल का स्तेमाल किया गया । बच्चों को दूध की जगह चाय दी गई । इसी तरह काट छांटकर खर्चा चलता रहा । " ऊपर की उपर्युक्त स्थिति पारिवारिक विघटन को प्रकट करती है। घर की आर्थिक स्थिति

---

1:- शैलेश मटियानी :- दो बूंद जल पृ0 सं0- 27

किताब महल इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1966 ई0

2:- गिरधर गोपाल :- चांदनी के खण्डहर पृ0 सं0 57

प्रथम संस्करण 1954 ई0 प्रयुक्त सं0 1962 ई0,साहित्य भवन प्रा॰ लि॰ इलाहाबाद

3:- वही :- पृ0 सं0 - 56

को सुधारने के लिए बसंत की माँ दर्जी का काम करने लगती है, परन्तु जब उक्त धंधे से भी घर की आर्थिक स्थिति में सुधार नहीं होता, तब वह आत्महत्या कर लेती है । बसंत की माँ द्वारा की गई आत्महत्या वैयक्तिक विघटन की चरम परिणति है । बसंत के " भैया " की मानसिक स्थिति एवं शारीरिक स्थिति में विघटन के मूल में भी निर्धनता का हाथ है क्योंकि " गृहस्थी के बोझ ने पीस डाला भैया को । भरी जवानी में कमर झुक गई । आँखों में बुढ़ापा झांकने लगा । अपने बच्चों तक में दिल चस्पी लेना बन्द कर दिया है उन्होंने । भाभी से इस तरह व्यवहार करते हैं जैसे पहिचानते ही न हों । " 2

---

1:- (यह कल्पना ही, कि अम्मा को दर्जी की तरह रात-रात भर जाग-कर कपड़े सीने पड़े, मेरे लिए अरुचिकर है । मैं इसे किसी हालत में स्वीकार नहीं कर सकता । लेकिन अम्मा को यह करना पड़ा । मेरी वजह से करना पड़ा और यह करने के बाद भी जब वह घर की हालत न सुधार सकीं तब उन्होंने अपनी हत्या कर ली )

गिरधर गोपाल :- चांदनी के खंडहर पृ० सं० - 127

प्रथम संस्करण 1954 ई० प्रयुक्त सं० 1962 ई, साहित्य भवन, प्रा० लि० इलाहाबाद

2:- वही :- पृ० सं० - 118

शिवप्रसाद सिंह कृत " अलग-अलग वैतरणी " उपन्यास की पुष्पा का विवाह निर्धनता के कारण दुहेजू होता है । ¹ । पुष्पा, गांव के नवयुवक विपिन को प्राणपण से चाहती है । वह विवाह तय होने पर एकान्त में मिलकर विपिन से विवाह प्रस्ताव रखती है परन्तु परम्परित संस्कारों के कारण विपिन पुष्पा से विवाह न कर सका और पैसे के अभाव में पुष्पा अपने अन्तर्मन में विपिन के लिए संजोये हुए भावुक एवं काल्पनिक क्षणों की टीस लिए ससुराल चली जाती है ।

निर्धनता को बढ़ावा देने में बेकारी का विशेष योगदान होता है। बेकारी के कारण निर्धन व्यक्ति और निर्धन हो जाता है। बेकारी से बढ़ने वाली निर्धनता के कारण उत्पन्न सामाजिक विघटन पर बेकारी शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाश डाला गया है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि " " "निर्धनता और बेकारी से स्वास्थ्य खराब हो जाता है, रोग लग जाता है। समाज के सदस्य चोरी, आत्महत्या, हत्या, वेश्यावृत्ति, मदिरापान, आदि विभिन्न अपराध करने लगते हैं जिसके कारण समाज में वैयक्तिक, पारिवारिक एवं सामुदायिक विघटन को प्रश्रय मिलता है ।

## विवाहेतर काम सम्बन्ध :-

सभ्यता के विकास के साथ-साथ स्त्री -पुरुष के काम सम्बन्धों में नियमितता का समावेश हुआ । इस कार्य को सम्पन्न कराने में पारिवारिक

---

1:- शिव प्रसाद सिंह, अलग-अलग वैतरिणी , पृ0 सं0 -558
लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1987 ई0

व्यवस्था की आकांक्षा तथा विवाह सम्बन्धी नैतिक ,धार्मिक,एवं व्यावहारिक मान्यताओं ने विशेष भूमिका निभाई है । समाज में काम -सम्बन्धों के प्रति यह धारणा बनी कि कोई भी सदस्य काम-सम्बन्ध बिना विवाह किए किसी के साथ न स्थापित करें तथा विवाह कर लेने के पश्चात विवाहित साथी के अतिरिक्त किसी अन्य के साथ यौन सम्पर्क स्थापित न करें। यदि कोई सदस्य उपर्युक्त अवधारणा की अवहेलना करता है तो उसका ऐसा करना व्यावहारिक ,नैतिक,धार्मिक एवं संवैधानिक सभी दृष्टि से हेय एवं दण्डनीय है । "पति या पत्नी के काम सम्बन्ध यदि विवाह से पहले किसी से रह चुके हैं अथवा विवाह के बाद किसी अन्य से विकसित हो जाते हैं तो यह स्थिति पति-पत्नी के सम्बन्धों के लिए बड़ी घातक सिद्ध होती है। " । यही कारण है कि समाज में विवाहेतर काम सम्बन्ध स्थापित करने वाले लोग ऐसे सम्बन्ध गोपनीय ढ़ंग से करने का भरसक प्रयत्न करते हैं । अध्ययन की सुविधा के लिए विवाहेतर काम सम्बन्धों को विवाह -पूर्व काम सम्बन्ध एवं विवाह के बाद काम सम्बन्ध दो खण्डों में विभक्त किया जा सकता है।

विवाह पूर्व काम सम्बन्ध :-

भारतीय समाज में विवाह पूर्व काम सम्बन्ध को पूर्णत: अनैतिक माना गया है । परन्तु कुछ स्त्री -पुरुष कुछ विशेष कारणों वश विवाह पूर्व काम सम्बन्ध छिपाकर स्थापित करते हैं । परन्तु किसी

---

1:- डा० वीरेन्द्र सक्सेना :- काम सम्बन्धों का यथार्थ और समकालीन हिन्दी कहानी , पृ० सं० 147
साहित्य भारतीय दिल्ली, प्रथम संस्करण 1975 ई० ।

पूर्व काम सम्बन्ध छिपाकर स्थापित करते हैं। परन्तु किसी कारण से जब यह भेद खुल जाता है तो समाज में उसकी स्थिति अत्यन्त घृणित एवं हेय हो जाती है । ऐसे सदस्यों का समाज में विवाह होने में बड़ी कठिनाई होती है । समाज की ओर से इस संबंध में पुरुषों को कुछ छूट मिल जाती है परन्तु स्त्री के लिए विवाह पूर्व काम सम्बन्ध स्थापित करना घोरापराध है ।

मार्कण्डेय कृत " सेमल के फूल " औपन्यासिक कृति की कथा वस्तु से ज्ञात होता है कि नीलम की मृत्यु का मुख्य कारण विवाह पूर्व काम सम्बन्ध है । नीलम अपने किशोर साथी सुमंगल को प्रेम करती है,सुमंगल भी उसे चाहता है । परन्तु जब नीलम ने सुमंगल के समक्ष विवाह प्रस्ताव रखा तो वह उदास हो गया । नीलम ने सुमंगल की उदासी को बड़ी गहराई से आंकते हुए व्यक्त किया है । " शायद तुम ऊब जाओ मुझसे ---- शायद तुम्हारे प्रकाशमान भविष्य की सम्भावनाएं कम हो जाय । शायद मेरे कारण कोई बाधा आए तुम्हारे मार्ग में ---- शायद मैं उतनी योग्य नहीं , यही सब न । "[1] । नीलम । उपर्युक्त धारणा के कारण अन्यत्र विवाह कर लेती है। परन्तु नीलम का वैवाहिक जीवन सुखमय न बन सका,वह सुमंगल की यादों में तिल-तिल जलती रही । नीलम के मन में निराशा का संचार सुमंगल द्वारा अपनाए गए जीवन दर्शन से होता है। नीलम को अपने से अधिक सुमंगल की चिंता है । इसी चिंता के कारण वह क्षय-रोग से ग्रसित होकर असामयिक मृत्यु प्राप्त करती है तथा नीलम की याद में सुमंगल

---

1:- मार्कण्डेय :- सेमल के फूल , पृ0 सं0 -86

नं0सा0 प्र0 मिन्टोरोड इलाहाबाद,द्वितीय संस्करण 1963 ई0

अपनी स्वाभाविक वृत्तियों को बदलकर वैयक्तिक स्तर पर बिखर जाता है ।

राही मासूम रजाकृत " दिल एक सादा कागज " औपन्यासिक कृति के जनरल न्याजी की इस्लामी फौज के सिपाहियों ने शहरबानों के साथ बलात्कार करके उसके अक्षत/कौमार्य को भंगकर देते हैं तथा शहरबानों विवाह के पूर्व ही मां बनने वाली हो जाती है । "2

शैलेश मटियानी कृत " दो बूंद जल " उपन्यास का मास्टर शिववल्लभ रेशमा नामक युवती से यौन-संतुष्टि के लिए उसे मास्टरनी बनवा देने का प्रलोभन देता है । रेशमा को इस झूठे आश्वासन के नाम पर अपने कौमार्यत्व की आहुति करनी पड़ी है तथा शिववल्लभ द्वारा उत्पन्न जारज संतान को कोख से निकलते ही धरती में दबाना पड़ता है । 3

---

1:- { तुम अपने स्वाभाविक वृत्तियों की प्रक्रिया में अपने को जला रहे हो, अपनी शक्तियों का नाश कर रहे हो । मुझसे खूब याद है ---- यह सब तो केवल मुझे भूलने का बहाना मात्र है। मेरी ही तरह अपने रक्त -मांस को जलाकर खाक करने का उपाय है । }

मार्कण्डेय :- सेमल के फूल , पृ0 सं0 83

नव साहित्य प्रकाशन मिन्टोरोड,इलाहाबाद द्वितीय संस्करण 1963 ई0

2:- {भाई भानू के साथ शहरबानों भी आई थी। हू-ब-हू जन्नत बाजी जैसी थी ।जनरल न्याजी की इस्लामी फौज के सिपाहियों ने इसके साथ कई रातें गुजारी थी । और वह मां बनने वाली थी और उसके कुंवारेपन की जिल्लत की कहानी उसके चेहरे पर जैसे उर्दू लिपि में लिखी हुई थी क्योंकि रफ्फन ने उसे साफ-साफ पढ़ लिया था । }

राही मासूम रजा:- दिल एक सादा कागज,पृ0सं0 210-211

प्रथम संस्करण 1973 ई0 पुनुक्त संस्करण 1984 ई0 राजकमल प्र॰प्रा॰लि॰दिल्ली

3:- शैलेश मटियानी :- दो बूंद जल ,पृ0 सं0 -99

[illegible] संस्करण 1966 ई0

अविवाहित दशा में ही रेशमा सुरेन्दर एवं चम्पा नामक दो बच्चों की मां बन जाती है । 1 वह अपने इन दोनों संतानों के कारण पोषण के लिए एक होटल वाले के यहां बैठ जाती है परन्तु कालान्तर में उसका प्रेमी यह कहकर उसका [रेशमा] परित्याग कर देता है कि " जब से तुझे लाया हूं होटल में बीच कौम के अलावा कोई नहीं आता । " 2 इस प्रकार आश्रयहीन होकर रेशमा अपने बच्चों के भरण-पोषण के लिए वेश्यावृत्ति अपनाती है । 3

डा0 देवराज कृत " दोहरी आग की लपट " उपन्यास के मनोज नामक व्यक्ति के वैयक्तिक विघटन का कारण विवाहपूर्व काम-सम्बन्ध स्थापित करने में असफल होना है । मनोज विद्यार्थी जीवन में युवा सहपाठिनी इरा के साथ एकान्त में यौन-सम्बन्ध स्थापित करना चाहता है । इरा का कोई विरोध न होने पर भी मनोज अपनी अत्यधिक उत्तेजना के कारण असफल हो जाता है । 4 इस असफलता का मनोज पर बुरा असर पड़ता है,वह अपने आपको पुंसत्वहीन समझने लगता है जिसके कारण वह पुन: इरा के आमंत्रण को स्वीकार न कर सका । मनोज के पुंसत्वहीन होने की हीन-भावना उसे विवाह से वंचित करके उसका वैयक्तिक विघटन कर देती है ।

---

1:- शैलेश मटियानी :- दो बूंद जल, पृ0 सं0 - 89
किताब महल इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1966 ई0

2:- वहीं :- पृ0 सं0 - 89

3:- वही :- पृ0 सं0 -11

4:- डा0 देवराज :- दोहरी आग की लपट, पृ0 सं0 -22
राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 1973 ई0 ।

कुछ लोग अविवाहित युवती से काम सम्बन्ध स्थापित करने के लिए उसे सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि या आर्थिक लाभ का प्रलोभन देते हैं। प्रलोभन के चक्कर में न पड़ने के कारण अवसर प्राप्त होने पर युवती के साथ बलात्कार करने में नहीं चूकते । राही मासूम रजा कृत " दिल एक सादा कागज " के "चीफ साहब" शारदा के चुस्त बदन । चुस्त कपड़े, चुस्त उम्र, ईर्द-गिर्द का चुस्त सन्नाटा देकर उसे अपनी कार में बैठाकर उसे घर छोड़ने की औपचारिकता करते हैं ।1 शारदा चीफ साहब के षड्यन्त्र को न समझ सकी । पहले तो चीफ साहब शारदा को पदोन्नति का प्रलोभन देते हैं कि --------फिर हिरोइन बना देने का । 2 फिर शारदा के साथ बलात्कार करता है। 3 चीफ साहब की उपर्युक्त दशा उसके वैयक्तिक विघटन का सूचक है ।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि विवाह पूर्व काम -सम्बन्ध अपने आपमें सामाजिक विघटन का कारण और परिणाम दोनों है । कारण इस अर्थ में है कि विवाह पूर्व काम सम्बन्ध के फलस्वरूप समाज में हीन-भावना ,ईर्ष्या तथा अन्य विभिन्न अपराधों जैसे वेश्यावृत्ति ,हत्या, आत्महत्या आदि को प्रश्रय मिलता है। परिणाम इस अर्थ में है कि विवाह पूर्व काम सम्बन्ध स्थापित करने की समाजिक स्वीकृति नहीं है। अत: सामाजिक स्वीकृति के विपरीत विवाह पूर्व काम-सम्बन्ध स्थापित करना सामाजिक विघटन को प्रश्रय देना है ।

---

1:- राही मासूम रजा :-दिल एक सादा कागज , पृ० सं० -182
प्रथम संस्करण 1973 ई० प्रयुक्त संस्करण 1984 ई०, राजकमल प्र०प्रा० लि०नेताजीसुभाष मार्ग दिल्ली ।

2:- वही = पृ० सं०- 183

3:- वही:- पृ० सं०- 183

विवाह के बाद काम-सम्बन्ध :-

भारतीय पारिवारिक एवं वैवाहिक व्यवस्था के अनुसार ही नहीं अपितु संवैधानिक ढंग से भी विवाहित साथी के अतिरिक्त किसी अन्य से यौन-सन्तुष्टि प्राप्त करना अपराध है । प्राय: समाज के सभी सदस्य उपर्युक्त नियम का व्यावहारिक स्तर पर पालन करते हैं, परन्तु उनमें से कुछ सदस्य ऐसे होते हैं जो विवाहित साथी के अतिरिक्त किसी अन्य से यौन-सम्पर्क करते हैं, परन्तु इस प्रकार के लोगों का भरसक प्रयत्न रहता है कि उनके ये सम्बन्ध गोपनीय रहें क्योंकि " विवाह पूर्व काम-सम्बन्धों की भांति ही यदि पति या पत्नी के विवाहेतर काम-सम्बन्धों की जानकारी एक दूसरे को हो जाती है तो उसके मन में एक ग्रन्थि उत्पन्न हो जाती है। परिणाम यह होता है कि पति-पत्नी के परस्पर सम्बन्धों में एक दरार सी पड़ने लगती है। कभी-कभी तो यह दरार मात्र संदेह के कारण भी उत्पन्न हो जाती है। " । यही कारण है कि नगरों में रहने वाले पति अथवा पत्नियां इसलिए इस बारे में पूरी सावधानी बरतते हैं कि उनके इतर काम-सम्बन्धों के बारे में उनके विवाहित साथी को कोई जानकारी न हो पाए । 2

विवाह के पश्चात अन्यत्र काम-सम्बन्ध स्थापित करने वाले लोगों में से अधिकांश सदस्य ऐसे होते हैं जिनकी यौन-क्षुधा विवाहित साथी से नहीं बुझ पाती अथवा शारीरिक या मानसिक रूप से यौन विकृति के शिकार होते हैं ।

---

1:- डा० विरेन्द्र सक्सेना :- काम सम्बन्धों का यथार्थ और समकालीन हिन्दी कहानी , पृ० सं०- 149

साहित्य भारतीय दिल्ली, प्रथम संस्करण 1975 ई० ।

2:- वही:- पृ० सं०- 147

लक्ष्मीनारायण लाल कृत " बड़के भैया " उपन्यास की कथावस्तु से ज्ञात होता है कि बड़के भैया और दुलारी का विवाहित साथी के अतिरिक्त अन्य यौन-सम्बन्ध है । दुलारी और बड़के भैया के इस अवैध सम्बन्ध का मुख्य कारण दोनों का विवाहित साथी से यौन-संतुष्टि न मिलना है । दुलारी बड़के भैया के समक्ष स्वीकार करती है कि " जइसे तोहार मन सखी से नाही भरत वैइसे हमार मन हमरे ठाकुर से पूर नहीं होत। " । दुलारी को बड़के भैया से अवैध गर्भ रह जाता है। दुलारी इस अवैध गर्भ से मुक्त होने के लिए बड़के भैया के साथ शहर जाती है । शहर जाते समय गाड़ी में बड़के भैया का मित्र ठाकुर दुलारी के साथ बलात्कार करना चाहता है । दुलारी के प्रतिरोध करने पर गुस्से में आकर ठाकुर ने दुलारी को चलती गाड़ी के नीचे ढकेल दिया और दुलारी की दुखद मृत्यु हो जाती है। 2 दुलारी की मृत्यु के कारण दुलारी के परिवार का विघटन हो जाताहै।

शैलेश मटियानी कृत" किस्सा नर्मदाबेन गंगू बाई" औपन्यासिक कृति की गंगू बाई विवाहित होने पर भी अन्य कई लोगों से समय-समय पर यौन सम्बन्धस्थापित करती है। गंगूबाई द्वारा विवाहेतर काम-सम्बन्ध स्थापित करने का मुख्य कारण उसके पति नगीन भाई का शीघ्र स्खलित होना है। 3 नगीन भाई शीघ्र-स्खलन के कारण उत्पन्न कुंठा एवं पत्नी के साथ स्थापित असफल काम-सम्बन्ध से उत्पन्न हीन भावना से मुक्त होने के लिए वेश्यागामी हो जाता है । 4 इस प्रकार नगीनभाई का वैयक्तिक विघटन हो जाता है ।

---

1:- लक्ष्मीनारायण लाल= बड़के भैया , पृ0 सं0- 18
साहित्य भवन इलाहाबाद,प्रथम संस्करण 1973 ई0

2:- वही:- पृ0 सं0 - 23

3:- शैलेश मटियानी :- किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई , पृ0 सं0-14
आत्मा राम एण्ड सन्स दिल्ली,प्रथम संस्करण 1961 ई0

4:- वही :- पृ0 सं0- 17

नर्मदाबेन अतृप्त यौन भावना की क्षतिपूर्ति बांसुरी वादक से करती है, बांसुरी वादक से उसे पुत्र भी उत्पन्न होता है। नगीन बाई कुल की लज्जा की रक्षा के लिए बांसुरीवादक की गुप्त रूप से हत्या करवा देता है । इस प्रकार बांसुरीवादक का वैयक्तिक विघटन हो जाता है। नर्मदाबेन कई युवकों से यौन-सम्बन्ध स्थापित करती है परन्तु उसको मानसिक शान्ति नहीं मिलती । 1। नर्मदाबेन को मानसिक शान्ति न मिलना उसके वैयक्तिक विघटन को प्रकट करता है ।

रांगेय राघव कृत " राई और पर्वत "उपन्यास की फूलों का विवाह वृद्ध व्यक्ति से होती है जिसके कारण उसे यौन- संतुष्टि नहीं मिलती । फलत: फूलों अपने बाल साथी हरदेव को अपने पास बुलाती हैऔर हरदेव के साथ यौनसम्बन्ध स्थापित करने में बाधक होने वाले देवर एवं पुत्री को निश्चित योजनानुसार रास्ते से अलग कर देती है । 2 इस योजना के अनुसार की गई देवर की हत्या वैयक्तिक विघटन को प्रकट करता है ।

==================================================

1:-‖ मैंने रुपयों से मर्द खरीदे हैं, पर खरीदे हुए मर्दों को ऐसे छोड़ भी दिया है जैसे खाने के बाद कोई अपनी जूठी थाली ।‖उनको तन यौवन सौंपने के बाद भी उन्हें रोकने का जी नहीं हुआ ।‖

प्रो0 मटियानी:- किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई,पृ0 सं0-92

आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली प्रथम संस्करण 1961 ई0 ।

2:-‖ तब हरदेव ने कहा लड़की का ब्याह कर दे - - - - मैं लड़का देख डालता हूं - - - - - तब फूलों के हाथ इसने जहर दे दिया और उसने धीरे-धीरे खिलाकर चाचा को खतम करके रास्ता साफ कर दिया।‖

रांगेयराघव :- राई और पर्वत , पृ0 सं0-190

राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली,प्रथम संस्करण 1958 ई0 ।

समसामयिक भौतिकवादी परिवेश एवं पूँजीवादी व्यवस्था के विकास ने दैनिक जीवन के उपयोग में आने वाली वस्तुओं की संख्या में तेजी से वृद्धि की है जिसके कारण साधारण परिवार का सदस्य परिवार के लोगों की सभी आवश्यक आवश्यकताओं को पूरा करने में कठिनाई महसूस करता है। अतः समाज की कुछ स्त्रियां परिवार की आर्थिक कठिनाई को दूर करने के लिए पति के अतिरिक्त अन्य पुरुषों से भी यौन सम्बन्ध स्थापित करती हैं ।

शैलेश मटियानी कृत " दो बूंद जल " उपन्यास की रेशमा परिवार को आर्थिक कठिनाई से उबारने एवं बच्चों की समुचित शिक्षा की व्यवस्था के लिए वेश्यावृत्ति अपना लेती है। इसके अतिरिक्त समाज में कुछ ऐसी स्त्रियां ऐसी भी हैं जो धनप्राप्ति के लिए दूसरी सीधी-साधी युवतियों को फुसलाकर वेश्यावृत्ति करवाती हैं । अमृत लाल नागर कृत "बूंद और समुद्र," उपन्यास की नन्दो तथा विधवाश्रम की संचालिका धनपती देवी उपर्युक्त वर्ग के अन्तर्गत आती हैं । नन्दो धनप्राप्ति के लिए अपनी सगी भाभी को बिरहेश नामक कवि से यौन-सम्बन्ध स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करती है। विरहेश से पर्याप्त रुपये न मिलने पर नन्दो उसकी घड़ी रखवा लेती है । । दूसरे दिन नन्दो विरहेश के हाथ में पचास रुपये मात्र देखकर क्रोधित हो जाती है और विरहेश एवं बड़ी के इस प्रेम काण्ड का जिक्र भाई मनिया से कर देती है। 2 साथ ही साथ विरहेश द्वारा बड़ी के लिए लिखे गये पत्रों को बड़ी के पास से पकड़वा देती है । बड़ी का पति इस अनैतिक सम्बन्ध से विक्षुब्ध होकर बड़ी की पिटाई करता है और उसे घर से निकाल देता है । इस प्रकार मनिया के परिवार का विघटन हो जाता है ।

---

1:- अमृतलाल नागर :- बूंद और समुद्र ,पृ0 सं0 314,किताबमहल इलाहाबाद संस्करण 1956 ई0 ।

2:- ﴾ हमें मां बाप सब प्यारे हैं,ई तो जो लुगाई अपने खसम को धोखा दे के पराये मर्द से आंख लड़ाये वही अपने मरद को मारने के चरित्तर कर सकती होगी । ﴿

उपर्युक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि विवाहेतर काम-सम्बन्ध भी सामाजिक विघटन उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण एवं सक्रिय भूमिका निभाता है।[1]

## वेश्यावृत्ति :-

वेश्यावृत्ति को महिला एवं बालिका अनैतिक व्यापार अधिनियम के अन्तर्गत इस प्रकार पारिभाषित किया गया है - " किसी भी स्त्री का अपने शरीर को अनैतिक व्यभिचार के लिए नकद दाम पर या किसी वस्तु या सेवा के बदले किराये पर देना वेश्यावृत्ति है । " । कानूनीतौर पर भारतीय समाज में वेश्यावृत्ति घोरापराध है, परन्तु पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण परिवर्तित नैतिक मूल्य ,औद्योगिकरण, परिवार नियोजन एवं गर्भपात की समुचित व्यवस्था आदि से प्रभावित होकर वेश्यावृत्ति भारतीय समाज में नए रूप में प्रकट हुई है। वेश्यावृत्ति को कागजी कानून के निर्माण से नहीं रोका जा सकता क्योंकि वेश्यावृत्ति को गतिमान करने में आर्थिक सुदृढ़ता जिसके प्रतिफल स्वरूप फैशन परस्तता,विलासप्रियता आदि प्रवृत्तियां उजागर होती है,क्योंकि प्राय: सभी पाश्चात्यदेशों में जहां-जहां पूँजीवादी व्यवस्थाएं हैं वेश्यावृत्ति में अभिवृद्धि ही हुई है,कमी नहीं । 2

समाज में वेश्यावृत्ति को प्रोत्साहित करने के लिए ~~पुरुष~~ पुरुष की अवसरवादिता स्त्री की सामाजिक एवं आर्थिक विवशता मुख्य रूप से जिम्मेदार है।

---

1:- साप्ताहिक हिन्दुस्तान,29 जुलाई,1973 ई0 पृ0 सं0 -24
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, नई दिल्ली ।

2:- डा0 वीरेन्द्र सक्सेना:- काम-सम्बन्धों का यथार्थ और समसामयिक हिन्दी कहानी पृ0 सं0- 187
साहित्य भारतीय दिल्ली, प्रथम संस्करण 1975 ई0 ।

आर्थिक दृष्टिकोण से असंतुष्ट ॥ यह असंतोष निम्न, मध्य,उच्च किसी भी वर्ग की स्त्री में हो सकता है । ॥ स्त्री बड़ी आसानी से अपने रूप लावन्य के आकर्षण के द्वारा पुरूषों से रूपये ऐंठ लेती है। ए.सी.किंग्रे के अनुसार " अधिकांश पुरूष वेश्याओं के पास इसलिए जाते हैं क्योंकि उनके कामतुष्टि के अन्यमार्ग ~~अवरुद्ध~~ अवरुद्ध होते हैं । उनमें से कुछ पुरूष वेश्यागामी इसलिए होते हैं क्योंकि उनके साथ मनचाहे ढंग से यौनाचार कर सकते हैं तो कुछ पुरूष नये साथी एवं नवीनता की खोज में , तो कुछ पुरूष वेश्यागमन करने केवल उत्सुकतावश चले जाते हैं । इसी भांति समाज के प्रत्येक वर्ग के कुछ सदस्य वेश्याओं के पास इसलिए भी जाते हैं क्योंकि उन्हें प्राप्त करना अपेक्षाकृत सरल व सस्ता है 1" ।

स्त्रियों द्वारा वेश्यावृत्ति अपनाने के कारण अमृतलाल नागर कृत "बूंद और समुद्र " नामक उपन्यास में विवेचित है। प्रस्तुत उपन्यास के महिला सेवा मंडल नामक संस्था में सामूहिक रूप से वेश्यावृत्ति को प्रश्रय प्राप्त है ।इस सेवा मंडल में "शौकीन पैसेवालियां शौक से आती हैं, उनके पति उन्हें धोखा देते हैं,वे अपने पतियों को । मजबूरियों का जीवन बिताने वाली विधवाएं ~~क्रमशः~~ क्रमशः प्रलोभन में पड़कर यहां आती हैं । हमारे सामाजिक संगठन में विधवा की स्थिति प्राय: ऐसी होती है कि वह धन और मन दोनों से वंचित कर दी जाती है । विधवाएं धर्म चर्चा के बहाने, सिलाई सीखने और मजदूरी करने के बहाने यहां आती हैं । कम आमदनी वाले मध्यवर्ग की वे युवतियां आती हैं जिनकी चाहत के सपने जमाने के प्रभाव से रियासत भरे होते हैं । मैके में सोचती हैं कि पति के पैसे से ऐसा करेंगी मगर आमतौर पर यह नसीब सब को नहीं मिलता । अधिकतर युवतियां अपने पतियों की आर्थिक सीमाओं से

---

1:-डा0 वीरेन्द्र सक्सेना:- काम सम्बन्धों का यथार्थ और समकालीन हिन्दी कहानी , पृ0 सं0- 51
साहित्यकार भारती कृष्ण नगर दिल्ली,प्रथम संस्करण 1975 ई0 ।

बंधकर त्रस्त रहा करती है । दिन-रात अपने घर में कलह करती हुई वे अतृप्तियों से भरी रहती है । सिनेमा के आधुनिक दौर से गुजरते हुए आज के कमजोर दिमाग की तरह उनके मन में नए हीरो की तलाश रहती है। ------ऐसा हीरो कि जो उनके पतियों के विपरीत उनके सौन्दर्य और गुणों पर रीझकर उन्हें सुख-सुविधाओं के हिंडोले झुलाए ।सज्जन ने देखा कि नृत्य सीखने के बहाने इस मंडल में ऐसी नई उम्र की लड़कियां भी फंसाकर लाई जाती हैं कि जिनके मन में अनुभव न किए हुए सेक्स प्रचंड कौतूहल होता है । वे बड़ी उम्र की युवतियां भी आती हैं जिनका पैसे की कमी के कारण विवाह नहीं हो पाता । " ।

वेश्यावृत्ति चाहे किन्हीं भी कारणों से अपनाई गई हो, सामाजिक विघटन की सूचक है । वेश्यावृत्ति वैयक्तिक विघटन का एक प्रमुख रूप है क्योंकि ऐसे लोगों का वैयक्तिक सामाजिक संगठन के अनुरूप न रहकर असंतुलित एवं विखंडित होता है । वेश्यावृत्ति वैयक्तिक विघटन के साथ-साथ पारिवारिक विघटन के लिए भी बहुधा जिम्मेदार होती है। वेश्यागामी सदस्य पारिवारिक ~~वैवाहिक~~ सम्बन्धों के प्रति उदासीन हो जाता है,पति -पत्नी के सम्बन्धों में तनाव व कटुता आजाती है जिसके कारण कभी-कभी परिवार विखंडित हो जाता है। वेश्यावृत्ति से सामुदायिक विघटन भी आता है क्योंकि इससे कुछ छूत की बीमारियां फैल जाती हैं और इसकारण सामाजिक समस्याएं भी बढ़ती जाती हैं । जैसा कि इलियट और मैरिल ने बताया है -बीमारियां बहुत ही अधिक सामाजिक महत्व की हैं क्योंकि इनसे

---

1:= अमृतलाल नागर :- बूंद और समुद्र , पृ० सं० - 532
किताब महल इलाहाबाद, संस्करण 1956 ई० ।

समाज में बड़े पैमाने पर बीमारी फैल सकती है जो बहुत सी सामाजिक समस्याओं का मुख्य और मूल स्त्रोत होती है । इस प्रकार की बीमारियां पागलपन, अन्धापन और पोलियों जैसे भयानक रोगों की जननी होती हैं।" ।

इलाचन्द्र जोशी कृत " जहाज का पंछी " नामक उपन्यास में कलकत्ता महानगरी में व्याप्त वेश्यावृत्ति का चित्रण हुआ है । उपन्यास का नायक मैं घूमते-घूमते महानगर कलकत्ता के वेश्यालय में पहुंच जाता है ।नायक मैं" उसी मोहल्ले में एक सभ्य योरोपियन के यहाँ खाना बनाने की नौकरी करने लगता है । बाद में नायक को पता चलता है कि उक्त योरोपियन स्त्री कोई और नहीं बल्कि कई लड़कियों से पेशा करवाकर उनके कमाई पर गुलछर्रे उड़ाने वाली साइमन नामक युवती है । 2 मिस साइमन का वेश्यालय योजनाबद्ध तरीके से चल रहा था क्योंकि उसे लड़कियों को फुसलाने,बहकाने के सभी लटके ज्ञात थे साथ ही साथ पुलिस भी उसके मदद के लिए तैयार रहती थी ।उसके यहाँ जुलेखा,अमला,सुजान सुखिया, आदि कई युवतियां वेश्यावृत्ति में फंसी थी। योजनाबद्ध तरीके से स्लो-प्वाइजन देकर मिस साइमन की हत्या करवा देता है । 3 इस प्रकार जुलेखा ,सुखिया एवं अमला को वेश्यावृत्ति के नारकीय जीवन से छुट्टी मिल जाती है ।

सर्वदानन्द कृत " माटी खाई जनावरा " औपन्यासिक कृति की कृष्णा अतुल सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए बम्बई में चकला चलाती थी। उसके चकले में

---

1:- बी॰आर॰मदन:- भारतीय सामाजिक समस्याएं , पृ0 सं0-191
सरस्वती सदन 7 यू0ए0जवाहर नगर दिल्ली,संस्करण 1969 ई0

2:- इलाचन्द्र जोशी:- जहाज का पंछी,पृ0 सं0-333
राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण 1955 ई0

3:- वही :- पृ0 सं0 -332

आने वाली स्त्रियां अच्छे-अच्छे घरों की थी सेठानियां और पढ़ी लिखी बहुआइने, कालेज और स्कूल की छात्राएं ,मास्टराणियां । सब अपनी मर्जी से आती थी । तेहर से तैतीस तक की । [1] । समाज में इस प्रकार के चल रहे चकलों की पुष्टि 12 फरवरी 1976 ई0 के चहक साप्ताहिक में प्रकाशित एक सर्वेक्षण से भी होता है । इस सर्वेक्षण से प्रकट होता है कि वेश्याओं को भी सम्भ्रान्त ,ग्लैमर परस्त व सड़क छाप वेश्याओं में वर्गीकृत किया जा सकता है । दुर्भाग्य की बात तो यह है कि इस लेख में उल्लीखित एवं व्याख्यायित एक भी महिला [केवल खरीदी हुयी को छोड़कर] अपने को वेश्या मानने के लिए तैयार नहीं । इस संदर्भ में इनका तर्क है कि " हम तो घर में रहती है, अपने मां-बाप भाई-बहन पति के साथ । फिर वेश्या कैसे हो गई । " [2]

आत्म -हत्या :-

समाज का प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक मान्यताओं के साथ समायोजन किए हुए, शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहता है,परन्तु जब वह मान्य तरीकों से अपने आपको समायोजित नहीं कर पाता तो विभिन्न प्रकार के अपराधों को अपनाने की कोशिश करता है । चोरी,हत्या, डाकाजनी आदि की भांति आत्म-हत्या भी एक भयंकर अपराध है ।

जब व्यक्ति समाज के संघर्ष करने में अपने आपको थका हुआ महसूस करने लगता है तथा उसका मानसिक अन्तर्द्वन्द इस सीमा पर पहुंच जाता

---

1:- सर्वदानन्द :- माटी खाई जनावरा, पृ0 सं0 - 163
हिन्दुस्तानी एकेडमी उ0प्र0 इलाहाबाद,प्रथम संस्करण 1960 ई0

2:- चहक साप्ताहिक , 12 फरवरी 1976 ई0 ,प्रधान सम्पादक चन्द्र कुमार शर्मा कार्यालय-बी0-181 जनता कालोनी जबलपुर ।

है कि उसका संसार से ही नहीं अपने आपसे विश्वास उठ जाता है तब वह आत्महत्या करने की कोशिश करता है । अधिकांश विद्वानों की मान्यता है कि व्यक्ति मानसिक अस्वस्थता, वंशानुसंक्रमण, प्रेम-सम्बन्धों में असफलता, निर्धनता अवैध संतान आदि से प्रेरित होकर आत्महत्या करता है परन्तु प्रसिद्ध समाजशास्त्री दुर्खीम का अनुमान है कि "आत्महत्या मूलरूप में एक सामाजिक घटना है । यह सच है कि कुछ लोग उपर्युक्त वैयक्तिक कारणों से भी आत्महत्या करते हैं परन्तु आत्महत्या की सामान्य व्याख्या इन कारणों के आधार पर नहीं की जा सकती ।आत्महत्या व्यक्ति पर समाज समाज या समूह अस्वस्थ दबाव की ही फल होता है। " ।

यह सत्य है कि प्रत्यक्ष में आत्महत्या किसी दूसरे का अनिष्ठ नहीं करता है, परन्तु परोक्ष में वह अपने परिवार और इष्ट मित्रों को आकस्मिक संघात पहुंचता है, साथ ही साथ अपने परिवार के बीच मझधार में छोड़कर भाग जाता है जिसके कारण उसके परिवार का भी विघटन हो जाता है । राजेन्द्र अवस्थी कृत" बीमार शहर " उपन्यास की मिस गोरावाला का प्रेमी एक प्रसिद्ध कपड़े का व्यापारी है । आर्थिक दृष्टि से वह व्यापारी सम्पनन है । कपड़े का व्यापारी का भरा पूरा परिवार है परन्तु सुख व्यापारी ने पत्नी के अतिरिक्त मिस गोरावाला को रखे हुए है। मिस ब गोरावाला को उसके प्रेमी बम्बई में सुव्यवस्थित ढंग से बसा देता है। कपड़े के व्यापारी का पत्नी एवं मिस गोरावाला के साथ संतुलन है परन्तु दुर्भाग्य वश उसका दीवाला निकल जाता है। वह शरण के लिए मिस गोरावाला के पास जाता है ।

---

1:- सरला दुबे :- सामाजिक विघटन और सुधार, पृ0 सं0-351
सरस्वती सदन मंसूरी ,प्रथम संस्करण 1966 ई0

मिस गोरावाला ने उक्त प्रेमी को शरण देने से साफ मना कर दिया। निराश होकर वह सूरत चला जाता है और सूरत में अपने को व्यवस्थित करना चाहता है । सूरत में भी उसका धंधा न चल सका जिससे उसे असफलता ही प्राप्त हुई आर्थिक कठिनाई एवं प्रेमिका मिस गोरावाला के उपेक्षापूर्ण व्यवहार से उद्विग्न होकर समुद्र में कूदकर आत्महत्या कर लेता है । । इस प्रकार कपड़े के व्यापरी का वैयक्तिक विघटन हो जाता है ।

"आज भी बहुतों का विश्वास है कि अधिकांश आत्महत्याएं, कामवासना से उत्पन्न उनके परिणामों के कारण होती है, जैसे छिपे गर्भपात से प्रेयसी द्वारा निराश किए जाने पर, प्रतिस्पर्धावश, ईर्ष्यावश इत्यादि, छिपे गर्भपात के कारण ही अमृत लाल नागर कृत " बूंद और समुद्र " उपन्यास की वनकन्या की जवान विधवा भाभी आत्महत्या करती है। वनकन्या की विधवा भाभी का वनकन्या के पिता जगदम्बा सहाय से अवैध यौन-सम्बन्ध था । इस अवैध सम्बन्ध की चरम परिणति वनकन्या की विधवा भाभी से उत्पन्न शिशु के रूप में होती है । जगदम्बा सहाय उक्त नवजात शिशु की हत्या करके सारा मामला रफा-दफा कर देना चाहा परन्तु पुलिस की सक्रियता

===========================================================

1:- भाग्य का खेल :- उसका दीवाला निकल गया जिस दिन उसका दीवाला निकला, मुझे उससे नफरत हो गई ------ जब वह दीवाला पिटवाकर आया तो मैंने अपने दरवाजे बंदकर लिए । उसे लौट जाना पड़ा । मैं ऐसे आदमी को सजा देना चाहती थी और मैंने उसे दे दी । सुना है वह सूरत चला गया था परन्तु एक दि समन्दर में डूबकर उसने जान दे दी । ]

राजेन्द्र अवस्थी -- बीमार शहर , पृ0 सं0 -45
राजपाल एण्ड सन्स काश्मीरी गेट दिल्ली, प्रथम संस्करण 1973 ई0

2:- परिपूर्णानन्द वर्मा :- आत्महत्या और वासना के अपराध ,पृ0 सं0-185
साहित्य निकेतन कानपुर, संस्करण 1966 ई0 ।

के कारण सारा मामला प्रकाश में आ गया । जब वनकन्या की भाभी यह जान जाती है कि अब उसकी सामाजिक मर्यादा समाप्त होने वाली है तो वह किसी बहाने से घर में जाकर मिट्टी का तेल आदि छिड़ककर आत्म हत्या कर लेती है । 1 प्रस्तुत उपन्यास का महिपाल नामक युवक पत्रकार का डा० शीला स्विंग से विवाहेतर काम सम्बन्ध है । डा० शीला स्विंग महिपाल के प्रति पूर्णरूप से समर्पित है परन्तु महिपाल व्यक्तिगत प्रेम की अपेक्षा पारिवारिक सम्बन्धों को विशेष महत्व देता है और न चाहते हुए भी डा० शीला स्विंग से सम्बन्ध तोड़ लेता है। पारिवारिक झमेले एवं आर्थिक विवशता से ऊबकर महिपाल आत्महत्या कर लेता है। 2 इस प्रकार महिपाल की असामयिक मृत्यु उसके वैयक्तिक एवं पारिवारिक विघटन का कारण बनती है । 3

शिवप्रसाद सिंह कृत " अलग-अलग वैतरनियाँ" उपन्यास की राजमती भी विवाहपूर्व प्रेम सम्बन्ध के चक्कर में पड़कर आत्म हत्या करती है। राजमती एवं देवपाल दोनों एक दूसरे को प्राणों पण से चाहते हैं परन्तु दोनों घरों के

===================================================

1:- अमृतलाल नागर :- बूंद और समुद्र , पृ० सं०- 50
किताब महल इलाहाबाद ,संस्करण 1956 ई०

2:-{ जो समाज व्यवस्था मेरे जैसे जागरूक व्यक्ति को अभावग्रस्त बनाकर यों जीते जी मार सकती है वह अधिकतर अचेतावस्था में जड़ संस्कारों में पलने वाले समाज को क्यों न पतन के उस गर्त में गिरा दे जिसकी भयंकरता से भरे विविध समाचार आप अपने पत्र में छापते हैं । }

वही :- पृ० सं०- 602

3:- {महिपाल यदि कठिन शारीरिक रोग से ग्रस्त होकर भरपूर इलाज कर लेने के बाद मरा होता,या बुढ़ापे तक आयु भोगकर उसकी देह छूटी होती तो गम न होता ----महिपाल जैसे विचारक ---एक गलत मोह में पड़कर उसके फलस्वरूप आत्महत्या करना एक कचोट भरा सत्य था ।}

वही :- पृ० सं०- 604

पुश्तैनी झगड़े ने विवाह होने से रोक दिया और राजमती के घर वालों ने पूर्व निश्चित योजनानुसार जहर पिलवा देते हैं जब राजमती को यह ज्ञात होता है कि उसके हाथों द्वारा ही देवपाल को धोखे से विषपान कराया गया है तो वह आत्मग्लानि में डूबकर आत्महत्या कर लेती है । ।
इस प्रकार राजमती का वैयक्तिक विघटन हो जाता है ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि आत्महत्या सामाजिक विघटन का सबसे भयंकर रूप है ।

जनसंख्या में अभिवृद्धि :-

हमारे देश की जनसंख्या में प्रतिवर्ष तीव्रगति से वृद्धि हो रही है । वास्तव में जनसंख्या की यह अबाध वृद्धि तब तक देश के लिए कोई समस्या नहीं होती है," जब तक किसी देश में बढ़ती जनसंख्या को रोजगार मिल रहा है, देश का उत्पादन बढ़ रहा है तथा कोई भी व्यक्ति अनुत्पादक नहीं है । यह कोई समस्या नहीं कही जा सकती । परन्तु हमारे सामने स्थिति विपरीत है । देश में जहां 33% जनसंख्या कार्यशील है तथा उनमें भी अधिकांश अकुशल कार्यकर्ता हैं, उत्पादन करने वाले कम तथा उपभोग करने वाले इतने अधिक । परिणामस्वरूप आर्थिक विकास के लिए जितना विनियोग किया जाता है उसका 65% जनसंख्या विनियोग अर्थात 68 करोड़ लोगों के वर्तमान जीवन स्तर को बनाए रखने में ही लग जाता है जिससे विकास दर नीची रह जाती है।

---

1:- शिवप्रसाद सिंह :- अलग-अलग वैतरणी, पृ0 सं0- 45
लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1967 ई0

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि तीव्र जनवृद्धि का हमारी अर्थव्यवस्था के आर्थिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है । " ।

आलोच्य कालीन हिन्दी उपन्यासों से जनसंख्या की अभिवृद्धि के कारण उत्पन्न सामाजिक विघटन का अंकन अभिधा एवं व्यंजना दोनों शैलियों में हुआ है। आचार्य चतुरसेन शास्त्री कृत " ग्रास" औपन्यासिक कृति में जनसंख्यामें आधिक्य को अन्तर्राष्ट्रीय विघटन के रूप में स्वीकार किया गया है । उपन्यासकार की धारणा है -------विश्व का सबसे बड़ा खतरनाक बम जनसंख्या का प्राधिक्य है। " 2 देश को सामाजिक विघटन की समस्या से बचाये रखने के लिए शिवप्रसाद सिंह ने अपने अलग-अलग वैतरणी उपन्यास के करैता ग्राम की देवी के मेले मे पुत्र प्राप्ति के लिए अधिष्ठात्री देवी की आराधना करने वाली स्त्रियों के विशाल समूह के लिए" मन ही मन मनाते रहे कि कम से कम ई पांच सौ दरवज्जा ही बन्द रखें मइया । " 3

लक्ष्मीनारायण कृत " काले फूल का पौधा " उपन्यास की लेडी डाक्टर मिसेज पाल सिंह स्वंय पति से विवाह-विच्छेद करती है और लोगों को जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणामों से मुक्त रहने के लिए बच्चों के उत्पादन पर नियंत्रण रखने को कहती हैं । क्योंकि यदि नियंत्रण न किया गया ~~तो~~

---

1:- रतनकुमार :- प्रगति मंजूषा अंक सितम्बर 1981 ई0 पृ0 सं0- 30
   रतन कुमार दीक्षित द्वारा 436,ममफोर्डगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित

2:- आचार्य चतुरसेन शास्त्री :- ग्रास ,पृ0 सं0- 275
   प्रभात प्रकाशन 205,चावड़ी बाजार दिल्ली,प्रथम संस्करण 1960ई0 ।

3:- शिवप्रसाद सिंह :- अलग-अलग वैतरणी,पृ0 सं0- 16
   लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,प्रथम संस्करण 1967 ई0 ।

तो समाज में अशान्ति एवं अव्यवस्था उत्पन्न होगी । जन संख्या की अधिकता के कारण होने वाले सामाजिक विघटन की ओर संकेत करते हुए तथा उससे देश को बचाये रखने का उपाय बतलाते हुये कहा है । " चारों ओर संघर्ष और गिरानी है । इस सब का कारण------ देश की रोज बढ़ती हुई आबादी है । अगर इसको न रोका गया तो हमारी सरकार डूब जायेगी । इसका सबसे बड़ा सरल तरीका है, आज से अगले पांच वर्षो तक देश में एक भी बच्चा न पैदा होने दिया जाय" । इस प्रकार जनसंख्या की अति वृद्धि के कारण उत्पन्न होने वाले सामाजिक विघटन की ओर संकेत किया गया है ।

==================================================

1:- लक्ष्मीनारायण लाल :- काले फूल का पौधा, पृ0 सं0- 101
भारती भंडार ,लीडर प्रेस प्रयाग, प्रथम संस्करण 2012 विक्रमी [1955 ई0]

औद्योगिकीकरण :-

उन्नीसवी शताब्दी से पूर्व और उद्योग धन्धे मानव अथवा पशु शक्ति पर निर्भर थे। परन्तु वैज्ञानिक यन्त्रों के आविष्कार ने वर्तमान में सारे उत्पादन कार्यों को मशीनों पर निर्भर कर दिया है। जिसकी वजह से बड़े बड़े कारखानों एवं मिलों की स्थापना हुई है। और हो रही है। इन कारखानों एवं मिलों में सैकड़ों श्रमिकों का कार्य एक मशीन बड़ी सरलता से कर लेती है। मशीनों के प्रयोग से उत्पादन की प्रक्रिया में अभिवृद्धि हुई है।

यों तो भारतवर्ष में अंग्रेजों के शासनकाल में ही विभिन्न औद्योगिक इकाईयों की स्थापना हो चुकी थी परन्तु इकाइयां स्वतंत्र भारत की सम्पूर्ण आवश्यकता को पूरी करने में अक्षम थी फलतः स्वतंत्र भारत की सरकार ने औद्योगिक दृष्टि से आत्म निर्भरता प्राप्त करने के लिए विभिन्न औद्योगिक की सरकारी एवं गैर सरकारी दोनो स्तर पर स्थापना की। शहरीकरण की प्रवृत्ति को औद्योगिकीकरण से प्रोत्साहन मिला है। क्योंकि " आधुनिक शहरीकरण की पृष्ठभूमि में यही औद्योगिकीकरण है। जहां विस्तृत कल कारखाने की स्थापना हुई वहां उनमें काम करने वालो के लिए आवास का प्रबन्ध भी अनिवार्य हो गया। अतः विशाल बस्तियों का निर्माण किया गया जो कालान्तर में विभिन्न नगरों की भांति विकसित हुई हैं। जमशेदपुर, दुर्गापुर, टाटानगर, डालमियां नगर आदि का विकास औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप ही हुआ है।

औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया ने भारत की परम्परागत आर्थिक संगठन में क्रान्तिकारी परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। आर्थिक संगठन में परिवर्तन के कारण उत्पन्न नवीन परिस्थितियों के अनुरूप सामाजिक संस्थाओं विचारों आदर्शों तथा मनोवृत्तियों में परिवर्तन की आवश्यकता महसूस की।

---

1- अ- हेमेन्द्रपानेरी - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास मूल्य संक्रमण संघी प्रकाशन, जयपुर, प्रथम संस्करण 1974 ई० पृ० 227

जा रही है "परन्तु ऐसा करना सरल नहीहोता है और सामाजिक विघटन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है क्योंकि परिवर्तित आर्थिक परिस्थितियो के साथ जब सामाजिक मनोवृत्ति ,संस्थाओं, आदर्शों आदि का अनुकूलन नही होता है तो सामाजिक तनाव व असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है ।

औद्योगीकरण के कारण उत्पन्नता सामाजिक विघटन, मंदी बस्तियाँ वेश्यावृत्ति मद्यपान,बेकारी, औद्योगिक झगड़े हड़ताल, तालाबन्दी औद्योगिक दुर्घटनाएँ एवं नगरोन्मुखता की प्रवृत्ति के रूप में समाज में दृष्टिगोचर होता है।

औद्योगीकरण के फलस्वरूप औद् योगिक क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की जनसंख्या में अबाधगति से वृद्धि होती है जिसकी तुलना में समुचित निवास स्थानो की व्यवस्था नही हो पाती फलतः वहाँ के अधिकांश लोगों को गंदी बस्तियों में रहना पड़ता है। गंदी बस्तियों मे रहने वालें का केवल स्वास्थ्य ही नहीं बिगड़ता बल्कि नैतिक पतन ही होताहै और साथ ही उनमें अन्य अपराधी आदतें भी पनपती रहतीहैं । " 2

---

1- सरला दुबे - सामाजिक विघटन और सुधार - पृ0 सं0 -81
सरस्वती सदन मंसूरी, प्रथम संस्करण 1967 ई0

2- रवीन्द्रनाथ मुकर्जी - व्यावहारिक समाजशास्त्र , पृ0 सं0 - 34
सरस्वती सदन दिल्ली - 7, प्रथम संस्करण 1968 ई0 ।

प्रभाकर माचवे कृत सांचा जो पन्यासिक कृति के श्रमिकों का निवास स्थान पशुओं के निवास स्थान से भी बदतर है। फिर ऐसे निवास स्थानमें रहने वाले लोगो के स्वस्थ्य होने में संदे है। गंदी बस्तियों में रहने वाले श्रमिको का चित्रण करते हुए उपन्यासकार ने लिखा "- पर वह जो अपनी जिंदगी बराबर गंदी बालोमें टीन के छतों के नीचे, बदबूदार नालियो के पास, सीलन भरी अंधेरी कोठरियों मे पीढ़ी दर पीढ़ी बिताते जाते थे - - - - - या कहें कि जिंदगी को किसी तरह मरियल कुत्ते की तरह घिसट रहे थें । " श्रमिकों का कुत्ते की तरह घिसटकर निराशापूर्ण जीवन व्यतीत करना उनके वैयक्तिक विघटन का सूचक हैं ।

रामदरश मिश्र कृत जल टूटता हुआ उपन्यास के सतीशन की बीमारी का करण कलकत्ता की दुर्गन्ध पूर्ण गली में रहना है।
इसी प्रकार " दिल्ली में रात को शोर का अनुपात इतना अधिक है कि कोई भी इन्सान आराम की नींद नही हो सकता ।

---

1- प्रभाकर माचवे :- साँचा पृ0सं0 - 104
नवसाहित्य प्रकाशन नई दिल्ली । संस्करण 1955 ई0

2- रामदरश मिश्र - जल टूटता हुआ, पृ0 सं0 108
हिन्दी प्रचार संस्थान वाराणसी, प्रथम संस्करण 1969 ई0

3- मोहन राकेश :- अंधेरे बन्द कमरें, पृ0 सं0 - 329
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 1961 ई0

विभिन्न मिलों एवं औद्योगिक संस्थानो मे कार्यरत कर्मचारियो मे से अधिकांश कर्मचारी गाँवो से अकेलें आकर बाहर में बसते हैं क्योंकि उनकी आय इतनी अधिक नही होती है। कि वे अपने साथ परिवार रख सकें इस प्रकार नगरो में स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों की संख्या में वृद्धि हुई । अतः नगरो मे रहने वाले अधिकांश श्रमिक यौन संतुष्टि के लिए वेश्यावृत्ति एवं व्यवभिचार का प्रश्रय लेता है । नगरो मे व्याप्त वेश्यावृत्ति की ओर मोहन राकेश कृत "अँधेरे बंद कमरें उपन्यास में इस प्रकार संकेत किया गया है "काइ बाजार मे मैं दो एक बार दिन में गुजरा था मगर उसी तरह जैसे एक बदसूरत गली में से आदमी नाक पर रूमाल रखकर गुजर जाता है "

इलाचन्द्र जोशी कृत जहाज का पंछी उपन्यास की मिस साइमन औद्योगिक सभ्यता की देन है मिस साइमन कलकत्ता महानगर में अपने स्वामित्व में कई लड़कियो से व्यवस्थित ढंग से वेश्यावृत्ति करवाती है। इसी प्रकार सर्वदानन्द कृत माटी खाई जनावरा उपन्यास की कृष्णा बम्बई में चकला चलाती थी । उसके चकलें में आने वाली स्त्रियाँ अच्छे अच्छे घरो की थी, सेठानियाँ और पढ़ी लिखी बबुआइनो कालेज और कुल की छात्राएँ मास्टरनियाँ । सब अपनी मर्जी से आती थी तेरह से छतीस तक की ।

---

1- मोहन राकेश - अँधेरे बन्द कमरे पृ०सं० - 88
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1961 ई०

2- इलाचन्द्र जोशी - जहाज का पंछी, पृ० सं० - 298
राजकमल प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1955 ई०

3- सर्वदानन्द - माटी खाई जनावरा पृ० सं० - 163
हिन्दुस्तानी एकेडमी, उत्तर प्रदेश इलाहाबाद प्रथम संस्करण 1960 ई०

हत्या कर लेती है।

उद्योगों मे बृहद पैमाने पर मशीनो के उपयोग ने यान्त्रिकता जन्य बेकारी उत्पन्न की है। बेकारी स्वयं में सामाजिक विघटन का कारण और परिणाम दोनो है। देवेन्द्र स्वार्थी कृत ब्रह्मपुत्र उपन्यास में यान्त्रिकता जन्य बेकारी से उत्पन्न पारिवारिक एवं वैयक्तिक असंतुलन का चित्रण हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास के बादल की आर्थिक विपन्नता का मूल भूत कारण डंकसन साहब काचेतन को इंजन वाली नौका दिलवादेना है। अतः चेतन की आमदनी बादल की आमदनी से दुगनी हो जाती है। क्योंकि वहबादल की अपेक्षा एक बार में दुगनी सवारी ढोने मे सक्षम है। इसीप्रकार उदयराज सिंह कृत अँधेरे के विरुद्ध उपन्यास में निम्नवर्गीय लोगों में व्याप्त बेकारी के मूल में मशीनी-करण की प्रक्रिया को स्वीकार किया गया है। मशीनों के प्रयोग से श्रमिकों के शारीरिक श्रम की माँग कमजोरपड़ गई है क्योकि श्रमिक काशारीरिक श्रम मशीनों के श्रम की अपेक्षामँहगा पड़ता है। प्रस्तुत उपन्यास का निम्न वर्ग का डोमन रिक्शा चलाकर जीविकोपार्जन करता था, परन्तु आटोरिक्शा चल जाने से उसके जीविकोपार्जन का यहसाधन भी जातारहा। वह अपनी दयनीय स्थिति के विषयमे सोचता है "क्या करें, अब बाबूगंज के बाबुओं का सिनपहिया फिटफिटिया चलने लगी है। कहाँ पैर की सवारी कहाँ पेट्रौल की --------- जिमना, बलवरमा बेचारे भोर से लेकर रात तक पैर नचाते रहते हैं, मगर फिर भी सिनपहियाँ के आगे पार नहीं पातें।" 2

==========

1- कामतानाथ :- सुबह होने तक पृ0 सं0 - 98
समान्तर सहयोग 54 बाजार रोड मइलापुर मद्रास, प्रथम संस्करण 1975 ई0

2- उदयराज सिंह - अँधेरे के विरुद्ध पृ0 सं0 - 188
अशोक प्रेस पटना, प्रथमसंस्करण 1970 ई0 ।

महानगरों में वेश्यावृत्ति एक स्वाभाविक वृत्ति बनती जा रही है। इस तथ्य को पुष्टि चहक साप्ताहिक के एक सर्वेक्षण से होती है। जिसमें खरीदकर लाई गई युवतियों के अतिरिक्त कोई भी अपने को वेश्या मानने के लिए तैयार नहीं। इस प्रकार महानगरीय जीवनमें व्याप्त वेश्यावृत्ति व इस पेशे मे फंसे लोगों का वैयक्तिक विघटन हो चुका है।

औदयोगिक नगरों में जुआ खेलने की प्रवृत्ति भी देखने को मिलती है। यह प्रवृत्ति सामाजिक विघटन का कारण और परिणाम दोनों है। प्रायः जुआरी वैयक्तिक विघटन का शिकार होता है। कामता नाथ कृत सुबह होने तक उपन्यास के सेठ के वैयक्तिक एवं पारिवारिक विघटन का कारण जुआ खेलना है। सेठो की आय हजार रूपये प्रति माह है। इतनी धनराशि से उसके परिवारको समुचित व्यवस्था हो सकती थी परन्तु वह सारा वेतन छ्यूत क्रीडाको समर्पित कर दिया करता था जिसकी बजह से उसें यूनियन कार्बाइड के सिंधवानी से आर्थीक सहायता लेनी पड़ती है। सिंधवाली सेठ को आर्थिक सहायता प्रदान करके पूर्व निश्चित योजनानुसार सीताको ये आश्वासन देकर कि उससे विवाह कर लेगा अवैध यौन सम्बन्ध स्थापित करता है। 2- परन्तु सीताके पाँव भारी होते ही वह सीतासे विमुख होकर अन्यत्र चला जाता है। सीता सिंधवाली की खोज करवाती है। परन्तु जब सिंधवाली कापता नहीं चलताती वह सीता आग लगाकर आत्म-

================================================================

1- चहक साप्ताहिक, 12 फरवरी, 1976 ई० प्रधान सम्पादक चन्द्रकुमार शर्मा बी-181 जनताकालोनी, जबलपुर।

2- कामतानाथः- सुबह होने तक पृ०सं०- 94 समान्तर सहयोग 54 बाजार रोड मइलापुर मद्रास, प्रथमसंस्करण 1975 ई० ।

औद्योगिकरण के फलस्वरूप मिल मालिकों एवं श्रमिकों के बीच अपने-अपने अधिकारों एवं स्वार्थों के लिए सर्व संघर्ष और औद्योगिक झगड़ों को प्रोत्साहन मिला है। औद्योगिक झगड़ों का तात्पर्य नियोक्ताओं तथा श्रमिकों के बीच उत्पन्न होने वाले उन मतभेदों से है। जिसके परिणाम स्वरूप औद्योगिक क्षेत्र मे हड़ताल, तालाबन्दी, घेराव तथा अन्य इसी प्रकार की समस्याओं के उत्पन्न हो जाने से है। औद्योगिक संघर्ष के कारण उत्पादन कार्य में अनावश्यक व्यवधान आ जाता है। जिससे श्रमिकों की आय में कमी आ जाती है। आय की कमी के कारण श्रमिकों में निराशा एवं असंतोष की भावना उत्पन्न होती है। इसी तरह औद्योगिक अशान्ति के कारण उपभोक्ताओं को आवश्यक उपभोग की वस्तुएँ नही मिल पाती जिसके कारण उपभोक्ताओं को कष्ट उठाना पड़ता है। तथा सामाजिक वातावरण को विकृत एवं कलुषित हो जाता है। इस प्रकार औद्योगिक संघर्ष सामाजिक विघटन का सूचक हैं।

राजेन्द्र यादव कृत उखड़े हुए लोग उपन्यास का एक श्रमिक मशीन से दबकर मर जाता है। मजदूर के परिवार को मुवावजा दिलवानें के प्रश्न पर सत्या मिल के मालिक एवं श्रमिकों में तनाव उत्पन्न हो जाता है। सत्या-मिल का मालिक पिकेटिंग पर निकले श्रमिकों पर गोली चलवा देता है[1]। गोली लगने से सात आठ मजदूरों की मृत्यु हो जाती है। जिसके कारण स्थिति सुलझनें के बजाय और उलझ जाती है। मिल में तनाव एवं हड़ताल के कारण मजदूरों की आर्थिक स्थिति दयनीय हो जाती है। मजदूरों के

---

1- "सत्या मिल्स में गोली चल रही है-पिकेटिंग करते हड़ताली मजदूरों के ऊपर।"

राजेन्द्र यादव - उखड़े हुए लोग, पृ0 सं0 - 258
राजकमल प्रकाशन दिल्ली - प्रथम संस्करण - 1956 ई0।

लिए सूरज आदि जागरूक कार्यकर्ताओं को भीख माँगने को योजना बनानी पड़ती है। " आप देखिए, किस तरह हम लोग इकट्ठे होकर जाते हैं। झोलियाँ बनाकर हड़तालियों के लिए भीख माँगते हैं। मैं कहता हूँ शरद बाबू आपकी आँखों में आँसू आ जायेंगे जब आप पाँच पाँच साल के दूधमुंहों के बिलबिलाते देखेंगे। औरतों की आँखें गड्ढों में धुस गई है। - - - - - आदमियों की आवाजें गलों से नहीं निकलती है। " 1-उपर्युक्त स्थिति सत्या मिल के श्रमिकों का सामुदायिक विघटन प्रकट करती है।

कभी कभी औद्योगिक प्रतिष्ठानों के कर्मचारी नाजायज हड़ताल करते हैं। राजकमल चौधरी कृत मछली मरी हुई औपन्यासिक कृति के नेशनल जूट मिल के श्रमिकों की हड़ताल भी कुछ इसी प्रकार की है। क्योंकि उक्त मिल का स्वामी अपने मजदूरों को सबसे ज्यादा मजदूरी देता है। सबसे अच्छा बोनस देता है। मजदूरों के लिए बेहतर क्वार्टर है। मैदान है, पार्क है। अस्पताल है। फिर भी मजदूर हड़ताल करते हैं। " 2- श्रमिकों की हड़ताल सफल होती है। क्योंकि नेशनल जूट मिल का मालिक पुलिस को अपनी तरफ मिलाकर नहीं रखता है। 1" 3- मिलमालिक हड़तालसफल होने पर मिल को बन्द कर देता है। 4- उसे बहुत बड़ा घाटा लगता है। मिल मालिक को मिल का घाटा पूरा करने में पद्मावत इण्डस्ट्रीज का दीवाला निकल जाता है। 5- पद्मावत इण्डस्ट्रीज का दीवाला निकलना निर्मल पद्मावत के वैयक्तिक विघटन का द्योतक है।

---

1- राजेन्द्र यादव- उखड़े हुए लोग पृष्ठ संख्या 349-350
राजकमल प्रकाशन - दिल्ली प्रथम संस्करण 1956 ई0
2- राजकमल चौधरी - मछली मरी हुई, पृष्ठ संख्या 105

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली प्रथम संस्करण 1966 ई0

3- वही :- पृष्ठ संख्या 105

4- वही :- पृष्ठ संख्या 126

5- वही :- पृष्ठ संख्या 156

उद्योगों में भीमकाय मशीनों के उपयोग से दुर्घटनाओं की सम्भावना में अभिवृद्धि हुई है। इस तथ्य की ओर संकेत करते हुए रवीन्द्र नाथ मुकर्जी ने लिखा है। " आज नई नई मशीनो का विकास हो गया है, और इनमे से अनेक मशीने अधिक खतरनाक है। और थोड़ी सी असावधानी से दुर्घटनाओं हो सकती है। कुछ लोगों का दावा तो यह है कि मशीनों के आविष्कार के समय आज तक मशीनो की दुर्घटनाओं से मरने वालों की संख्या द्वितीय महायुद्ध में मरने वाली की संख्या से कहीं अधिक है।

राजेन्द्र अवस्थी कृत बीमार शहर उपन्यास की कमला अय्यर नामक लड़की का पुरा पुरा परिवार बिजली के करेंट में फँस जाने के कारण असामयिक मृत्यु का शिकार हो जाता है। यह दुर्घटना इस प्रकार घटित हुई "एक दिन बिजली का करेंट लगने से उसका सारा परिवार चल बसा। माँ एक तार पर कपड़ा सुखाने जा रही थी, दुर्भाग्य से उसमें बिजली थी वह उससे चिपक गई। फिर उसे बचानें उसका पति दौड़ा, और वह भी चिपक गया इसके बाद बच्चों की भी यही हालत हुई। कमला परीक्षा देने गई थी, इसलिए बच गई, अन्यथा वह भी इस आत्महत्या जैसे काण्ड में शामिल हो जाती।" 2

" औद्योगीकरण के फलस्वरूप ग्रामीण उद्योगों का बुरा ह्रास हुआ। है। क्योंकि इस देश में ग्रामों के कुटीर उदयोगों और शहरों के बड़े बड़े उदयोगों के बीच न तो कोई समन्वय है। और नही किसी प्रकार का श्रम विभाजन। फलतः बड़े पैमाने में मशीनो द्वारा जिन सस्ती चीजों का उत्पादन होता है, उससे प्रतियोगिता करना ग्रामीण उद्योगो से बनी चीजों के लिए सम्भव नही होता है। इससे ग्रामीण उद्योगों का निरंतर ह्रास हो रहा है। 3- गाँवो में उद्योगों के अभाव में लोग नगर की ओर भाग रहे हैं। जिसके कारण गाँवों का सामुदायिक विघटन हो रहा है। गाँव के सामुदायि विघटन की ओर संकेत करते हुए अमृत राय नें बीज उपन्यास में लिखा है -"गाँव उजड़ रहें हैं, और शहर बस रहे हैं, इसलिए नहीं कि

---

1- रवीन्द्रनाथ मुकर्जी - समाज शास्त्र पृ0 सं0 - 356,
शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी कृष्णानगर दिल्ली संस्करण 1980 ई0
2- राजेन्द्र अवस्थी :- बीमारशहर पृ0 सं0 -117-118
राजपाल एण्ड सन्स काश्मीरी गेट दिल्ली - प्रथमसंस्करण 1973 ई,
3- रवीन्द्र नाथ मुकर्जी :- व्यावहारिक समाजशास्त्र पृ0 सं0- 33

शहर में हुन बरसता है। बल्कि एक तो इसलिए कि आदमी कहीं से जागकर कहीं को जाता है,दूसरा इसलिए कि शहर की दुनियाँ ज्यादा बड़ी है। आदमी वहाँ भी भूखों मरता है, मगर मरने के पहले बीसों दरवाजे तो खटखटा लेता है। गाँव में इसकी सुविधा नहीं है ।"

शिवप्रसाद सिंह कृत "अलग-अलग वैतरणी "उपन्यास में नगरोन्मुखता के कारण उत्पन्न सामाजिक विघटन का बड़ी गहराई में अंकन हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास की नयी बाजार की मंगली नगरोन्मुखता की प्रवृत्ति से प्रभावित होकर वैयक्तिक विघटन की शिकार हो जाती है। उसके वैयक्तिक विघटन की अभिव्यक्ति उपन्यास में इस प्रकार की गई है। "नयी बाजार की खटकिन है सरकार । अब यहीं आकर रहती है। सब लोग पल्ले दारिन, पहले दाहिन कहते हैं, उसें मनशौख और बेशरम है। , राह चलते मुसाफिरों से छेड़खानी करती है । पान-बीड़ी मिठाई माँगती है। एक हरामी है। ई समझते हैं कि इनसे परेम करती है । ई नहीं समझते कि इन्हें चुतिया बनाती है ।" " 2

प्रस्तुत उपन्यास में उपन्यासकार ने नगरोन्मुखता के कारण ग्रामीण समुदायों के विघटन की व्याख्या इस प्रकार की है। "हमारे गाँव में आज कल इकतरफा रास्ता खुला है। निर्यात । जो अच्छा है, काम का है, वह यहाँ से चला जाता है। अच्छा अनाज, दूध, घी सब्जी जाती है । अच्छे मोटे

==========================================================

1- अमृत राय:- बीज पृ० सं० - 225
हंस प्रकाशन इलाहाबाद प्रथम संस्करण अक्टूबर 1953 ई०

2- शिवप्रसाद सिंह :- अलग अलग वैतरणी पृ० सं० - 56
लोकभारती प्रकाशन , इलाहाबाद , प्रथम संस्करण 1967 ई०

ताजें जानवर, गाय, बैल, भेंड बकरें जाते हैं। हट्टें कट्टें मजबूत आदमी जिनके बदन में ताकत हैं देह में बल हैं खींच लिए जाते हैं पलटनमें, पुलिस में, मलेटरी, में। --------- फिर वैसे लोग जिनके पास अकल हैं, पढ़े लिखें है कैसें रह जायेंगें।"[1]

नगरोन्मुखता की प्रवृत्ति के कारण ग्रामीण समुदाय के विघटन का चित्रण नागार्जुन कृत बाबा बटेसर नाथ औपन्यासिक कृति में इस प्रकार हुआ है। शहर में पढ़ लिखकर तुम सयाने हुए, अब रहकर ही सरकारी नौकरी कर रहे हों - - - - - - - चार दिन भी देहात में जी नहीं लगता है बबुआ। फिर क्यों गाँव वालों को जिंदगी में यह उपद्रव करना चाहते हों। भले तों शहर मे हों, जनानी डेरा भी साथ रहता है, बच्चों को भी साथ रखते हों। फिरयहाँ क्यों लार टपकाते हों चार कट्टा जमीन के लिए। - - - - - - -2

उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात होता हैकि आलोच्यकालीन हिन्दी उपन्यासों में औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के कारण उत्पन्न सामाजिक विघटन का विवेचन बड़ी सफलता एवं कुशलताके साथ किया गया है।

========================================================================

1- शिवप्रसाद सिंह - अलग अलग वैतरणी पृ0 सं0 - 685
लोकभारतीय प्रकाशन इलाहाबाद प्रथम संस्करण 1967 ई0

2- नागार्जुन :- बाबा बटेश्वरनाथ पृ0 सं0 - 123
राजकमल पब्लिकेशन, लि0 बम्बई, कापीराइट 1954 ई0।

अनैतिकता :-

पारस्परिक विभिन्नता सृष्टि का शाश्वत नियम है। प्रकृति की दो परस्पर विरोधी धाराएं ही संगमस्थल पर मिलने की प्रेरणा देती है। इसी प्रकार विभिन्न लोगों के आदर्शों एवं चरित्रों के समाज में पाये जाते हैं। इनमें से अधिकांश तत्व समाज को संगठित करने वाले होते हैं, तो कुछ समाज को विश्रृंखलित करने वाले। समाज की ओर से निर्दिष्ट नैतिक,संवैधानिक मान्यताओं मापदण्डों ,आदर्शों एवं धार्मिक विश्वास से कटकर हीन भावना एवं कुंठाग्रस्त जीवन व्यतीत करना ही अनैतिक व्यक्ति के लक्षण है। इस संबंध में श्रीमती किरण कौल ने अनैतिकता को परिभाषित करते लिखा है।" इन्हीं प्रथाओं,परम्पराओं ,रूढ़ियों और संस्थाओं द्वारा परिभाषित मानव व्यवहार के उल्लंघन की क्रिया को अनैतिकता कहा जाता है"। 1

अनैतिक व्यक्तियों को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है ।

1- अनजान में या समाज के किसी सदस्य द्वारा गुमराह किये जाने वाले ।

2- वैयक्तिक स्वार्थों ,निज के आदर्शों, मापदण्डों एवं वैचारिक मान्यताओं को प्रमुखता देने के कारण दिशाहीन व्यक्ति । दूसरे प्रकार के अनैतिक व्यक्तियों के सामाजिक विघटन का चित्रण विवाहेतर काम सम्बन्ध,वेश्यावृत्ति ,आत्महत्या, तस्करी आदि शीर्षकों के अन्तर्गत हुआ है। अत: यहां पर केवल उन्हीं अन्हीं अनैतिक लोगों के सामाजिक विघटन की व्याख्या की जा रही है जो समाज के कतिपय स्वार्थी लोगों द्वारा दिशाहीन किए जाते हैं । प्राय: समाज के हर वर्ग में अल्पमात्रा में ऐसे कतिपय सदस्य विद्यमान हैं जो वैयक्तिक स्वार्थों,धनलिप्ता, अवैध यौन सम्बन्धों आदि की पूर्ति हेतु अबोध बालको बालिकाओं

---

1- श्रीमती किरण कौल :- सामाजिक विघटन और अपराध, पृष्ठ संख्या 39
पुष्पराज प्रकाशन रीवा,प्रथम संस्करण 1977 ई0 ,द्वितीय संस्करण 1982-83

किशोर-किशोरियों, नवयुवकों- नवयुवतियों अथवा प्रौढ़ों को गुमराह करते हैं। इस प्रकार दिशाहीन होकर व्यक्ति समाज में अशान्ति एवं अव्यवस्था को उत्पन्न करता है।

सर्वदानन्द कृत " माटी खाई जनावरा " औपन्यासिक की वन्दना एवं शिवनाथ का मध्यम -वर्गीय परिवार है। दोनों का पारिवारिक जीवन सुखमय है। उनमें किसी प्रकार का मतवैभिन्य नहीं है। वंदना अनुपम सुन्दरी है। इस उपन्यास की ही कृष्णा नाम की युवती की चकला चलाकर धनार्जित करने की कुप्रवृत्ति वन्दना के सौन्दर्य को देखकर द्विगुणित हो गई। "1 कृष्णा वन्दाना के सौन्दर्य को अपने कब्जे में करने के लिए कुचक्र पूर्ण योजना रचती है। 2 कृष्णा लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वन्दना के प्रति शिवनाथ की सेवा करके उसे वन्दना के प्रति उकसाती है। 3 इस प्रकार शिवनाथ एवं वन्दना के मध्य पारस्परिक अन्तर्द्वन्द दिन- प्रतिदिन बढ़ता जाता है तथा एक दिन पीटे जाने के बाद वन्दना गृह त्याग देती है। 4 वन्दना का गृहत्याग वन्दना एवं शिवनाथ के पारिवारिक विघटन का प्रतिफल है। कालान्तर में वन्दना की तिल्ली फट जाती है। 5 वन्दना की असामयिक मृत्यु हो जाती हैं। "।

---

1:{ कृष्णा के मन की राक्षसी ने उसे फिर उकसाया, यदि वन्दना का सौन्दर्य उसके वश में हो तो बनारस को ही बम्बई बना ले। एक बार फिर उसका भाग्य चमक उठे। आसमान से सोना बरसने लगे।}

सर्वदानन्द :- माटी खाई जनावरा, पृ० सं० -165

हिन्दुस्तानी एकेडमी उ०प्र० इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1960 ई०

2:- शिवनाथ की नपुंसक ईर्ष्या, वन्दना की ऐच्छिक विवशता और नरेश की निश्छल सेवा तीनों को उसने अपने स्वार्थ के अस्त्र बनाए।} वही :- पृ० सं० 165

3-{क्या है? यह वन्दना भी एक क्षण नरेश के बिना नहीं रह सकती।} वहीं पृ०सं०-168

4:- वही :- पृ० सं० 165

5:- वहीं :- पृ० सं० -279

वन्दना की यह असामयिक मृत्यु उसके वैयक्तिक विघटन को प्रकट करती है । इस प्रकार स्पष्ट होता है कि कृष्णा के द्वारा दिशाहीन किये जाने से वन्दना एवं शिवनाथ का पारिवारिक विघटन हो जाता है ।

अमृतलाल नागर कृत " बूंद और समुद्र " उपन्यास की चित्रा राजदान नामक युवती के वैयक्तिक एवं पारिवारिक विघटन का कारण उसके शुभचिंतकों एवं इष्ट -मित्रों द्वारा दिशाहीन किया जाना है। चित्रा राजदान की दिशा हीनता का कारण उसके शब्दों में इस प्रकार है । " मैं सदा पत्नी बनना चाहती थी और मेरे दोस्त और शुभ चिंतक मुझे वेश्या बनाते रहे । " 2

शैलेश मटियानी कृत " दो बूंद जल " औपन्यासिक कृति की रेशमा की आर्थिक विपन्नता एवं उसके द्वारा वेश्यावृत्ति अपनाने का मूल कारण पंडित शिववल्लभ द्वारा उसे मास्टरानी बना देने का प्रलोभन देकर अनैतिक कार्य में

---

1:- सर्वदानन्द :- माटी छाई अनावरा पृ0 सं0 285
हिन्दुस्तानी एकेडमी, उ0प्र0 इलाहाबाद ,प्रथम संस्करण 1960 ई0 ।

2:- अमृतलाल नागर :- बूंद और समुद्र , पृ0 सं0 84
प्रथम संस्करण 1955 ई0 , किताब महल इलाहाबाद ।

प्रवृत्त करता है । 2 कुछ समय पश्चात दौलत ठाकुर ने वेश्या को अपनी रखैल बनायी । दौलत ठाकुर से दो संतानें हो जाने पर दौलत ठाकुर यह कह वेश्या से संबंध तोड़ लेता है कि " जब से तुम्हें लाया हूं तब से होटल में सिर्फ नीच जाति के अलावा और कोई नहीं आता । 2 आर्थिक दृष्टि से निराश्रित होने के कारण विवश होकर श्यामा को वेश्यावृत्ति स्वीकार करनी पड़ती है । 3 पाण्डेय बेचन शर्मा " उग्र" कृत गंगा माता " उपन्यास की नायिका गंगामाता का विवाह एक ग्रेजुएट नवयुवक से होना तय हुआ था, परन्तु गंगा माता के अहंभाव ने उसे पति विमुख कर दिया । 4 पति-विमुख होकर गंगामाता स्वयं ही दिशाहीन नहीं होती, अपितु विभिन्न सभाओं का आयोजन करके सामूहिक रूप से स्त्रियों को दिशाहीन करने के लिए पुरुष वर्ग के प्रति विद्रोहपूर्ण भाषण देती हुई कहती है " भद्र महिलाओं तुम मानों या न मानों, पर मैं पुरुष जाति को स्त्री जाति का शत्रु मानती हूं। भविष्य में लड़कियों को लड़कों से किसी बात में कमजोर या कम न समझें । भरसक पुरुष प्रसंग से माता बनने से बचें । बनना ही पड़े तो लड़का नहीं लड़की की मां बनने की इच्छा करें । " 5 यही नहीं गंगामाता की धारणा है कि

---

1:- [ कभी जब तब शिववल्लभ ने मास्टरानी बनाने के सपने दिखाने के बाद किनारा काट लिया था और मैंने अपनी पहली संतान को अपनी कोख से निकालते ही धरती में दबो दिया था । ]

शैलेश मटियानी :- दो बूंद जल , पृ0 सं0 89
किताब महल इलाहाबाद,प्रथम संस्करण 1966 ई0

2:- वहीं :- पृ0 सं0 89

3:- वहीं:- पृ0 सं0 - 12

4:- पाण्डेय बेचन शर्मा" उग्र" :-गंगामाता ,प्रकाशकीय पृ0 सं0 1
आत्माराम एण्ड सन्सदिल्ली, संस्करण 1971 ई0

5:- वही :- पृ0 सं0 - 29

पुत्रा शिशु का पालन -पोषण उचित एवं सम्यकरूप से करने के बजाय उन्हें किसी न किसी प्रकार मार डालें । " 1 इस प्रकार गंगामाता के उत्तेजक विचारों से स्त्रियों के दिशाहीन होने का खतरा उत्पन्न हो जाता है ।

उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अनैतिकता सामाजिक विघटन का कारण एवं परिणाम दोनों है । परिणाम इस लिए है क्योंकि अनैतिक व्यक्ति वैयक्तिक विघटन का शिकार होता है तथा कारण इस लिए है क्योंकि अनैतिकता के कारण वेश्यावृत्ति ,आत्महत्या, हत्या, मारपीट आदि को प्रश्रय मिलता है ।

चित्रपट :-

" आजकल के चलचित्र कामुकता तथा अपराधों से भरे रहते हैं । " 2 फिल्म देखने वाले नवयुवकों एवं नवयुवतियों में से अधिकांश लोग चलचित्र में प्रदर्शित विकृत यौन संबंधों एवं अपराधों का अंधानुकरण करते हैं । इस तथ्य की पुष्टि इस सर्वेक्षण से होती है । " बालिकाओं में दुराचरण से सम्बन्धित व्यवहार इस प्रकार थे, 252 अपराधी बालिकाओं का अध्ययन किया गया । उनमें से 25 प्रतिशत ने यह बताया कि उत्तेजित दृश्य देखने के उपरान्त उन्होंने पुरुषों से अपने सम्बन्ध स्थापित किए । 14प्रतिशत ने

1:- पाण्डेय बेचन शर्मा :- उग्र" - गंगामाता , पृ0 सं0 - 30
आत्मा राम एण्ड सन्स दिल्ली , संस्करण 1971 ई0

2:- उदयबीर सक्सेना :- समाजशास्त्र की रूपरेखा पृ0 सं0 245
स्वास्तिक , प्रकाशन अस्पताल मार्ग आगरा - 3

बताया कि चल चित्रों में व्यापारिक मनोरंजन का जो दृश्य अंकित किया गया उनके मन में भी पान्थशालाओं, नाच घरों और पान बूहों में जाने के लिए प्रोत्साहन मिला इस प्रकार के व्यवहारों के बाद अपराध आरम्भ हो जाता है। 38 प्रतिशत ने स्कूल न जाकर अन्य जगहों में आनन्द मनाना तभी से प्रारम्भ किया जब से उन्हें चलचित्र से इस प्रकार का प्रदर्शन मिला। 33 प्रतिशत की भावनाओं ने इतना और पकड़ा कि उन्होंने अपना घर छोड़ दिया। 23 प्रतिशत ने बताया कि चलचित्रों के कारण ही स्पष्ट रूप में उन्होंने दुराचरण किया।" 1

अमृतलाल नागर कृत " बूंद और समुद्र" उपन्यास की मिसेज वर्मा चित्रपट में प्रदर्शित प्रेम विवाह को व्यावहारिक जीवन में उतार कर परम्परित वैवाहिक व्यवस्था को विघटित किया है। यही नहीं मिसेज वर्मा के दिलों- दिमाग पर फिल्मी संगीत का ऐसा भूत सवार रहता है कि वह रेडियो को कभी फिल्मी गानों के अतिरिक्त कुछ नहीं बजने देती। " 2 मिसेज वर्मा के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उपन्यास की बड़ी सिलिया देखने का लोभ संवरण नहीं कर पाती। सिनेमा घर में वह फिल्म के रोमांटिक वातावरण एवं साथ बैठे कवि विरहेश के व्यक्तित्व से अभिभूत होकर विरहेश के साथ उन्मुक्त रोमांस करना चाहती है। धन की लालच में पड़कर।

---

1:- जी०आर० मदन :- भारतीय सामाजिक समस्याएं, पृ० सं० - 264-265
सरस्वती सदन 7 यू॰ए॰जवाहर नगर दिल्ली, संस्करण 1969 ई० ।

2:-"ये आल इण्डिया रेडियो लखनऊ - इलाहाबाद है। आपकी पसन्द के फिल्मी रेकार्डों का प्रोग्राम समाप्त --------
तारा ने उठकर रेडियो की सुई लाहौर पर लगा दी।
छम-छम बाजे पायल मोरी ---------
आजा चोरी-चोरी, आ जा चोरी- चोरी ।
हिन्दुस्तान का टूटा हुआ तार पाकिस्तान रेडियो के फिल्मी प्रोग्राम ने जोड़ दिया सुनने वालों ने फिर एक ताजगी महसूस की :"
अमृतलाल नागर :- बूंद और समुद्र, पृ० सं० -58
[illegible] संस्करण 1956 ई० ।

बड़ी की ननद नन्दो इस कार्य में विरहेश एवं बड़ी की सहायता करना चाहती है, परन्तु विरहेश द्वारा पर्याप्त धन न दिए जाने पर उनके प्रेम सम्बन्धों का भंडा-फोड़ बड़ी के पति मनिया से कर देती है । 1 ~~इस-प्र- संक्षेप~~ मनिया बड़ी को मार-पीट कर घर से निकाल देता है । इस प्रकार बड़ी के परिवार का विघटन हो जाता है ।

डा० देवराज कृत " दोहरी आग की लपट " उपन्यास की नायिका इरा का सिनेमा के प्रति विशेष लगाव है । वह पति डा० देव के शिष्य सुबोध के साथ सिनेमा देखने जाया करती थी । इरा चित्रपाठ गृह में सुबोध के प्रति-दिन प्रति दिन आसक्त होती जाती है और अन्त में सुबोध के प्रति पूर्ण समर्पण कर देती है । 2 इरा जीवन पर्यन्त वैयक्तिक विघटन की शिकार रहती है । 3

अमृतलाल नागर कृत " बूंद और समुद्र औपन्यासिक कृति का कीच विरहेश वैयक्तिक स्तर पर विघटित है । वह सम्पन्न घरानों के किशोरों से पैसा ऐंठने के चक्कर में उन्हें लेकर फिल्मी मासिक की योजना निर्मित करता है। इस पत्रिका के माध्यम से वह सम्पन्न- नवयुवक एवं नवयुवतियों को दिशाहीन

---

1:- अमृतलाल नागर :- बूंद और समुद्र " पृ0 सं0 317
किताब महल इलाहाबाद, संस्करण 1956 ई0 ।

2:-{ वह महीने में तीन चार बार सुबोध के साथ सिनेमा देखने जाने लगी प्रत्येक बार वह अपने को अधिक निकट पाती और महसूर करती । इस दौरान कब उसका और सुबोध का सम्बन्ध एक जटिल और कोमल भावभूमि में पहुंच गया, अब उसे पूरी स्मृति नहीं । }
डा0 देवराज दोहरी आग कीपट पृ0 सं0 -5
राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 1973 ई0

3:- वहीं:- पृ0 सं0- 5

करना चाहता है जिसका संकेत उपन्यासकार ने इस प्रकार दियाहै। "ये लोग ही महाकवि बौर के अधिक निकटतम थे । इनके पैसे से महाकवि एक फिल्मी पुस्तिका प्रकाशित करने की स्कीम बना रहे थे । फिल्म एक्ट्रेसों की रंगीन रातें ----- मुगल शाहजादियों के रोमांस चुम्बन के सौ सौ तरीके आदि पुस्तिका के प्रस्तावित स्तम्भों की चर्चा से महाकवि बौर अपने भक्तों का मन मोह रहे थे । " ।

सिनेमा देखने के लिए अभिभावकों से पैसा न प्राप्त होने पर किशोर बालक चोरी, जेबकटी, झूंठ बोलना आदि वैयक्तिक विघटन के द्योतक कुप्रवित्तियों का शिकार हो जाते हैं । फिल्मों में प्रदर्शित उन्मुक्त यौन-सम्बन्ध एवं हत्यायें किशोर मन को उलझा देती है । उनका नैतिक एवं सामाजिक मान्यताओं से विश्वास उठ जाता है। आए दिन दैनिक पत्रों में फिल्मों की कुप्रवृत्तियों से युक्त के विभिन्न लेख प्रकाशित होते रहते हैं जिनसे संकेत मिलता है किफिल्मों का प्रदर्शन भी सामाजिक विघटन के लिए कम उत्तरदायी नहीं है । 2

पाण्डेय बेचन शर्मा " उग्र " कृत " फागुन के दिन चार " नामक उपन्यास में सिने जगत में कार्यरत व्यक्तियों के वैयक्तिक, पारिवारिक एवं सामुदायिक विघटन का लेखा-जोखा हुआ है । इस उपन्यास में चित्रित देवा कम्पनी एवं रायल फिल्म स्टूडियो का सामुदायिक विघटन हो जाता है क्योंकि

---

1:- अमृतलाल नागर :- बूंद और समुद्र , पृ0 सं0 - 326
किताब महल इलाहाबाद, 1956 ई0

2:- दैनिक पत्र भारत , 10 फरवरी 1976 ई0 ।

इन कम्पनियों के सदस्य फिल्म निर्माण के बहाने वैयक्तिक स्वार्थों एवं अवैध -यौन सम्बन्ध स्थापित करने में सफल होते हैं जिसकी ओर संकेत करते हुए उपन्यासकार ने लिखा है । " फलत: देवा फिल्म कम्पनी दिन -दहाड़े व्यभिचारों का अड्डा जैसी बन गयी है। मालिक दफ्तर में बैठकर दारू पीता है, डाइरेक्टर सेट पर एक्टर निकट के होटलों पर या स्टूडियो के किसी एकान्त में । डाइरेक्टर सेट का मुह -लगा है । इस लिए की उन्हीं की जाति का है और समाज की लड़कियों को भुलावा देकर भूलाभाई की अंकशायनी बेसंकोच बनाने का आदी है । कम्पनी में तस्वीरें बनती है देवताओं की लेकिन दानवीय दुष्कर्म होते हैं दिन दहाड़े । औरतें दो -ढाई दर्जन तो बिलकुल वेश्या बाजार की कुटनियों या दलालों द्वारा सप्लाई की गई हैं जिनका काम सारे दिन स्टूडियो के काम काजियों में काम कला कुलबुलाना । कम्पनी में जो अधिकार वाले, जो कमाने वाले हैं उन्हें दारू पीते ही इच्छित बोसे स्टूडियो के कोने -कोने में मिलते हैं । " ।

प्रस्तुत उपन्यास के फिल्मी दुनिया में कार्यरत अधिकांश नवयुवक एवं नवयुवतियों का वैयक्तिक विघटन हो चुका है जिसकी अभि व्यक्ति अनैतिक सम्बन्धों मदिरा पान इजी मनी पैदा करने की प्रतिस्पर्धा के रूप में हुआ है । इस संबंध में उपन्यासकार ने लिखा है " एक्ट्रेस इजीमनी या पानी की तरह रुपये कमाने के बाद या तो जुआ खेलते हैं या इश्कबाजी की सोचते हैं अथवा चौबीस घंटे शराबी अगड़धत्त बने रहते हैं । " 2

---

1- पाण्डेय बेचन शर्मा :- फागुन के दिन चार, पृ0 सं0 172
रंजीत प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स 4872 ,चांदनी चौक दिल्ली,प्रथम संस्करण 1960 ई0 ।
2:- वही - पृ0 सं0 - 172-173

## भूमि व्यवस्था में परिवर्तन :-

अंग्रेजों के शासन काल में भारतीय भूमि व्यवस्था में जमींदारी प्रथा का प्रचलन था । जमींदार, सरकार से भूमिकर वसूल करके उसे देने के लिए ठीका लिया करते थे । सरकार को निश्चित धनराशि देने के अलावा बची हुई धनराशि का स्वयं उपभोग करते थे । सरकार को जमींदारों से भूमिकर के रूप में आय प्राप्त होती थी तथा जमींदारों के माध्यम से साधारण जनता को आसानी से प्रशासनिक दृष्टि से नियंत्रित करने में सहायता मिलती थी जिसके कारण सरकार भी जमींदारों के एहसानों के सामने कुछ दब जाती थी जिसकी वजह से इन्हें (जमींदारों को) जनता के साथ मनमानी करने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिलता था। जमींदारों के विरुद्ध साधारण जनता की आवाज दब जाती थी ।

" स्वतंत्रभारत की सरकार ने कृषि- भूमि की पुर्नव्यवस्था के विषय में गम्भीरता से सोचा और कृषकों की अभ्यत्रुटि एवं आर्थिक शोषण से मुक्ति के लिए कृषि भूमि पर निर्भर उपजीवी जमींदारों से निपटने के लिए सरकार में जमींदारी उन्मूलन योजना लागू की । " ।

जमींदारों को सरकार द्वारा जमींदारी में पैतृक पेशों से मुक्त किया जाना अच्छा न लगा । यह वर्ग अपने अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष प्रारम्भ किया ।फलत: जमींदारों एवं कृषकों के मध्य -वर्ग संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होगी । वर्ग संघर्ष की इस स्थिति का चित्रण फणीश्वर नाथ रेणु कृत " मैला-आँचल " औपन्यासिक कृति में काली चरण द्वारा जमींदारों के विरुद्ध किसान-सभा के आयोजन में देखने को मिलता है। काली चरण जमींदारों के विरोध में किसान -सभा का आयोजन करता है और संथालों को अपने अधिकारों के प्रति सचेत करते हुए जमींदारों के विरुद्ध कहता है। " जमीन किसकी ।........जोतने वालों की । जो जोतेगा वहीं बोयेगा ,वह काटेगा। कमाने वाले खायेगा। " 2 इस प्रकार भड़काये जाने पर मेरीगंज गांव की स्थिति जमींदारों एवं कृषकों के मध्य भूमि की बेदखली के प्रश्न पर अशान्तिपूर्ण हो जाती है। जो उक्त ग्राम की सामुदायिक विघटन का सूचक है।

शिवप्रसाद सिंह कृत" अलग-अलग वैतरणी "उपन्यास में जमींदारी उन्मूलन के कारण ग्रामीण परिवेश में हुए परिवर्तनों का आंकलन इस प्रकार है-जमींदारी की

1:- डा० पूरनचन्द्र जोशी:- भारतीय ग्राम सांस्थानिक परिवर्तन और आर्थिक विकास पृ० सं० 44
राजकमलप्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली, प्रथम संस्करण 1966 ई०

2- फणीश्वर नाथ रेणु:- मैला आंचल ,पृ० सं० 91
प्रथम संस्करण 1954 ,प्रयुक्त संस्करण दसवीं आवृत्ति 1979,राजकमल प्रकाशन प्रा० लि० दिल्ली

पुश्तैनी -पुख्ता दीवारें एक हल्के धक्के से ही जमीन पर आ रही । देखते ही देखते करैता का पूरा माहौल बदल गया । आसामियों ने खानदानी लाज-धरम छोड़कर जमींदार की छावनी से अपना रिश्ता तोड़ लिया । अब कभी दशहरे के मौके पर असामियों की भीड़ गुहार करने नहीं आती । न ही कभी छावनी के मुख्य द्वारा पर रखा बड़ा सा परात नजरानें के रुपयों से भरता ही । न तो अब छावनी के लड़के को देखकर कोई हलवरताल का बूढ़ा झुक कर सलाम करता था, न औरतों तक को देखकर कोई अपने चबूतरे की चारपाई से उठकर खानदानी लिहाज दिखाता था । यह सब कुछ ताश के पत्ते की तरह एक हल्के से धक्के से बिखर गया । " । करैता ग्राम की उपर्युक्त दशा परम्परित जमींदारी व्यवस्था के विघटन को प्रकट करती है ।

उदयराज सिंह कृत अँधेरे के विरुद्ध " उपन्यास के जमींदार रियायों पर अपना दबदबा पूर्वत बनाये रखने के लिये जमींदारी टूटने के बाद नेतागीरी का धंधा स्वीकार कर लेते हैं । इस प्रकार के लीडर ....दिन भर लीडरी करते हैं और रात में भट्ठी में शराब की पिआई । " 2 लीडरों द्वारा शराब की पिआई उनके वैयक्तिक विघटन को प्रकट करती है ।

राम दत्त मिश्र" बल टूटता हुआ " उपन्यास में जमींदारी -उन्मूलन का प्रभाव वहां के जमींदार महीप सिंह के आक्रोश में देखने को मिलता है ।

---

1:- शिवप्रसाद सिंह :- अलग-अलग वैतरणी ,पृ० सं० -32
लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ,प्रथम संस्करण 1967 ई०

2:- {सभी छोटे मोटे जमींदार लीडर बन बैठे । दिन भर लीडरी और रात भर भट्ठीं में शराब की पिआई }
उदयराज सिंह - अँधेरे के विरुद्ध ,पृ० सं० -10 आलोक प्रेस पटना, प्रथम संस्करण 1970 ई०

महीप सिंह का रोब अब गरीबों की पिटाई तक सीमित हो गया है ।
इसी सब टूटन का लेखा-जोखा सतीश के शब्दों में इस प्रकार है ।
" यह बड़ आदमी बदले हुए जमाने को नहीं समझता। भीतर से सब कुछ टूटता जा रहा है लेकिन बाहर अभी जीवन का वही रौब-दाब रखना चाहता है । जगपतिया बदले हुये जमाने की आवाज है लेकिन बाबू महीप सिंह के कान बंद हैं, आँखें मुंदी हैं, इनके पास गाली है, मुक्का है, लात है और ---- और। "[1]।
महीप सिंह की यह मानसिक स्थिति उनके वैयक्तिक विघटन को प्रकट करती है ।

जमींदारी उन्मूलन के फलस्वरूप जमींदारों की आय का प्रमुख स्त्रोत एवं रियायों पर दबदबाये का साधन समाप्त हो गया । फल: जमींदारों के समुदाय का विघटन हो गया और इस समुदाय के सदस्यों ने अन्य विभिन्न समुदायों में प्रवेश ले लिया ।

==============================================================

1:- रामदरश मिश्र :- जल टूटता हुआ , पृ0 सं0 -49
हिन्दी प्रचारक संस्थान वाराणसी, प्रथम संस्करण 1969 ई0

## चकबन्दी :-

चकबन्दी सरकार द्वारा आयोजित विभिन्न भूमि -सुधार कार्यक्रमों में से एक है । " चकबन्दी का अर्थ एक किसान के गांव भर के बिखरे भूखण्डों को एक सुसंहत इकाई के अन्तर्गत ही ले आना है। " । ऐसा किये जाने से कृषकों को सिंचाई एवं देख-रेख की व्यवस्था करने में अत्यधिक सुविधा होगी ।गांव के विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में यह कार्यक्रम गतिशील हुआ है । गांवों में इसकी प्रभाव छाया कहीं सुखकर और कहीं दुखकर सिद्ध हुई है । हिन्दी उपन्यासकारों ने एक तटस्थ दृष्टा की दृष्टि से देखा है उसे अपने उपन्यासों में अंकित किया है।

चकबन्दी के कार्यक्रम के कार्यान्वयन के कारण ही रामदरश मिश्र कृत"जल टूटता हुआ" औपन्यासिक कृति के तिवारीपुर गांव की हुलिया बदल गई । गांव के लोगों में ही क्या,परिवार के सदस्यों में भी अच्छी भूमि पाने के स्वार्थ के कारण तनाव और मनमुटाव पैदा हो गया । गाँव के लोग अपनी विरोधी पार्टियों के जानी दुश्मन बन गये । तिवारी पुर गांव की अशान्ति पूर्ण स्थिति का वर्णन उपन्यासकार के शब्दों में इस प्रकार है" गांव में बड़ी सरगर्मी आ गई है। चकबन्दी ने सम्बन्धों के तमाम सूत्र उलझा दिये हैं । बल्ई और दौलतराम एक दूसरे के जानी दुश्मन हो गये हैं । रामकुमार की दल-सिंगार और दीनदयाल दोनों से खटक गई है, रघुनाथ और पिंकूबाबा में गड़क गई है झुंझू अब केवल बांसुरी ही नहीं बजाता लाठी भी लेकर

---

1:- रूद्रदत्त,के0पी0 सुन्दरम :- भारतीय अर्थव्यवस्था, पृ0 सं0 490
एस0 चन्द्र एण्ड कम्पनी लिमिटेड रामनगर नई दिल्ली,दशमसंस्करण 1977 ई0 ।

2:- डा0 ज्ञानचन्द्र गुप्त :- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्राम चेतना,
पृ0 सं0 180
अभिनव प्रकाशन वेस्ट सीलमपुर दिल्ली 31, प्रथम संस्करण 1974 ई0 ।

चलने लगा है और वह दौलतराय से खार खाये है, बल्कि की उसकी दोस्ती हो गई है, सतीश से दौलत चिढ़ा हुआ है, चाहता है उसका घर-द्वार फूंक ताप देना --------- पता नहीं कब क्या हो जाय । दीनदयाल का बेटा बहादुर खुले आम लाठी लेकर दौलतराय के साथ घूमने लगा है । " ।
उपर्युक्त गांव की यह तनाव पूर्ण स्थिति उस गांव के सामुदायिक विघटन की सूचक है ।

चकबन्दी के कार्यक्रम ने ग्रामीणों को मुकदमे बाजी एवं पारस्परिक झगड़ों में और अधिक उलझा दिया । फणीश्वरनाथ रेणु के "परती परिकथा " उपन्यास के परानपुर गांव के लोगों के पारस्परिक सम्बन्धों में चकबन्दी लागू होने से तनाव आ जाता है। अपने अधिकारों एवं स्वार्थों के लिए बाप-बेटे तक में लड़ाईयों होने लगी । विधवायें अपने अधिकारों की रक्षा के लिये पर्दे का सहारा छोड़कर न्यायालय की शरण में जाने लगी । " बड़े-बड़े इज्जतदारों की हवेली में बन्द घूंघटों में छिपी बेवा औरतें पर्दे को चीरकर आगे बढ़ आईं । अपने नाबालिक वंशधरों की उंगलियां पकड़े खड़ी हैं । ----- हुजूर । देखा जाय । जरा इन्साफ किया जाय हुजूर । इसका बाप कमाते - कमाते मर गया । कोल्हू के बैल की तरह सारी जिन्दगी खटते -खटते बीती । और खाते में कहीं भी उसके लड़के का नाम नहीं । नाम दरज कर लिया जाय हुजूर । " 2 उपर्युक्त स्थिति संयुक्त परिवारों के विघटन की अभिव्यक्ति है ।

==========================================================

1- राम दरश मिश्र :- जल टूटता , पृ0 सं0 -477
हिन्दी प्रचारक संस्थान वाराणसी ,प्रथम संस्करण 1969 ई0
2:- फणीश्वरनाथ रेणु :- परती परिकथा , पृ0 सं0 -27
राजकमल प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण अक्टूबर 1957 ई0 ।

चकबन्दी विभाग के कर्मचारियों में घूसखोरी का बोल बाला है ।
इस घूसखोरी को प्रश्रय मिलने का मुख्य कारण यह है कि गांव का प्रत्येक सदस्य कुछ खर्च वर्च करके अच्छे खेतों को प्राप्त करना चाहता है। राम दरश मिश्र के "जल टूटता हुआ " उपन्यास का चकबन्दी विभाग का ए.सी.ओ. भूपेन्द्रलाल इसका जीता-जागता उदाहरण है । वह अपने हंसमुख स्वभाव एवं हद चातुर्य से सारे गांव को लड़ाकर अपना उल्लू सीधा करता है। वह अभियोगी एवं अभियुक्त दोनों पक्षों से रिश्वत लेता है और जिस पक्ष से उसे अधिक रुपये मिलते हैं, फैसला उसी के पक्ष में करता है। बाद में ग्रामवासियों को इस तथ्य का पता चलता है कि "भूपेन्द्रलाल किसी का नहीं है,पैसे का है। अभी तो इसके मामले उलझे हुए आ रहे हैं । " । भूपेन्द्र लाल द्वारा घूस लेने के प्रवृत्ति एक समाज विरोधी प्रवृत्ति है जिसके के कारण उक्त ग्राम को सामुदायिक सुरक्षा एवं शान्ति विघटित हो गई है। घूस लेने की यह प्रवृत्ति भूपेन्द्र लाल के वैयक्तिक विघटन की सूचक है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि चकबन्दी के कार्यक्रम के कार्यान्वयन ने ग्रामीण परिवेश में अशान्ति एवं असुरक्षा की भावना उत्पन्न कर दिया है। असुरक्षा एवं अशान्ति की यह भावना गांवों में सामुदायिक ,पारिवारिक एवं वैयक्तिक विघटन के रूप में देखने को मिलती है ।

---

1:- रामदरश मिश्र :- जल टूटता हुआ, पृ0 सं0 - 458
हिन्दी प्रचारक संस्थान वाराणसी, प्रथम संस्करण 1969 ई0 ।

संस्कारगत प्रभाव :-
============

समाज में प्रत्येक व्यक्ति की अपनी अस्मिता होती है, जिसके अनुरूप समाज में उसकी गरिमा होता है। हर व्यक्ति उक्त गरिमा को बनाये रखना चाहता है, इसके लिए वह कुछ विशेष जीवन मूल्योउपयोगी निर्धारित करलेता है। इन्हीं जीवन मूल्यों से व्यक्ति के संस्कारों का निर्माण होता है। संस्कारों के निर्माण में प्रचलित मन्यताओं अंधविश्वासों, रुढ़ियों का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

यशपाल कृत मेरी तेरी उसकी बात" औपन्यासिक कृति के चीतू डोम के वैयक्तिक विघटन एवं उसके जाति के सामुदायिक विघटन का कारण ब्राहमणों का संस्कार गत प्रभाव है। देवदत्त से उसके पीता यह सुनकर कि " चीतू ने बड़े शौक से पीतल की थाली ~~में दाल भात खाने का चाव है। "~~ खरीदी है। बहुत खुश है। चेहरा कह रहा था, थाली में दाल-भात खाने का चाव हैं। " । उसकी त्योरियां चढ़ जातीं है। 2 जबकि चीतू के थाली खरीदने से उनका कोई अन्य संबंध नहीं है। परन्तु संस्कारगत प्रभाव चीत्कार कर उठा। जो इस प्रकार है। इनकी मां ------ इनकी बहन ----- दूसरों पीतल-कांसे के वर्तन में खायेंगे। पलंग पर बैठेंगे, ईंट-पत्थर की हवेली में रहेंगे घोड़े पालकी पर बारात ले जायेंगे। --- ब्राहमन राजपूत की बावड़ी में हाथ डालेंगे। --- अब मरे जानवर कौन कटेरेगा। ये - वो कौन करेगा। " 4 देवदत्त के पिता अपने भाई एवं पड़ोसी के लोगों को साथ लेकर डोमों की बस्ती में चढ़ाई करके उनके घरों में आग लगा देते हैं। 5

===================================================

1:- यशपाल :- मेरी-तेरी बात, पृ0 सं0- 150

तृतीय संस्करण 1984, लोकभारती प्रकाशन, 15ए, महात्मागांधी मार्ग, इला

2:- वही:- पृ0 सं0- 150

3:- वही :- पृ0 सं0 150 4:- वही :- पृ0 सं0 150

5:- [ लाठियों की खटखटाहट ---पीतल की थाली टूटने की वातावरण [illegible]

डोमार आवादी में की गई आग जर्ना एवं मारपीट सामुदायिक विघटन की सूचक है । उक्त घटना का देवदत्त द्वारा विरोध किए जाने पर उसके पिता उसे तत्काल घर से निकाल जाने का आदेश देते हैं । " । देवदत्त गृह त्याग करके ईसाई धर्म स्वीकार कर लेता है। 2 इस प्रकार देवव्रत का धर्मपरिवर्तन उसके वैयक्तिक एवं हिन्दूधर्म के सामुदायिक विघटन को प्रकट करता है ।

रांगेय राघव कृत " राई और पर्वत " उपन्यास की विधवा विद्या " विवाहेतर यौन सम्बन्ध को पाप मानती है । उसकी मां विद्या को रामआसरे के साथ यौन-सम्बन्ध स्थापित करने के लिए उकसाती है । 3 परन्तु विद्या रामआसरे के साथ यौन -सम्बन्ध स्थापित करने से इन्कार कर देती है। वह पतिव्रत के संस्कार से प्रभावित होने के कारण वैयक्तिक स्तर पर टूट जाती है ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि कभी-कभी संस्कारगत प्रभाव के कारण सामाजिक विघटन उत्पन्न हो जाता है ।

==================================================

1:- पिता क्रोध से बौखला गये । अपने पर जब कर हाथ रोक लिया । लड़का डील में बराबर का था ---- लेकिन जबान नहीं रोक सके ।--- निकल जा इसी दम घर से । बदजात बाप के सामने बोलता है । भंगी ईसाई-करिस्तानों की पढ़ाई और संगत का असर है। ऐसी -तैसी अंग्रेजी की पढ़ाई की ---बेधर्म हो गया ।

यशपाल :- मेरी-तेरी उसकी बात, पृ0 सं0- 152

2:- वही :- पृ0 सं0- 152

3:- रांगेय राघव :- राई और पर्वत पृ0 स0- 74

राजपाल एण्ड सन्स ,काश्मीरी गेट दिल्ली,प्रथम संस्करण 1958 ई0

ईष्या :-

ईष्या एक मानसिक आवेष ह जिसके उत्पन्न होने पर व्यक्ति क्रोध की भांति उचित -अनुचित का भाव त्याग कर के बदला या प्रतिशोध लेना चाहता है । ईष्या किसी व्यक्ति के रूप सान्दर्य,गुण ,कार्यक्षमता सम्पन्नता,या विद्यवता को देख रक,एक व्यक्ति के मन में जब यह भाव उठता ह कि मैं अमुक व्यक्ति की भांति क्यों न हो सका । अमुक व्यक्ति को किस प्रकार किया जाय की वह अवनमित हो जाय सच ऐसी मानसिक स्थिति को ईषा कहा जाता है ।

ईष्या के कारण उत्पन्न पारिवारिक विघटन का चित्रण जैनेन्द्र कुमार कृत अनाम स्वामी," औपन्यासिक कृत में हुआ । प्रस्तुत उपन्यास का शंकर उपाध्याय का वसुन्धरा के विवाह होने वाला था,तथा दोनों एक दूसरे को चाहते भी थे परन्तु दोनों परिवारों के बीच व्याप्त आर्थिक विषमता की खाई के कारण विवाह न हो सका " वसुन्धरा " के प्रति जागरित ईष्या के कारण शंकर उपाध्याय एक अन्य युवती से विवाह कर लेता है,परन्तु वसुंधरा को पुन: प्राप्त करने में पत्नी को अवरोधक मान कर उसकी हत्या कर देता तथा वसंधरा के ईद-गिर्द चक्कर काटता है। परन्तु उसके पूर्ण समर्पण को स्वीकार नहीं करता । " । शंकर उपाध्याय को जब यह ज्ञात होता है कि वसंधरा,अनाम स्वामी के पास प्रेम सम्बन्ध स्थापित करने आई ह तो ईष्या वश वह स्वयं वसुधरा की हत्या कर देता ह । " 2 इस प्रकार ईष्या के कारण की गई हत्या से वसुधरा एवं शंकर उपाध्याय दोनों का वैयक्तिक विघटन हो जाता है ।

भैरव प्रसाद गुप्त कृत गंगा मैया, औपन्यासिक कृति

==================================================

1:- § क्या समझती हो मै औरत के लिए बना हूं । नामर्द। ------ दुनिया में एक तुम लोग ही नहीं हो । मर्द के लिए आर भी चैलेंज है ।§
जैनेन्द्र कुमार :- अनाम स्वामी, पृ0 सं0- 186

2:- § ताला खुला कमरे में दाखिल हुए ---- वसुधरा शैया पर नग्न पड़ी थी । वह मर चुकी थी ।। मैंने आंखे बन्द की । जाने कितने कल्प बीते ---- आप इन्हें ~~सुई देकर मैंने~~ प्यार करते थे । सुना ,आंख खोली उन्हें देखा । उन्हें मरना हुआ ह। जहर की सुई देकर मैने मारा है ।§

3:- वही :- पृ0 सं0 - 310

के गोपी तथा जोखी के गाँव के बीच उत्पन्न सामुदायिक विघटन का मुख्य कारण ईष्या जनीहत क्रोध है। गोपी के गाँव पर ईष्या वश रात्रि में आक्रमण किया जाता है। क्योंकि जोखू के गाँव वालों के मन में यह ईष्या उत्पन्न हो गई थी गोपी ने जानबूझकर के अखाड़े के नियमों की अवहेलना करके जोखू पहलवान की हत्या की है जब कि मात्र संयोगवश जोखू की मृत्यु हो गई थी । जोखू की मृत्यु के कारण उत्पन्न ईष्या भयंकर रूप धारण करती है। जिसमें कई गाँव वालों की जानें गई थी तथा गोपी को सजा भुगतनी पड़ी ह । इस प्रकार की असामयिक मृत्यु वैयक्तिक विघटन की सूचक है ।

रांगेय राघव कृत" कब तक पुकारूँ " औपन्यासिक कृति की "प्यारी " ठाकुरों द्वारा किए गए अत्याचारों से उत्पन्न ईर्ष्यावश अपने पति सुखराम को छोड़कर रूस्तमखाँ पुलिस वाले की रखैल बन जाती है। रूस्तम खाँ द्वारा रखैल रखना और प्यारी के कहने से ब्राहम्णों को झूठे मुकदमे में फँसाना उसके वैयक्तिक विघटन का सूचक ह ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि आलोच्यकालीन हिन्दी उपन्यासों में ईष्या जानित सामाजिक विघटन का चित्रण हुआ है ।

---

1:- भैरव प्रसाद गुप्त :- गंगा मैया, पृ0 सं0- 15

2:-§फिर अपने -आप कहने लगी " तब दो-एक ठाकुरों को पिटवाऊँगी ,जिन्होंने मुझसे मतलब निकालकर दुअन्नी की जगह इकन्नी दी थी ।निरोती बामन के घर में आग लगवा दूँगी चुपचाप । ----- हुकूमत करूँगी सब का सिर कुचलूंगी।§

रांगेय राघव :- कब तक पुकारूँ , पृ0 सं0 - 5।
राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरीगेट दिल्ली , छठा सं0 1980 ई0

सामूहिकता का ह्रास :-

सामूहिकता के ह्रास के कारण उत्पन्न सामाजिक विघटन का चित्रण शिवप्रसाद सिंह कृत " अलग-अलग वैतरणी औपन्यासिक कृति के झेलेसरा एवं घर मरन दास के व्यक्तित्व के द्वारा हुआ है। सामूहिकता के ह्रास के कारण संवैधानिक संरक्षण एवं राजनीतिक अधिकारों के सहारे उपयुक्त दोनों पात्र अपनी जाति एवं वर्ग के लोगों पर अत्याचार करते है । तथा किसी जनता को कार्य को करवाने के लिए डाक्टरों की भाँति अपनी फीस वसूल करने में संकोच नहीं करते । " । सामूहिकता के ह्रास के कारण उत्पन्न सामुदायिक विघटन का चित्रण उपन्यास कार के शब्दों में इस प्रकार है। " अचम्भा ई देखकर होता है, सुखदेव राम जी कि जिन पर उस वक्त जुल्म होता था वे ही आज जालिम बन गये है । छुट भैए लोग दो पसे के आदमी हो गए,तो उनकी आँखे उलट गई । आज जुल्म कौन करता है,गाँव में । वही छुटभइये जो पहले जमीदारों के बूटों से रौंदे जा रहे थे । अब छुटभइए गोल बनाकर अपने से कमजोरों गरीबों को सताते हैं । लूटते है। आप हो बताइए खलील मियाँ की जमीन किसने छीनी । जमींदार । धनेसरी का खस्ती कौन खा गया,जमींदार झनकू चमार को गाँव निकाला किसने दिया । जमींदार ने । गाँव की बहू बेटियों को भददी -भददी बातें जमींदार कह रहा है । बेचारे शशि कान्त मास्टर की आँख में बालू डालकर उनका रुपया जमींदार ने छीना । लोगों की खड़ी फसल चोरी से जमींदार काटता है। बोलिए ,यह सब कौन करता ह। वही छुट भइये ,जो कभी गरीब थे, सताये हुए थे 2 और आज उनके ऊपर कोई अंकुश नहीं है,इसलिए वे जो भी करें, कोई पूँछने वाला नहीं है ।

---

1:- ( अच्छा भाई ऐसी बात है तो चलूँगा । पर हमारी फीस तो आप जानते हैं न )
शिवप्रसाद सिंह :- अलग - अलग वैतरणी, पृ0 सं0 -603

जमीदार था तो एक खोल थी । जो कुछ होता था उसकी खोल के साथ नत्थी कर दिया जाता था । इसलिए उस वक्त में लड़ाई बड़ी साफ थी । अब किससे लेड़ अपने ही भीतर के लोग खोल ओढ़कर डाकू लुटेरे और जालिम बन गए है । " ।

रमेश बक्षी कृत किस्से अमर किस्सा " उपन्यास का कथानक" में" एक अर्थ लोलुप व्यक्ति है। उसके जीवन से सामूहिकता का हास्र हो गया है जिसके कारण वह धनार्जन के अतिरिक्त पारिवारिक सम्बन्धों को कोई महत्व नहीं देता ह । उसकी स्पष्ट धारणा है कि " जरूरत पत्नी की नहीं करेंसी की है । 3 वह अपने जीवन काल में जितने भी वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करता ह, मात्र धनार्जन के लिये तथा अवसर प्राप्त होते ही पूर्व नियोजित योजनानुसार उसकी हत्या कर देता है । 4 उसके द्वारा धना लोभ में पत्नी, श्वसुर तथा प्रेमिका की हत्या करना उसके सामूहिकता के हास्र के साथ-साथ उसके वैयक्तिक एवं पारिवारिक विघटन का सूचक है ।

निर्मल वर्मा कृत वेदिन " औपन्यासिक कृति में सामूहिकता के हास्र के कारण उत्पन्न वैयक्तिक विघटन का चित्रण हुआ ह । प्रस्तुत उपन्यास की रायना" पति से विलग होना सहज रूप में स्वीकार करती ह क्योंकि अतीत की विभ्रम छाया में मड़राना उसे पसन्द नहीं है । वह पति से अलग होकर कथानायक में से प्रेम सम्बन्ध स्थापित करती है परन्तु यह सम्बन्ध मात्र समय काटने के लिए स्थापित करती है । उन दोनों के सम्बन्धों के हास्र के सम्बन्ध में डा० सुरेश सिन्हा का यह कथन उपयुक्त है कि " पहली बार

---

1:- शिवप्रसाद सिंह :- अलग- अलग वैतरणी पृ० सं० -632

2:- रमेश बक्षी :- किस्से अमर किस्सा पृ० सं० 113

3:- वही पृ० सं० -104

4:- वही पृ० सं०- 96

लगा जैसे इस शाम तक हम दोनों के बीच जो रिश्ता था, वह अब नहीं है। वह बदल गया था, स्वतः और अनायास। " ।

==========================================================

।:- डॉ० सुरेश सिन्हा :- हिन्दी उपन्यास, पृ० सं०- 258

व्यक्तिवाद :-

व्यक्तिवाद को स्पष्ट करते हुए प्रताप नारायण टंडन ने लिखा है यह विचार धारा उस विचारधारा के ठीक विपरीत है जिसमें व्यक्ति की अपेक्षा राज्य को अधिक महत्व दिया और यह कहा गया है कि राज्य में रहकर ही व्यक्ति का अस्तित्व ~~रहकर~~ है। राज्य में रहकर ही वह जीवित रह सकता है। राज्य से पृथक रहकर उसके व्यक्तित्व का विकास सम्भव नहीं है और राज्य में ही सब प्रकार की उन्नति हो सकती है। " ।[1] कहने का तात्पर्य यह है कि व्यक्तिवाद के अन्तर्गत राज्य को सर्वोपरि मानने के बजाय व्यक्ति को सर्वोपरि महत्व दिया जाता है जो एक सीमा तक उपयुक्त भी है, परन्तु जब व्यक्ति उक्त दृष्टिकोणों को मात्र अपने हितों एवं स्वार्थों तक ही सीमित कर लेता है तब ऐसी दशा सामाजिक विघटन को प्रकट करती है।

अज्ञेय कृत नदी के द्वीप" औपन्यासिक कृति में व्यक्तिवादी जीवन दर्शन के कारण उत्पन्न वैयक्तिक एवं पारिवारिक विघटन का चित्रण हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास के व्यक्तिवादी जीवन दर्शन की ओर संकेत करते हुए डा० सत्यपाल चुघ ने लिखा है। " नदी के द्वीप के शीर्षक के विभिन्न रूपक लेखक के व्यक्तिवादी जीवन दर्शन के विभिन्न पक्षों का स्पष्ट करने में सहायक सिद्ध हुए हैं। " 2 प्रस्तुत उपन्यास के हेमेन्द्र एवं रेखा के पारिवारिक विघटन का कारण हेमेन्द्र का व्यक्तिवादी जीवन दर्शन है, उसका परम्परीत समाज व्यवस्था से विश्वास उठ चुका है। वह सामाजिक व्यवस्था का विरोध करते हुए कहता है। " मैं क्यों

---

1:- प्रतापनारायण टंडन :- हिन्दी उपन्यास वर्ग भावना, पृ० सं०-61 प्रकाशक लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ, प्रथम संस्करण 1956 ई०

2:- सत्यपाल चुघ:- प्रेमचन्द्रोत्तर उपन्यासों की शिल्प विधि पृ०सं०800 इकाई प्रकाशन 16 पुरुषोत्मनगर हिम्मतगंज इलाहाबाद प्रथम सं०1968ई०

इस बुर्जुआ ढांचे के साथ समझौता करना चाहूं ,क्यों इन मान्यताओं से अपना जीवन बांधने को राजी होऊं,इन मान्यताओं को पैदा करने वाले समाज को मैं नहीं मानता । " । चन्द्रमाधव का समाज विरोधी आचरण उसके वैयक्तिक विघटन का सूचक है ।

राजेन्द्र यादव व मन्नू भंडारी कृत " एक इन्च " मुस्कान की अमल नामक युवती भी वैयक्तिकता की पोषक है । प्रथम विवाह के असफल होने पर उसके पिता उसकी दूसरी शादी करने की राय देता है। परन्तु अमला अपने वैयक्तिक दृष्टिकोंणों को प्रकट करते हुए स्पष्ट शब्दों में कहती है। " मैं इतनी निर्बल और निरीह नहीं हूं कि जीवन बिताने के लिये कोई सहारा चाहिए । " 2 अन्त में वह विवाह करने से इन्कार कर देती है। उसके अनुसार "विवाह एक फंदा है जो घर का गला घोट देता है। " 3 उपुर्यक्त दृष्टिकोण के कारण अमला का परिवार न बसाना उसके वैयक्तिक विघटन का सूचक है ।

भगवती चरण वर्मा कृत "रेखा" औपन्यासिक कृति की रेखा के वैयक्तिक एवं पारिवारिक विघटन का कारण उसका व्यक्तिवादी दृष्टिकोण है। उसका यह दृष्टिकोण यौन सम्बन्धों के माध्यम से मुखरित हुआ है। सेक्स के सम्बन्ध में उसकी धारणा है कि "भूख ,भूख है, वह दबाने के लिए नहीं होती,वह शान्त करने के लिए होती है। भूख प्रकृति है उसे दबाना प्रकृति के साथ अन्याय करना होता है। बुद्धि इतना जानती है कि उपवास करना अपने को प्रताड़ित करना यह सब अंधविश्वास की परम्परा है,वैज्ञानिक और स्वस्थ्य बुद्धि के स्तर से अलग चीज है। " 3 मोहन राकेश कृत न आने वाला कल" का नायक "मैं " भी व्यक्तिक दृष्टिकोण के कारण अपनी पत्नी एवं नौकरी का त्याग कर देता है जो उसके वैयक्तिक विघटन को प्रकट करता है ।

---

1:- अज्ञेय :- नदी के द्वीप पृ0 सं0- 91-92
प्रोगेसिव पब्लिशर्स 14 डी फिरोजशाह रोड दिल्ली प्रथम सं0 1951ई0

2:- राजेन्द्र यादव व मन्नू भंडारी :- एक इन्च मुस्कान पृ0 सं0 111
राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली,प्रथम संस्करण 1963 ई0

3:- भगवती चरण वर्मा:- रेखा - पृ0 सं0 198
राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0 दिल्ली,प्रथम सं0 1964 ई0

दाम्पत्य जीवन में टूटन :-

दम्पति (पत्ति-पत्नी) का एक-दूसरे के साथ किस प्रकार का संबंध होना चाहिए परिवार के लिए उनके कर्तव्य क्या है, तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था द्वारा निर्दिष्ट होते हैं । जब उक्त निर्दिष्ट व्यवस्था में पति या पत्नी की ओर से व्यवधान उत्पन्न किया जाता है चाहे वह जिस कारण से हो तब उक्त दशा को दाम्पत्य जीवन में टूटन की संज्ञा से संबोधित किया जाता है । दाम्पत्य जीवन में टूटन उत्पन्न करने वाले कारणों में, विवाहेतु काम सम्बन्ध आत्म-हत्या संदेह, सामाजिक प्रतिष्ठा का लोभी, धन लिप्सा प्रमुख हैं । दाम्पत्य जीवन में टूटन उत्पन्न करने वाले उपर्युक्त कारणों का शोध प्रबन्ध के अध्याय तीन में स्वतन्त्र शीर्षकों में विभक्त करके विश्लेषित किया गया है । अतः दाम्पत्य जीवन में टूटन के कारण उत्पन्न सामाजिक विघटन को पुनरावृत्ति नहीं की जा रही है । दाम्पत्य जीवन में टूटन के कारण उत्पन्न सामाजिक समस्याओं की ओर डा० चण्डी प्रसाद जोशी ने इस प्रकार किया है "यह प्रश्न है कि किसी कारणवश स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों में कटुता अथवा दरार पड़ जाने पर तलाक की समस्या का तलाक न भी हो तो परिवार से अलग पति और पत्नी के अपने अलग-अलग जीवन बिताने । का इसी दाम्पत्य जीवन का एक अन्य पहलू पति की मृत्यु हो जाने पर परिवार के भीतर विधवा नारी के जीवन का है, जो स्वतः अपने आप में महत्वपूर्ण है । " । उपर्युक्त सामाजिक समस्याएं सामाजिक विघटन की वाह्य अभिव्यक्ति हैं ।

---

1:- डा० चण्डी प्रसाद जोशी :- हिन्दी उपन्यास:- समाजशास्त्रीय विवेचन पृ० सं० -44

अनुसंधान प्रकाशन 87/259 आचार्यनगर कानपुर, प्रथम संस्करण 1962 ई०

युद्ध :-

युद्ध सामाजिक विघटन के प्रमुखतम कारणों मे से युद्ध एक है । युद्ध की दशा में सामाजिक व्यवस्था अस्त व्यस्त हो जाती है तथा युद्ध के कारण अनेक सामाजिक समस्याओं और बुराइयों का जन्म होता है। इस संबंध मेंश्रीमती किरण बघेल का यह कथन सत्य प्रतीत होता है । "युद्ध के कारण सामाजिक व्यवस्था टूट जाती है,परिवार नष्ट हो जाते हैं और अनेक सामाजिक समस्याओं का जन्म होता है । बेरोजगारी,अपराध हत्या और चोरी की घटनाओं में वृद्धि हो जाती है । व्यक्ति का नैतिक चरित्र गिर जाता है । वह अनैतिक और समाज विरोधी कार्यों को सम्पादित करने में किसी प्रकार का संकोच नहीं करता है । यही कारण कि इसलिए यह और मैरिल ने युद्ध को सामाजिक विघटन की अवस्था माना है । इसके परिणाम स्वरूप राजनीतिक और सामाजिक क्रान्ति का जन्म होता है। युद्ध को सामाजिक विघटन का तीव्रतम परिणाम इसलिए कहा जाता है कि इससे सामाजिक परिवर्तन इतनी तीव्रता से होते हैं,जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है । इसके साथ ही युद्ध का सामाजिक जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करता है । युद्ध के कारण सामाजिक मूल्य,मान्यताएं और रूढ़ियां शिथिल पड़ जाती है। इससे सामाजिक नियन्त्रण का प्रभाव शिथिल हो जाता है । ऐसी स्थिति भी समाज को विघटन की ओर ले जाती है । [1]

यशपाल कृत " मेरी तेरी उसकी बात"औपन्यासिक कृति में प्रथम विश्व युद्ध मे हुए नरसंहार का चित्रण इस प्रकार है। "युद्ध के समयलगभग चार वर्ष तक भयंकर नरसंहार में लाशों को ठिकाने न लगा सकने और युद्ध के दूसरे मारक प्रभावों के परिणाम में यूरोपसे एक नयी महामारी का विकराल झंझा उठ कर संसार भर

---

1:- श्रीमती किरण बघेल :- सामाजिक विघटन और अपराध शास्त्र,पृ0सं-41 पुष्पराज प्रकाशन रीवा ,प्रथम संस्करण 1977,प्रयुक्त संस्करण 1982-83 ई0

में फैल गया । " । उपर्युक्त नरसंहार एवं उससे उत्पन्न महामारी सामाजिक विघटन को प्रकट करता है। उपर्युक्त उपन्यास में प्रथम विश्वयुद्ध के कारण उत्पन्न अन्तर्राष्ट्रीय विघटन का लेखा-जोखा इस प्रकार किया गया है । " हिन्दुस्तान से हजारों मुसलमान, कोई हज के बहाने,कोई अफगानिस्तान की राह,जान हथेली पर रखकर खलीफा को मदद में लड़ने के लिये चल दिया । " 2 प्रस्तुत उपन्यास में द्वितीय युद्ध प्रारम्भ होने की खबर को लाभार्जन का सुअवसर माना गया । फलत: "थोक फरोसों ने सब माल रोक लिया था । सहसा हर चीज के दाम सवाये,ड्योढे । 3 हर वस्तुओं का बाजार में सहसा कीमत बढ़ना सामाजिक विघटन का सूचक है। जून 1940 ई० में जर्मन सेनायें उत्तर में हालैण्ड से फ्रांस में घुस आई थी । पन्द्रह दिन में आधे फ्रांस पर जर्मन सेना का अधिकार । जर्मनी -इटली ने पश्चिम एशिया और अफ्रीका में ब्रिटेन और फ्रांस के उपनिवेशों पर भी हमले बोल दिये । आक्रमण करने की उपर्युक्त घटना अन्तर्राष्ट्रीय विघटन की सूचक है ।

द्वितीय विश्व युद्ध का परिणामी प्रभाव

---

1:- यशपाल :- मेरी तेरी उसकी बात, पृ० सं०- 31

2:- वही :- पृ० सं०- 50

3:- वही :- पृ० सं० -351

4:- वही :- पृ० सं० - 362

भारतीय जन जीवन पर भी पड़ा जिससे देश में महगाई एवं भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिला जो सामाजिक विघटन की अभिव्यक्ति है ।

===========================================================

1:- {अनाज, कपड़े, घी, चीनी और दूसरी सभी चीजों के दाम दूने-तिगुने । महंगाई फसलों की खराबी के कारण नहीं, सरकारी नीति से । सेनाओं के लिये रसद और कपड़ा मुंहमांगे दामों खरीदा जा रहा था । मजदूरी का सरकारी रेट भी दूना । लोग महगाई के दबाव से सेना और जंगी काम की मजदूरी के लिये लपके आ रहे थे । बाजार बहुत चढ़ जाने से सरकार ने कंट्रोल लगा दिये थे । कंट्रोल दाम पर आनाज कपड़ेकी की दूकाने । ऐसी दूकानों पर केवल मोटा आनाज मिलता, वह भी घुना हुआ और मोटा कपड़ा । ----- फिर अपनी मांग के बाजार में जाकर ब्लैक में ---- बिकता ।}

2:- यशपाल :- मेरी -तेरी उसकी बात, पृ0 सं0- 374

## दुर्घटनाएं :-

दुर्घटनाओं का प्रसार क्षेत्र अतिव्यापक है । इसके अन्तर्गत वे सभी दैवी प्रकोप समाहित है जो समय-समय पर सम्पूर्ण चराचर जगत में परिवर्तन करते रहते हैं । इनके लिए अधखिले पुष्पों को मसल देना -नवविवाहिता के सिंदूर को धो देना, सद्यःप्रसूता की गोद से उसके नवजात शिशु को छीन लेना, समुन्नत देश की सभ्यता एवं संस्कृति को धूल में मिला देना साधारण सी बात है । मोटे तौर पर दुर्घटनाओं को औद्योगिक दुर्घटनाएं, संक्रामक, बीमारियां, अतिवृष्टि अनावृष्टि नामक उपशीर्षकों में विभक्त करके सामाजिक विघटन के परिप्रेक्ष्य में अनुशीलन किया गया है । औद्योगिक दुर्घटनाओं का विवेचन औद्योगीकरण शीर्षक के अन्तर्गत हुआ है । अत: उसका पुन: विवेचन यहां नहीं किया जा रहा है । शेष का वर्णन निम्नलिखित है ।

## संक्रामक बीमारियां :-

संक्रामक बीमारियां आदिम युग से ही प्राय: सभी जीव -जन्तुओं के विनाश का कारण रही है। विश्व के न जाने कितने लोग हैजा, प्लेग चेचक आदि संक्रामक बीमारियों से पीड़ित होकर असमय में ही मृत्यु का शिकार होते रहे हैं । यों तो वैज्ञानिक औषधियों एवं विशेष प्रविधियों के द्वारा संक्रामक बीमारियों पर पूर्ण नियंत्रण के अथक प्रयास किये गये हैं, लेकिन ये संक्रामक बीमारियां पृथ्वी के गर्भ में उठ रही ज्वालामुखी के लावे की भांति अवसर पाकर कहीं न कहीं कभी न कभी अवश्य फूट पड़ती है जिससे उस स्थान विशेष में अव्यवस्था एवं अशान्ति उत्पन्न हो जाती है ।

हजारीप्रसाद द्विवेदी कृत" पुनर्नवा" औपन्यासिक कृति के हलद्वीप का सामुदायिक विघटन वहां पर महामारी फैलने के कारण हो जाता है । उपन्यास कार ने सामुदायिक विघटन की ओर संकेत करते हुए लिखा है । " एकाएक

नगर में भयंकर महामारी का प्रकोप हुआ । --------नगर में हाहाकर मच गया जिधर देखा उधर ही कराहने की ध्वनि सुनाई देने लगी । लोगों में भगदड़ मच गयी । राजपरिवार ने भी नगर से दूर बने हुए प्राश्राद में आश्रय लिया। ------ कोई किसी को पूंछने वाला नहीं था । किसी -किसी मुहल्ले में प्रत्येक व्यक्ति महामारी का शिकार बना था और कोई-कोई मुहल्ला जनशून्य हो गया था । अपने सगे सम्बन्धी भी दूर भागने लगे। " । इस प्रकारहैजे के फैलने से सुरेन्दपाल सिंह कृति "लोकलाजखोई" उपन्यास के कुरमियों का सामुदायिक विघटन हो जाता है । 2

दयानाथ झा कृत" जमींदार का बेटा" उपन्यास के रमौली ग्राम के जीवन का पारिवारिक विघटन हैजा के कारण हो जाता है । हैजा से ग्रसित होकर एक रात में ही जीवन झा के दोनों बेटे परलोकवासी हो जाते हैं। 2 सर्वदानन्द कृत" माटी खाई जनावरा" उपन्यास के रजनी के पारिवारिक विघटन का मूलकारण उसके श्वसुर की हैजा में मृत्यु होना है । पिता के संरक्षण के अभाव में रजनी का पति पारिवारिक दायों को भुला देता है तथा वेश्यावृत्ति का शिकार हो जाता है । 3

---

1:- हजारीप्रसाद द्विवेदी:- पुनर्नवा, पृ0 सं0 -25
राजकमल प्रकाशन दिल्ली, पटना,प्रथम संस्करण 1973 ई0

2:- उसी रात के नौ बजे जीवन झा के जवान बेटे मोहित और रात के दो बजे मनोहर दोनों को हैजा पकड़ लिया । दूसरे दिन,दिन के तीसरे पहर मोहित और शाम को पांच बजे मनोहर दोनों ही दुनिया को छोड़ गये। §
दयानाथ झा:- जमींदार का बेटा, पृ0 सं0- 246 ,हिन्दीभवन प्रयाग,संस्करण1959

3:-बम्बई की हवा उसके पति को लग रही थी।हाथ में पैसा था,वह इधर-उधर सुन्दर औरत पर उड़ने लगा ।रजनी कुढ़-कूढ कर रह जाती थी इन्हीं दिनों उसके श्वसुर भी हैजा से चल बसे।कपूत पूत को खुलकर खेलने की छूट मिल गई ।
सर्वदानन्द:- माटी खाई जनावरा,पृ0 सं0- 276
हिन्दुस्तानी एकेडमी उ0प्र0 इलाहाबाद ,प्रथम संस्करण 1960 ई0

अमृतलाल नागर कृत अमृत और विष औपन्यासिक कृति में सन् 1942 ई0 में प्लेग के कारण उत्पन्न सामाजिक विघटन का चित्रण इस प्रकार किया गया है। " शहर में प्लेग का जोर बहुत विकट था । नवम्बर मास ही से मौतें होने लगी थी। दिसम्बर और जनवरी में तो त्राहि-त्राहि मच गई ।एक-एक मुहल्ले से दिन में चार-चार ,पांच-पांच बार"राम नाम सत्य" की आवाजें उठने लगी । कहीं अंग्रेज डाक्टर,कहीं बंगाली डाक्टर आ जा रहे हैं । हर एक के होश-हवास उड़े हुए हैं । "

कुछ इसी प्रकार की स्थिति यशपाल कृत "मेरी तेरी उसकी बातें " औपन्यासिक कृति में इन्फ्लूएन्जा नामक महामरी की विभीषिका का चित्रण हुआ है । जो इस प्रकार है। " महामारी की वह आंधी इस देश में भी आयी । उस बीमारी के नाम,निदान और उपचार डाक्टरों,हकीमों,वैद्यों के लिए अजाने । -----------विरले ही इस बीमारी से अछूते रहे।------ सड़कों बाजारों में दिन-रात ,किसी भी समय अर्थियां जनाजे दिखायी दे जाते ।गली मुहल्ले के लोग एक अर्थी मरघट या कब्रिस्तान पहुँचाकर लौटते तो दो शव और देखते । ----- बीमारी के भय से कई मुहल्ले, गलियां,गांव उजड़ गये । " 2

उपर्युक्त उपन्यास के सेठ रतनलाल का परिवार भी इन्फ्लून्जा की महामारी से अछूता न रहा । इस महामारी में ~~------~~ उसकी पुत्रवधू की मृत्यु हो जाती है। 3
उक्त महामारी में "कमल का जवान साला भी जाता रहा । " 4
सेठ की पुत्र बधू की मृत्यु एवं कमल के साले की असामयिक मृत्यु समाजशास्त्रीय भाषा में पारिवारिक एवं वैयक्तिक विघटन कहा जायेगा ।

---

1:- अमृतलाल नागर:- अमृत और विष, पृ0 सं0- 5।
2:- पंचम संस्करण 1982 ई0,लोकभारती प्रकाशन 15 ए,महात्मागांधी मार्ग, इलाहाबाद
यशपाल:- मेरी तेरी उसकी बात,पृ0 सं0-3।
तृतीय सं0 1984 ई0 लोकभारती प्रकाशन 15ए,महात्मागांधी मार्ग,इलाहाबाद
3:- वही: पृ0 सं0-3।
4:- वही:- पृ0 सं0- 33

रामदरश मिश्र कृत " जल टूटता हुआ " औपन्यासिक कृति का तिवारी पुरगांव प्लेग की भयंकर बीमारी से ग्रसित है । पूरे ग्रामीण समुदाय में भय छाया हुआ है । प्लेग के कारण उत्पन्न सामुदायिक विघटन का हृदयविदारक चित्रण उपन्यासकार ने इस प्रकार किया है। " उस साल भयंकर प्लेग आया, बहुत से लोग मरे, अतरवासी को प्लेग ने पकड़ लिया ,सबकी दवा करनेवाले धनपाल का अपने ही घर के रोग पर कोई बस न चला । अतरबासी चलीगई और एक दिन स्वंय अपने ऊपर भी उसका वश समाप्त हो गया और अपने से हांथ छुड़ाकर सिधार गये । " 1

जगदीश चन्द्र कृत "धरती धन न अपना" औपन्यासिक कृति के काली का पारिवारिक विघटन बीमारी के कारण उसकी मां एवं चाची की मृत्यु के कारण हो जाता है । 2

इन संक्रामक बीमारियों के अतिरिक्त अन्य बहुत सी हृदय, उदर, मस्तिष्क, त्वचा आदि की बीमारियां है जो नियंत्रण से परे होकर पारिवारिक एवं वैयक्तिक विघटन उत्पन्न करती है । डा0 देवराज कृत "भीतर का घाव" औपन्यासिक कृति के किशन की उदर रोग से होनेवाली असामयिक मृत्यु उसे वैयक्तिक विघटन को सूचित करती है। 3 तथा सुमित्रा के समक्ष उत्पन्न पति का अभाव उसके पारिवारिक विघटनकी ओर संकेत करता है । लक्ष्मीनारायण लाल कृत बया का घोसला और सांप उपन्यास का रामानन्द कुष्टरोग से ग्रसित है वह इस रोग से

==========================================================

1:- रामदरश मिश्र :- जल टूटता हुआ, पृ0 सं0- 240
हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी ,प्रथम संस्करण 1969 ई0

2:- डा0 देवराज:- भीतर का घाव, पृ0 सं0- 132
राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 1971 ई0।

3:-तेरी मां को प्लेग खा गई ।चाचे ने चप्पे गिन-गिनकर पाला-पोसा लेकिन उसे भी हैजे ने खा लिया । "
जगदीश चन्द्र :- धरती धन न अपना, पृ0 सं0 13
राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0 दिल्ली, प्रथम संस्करण 1972 ई0

4:- डा0 देवराज :-भीतर का घाव, पृ0सं0 132

मुक्त होने के लिये आत्महत्या कर लेता है । 1 रामानन्द द्वारा आत्महत्या करना वैयक्तिक विघटन की चरम परिणति है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि संक्रामक बीमारियों एवं अन्य असाध्य बीमारियों का सामाजिक विघटन उत्पन्न करनेमेंविशेष हाथ होता है । इन बीमारियों के द्वारा असामयिक मृत्यु ,हीन भावना मानसिक असंतुलन आदि उत्पन्न होता है जो समाज मेंसामुदायिक , पारिवारिक अथवा वैयक्तिक विघटन के रूप मेंदिखलाई पड़ता है ।

अनावृषिट :-

कभी-कभी अनावृष्टि केकारण देश में दुर्भिक्ष पड़ जाता है । देश की अकाल ग्रस्त दशा उसके सामाजिक विघटन को प्रकट करती है । नागार्जुन कृत "बाबा बटेशर नाथ " औपन्यासिक कृति का रूपउली ग्राम हिजरी सन् 1980 में दुर्भिक्ष का शिकार हुआ था । यह दुर्भिक्षदेश में अनावृष्टि के कारण उत्पन्न हुआ था । रूपउली गांव में हर प्रकार के पूजा-पाठ ,दोनों -टोटकें किये गए, परन्तु उस वर्ष आसमान से एक बूंद पानी टपका जिसके कारण वहां भयंकर दुर्भिक्ष पड़ गया । 2

---

1:- (लेकिन सच्चाई यह है भइया कि रामानन्द अपने कोढ़ के मर्ज से इतना घबड़ा गया था कि वह स्वयं जहर खाकर मर गया ।)
लक्ष्मीनारायण लाल:- बया का घोसला और सांप, पृ0 सं0- 25
नीलाम प्रकाशन, इलाहाबाद,प्रथम संस्करण 1953 ई0

2:- नागार्जुन :- बाबा बटेशरनाथ, पृ0 सं0 50-51
राजकमल प्रकाशन दिल्ली, द्वितीय संस्करण 1960 ई0

इस दुर्भिक्ष का प्रभाव सर्वप्रथम साधारण तबके के लोगों पर पड़ा । साधारण खेतिहर श्रमिकों की स्थिति ऐसी हो गई कि मोटिया अनाज भी मिलना कठिन हो गया, और लोगों ने ईटों को पीसकर, उबाली हुई पत्तियों में सानकर रोटी बनाने लगे । 1 गांव के खेतिहर श्रमिकों को अब अकाल के कारण घास-पत्ती भी शेष नहीं रह गया तो वे गांव छोड़कर भागने लगे । 2 उनके गांव छोड़ने की यह प्रवृत्ति श्रमिकों के सामुदायिक विघटन को प्रकट करता है ।

अनावृष्टि के भयंकर प्रकोप से देश में भुखमरी फैल जाती है जिसका हृदयविदारक चित्रण उपन्यासकार के शब्दों में इस प्रकार है । "बूढ़े- बच्चे ढोर-डंगर ---------भूखमरी के सबसे बड़े शिकार यही थे । कई-कई दिन का फाका, बीच में कुछ मिला तो खा लिया । भूख की जलन से आत्मा झंवा गई थी और आंसू गायब हो चुके थे । " 3 इस भूखमरी से सिलसिला शुरू होता है असामयिक मृत्यु का । मरने वाले की लाश

===========================================================

1:- जो ईट हल्की आंच में पकी होती, लोग उन्हें ही उठाते । घर में औरते ईट का चूरन बनाती पहले, पीछे इस चूरन का महीन पिसान तैयार कर लेती आम, जामुन अमरूद, अमली वगैरह की पत्तियां उबालकर पीस ली जाती । पांच जने अगर खाने वाले हुआ करते तो ईट का एक सेर पिसान दो सेर उबली पत्तियों में मिला या जाता, कहीं यह पिसान पत्तियों में एक चौथाई भर डाला जाता । आम की कुटिनियों का पिसान भी इसी तरह बनता । §

नागार्जुन:- बाबा बटेशर नाथ, पृ0 सं0-52

राजकमल प्रकाशन दिल्ली, द्वितीय संस्करण 1980 ई0

2:- वही :- पृ0 सं0- 58

3:- वही :- पृ0 सं- 58

का ठिकाना लगाने वाला कोई न था क्योंकि " जब तक लोगों में ताकतथी और काठ जब तक सुलभ था, तब तक मुर्दे जलाये जाते रहे । बाद में नन्हें, नन्हें बच्चों की लाशों की तरह सयानों की लाशें मैदान में गाड़ दी जाती थी । आगे चलकर यह भी असम्भव हो गया तो मुर्दे यों ही मैदान के हवाले करने लगे लोग हवा में उन दिनों अजीब दुर्गन्ध भर उठी थी । " 1 इस अकाल में इस देश का समूचा पूर्वी हिस्सा भूखमरी की चपेट में आ गया था । हजारों परिवार बरबाद हो गये और लाखों की जान चली गई। 2 इस प्रकार अनावृष्टि के कारण देश में सामाजिक विघटन उत्पन्न हो गया था ।

अतिवृष्टि:-

अनावृष्टि की भाँति अतिवृष्टि भी सामाजिक विघटन को जन्म देती है, इस तथ्य को और नागार्जुन कृत " दुखमोचन उपन्यास में उद्घाटित किया गया है। प्रस्तुत उपन्यास का" दमका कोइली" ग्राम बाढ़ की भीषण चपेट में आ जाता है। उक्त ग्राम की खरीफ की आधी फसल बाढ़ से नष्ट हो जाती है जिसके कारण गांव के अधिकांश खेतिहर श्रमिक रोजी-रोटी की तलाश में गाँव छोड़ने लगते हैं । 3 गांव से पलायन

---

1:- नागार्जुन:- बाबा बटेसर नाथ, पृ0 सं0- 58
राजकमल प्रकाशन दिल्ली, द्वितीय संस्करण 1960 ई0

2:- वही :- पृ0 सं0- 50

3:- {अधिकांश खेतिहर मजदूर रोजी की तलाश में अपना-अपना इलाका छोड़कर पूरब-पश्चिम जाने वाली रेलगाड़ी पर सवार हो चुके थे । }
नागार्जुन :- दुखमोचन, पृ0 सं0- 22
राजकमल प्रकाशन दिल्ली, द्वितीय संस्करण 1958 ई0

की यह प्रवृत्ति ग्रामीण सामुदायिक विघटन की द्योतक है । अतिवृष्टि के परिणामी प्रभाव स्वरूप " बाढ़ग्रस्त क्षेत्र में मलेरिया एवं कालाजार नामक संक्रामक बीमारी फैल जाती है जो अपने प्रभावी क्षेत्र का अनिष्ट करने में कोई कोर-कसर नहीं उठा रखा था । " । साथ ही साथ बाढ़ के दुष्परिणाम स्वरूप आसपास के अच्छे गांवों के सत्तर प्रतिशत लोग इसके [एक विशेष प्रकार के चर्म रोग] शिकार हो गये थे । 2

ठीक इससे मिलती जुलती दशा नागार्जुन कृत " बाबा बटेशर नाथ उपन्यास के बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों की भी है । प्रस्तुत उपन्यास के बनिया पट्टी के मुसहरों का सामुदायिक विघटन उस गांव में कमर तक बाढ़ का पानी भर जाने से होता है क्योंकि गांव के सभी मुसहरों कोघर छोड़कर बटेशर बाबा की शरण लेनी पड़ी थी । उन लोगों को विघटित दशा का चित्रण बटेशर नाथ के शब्दों में इस प्रकार है। "और -मर्द ,सर-सामान और बच्चों को लिए दिए भाग आए । मचान बांधकर मेरी डालों पर हरहने लगे । बड़ी मुसीबत थी बेचारों के लिए । रोज -मजदूरी करें रोज खायें लेकिन उन दिनों तो सारे कामकाज बन्द पड़े थे । जमीन पानी के अन्दर थी तो वहां भला काम क्या होता । दस पांच रोज किसी तरह उनका काम चला, फिर फाके पड़ने लगे । " 3 यह बाढ़

---

1:- [मलेरिया और कालाजार ने तो लोगों को तबाह कर ही रखा था ।]
नागार्जुन :- दुखमोचन :- पृ0 सं0- 23
राजकमल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 1962 ई0

2:- वही:- पृ0 सं0- 23

3:- नागार्जुन :- बाबा बटेशर नाथ, पृ0 सं0- 74-75
राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0 दिल्ली, द्वितीय संस्करण 1980 ई0

" दूसरों के खेतों में मजदूरी करके जीविका चलाने वालों का तो और बुरा हाल था । यह बाढ़ उनके लिए भुखमरी का बिगुल बजाती आई थी । रास्ते बन्द थे, भागना भी आसान,नहीं था । " 1 भूखमरी की यह स्थिति सामाजिक विघटन को प्रकट करती है ।

बाढ़ के कारण लोगों का आवागमन अवरुद्ध हो गया था जिसकी वजह से सांप के काटने से चार व्यक्ति असामयिक मृत्यु के शिकार हो जाते है । 2 बाढ़ के कारण " उस वर्ष फसली बुखार से भी कई जाने गई थी । मरने वालों में बच्चों की तादाद ज्यादा थी,बाढ़ के अन्दर दबी पड़ी फसलों के सड़े-सूखे दाने सुखाकर रख लिए गये थे । पेट में पहुंचते ही उन्होने अपना जहरीला असर फैलाना शुरू कर दिया । कुछ गरीब इससे मरे थे । बाढ का बचा खुचा पानी मलेरिया के मच्छरों के लिए जच्चाखाना बन गया उन्होने बहुत दिनों तक यहां तबाही फैलाये रखी । " 3

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि दुर्घटनाओं का सामाजिक विघटन उत्पन्न करने में विशेष हाथ होता है। बहुधा चाहकर भी कुछ दुर्घटनाओं पर नियंत्रण कर पानाकठिन है । दुर्घटनायें वैयक्तिक ,पारिवारिक एवं सामुदायिक विघटन को समय-समय पर उत्पन्न करती रहती है ।

---

1:- नागार्जुन :- बाबा बटेशर नाथ, पृ0 सं0- 76
राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0 दिल्ली, द्वितीय संस्करण 1960 ई0

2:- वही:- पृ0 सं0-76

3:- वही:- पृ0 सं0- 77

अध्याय - 4

# उ प सं हा र

स्वतंत्रता प्राप्त करने के अनन्तर 1975 ई0 तक की लघु अवधि में देश ने राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में विविध उतार-चढ़ाव झेला है जिसका प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों रूपों में भारतीय सामाजिक व्यवस्था पर प्रभाव पड़ा है । इस प्रभाव से इस काल के उपन्यास कार भी अछूते न रहे । अत: उनकी रचनाओं में राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से सम्बन्धित घटनाओं का आवश्यकतानुसार उपयोग किया गया जो स्वाभाविक है क्योंकि रचनाकार को कच्ची सामग्री अपने आसपास के वातावरण एवं परिवेश से ही प्राप्त होती है जिसे वह कल्पना के द्वारा परिष्कृत करके, अपने लक्ष्य को प्राप्त करता हुआ पाठकों तक सम्प्रेषित करता है ।

उपन्यास मानव जीवन की व्याख्या है । उपन्यास की कथावस्तु के रूप में मनुष्य के जीवन का यह स्वआन्तरिक और वाह्य दोनों प्रकार का हो सकता है। अत: उपन्यास के अन्तर्गत औपन्यासिक पात्रों के वैयक्तिक एवं सामाजिक सम्बन्धों का लेखा-जोखा अवश्य रहता है क्योंकि व्यक्ति समाज से कटकर व्यवस्थित एवं शान्तिपूर्ण ढंग से जीवन व्यतीत करने में सफल नहीं हो

पाता है । इसीलए विचारक एवं आलोचक वैयक्तिक मूल्यों को भी सामाजिक मूल्यों के सापेक्ष आंकने का प्रयास करते हैं । जिस प्रकार व्यक्ति का समाज के विभिन्न सदस्यों,समूहों,संस्थाओं से सम्बन्ध होता है,ठीक उसी प्रकार औपन्यासिक पात्रों का भी एक सामाजिक प्रीमान होता है । जब तक औपन्यासिक पात्र उपन्यासों में चित्रित सामाजिक सम्बन्धों ,समूहों एवं संस्थाओं से समाज स्वीकृत ढंग से मतैक्य एवं सहयोगपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखता है तब तक उपन्यास में चित्रित पात्रों के समाज को संगठित समाज कहेंगे और जब उपन्यास के एक या एक साथ कई पात्र सामाजिक सम्बन्धों ,समूहों एवं संस्थाओं के स्वीकृत सिद्वान्तों एवं पारस्परिक सम्बन्धों की अवहेलना करने लगते हैं,वैयक्तिक स्वार्थों को सामाजिक स्वार्थों की अपेक्षा विशेष महत्व देने लगते हैं तथा अवसर मिलने पर सामाजिक संस्थाओं और समूहों का वैयक्तिक स्वार्थों की पूर्ति में उपयोग करने लगते हैं तब समाज में अव्यवस्था,अशान्ति एवं असंतुलन पूर्ण स्थिति उत्पन्न हो जाती है। समाज की यह असंतुलनपूर्ण स्थिति सामाजिक विघटन कहलाती है। वास्तव में सामाजिक विघटन सामाजिक संगठन की विपरीत एवं सापेक्षिक अवधारणा है । इसीलए हम किसी समाज को तब तक विघटित नहीं कह सकते जब तक कि उस समाज के संगठन के लिए निर्धारित मूल्यों मान्यताओं एवं पारस्परिक सम्बन्धों को न जान लें ।

समाजशास्त्री में सामाजिक -विघटन का माप-दण्ड वे सामाजिक परिस्थितियां हैं जो विघटन के परिणाम के रूप में उत्पन्न होती है। उदाहरण के लिए व्यक्तिगत क्षेत्र में मद्यपान,वेश्यावृत्ति ,अपराध,बाला-पराध,विक्षिप्तता,आत्महत्या,अंग-भंगआदि सामाजिक विघटन के परिणाम है ।

पारिवारिक क्षेत्र में टूटे हुए परिवारों, विवाह"विच्छेद की मात्रा ,अवैध संतानों का जन्म और परिवार के नियंत्रण में होने वाली कमी से विघटन का माप किया जाता है। सामुदायिक क्षेत्र में बेकारी, बीमारी, अशिक्षा, निर्धनता, जनसंख्या में अतिवृष्टि ,स्वास्थ्य का निम्नस्तर तथा मृत्युदर में वृद्धि विघटन की स्थिति पर प्रकाश डालते हैं । इन तीन परिस्थितियों को समाज शास्त्र में क्रमश: वैयक्तिक विघटन, पारिवारिक विघटन, एवं सामुदायिक विघटन कहा जाता है तथा इनका संयुक्त रूप ही सामाजिक विघटन है ।

सामाजिक विघटन के उपर्युक्त सभी स्वरूप आलोच्य कालीन हिन्दी उपन्यासों में देखने को मिलते हैं । उदाहरण के तौर पर अज्ञेय कृत "नदी के द्वीप की रेखा, हेमेन्द्र, भुवन ,चन्द्रमाधव, अमृतलाल नागर कृत "बूंद और समुद्र" की चित्रा -राजदान, महिपाल, शील स्विंग, राजेन्द्र यादव कृत" उखड़े हुए लोग" की पदमा, निर्मला वर्मा कृत "वे दिन" की रायना, भगवतीचरण वर्मा, कृत रेखा की रेखा ,राजकमल चौधरी कृत"मछली मरी हुई" की प्रिया, शीरी, शिवप्रसाद सिंह कृत" अलगल-अलग वैतरणी" की राजमती, देवपाल के वैयक्तिक विघटन को प्रस्तुत किया जा सकता है । पारिवारिक विघटन के उदाहरण के रूप में राजेन्द्र यादव कृत" उखड़े हुए लोग की "माया देवी, यशपाल कृत" झूठा-सच" की वंती, तारा, उर्मिला, डा० देवराज कृत " दोहरी आग की लपट" का सुबोध, राजेन्द्र अवस्थी कृत बीमार शहर की कमला अय्यर ,मन्नू भंडारी कृत आप का बंटी की शकुन एवं अजय कमलेश्वर कृत काली आंधी की मालती को प्रस्तुत किया जा सकता है । सामुदायिक विघटन के उदाहरण अमृत लाल नागर कृत "बूंद और समुद्र" के महिला सेवा मंडल, फणीश्वरनाथ रेणुकृत मैलाआंचल के मेरीगंज गांव के तीन दलों में विभक्त होने, शिवप्रसाद सिंह कृत अलग-अलग वैतरणी में चित्रित नगरोन्मुखता, राही मासूमम रजा कृत "आधा गांव में चित्रित जमीदारी प्रथा के अन्त को स्वीकार किया जा सकता है।

यों तो आलोच्यकालीन उपन्यासों में समाजशास्त्र में विवेचित सामाजिक विघटन के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक सभी कारण सप्रयास अन्वेषण करने पर प्राप्त होते हैं। परन्तु यह कहना कठिन होगा कि उपन्यासों में प्राप्त सामाजिक विघटन के आंकड़े समाज -शास्त्रीय ढंग से समाज से इकट्ठे किए गए आंकड़ों से पूर्ण संयम रखता है। इसका कारण यह है कि उपन्यासों से प्राप्त आंकड़े उतने तथ्यपरक एवं वास्तविक नहीं होते जितना कि समाज से इकट्ठे किए गए आंकड़े होते हैं क्योंकि उपन्यासकार अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक साधारण सी घटना को विशेष महत्व दे सकता है अथवा एक महत्वपूर्ण तथ्य को चन्द तर्कों से काट देता है इसके अतिरिक्त रचनाकार अपने उपन्यास में विभिन्न स्तर के लोगों का लेखा-जोखा वैयक्तिक स्तर पर करता है। वह सांख्यकीय प्रविधियों को पूर्णरूप से नहीं अपनाता।

उपन्यासों में चित्रित सदस्यों को स्थूल में सम्पन्न वर्ग, मध्यवर्ग और विपन्न वर्ग में विभक्त कर सकते हैं। आलोच्यकालीन हिन्दी उपन्यासों में चित्रित सामाजिक-विघटन के कारण भी उपर्युक्त वर्ग भावना से प्रभावित लगते हैं क्योंकि इन विभिन्न वर्गों के सामाजिक विघटन के कारणों की प्रधानता में विभिन्नता परिलक्षित होती है। सम्पन्न वर्ग के लोगों के सामाजिक विघटन के कारणों में अधिकार का दुरुपयोग, यौन विकृति पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति में जन्मी अस्तित्ववादी निरर्थकता मुख्य है। अज्ञेय कृत नदी के द्वीप के सम्पन्न वर्गीय भुवन का वैयक्तिक विघटन यौन दुर्बलता के कारण है। राजकमल चौधरी कृत "मछली मरी हुई" औपन्यासिक कृति की श्रीरी पद्मावत का वैयक्तिक विघटन यौन विकृति के कारण हुआ है।

निर्मल वर्मा कृत " वे दिन" की रायना का वैयक्तिक विघटन अस्तित्ववादी मान्यताओं के कारण हुआ है। राजेन्द्र यादव कृत "उखड़े हुए लोग" के नेता भैया राजनीतिक अधिकारों का दुरूपयोग वैयक्तिक स्वार्थों के लिए करता है जो उसके वैयक्तिक विघटन की अभिव्यक्ति है ।

मध्यम वर्गीय सदस्यों के सामाजिक विघटन के मूल में औद्योगीकरण, सांस्कृतिक परम्परा के प्रति निष्ठा, अनमेल विवाह, बालविवाह, दहेज प्रथा, विवाहेतर काम सम्बन्ध, चित्रपट के कुप्रभाव, बेकारी आदि मुख्य हैं । औद्योगीकरण के कारण होने वाली दुर्घटना में राजेन्द्र अवस्थी कृत "बीमारशहर की कमला अय्यर का पूरा परिवार धोखे से विद्युत स्पर्श के कारण मर जाता है । हिमांशु श्रीवास्तव कृत लोहे के पंख" की बुधिया की असामयिक मृत्यु को पलाखीनते समय इन्जन के नीचे आ जाने से हो जाती है। औद्योगीकरण ने कुटीर उद्योगों का नाश करके ग्रामीण समुदाय के लोगों को विघटित किया है जिसके कारण मध्यमवर्गीय ग्रामीणों में नगरोन्मुखता की प्रवृत्ति बढ़ी है। दयानाथ झा कृत" जमींदार का बेटा" रामदरश मिश्र कृत जल टूटता हुआ, विश्वम्भर नाथ उपाध्याय कृत रीछ कामता नाथ कृत सुबह होने तक आदि औपन्यासिक कृतियों में नगरोन्मुखता की यह प्रवृत्ति देखने को मिलती है। औद्योगीकरण ने गंदी बस्तियां, औद्योगिक झगड़े आदि की भी समस्या उत्पन्न की है। हिमांशु श्रीवास्तव कृत "लोहे के पंख" उपन्यास में औद्योगीकरण के कारण उत्पन्न गंदी बस्तियों एवं औद्योगीकरण झगड़ों के कारणउत्पन्न सामाजिक विघटन का चित्रण हुआ है ।

रांगेयराघव कृत राई और पर्वत, की मध्यमवर्गीय विधवा विद्या के पारिवारिक एवं वैयक्तिक विघटन का कारण पति की मृत्यु के अनन्तर पति के अतिरिक्त अन्यत्र काम सम्बन्ध को धार्मिक दृष्टि से पाप मानना है। राजनीतिक सफलता के कारण कमलेश्वरकृत " "काली आंधी" की मालती का

पारिवारिक विघटन होता है । मन्नू भंडारी कृत " आपका बंटी" उपन्यास की शकुन का पारिवारिक विघटन तथा डा0देवराज कृत " दोहरी आग की लपट की इरा का वैयक्तिक विघटन होता है ।

विपन्न वर्गीय सदस्यों के सामाजिक विघटन के कारणों में आर्थिक विपन्नता,मुख्य है । अर्थप्राप्ति के लिए इस वर्ग के कुछ सदस्य चोरी, वेश्यावृत्ति ,पेशेवर हत्यारे के कार्य में लगे हुए हैं। शैलेश मटियानी कृत "किस्सा नर्मदा बेन गंगू बाई का पोपट, शकुन्तलामिश्र कृत "कच्ची मिट्टी के रहमत एवं बुद्दू ढीटक इलाचन्द्र जोशी की "जहाज का पंछी" की मिस साइमन सुलेखा,शैलेश मटियानी कृत दो बूंद जल की रेशमा,अपराध वृत्ति में संलग्न लोग हैं ।

विपन्नवर्गीय लोगो के सामाजिक विघटन के प्रमुख कारण के रूप में औद्योगीकरण भी है । विभिन्न औद्योगिक प्रतिष्ठानों में कार्यरत विपन्न वर्गीय कर्मचारी वेश्यावृत्ति,मद्यपान,जुआ आदि दुर्गुणों के शिकार हो जाते है । ये दुर्गुण सामाजिक विघटन के कारण और परिणाम दोनों हैं । हिमांशु श्रीवास्तव कृत "लोहे के पंख" औपन्यासिक कृति का बीलट उपर्युक्त दुर्गुणों का शिकार है ।

विपन्नवर्गीय सदस्यों के पारिवारिक एवं वैयक्तिक विघटन का एक कारण समाज के कतिपय सदस्यों द्वारा दिशाहीन किया जाना भी है । यह

दिशाहीनता,प्रलोभन और अनैतिक यौन सम्बन्धों के रूप में परिलक्षित होता है । शैलेश मटियानी कृत " दो बूंद जल " का मास्टर शिववल्लभ ,रेशमा को मास्टरनी बनवा देने का प्रलोभन देकर उसके साथ यौन सम्बन्ध स्थापित करता है और कालान्तर में उसे त्याग देता है इस प्रकार विवश होकर रेशमा को परिवार के भरण-पोषण के लिए वेश्यावृत्ति अपनानी पड़ती है । विपन्नवर्गीय सदस्यों के सामाजिक विघटन के लिए बाल-विवाह ,अनमेल -विवाह, असामाजिक -दुर्घटनायें एवं दैवी प्रकोप भी कभी-कभी उत्तरदायी होते है , आलोच्य काल के उपन्यासों में यत्रतत्र इन कारणों द्वारा उत्पन्न सामाजिक विघटन का चित्रण हुआ है ।

ईर्ष्या, क्रोध,घृणा ,वासना आदि से प्रेरित होकर की गई हत्या, या आत्महत्या,अधिकार का दुरुपयोग,असामयिक मृत्यु अतिवृष्टि ,अनावृष्टि आकस्मिक दुर्घटनाएं सामाजिक विघटन के ऐसे कारण है जिस पर आंशिक नियंत्रण ही सम्भव है । यही वजह है कि इन कारणों द्वारा उत्पन्न सामाजिक अशान्ति एवं अव्यवस्था बड़ी भयंकर होती है ।

आलोच्य काल के हिन्दी उपन्यासों में वर्णित विघटन के विभिन्न कारणों में से बाल-विवाह,अनमेल विवाह एवं दहेज प्रथा का विरोध,विधवा एवं अन्तर्जातीय विवाह का पूर्ण समर्थन,औद्योगीकरण ,स्त्री शिक्षा का समर्थन एवं स्पृश्यता निवारण के लिए किए गये संघर्ष को भारतीय सामाजिक संगठन के गतिशील कारक के रूप में स्वीकार कर सकते हैं जिसका परिणामी प्रभाव समाज के हित में होगा ।

=x=x=x=x=x=x=

## शोध प्रबन्ध में प्रयुक्त उपन्यासों की सूची


1:- अलग-अलग वैतरणी:- शिवप्रसाद सिंह ,लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद ,प्रथम संस्करण 1967 ई०

2:- अमृत और विष :- अमृत लाल नागर, प्रथम संस्करण॰ 1966ई॰ प्रयुक्त संस्करण 1982,लोकभारती प्रकाशन 15ए,महात्मागांधी मार्ग, इलाहाबाद ।

3:- अनाम स्वामी:- जैनेन्द्रकुमार, पूर्वोदय प्रकाशन दिल्ली,प्रथम संस्करण 1974 ई०

4:- अठारह सूरज के पौधे :- रमेश बक्षी भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन कलकत्ता,प्रथम संस्करण 1965 ई०

5:- अपने-अपने अजनबी अज्ञेय,ज्ञानपीठ लोकोदय ग्रन्थमाला,प्रथम संस्करण 1961 ई०

6:- आधागांव :- राही मासूम रजा,अक्षर प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली, संस्करण 1966 ई०

7:- आपका बंटी :- मन्नू भंडारी, अक्षर प्रकाशन मन्दिर दिल्ली, प्रथम संस्करण 1971 ई०

8:- अंधेरे के विरुद्ध:- उदय राज सिंह,अशोक प्रेस पटना,प्रथम संस्करण 1970 ई०

9:- अंधेरे बन्द कमरे :- मोहन राकेश,राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1961 ई०

10:- उगते सूरज की किरण :- शैलेश मटियानी,विकल्प प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1971 ई०

11:- उखड़े हुए लोग :- राजेन्द्रयादव, राजकमल प्रकाशन दिल्ली,प्रथम संस्करण 1956 ई०

12:- एक इंच मुस्कान:- राजेन्द्रयादव,मन्नू भंडारी प्रथम संस्करण 1963 ई० राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली,

13:- कब तक पुकारूं :- रांगेय राघव प्रथम संस्करण 1957 ई०,प्रयुक्त संस्करण 1980 , राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली ।

14:- काली आंधी :- कमलेश्वर, राजपाल एण्ड सन्स काश्मीरी गेट दिल्ली, प्रथम संस्करण 1974 ई0

15:- काले फूल का पौधा :- लक्ष्मीनारायण लाल, भारती भंडार, लीडर प्रेस प्रयाग, प्रथम संस्करण 1955 ई0

16:- किस्सा नर्मदाबेन गंगू बाई :- शैलेश मटियानी, आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली संस्करण 1961 ई0

17:- किस्से अगर किस्सा :- रमेश बक्षी, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन दिल्ली, नवीन संस्करण 1973 ई0

18:- खग्रास :- आचार्य चतुरसेन शास्त्री, प्रभात प्रकाशन 205 चावड़ी बाजार दिल्ली, प्रथम संस्करण 1960 ई0

19:- ग्रामसेविका :- अमरकांत, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद प्रथम संस्करण 1962 ई0

20:- गंगा माता :- पाण्डेय बेचन शर्मा " उग्र " आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली संस्करण 1971 ई0

21:- गंगा मैया :- भैरव प्रसाद गुप्ता, राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण 1953 ई0

22:- चांदनी के खण्डहर :- गिरधर गोपाल, पियरलेस प्रिंटर्स, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1954 ई0, नवीन संस्करण 1962 ई0

23:- जल टूटता हुआ :- रामदरश मिश्र, हिन्दी प्रचारक संस्थान वाराणसी, प्रथम संस्करण 1969 ई0

24:- जहाज का पंछी :- इलाचन्द्र जोशी, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1955 ई0

25:- झूठा-सच :- [ दोनो भाग ] :- यशपाल, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद प्रथम संस्करण 1958 से 1960 ई0

26:- तमस :- भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड8, नेताजी सुभाष मार्ग दिल्ली प्रथम संस्करण 1973, प्रयुक्त सं० 1984 ई0

27:- दुखमोचन :- नागार्जुन, राजकमल प्रकाशन दिल्ली द्वितीय संस्करण 1958 ई0

28:- देहगाथा :- राजकमल चौधरी, पारिजात प्रकाशन, डाकबंगला रोड पटना प्रथम संस्करण 1966 ई0

29:- दो बूंद जल :- शैलेश मटियानी, किताब महल, इलाहाबाद प्रथम संस्करण 1966 ई0

30:- दिल एक सादा कागज :- राही मासूम रजा, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 8, नेताजी सुभाष मार्ग दिल्ली, प्र0सं0 1973ई प्रयुक्त संस्करण 1984 ई0

31:- दोहरी आग की लपट :- डा0 देवराज, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 1973 ई0

32:- दीर्घतपा :- फणीश्वर नाथ रेणु, गंन्ध कुटीरपटना, बिहार प्रथम सं. 1964

33:- धरती धन न अपना :- जगदीश चन्द्र, राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0 8 फैजबाजार दिल्ली, 6 प्र0सं0 1972 ई0

34:- नदी के द्वीप :- अज्ञेय, प्रोगेसिव पब्लिशर्स फिरोजशाह रोड दिल्ली, प्रथम संस्करण 1951 ई0 ।

35:- न आने वाला कल :- मोहन राकेश, राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट दिल्ली, प्रथम संस्करण 1968 ई0

36:- पथ की खोज

37:- परती परिकथा:- फणीश्वर नाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1957 ई0

38:- पानी के प्राचीर :- रामदरश मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकमाला, वाराणसी, प्रथम संस्करण 1961 ई0

39:- पुनर्नवा :- हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1973 ई0

40:- फागुन के दिन चार :- पाण्डेय बेचन शर्मा" उग्र" रणजीत प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स 4872 चांदनी चौक, दिल्ली, प्रथम सं0 1960 ई0

41:- बबूल :- विवेकी राय, राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण 1967 ई0

42:- बचलनमा :- नागार्जुन, किताबमहल, इलाहाबाद प्रथम संस्करण 1950 ई0

43:- बड़के भैया :- लक्ष्मीनारायण लाल, साहित्य भवन इलाहाबाद प्रथम संस्करण 1973 ई0

44:- बया का घोसला :- और सांप:- लक्ष्मीनारायण लाल, नीलाभ प्रकाशन इलाहाबाद प्रथम संस्करण 1953 ई0

45:- बाबा बटेश्वर नाथ :- नागार्जुन, राजकमल प्रकाशन दिल्ली

46:- बारह घंटे :- यशपाल, विप्लव कार्यालय शिवाजी मार्ग लखनऊ।

47:- बीमार शहर :- राजेन्द्र अवस्थी, राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट दिल्ली, प्रथम संस्करण 1973 ई0

48:- बीज:- अमृत राय, हंस प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1953 ई0

49:- बूंद और समुद्र :- अमृतलाल नागर, किताब महल इलाहाबाद प्रथम संस्करण 1956 ई0

50:- भीतर का घाव :- डा0 देवराज, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली प्रथम संस्करण 1971 ई0

51:- भूले बिसरे चित्र:- भगवती चरण वर्मा, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 8, नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली, प्रथम सं0 1959 ई0 प्रयुक्तसं0 1980 ई0

52:- मछली मरी हुई :- राजकमल चौधरी, राजकमल प्रकाशन, प्रा0 लि0 दिल्ली, प्रथम संस्करण 1966 ई0

53:- माटी छाई जनावरा :- सर्वदानन्द, हिन्दुस्तानी एकेडमी उ0प्र0 इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1960 ई0

54:- माटी की महक :- सच्चिदानन्द "धूमकेतु" वांणी प्रकाशन पटना, प्रथम संस्करण 1967 ई0

55:- मुक्ति बोध :- जैनेन्द्र कुमार, पूर्वोदय प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1971 ई0

56:- मुर्दाघर :- जगदम्बाप्रसाद दीक्षित, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, प्रथमसं0 1974

57:- मैला आंचल :- फणीश्वर नाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रयुक्त संस्करण 1956, प्रथम संस्करण 1954 ई0

58:- मेरी तेरी उसकी बात:- यशपाल प्रथम संस्करण 1975 ई0 प्रयुक्त संस्करण 1984, लोकभारती प्रकाशन 15 ए महात्मागांधी, इलाहाबाद

59:- रति विलाप :- शिवानी, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट दिल्ली, प्रथम संस्करण 1974 ई0

60- रागदरबारी- श्री लाल शुक्ल ,राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 8 नेताजी सुभाष मार्ग नयी दिल्ली प्रथम संस्करण 1968 ई0 प्रयुक्त सं0- 1984

61- राई और पर्वत :- रांगेय राघव,राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली प्रथम संस्करण 1959 ई0

62- रेखा- भगवती चरण वर्मा, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली प्रथम संस्करण 1964 ई0

लाल टीन की छत निर्मल वर्मा, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली प्रथम संस्करण 1974 ई0

63- वे दिन :- निर्मल वर्मा, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली प्रथम संस्करण 1974 ई0 ।

64- सफेद चेहरे :- लक्ष्मीकांत वर्मा, साहित्य भवन लिमिटेड इलाहाबाद प्रथम संस्करण 1971 ई0

65- सत्ती मैया का चौरा :- भैरव प्रसाद गुप्त नीलाभ प्रकाशन प्रयाग प्रथम संस्करण 1959 ई0

66- संघर्ष का सत्य: उपेन्द्रनाथ अश्क,नीलाभ प्रकाशन इलाहाबाद प्रथम संस्करण 1960 ई0

67- साँचा :- प्रभाकर माचवे, नव साहित्य प्रकाशन नयी दिल्ली । संस्करण 1955

68- सागर लहरें और मनुष्य :- उदयशंकर भट्ट हिन्दी प्रचारक पुस्तकमाला वाराणसी प्रथम संस्करण 2012 वि0 प्रयुक्त सं0 -2018 विक्रमी

69- सुखदा :- जैनेन्द्रकुमार ,पूर्वोदय प्रकाशन ,दिल्ली, प्रथम संस्करण 1952ई

70- सुबह होने तक - कमता नाथ समांतर सहयोग 54 बाजार रोड मइला; मद्रास प्रथम संस्करण 1975 ई0

71- सूरज का सातवाँ घोड़ा- धर्मवीर भारतीय साहित्य हिन्दी भवन इला प्रथम संस्करण 1952 ई ।

सेमल के फूल :- मार्कण्डेय, नव साहित्य प्रकाशन मिन्टोरोड द्वितीय सं

1- A general Introduction to Prychoanalysis by Friends Newyark, Boni and Liveright Ed.1920
2- Exestentialism and Humanism, Tr, and introduction by PHILIPS MARET.
3- Existentialism:- Jean Paul Sastra,the philosophical library Newyork, 1947.
4- Education in New India: Hamayun Kabir,George Allen and unwin ltd, ltd, London, 1959.
5- Comprative Politics:- Hari Actin and David E. Apters, the Free Press Pas Yawyork, 1963
6- Caste in Mordern India:- M.N. Shrinivas, Asia Publishing house Delhi, 1962.
7- India's changing villages:- J.H. Huttan, Oxford University Press London, Third Edition 1961.
8- Hindu Religion Custom and manner:- B. Thomor, P.V. Tarporwala and sons Ltd. Bombay.
9- Love Marriage and Sex:- Prommila Kanpur, Vikas Publication Delhi 1973
10- Marriage and Family Relationship:- Rabert G Fourther, Mack Millan and company londan 1960.
11- On Inter Cast Marriage:- Dr. C.G. Deshpandey,Uma Publication Pun 1972.
12- Principle of Criminology,: Sutherlands edition 1965
13- Rural Socialogey in India:- A.P. Desi, Papular Prakashan Bombay, 1969.
14- Sociology:- David Popen, Printed in United states America,Ed. 1977.
15- Socail disorganization:- Eilliot and Merrill , Harber and Bros, Newyork, 1950.
16- Social Disorganization:- Robert E.V. Fadeis, The Romald Press Co. Newyork, 1948.
17- Sociology:- R.T. Lapiar, Mc Graw Hill Book Co, Newyork.1946
18- Social Problems and changing society:- Maretin H. Newmeyer, D. Van Nastrand Co. NewYork, 1953.
19- Sociology:- Hohn F.Cuber, Presentic shall Nc,Engllwood Cliffs, New Jersey, 1968
20- Social organisation and social disorganisations Queen Sguart, A.B. Odenhafter, walter Band Harder, Ernest B. Themasy, Crowell company Newyork, 1935.
21- The Practise and theory of Individual Prychology , Manpaul, Ed. 1925.

## सहायक पुस्तक सूची ॥ हिन्दी ॥

आशा बागड़ी :- प्रेमचन्द्र परवर्ती उपन्यास साहित्य में पारिवारिक जीवन शोधप्रबन्ध प्रकाशन दिल्ली, प्र0 सं0 1974 ई0

आर0 एस0 दुबे तथा बी·सी·सिन्हा :- भारत में आर्थिक विकास एवं नियोजन ,नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली चतुर्थ सं0 1977 ई0

इन्द्रनाथ मदान :- हिन्दी उपन्यास,पहचान और परख,लिपि प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 1973 ई0

एम0एन0श्रीवास्तव:- आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन,राजकमल प्रकाशन , दिल्ली,संस्करण 1967 ई0

एन0रविन्द्रनाथ : मार्क्सवाद और हिन्दी उपन्यास ,वाणी प्रकाशन 61 एक कमलानगर दिल्ली ।

कान्ति वर्मा:- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास,रामचन्द्र एण्ड कम्पनी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1966 ई0

डा0 चण्डी प्रसाद जोशी :- हिन्दी उपन्यास समाजशास्त्रीय अध्ययन, अनुसंधान प्रकाशन

जी0आर0 मदन :- भारतीय सामाजिक समस्यायें ,सरस्वती सदन 7 यू0ए0 जवाहर नगर दिल्ली, संस्करण 1969 ई0

जे0सी0अग्रवाल :- स्वतंत्रभारत में शिक्षा का विकास,आर्यबुक डिपो 30, नाईवाला करोलबाग नई दिल्ली, सं0 1968 ई0

डी0एस0बघेल :- अपराधशास्त्र ,सरस्वती सदन 7 यू0ए0जवाहर नगर दिल्ली संस्करण 1970 ई0

त्रिभुवन सिंह :- हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद,हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय पो0बाक्स नं· 70 ज्ञानवापी प्रकाशन,वाराणसी,तृतीय संस्करण 2018 विक्रमी

देवराज :- आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान,साहित्य भवन प्रा0 लि0 इलाहाबाद ,प्रथम संस्करण 1956 ई0

नरेन्द्र मोहन :- आधुनिक हिन्दी उपन्यास, दि मैकमिलन कम्पनी आफ इण्डिया लिमिटेड, प्रथम संस्करण 1975 ई0

पारसनाथ मिश्र :- मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद ,प्रथम संस्करण 1972 ई0

डा0 पूरनचन्द्र जोशी :- भारतीय ग्राम सांस्थानिक परिवर्तन और आर्थिक विकास, राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0 दिल्ली पृ0 सं0 1966

डा0 प्रतापनारायण टण्डन :- हिन्दी उपन्यास वर्ग भावना,प्रकाशक लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ,प्रथम सं0 1956 ई0

परिपूर्णानन्द वर्मा :- आत्महत्या और वासना के अपराध, साहित्य निकेतन कानपुर,संस्करण 1966 ई0

पट्टाभि सीतारमैया :- गांधी और गांधीवाद,शिव एण्ड कम्पनी आगरा संस्करण 1959 ई0

प्रकाश दीक्षित :- अस्तित्ववाद और नई कविता,अनादि प्रकाशन 609 कटरा इलाहाबाद,प्रथम संस्करण

डा0 भोलानाथ :- आधुनिक हिन्दी साहित्य सांस्कृतिक पृष्ठभूमि प्रगति प्रकाशन बेतुल बिल्डिंग आगरा, संस्करण 1969 ई0

महावीरमल लोढ़ा :- हिन्दी उपन्यास - समाजशास्त्रीय विवेचन रोशनलाल जैन एण्ड सन्स जैन सुखदास मार्ग जयपुर 3,सं· 1972 ई0

मदनमोहन सक्सेना :- भारतीय सामाजिक व्यवस्था हिन्दुस्तान बुक हाउस पो0बा0 460 हास्पिटल रोड कानपुर प्र0सं0 1970 ई0

यशपाल :- मार्क्सवादी,विप्लव कार्यालय लखनऊ ,संस्करण 1940 ई0

योगेन्द्र शाही :- अस्तित्ववाद, दि मैकमिलन कम्पनी आफ इण्डिया लि0 दिल्ली बम्बई,कलकत्ता,संस्करण 1975 ई0

रजनी पामदत्त :- भारत वर्तमान और भावी, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली 1956 ई0

डा० रामनाथ शर्मा :- मनोविज्ञान का इतिहास , लक्ष्मीनारायण अग्रवाल पुस्तक प्रकाशक आगरा, प्रथम संस्करण 1969, प्रयुक्त संस्करण 1972.

राजकुमार :- भारत का राजनीतिक इतिहास,ओम प्रकाश बेरी हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय पो0बा0 70 सी0/21 पिशाचमोचन वाराणसी,द्वितीय सं0 फरवरी 1962 ई0

रामधारी सिंह दिनकर :- संस्कृति के चार अध्याय, राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट दिल्ली, प्रथम संस्करण 1956 ई0

रूद्रदत्त,के0पी0 सुन्दरम :- भारतीय अर्थव्यवस्था, एस0चन्द्र एण्ड कम्पनी लि0 रामनगर नई दिल्ली, दशम संस्करण 1977 ई0

डा0 लक्ष्मीशंकर वार्ष्णेय :- द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास, राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट दिल्ली, प्रथम संस्करण 1973 ई0 हिन्दी साहित्य का इतिहास,लोकभारती प्रकाशन 15 ए महात्मागांधी मार्ग,इलाहाबाद ।

लालचन्द गुप्त मंगल :- अस्तित्ववाद :- दार्शनिक तथा साहित्यक भूमिका अनुपम प्रकाशन मन्दिर 2/3914 धर्मपुरा पटियाला पंजाब संस्करण 1977 ई0

अस्तित्ववाद और नयी कहानी,शोध प्रकाशन दिल्ली संस्करण 1975 ई0

लेनिनअनुवादक वी0पी0सिन्हा :- मार्क्स और मार्क्सवाद,गंगापुस्तक माला कार्यालय लखनऊ,प्रथम संस्करण 1966 ई0

आचार्य विष्णुगुप्त (चाणक्य) कौटिल्य का अर्थशास्त्र,सम्पादक श्री भारतीय योगी, संस्कृत संस्थान ख्वाजा कुतुब रोड दिल्ली ।

डा0 विमल सहस्त्रबुद्धे :- हिन्दी उपन्यासों में नारी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, पुस्तक संस्थान 109/50 ए, नेहरू नगर कानपुर ,प्रथम संस्करण 1974 ई0

~~डा० वीरेन्द्र सक्सेना~~ :-


डा० वीरेन्द्र ~~सक्सेना~~ :- कामसम्बन्धों का यथार्थ और समकालीन हिन्दी कहानी साहित्य भारती दिल्ली, प्रथम संस्करण 1975 ई०

शम्भूरत्न त्रिपाठी :- समाजशास्त्रीय विश्वकोश, किताबघर परेड कानपुर, संस्करण 1960 ई०

श्याम सुन्दर मिश्र :- अस्तित्ववाद और द्वितीय समरोत्तर हिन्दी साहित्य विद्या प्रकाशन मन्दिर दरियागंज दिल्ली प्रथम संस्करण 1971 ई०

श्री कृष्ण दास :- साम्प्रदायिक विद्वेश पर बापू के विचार, इंडियन पब्लिशर्स 333 मोहतसिम गंज, इलाहाबाद

डा० सत्यपाल चुघ :- प्रेमचन्द्रोत्तर हिन्दी उपन्यासों की शिल्पविधि इकाई प्रकाशन 16पुरुषोत्तम नगर हिम्मतगंज इलाहाबाद प्र०सं० 1968

सत्येन्द्र त्रिपाठी :- सामाजिक विघटन, उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी लखनऊ, संस्करण 1973 ई०

सरला दुबे :- सामाजिक विघटन और सुधार, सरस्वती सदन मंसूरी प्रथम संस्करण 1966 ई०। भारतीय समाज और संस्थाएं, प्रकाश बुक डिपो दिल्ली 1967 ई० सामाजिक विघटन, सरस्वती सदन दिल्ली प्रथम संस्करण 1971 ई०

सुरेश सिन्हा :- हिन्दी उपन्यास, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 1961 ई० हिन्दी उपन्यास उद्भव और विकास, अशोक प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1965 ई० । हिन्दी उपन्यास लोकभारती प्रकाशन 15 ए महात्मागांधी मार्ग इलाहाबाद प्रथम संस्करण 1972 ई०

~~सुकाक~~

सुषमा धवन :- हिन्दी उपन्यास, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 1961 ई०

डा० स्वर्णलता :- स्वतंत्रयोत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य की समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि

डा० हेमेन्द्र पानेरी :- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास मूल्य संक्रमण, संघी प्रकाशन लालजी एण्ड का रास्ता जयपुर प्रथम संस्करण 1974 ई०

ज्ञानचन्द्र गुप्त :- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्राम चेतना अभिनव प्रकाशन वेस्ट सोलपुर दिल्ली 31, प्रथम संस्करण 1974 ई०

पत्र - पत्रिकाएं :-

1:- दैनिकपत्र भारत, डा0 मुकुन्ददेव शर्मा, लीडर प्रेस इलाहाबाद

2:- दैनिक पत्र आज, सत्येन्द्र कुमार गुप्त, वाराणसी

3:- धर्मयुग:- डा0 धर्मवीर भारती बोनेट कोलमेन एण्ड कम्पनी स्वत्वाधिकारी के लिए टी0पी0 पीठावाला द्वारा टाइम्स आफ इण्डिया प्रेस डा0 डी0 एन0 रोड बम्बई 400001 में मुद्रित और प्रकाशित

4:- साप्ताहिक हिन्दुस्तान:- मनोहर श्याम जोशी, दि हिन्दुस्तान टाइम्स लि0 की ओर से डा0 गौरीशंकर राजहंस द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस नई दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित ।

5:- कादम्बनी :- राजेन्द्र अवस्थी दि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से डा0 गौरीशंकर राजहंस द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस नयी दिल्ली से मुद्रित तथा प्रकाशित ।

6- दिनमान :- कन्हैयालाल नंदन बोनेट कोलमैन एण्ड क0 लिमिटेड, स्वत्वाधिकारी के लिए रमेश चन्द्र द्वारा नैशनल प्रिंटिंग वर्क्स10 दरियागंज नई दिल्ली 110002 से मुद्रित व प्रकाशित ।

7- दहक साप्ताहिक :- चन्द्र कुमार शर्मा, कार्यालय पी 181 जनता कालोनी जबलपुर ।

8- श्वेतपत्र:- हैदराबाद की समस्या पर सरकार द्वारा 1984 ई0 को प्रकाशित ।

9- प्रगीत मंजूषा :- रतन कुमार, 436 ममफोर्डगंज ,इलाहाबाद ।